

# तारीखे इस्लाम

भाग 1

नबीयों के हालात

लेखक: अल्लामा फ़रोग काज़मी

नोट: ये किताब अलहसनैन इस्लामी नेटवर्क के ज़रीए अपने पाठको के लिये टाइप कराई गई है और इस किताब मे टाइप वगैरा की गलतियों को सही किया गया है।

[Alhassanain.org/hindi](http://Alhassanain.org/hindi)

## अर्ज नाशिर

हिन्दुस्तानी मुस्लिम ब्रादरी और खुसूसी तौर पर शिया मुस्लिम समाज में तारीखे इस्लाम पर मबनी कोई ऐसी जामेय और मुफस्सिल किताब मेरी नज़रों से नहीं गुजरी थी कि जिसकी सिर्फ एक ही जिल्द में किसी मुसन्निफ़ या मोअल्लिफ़ ने इब्तेदाये आफरीनिश से खिलखते आदम (अ.स.) तक और खिलखत हज़रत आदम (अ.स.) से खातेमुल अम्बिया तक तमाम अम्बिया व मुरसलीन (अ.स.) नीज़ हज़रत अली (अ.स.) इब्ने अबु तालिब (अ.स.) से इमामुल अस्र वल ज़मां अजल्लाह फ़रजह तक तमाम आइम्मा ए मासूमीन (अ.स.) के तारीखी व तफ़सीली और मुस्तनद व मोतबर हालात मुजतमा किये हों। लेहाज़ा मेरी दिली ख्वाहिश व कोशिश यह थी कि उर्दू ज़बान में कोई ऐसी किताब मंज़रे आम पर लायी जाये जिसकी एक ही जिल्द मौजूदा इस्लामी तकाज़ों और वक़्त की इस अहम ज़रूरत को पूरा कर सके।

खुदा का शुक्र है कि मोहक़िक बसीर जनबा फ़रोग काज़मी ने मेरे इस कर्ब को महसूस किया और इन्तेहाई मेहनत, लगन, तहक़ीक व जुस्तजू के बाद तफ़सीरे इस्लाम के उनवान से यह किताब मुकम्मल कर के मेरे ख्वाब को ताबीर से हमकिनार कर दिया।

तकरीबन नौ सौ सफ़हात पर मुश्तमिल यह ज़खीम किताब यकीनन जनाब फ़रोग काज़मी का इन्फ़ेरादी कारनामा है जिसके दामन में इस्लामी तारीख से मुतअल्लिक सब कुछ है।

मुझे मसरत है कि मैं इस गिरां क़द्र किताब की अशाअत का शरफ़ हासिल कर रहा हूँ और इसके साथ ही दुआगो हूँ कि परवरदिगारे आलम इसकी मक़बूलियत व कामयाबी को दोश बदोश मोहतरम फ़रोग काज़मी की तौफ़िकात में भी इज़ाफ़ा फ़रमाये।

वाज़ेह हो कि हमने हिन्दीदां तबक़े के लिये इसको तीन भागों में विभाजित कर दिया है। पहला भाग नबियों के हालात पर आधारित है, दूसरे भाग में हज़रते मोहम्मदे मुस्तफ़ा (स.अ.व.व.) के हालात और तीसरे भाग में ख़िलाफ़त और इमामत की तफ़सीलात और ज़हूरे इमाम तक की तफ़सीलात हैं। हमें उम्मीद है कि हिन्दीदां हज़रात हमारी कोशिश को सराहेंगे।

वस्सलाम

सै० अली अब्बास तबातबाई

इब्तेदाईया

अज़

हुज्जतुल इस्लाम वल मुसलेमीन मौलाना सैय्यद ज़ाहिद अहमद साहब  
क़िब्ला रिज़वी अलनजफ़ी।

सुल्तान बहादुर रोड, काज़मैन लखनऊ



आयाए मज़कूरा में लफ़्जे मिनल मुस्लेमीना से साफ़ तौर पर जाहिर है कि इस्लाम का सिलसिला हज़रत नूह (अ.स.) से पहले भी था और वह खुद इस सिलसिले की एक कड़ी थे।

इसके बाद हर दौर हर ज़माने में इस्लाम का ज़िक्र “ तक़रार ” के साथ होता रहा ताकि यह अम्र भी वाज़ेह हो जाए कि शरिअतों के बदल जाने से शरिअत की “ रूह ” की रूह पर कोई असर नहीं पड़ता। नीज़ यह भी आशकार हो जाए कि इस्लाम दर हकीकत वही दीने इलाही है जो इन्सानी ज़िन्दगी के लिये जाबते के तौर पर वज़ा हुआ था और जिसकी हमागीर तालीमात में इन्सान की फ़लाह व निजात के इसरार व रमूज़ पोशीदा हैं।

जब हज़रत इब्राहीम (अ.स.) खलील उल्लाह का दौर आया तो उन्होंने भी अपनी शरीयत को इस्लाम से ताबीर किया। जैसा कि कुरआने मजीद का बयान है :- व वसी बेहा इब्राहीमो बैनही व याकूब या बुनैय्या इन्नल लहा इस्तफ़ालकुमुद्दीना फला तमूतुन्ना इल्ला व अनतुम मुस्लेमून (बक़रा आयत 132)

“ इब्राहीम (अ.स.) व याकूब (अ.स.) ने अपने फ़र्जन्दों को वसीयत की कि अल्लाह ने तुम्हारे लिये इस्लाम को पसन्द किया है लेहाज़ा जब दुनिया से तुम उठना तो मुस्लमान उठना। ”

हज़रत इब्राहीम (अ.स.) और हज़रत याकूब (अ.स.) की यही वसीयत जब जनाबे यूसुफ़ (अ.स.) की तरफ़ मुन्तक़िल हुई तो उन्होंने फ़रमाया :- रब्बे क़द आतैनी

मिनल मुल्के व अल्लम तनी मिन तावीलिल अहदीस फातेरस समावाते वल अर्जे  
अन्ता वलीये फिद दुनिया वल आखेरत तवफ़नी मुस्लेमन व अलहक्केनीबिल  
सालेहीन (यूसुफ़ आयत 101)

‘ ‘ परवर दिगार ! तूने मुझे मुल्क दिया है और हदीसों की तावील का इल्म  
भी अता किया है, तू ही ज़मीन व आसमान का खालिक और दुनिया व आखेरत में  
मेरा वली व सरपरस्त है। मेरे मालिक ! मुझे इस दुनिया से मुसलमान उठाना और  
सालेहीन से मुलहक़ कर देना। ’ ’

इस आया ए करीमा में हज़रत यूसुफ़ (अ.स.) की तरफ़ से अपने पदरे बुजुर्गवार  
की वसीयत के मुतालिक़ जादये इस्लाम पर गामज़न रहने दुनिया से मुस्लमान  
उठने और “ सालेहीन ” से इल्हाक़ की ख़्वाहिश का इज़हार है और इसके साथ ही  
यह भी बताया गया है कि सिर्फ़ इस्लाम ही वह मज़हब है जो दुनिया व आखेरत  
दोनों जगह इन्सान के काम आता है।

मालूम हुआ कि हज़रत नूह (अ.स.) की तरह हज़रत यूसुफ़ (अ.स.) की नज़रों  
में भी अल्लाह के कुछ मख़सूस और सालेह बन्दे ऐसे थे जिनकी ज़वाते मुकद्देसा  
गायबाना तमस्सुक ज़रूरी था। वह “ सालेहीन ” कौन थे? यह वह बन्दे थे जिनके  
बारे में कुरआन का इरशाद है :-

यह वह “ सालेहीन ” हैं कि जिनके बारे में रसूल (स.अ.व.व.) ने फ़रमाया :-  
“ मेरे अहले बैत की मिसाल किशती ए नूह (अ.स.) की सी है। जो इस पर सवार हुआ वह निजात पा गया और जो इससे किनारा कश रहा वह गर्क हो गया। ”

एक और मौके पर फ़रमाया :- “ मैं तुम्हारे दरमियान दो गरांक्रद्र चीजें छोड़े जा रहा हूँ एक कुरआन है और दूसरे मेरे अहले बैत हैं। यह दोनों अज़मत में मसावी हैं और एक दूसरे से उस वक़्त तक जुदा न होंगे जब तक (क़यामत के दिन) हौजे कौसर पर मेरे पास वारिद न हों। अगर तुम उनसे तमस्सुक रखोगे और उनका दामन थामे रहोगे तो मेरे बाद कभी गुमराह न होंगे। ”

कुरआने मजीद ने जहां जहां पैगम्बरे इस्लाम (स.अ.व.व.) का ज़िक्र किया है वहां वहां “इस्लाम’ ’ का तज़क़िरा भी इस अन्दाज़ में किया है कि गोया “ दीने इस्लाम ” सिर्फ़ आप ही का दीन है और अल्लाह की तरफ़ से पहले पहल आप ही को अता हुआ है।

हकीकत भी यही है क्यों कि अम्बियाये साबेकीन में से हर नबी ने अपने इस्लाम से पहले किसी “ साहबे इस्लाम ” के “ इस्लाम ” का एतराफ़ किया है लेहाज़ा यह देखना चाहिये कि वह साहबे इस्लाम कौन हैं?

कुरआन मजीद जवाब देगा :- “ कुल इन्ना सलाती व नासोकी व मोहयाया व ममाती लिल्लाहे रब्बिल आलामीना ला शरीका लहू व बेज़ालेका ओमिरतो व अना अक्वुलल मुस्लेमीन (इन्आम आयत 163 व 164) ”



‘ ‘ ऐ रसूल (स.अ.व.व.) ! कह दो कि मेरी नमाज़, इबादत ज़िन्दगी और मौत सब उस अल्लाह के लिये है जो आलेमीन का रब और लाशरीक है और मैं पहला मुसलमान हूँ। ’ ’

कुरआने करीम ने यह वाज़ेह कर दिया कि अल्लाह का आखिरी रसूल मुहम्मद (स.अ.व.व.) पहला मुसलमान और “ साहबे इस्लाम ” है और रसूले अकरम (स.अ.व.व.) ने भी अपनी बेअसत के बाद मुसलसल तेईस साल तक उम्मत को इस्लाम ही की तालीम दी मगर रसूल (स.अ.व.व.) के इस्लाम और उम्मत के इस्लाम में एक नुमाया फ़र्क यह है कि रसूल (स.अ.व.व.) का इस्लाम अज़ली है और उम्मत का इस्लाम उसके वजूद में आने के बाद शुरू हुआ है। रसूल (स.अ.व.व.) के इस्लाम के मुताअल्लिक अक्वलो मन असलमा और अक्वलुल मुसलेमीना की लफ़्जे इस्तेमाल हुई हैं। इन लफ़्जों का मतलब ही यह है कि जब से इस्लाम का सिलसिला शुरू हुआ है पैग़म्बर (स.अ.व.व.) का इस्लाम तमाम अम्बिया ए कराम व अहले इस्लाम के इस्लाम पर मुक़द्दम रहा है। दूसरा वाज़ेह फ़र्क यह है कि उम्मत का इस्लाम पैग़म्बर (स.अ.व.व.) के दस्ते मुबारक पर कलमे का मरहूने मिन्नत है जब कि खुद पैग़म्बरे (स.अ.व.व.) ने किसी से इस्लाम का दर्स नहीं लिया।

इसमें कोई शक नहीं कि कुरआन मजीद ने साहेबाने इस्लाम की फेहरिस्त में नूह (अ.स.), इब्राहीम (अ.स.), ज़ुर्रिय्यते इब्राहीम (अ.स.), याक़ूब (अ.स.) यूसुफ़

(अ.स.) यहां तक कि कायनात अरज़ो समा को भी शामिल किया है लेकिन इसके साथ साथ यह भी ऐलान कर दिया है कि सरकारे ख़तमी मरतबत अक्वल मुस्लेमीन हैं। आप उस वक़्त भी साहबे इस्लाम थे जब इस कायनात का वजूद भी न था।

लेकिन इन तमाम बातों के बवजूद इस्लाम और इस्लामी तारीख का सबसे बड़ा अलमिया यह है कि दुनिया परस्तां ने मुरसले आजम (स.अ.व.व.) की वफ़ात के बाद अपने मुफ़ाद की खातिर इस्लाम को तहस नहस करने और शरियते मुहम्मदी को तबाह व बरबाद करने में कोई दक्कीका उठा नहीं रखा। यहां तक कि इस्लामी तारीखे नवीसी के फ़न पर भी बड़ी बड़ी ज़ालिब व जाबिर हुक्मतों की मोहरें लगी हुई हैं और उसकी नशो नुमां दौलत व इक्तेदार के साये में हुई है। इस्लाम की तारीखे मुखालेफ़ीन व मुनाफ़ेकीन के घरों में पली है और उन्हीं की आग़ोश मुनाफ़ेक़त में परवान चढ़ी हैं। इन अलल व असबाब के बावजूद अगर इस्लामी तारीख के दामन में हमारे मतलब की कोई बात मिल जाती है तो यह इस अमर की दलील है कि वह हकीक़त इतनी वाज़ेह और रौशन थी कि मोअरिखीन के बिके हुए क़लम भी इसकी परदा पोशी न कर सके और न ही वह हकीक़त तौज़िह व तावील की नज़र हो सकी।

इस्लाम की इब्तेदाई दौर में अहादीस, रवायात या वाक़ियात के बयान करने का जो तरीका राएज था वह ज़बानी था। तसनीफ़ व तालीफ़ का सिलसिला अहदे

माविया में शुरू हुआ जब उसने अबीद बिन शरिया को (जो ज़बानी हदीसों का रावी था) सनआ से बुला कर किताबों और मोअर्रिखों के ज़रिये उसकी बयान की हुई हदीसों को क़लम बन्द कराया जिसके नतीजे में मुत्ताइद किताबें आलमे वजूद में आयीं। उनमें से एक किताब का नाम “ किताबुल मुलूक व इखबारुल मज़ाईन ” है।

किताबों में ग़ालेबन यह पहली किताब है जो मुआविया के हुक्म से लिखी गई। इसके बाद “ अवाना बिनुल हकीम ” का नाम काबिले ज़िक्र है जो एखबार व अन्साब का माहिर था और जिसने आम किताबों के अलावा ख़ास बनी उमय्या और मुआविया के हालात पर एक किताब लिखी जो पहलवी ज़बान में थी। उसका तर्जुमा अरबी ज़बान में हिशाम बिन अब्दुल मलिक के हुक्म से सन् 117 में और फ़ारसी ज़बान में 1260 में ईरान से हुआ।

143 हिजरी में जब तफ़सीर व फ़िक़ा और हदीसों की तदवीन का बाज़ाबता काम शुरू हुआ तो दीगर उलूम की किताबों के साथ तारीख व रिजाल में भी किताबे लिखी गईं। चुनान्चे मोहम्मद बिन इस्हाक़ (अल मतूनी 151 हिजरी) ने सीरते नबवी पर एक किताब मन्सूर अब्बासी की तहरीक पर लिखी जो मेरे ख़याल से फ़ने तारीख की पहली किताब है।

इसके बाद तारीख बतदरीज तरक्की की मंज़िलें तय करती रही और बड़े बड़े नामवर मुवर्रिख पैदा होते रहे। इन मोअर्रिखीन में नज़र बिन मुजाहम कूफ़ी, सैफ़

बिन अमरूल असदी, मोअम्मिर बिन राशिद कूफी, अब्दुल्लाह बिन साअद जहरी, अबुल हसन अली बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह मदायनी, अहमद बिन हारिस खज़ार (मदायनी का शार्गिद), अब्दुल रहमान बिन अबीदा और उमर बिन अलशबा वगैरा खास तौर पर काबिले ज़िक्र हैं।

अगर चे मुसन्नेफीन की किताबें अब ना पैद हो चुकी हैं लेकिन दीगर किताबें जो इससे करीब तर ज़माने में लिखी गई है उनमें बहुत कुछ सरमाया उन मुसन्नेफीन की किताबों का मौजूद व महफूज़ हैं। मसलन अब्दुल मलिक बिन हिशाम (अल मत्नी 213 हिजरी) की किताब सीरते इब्ने हशशाम, मुहम्मद बिन सईद बसरी (अल मत्फी 230 हिजरी) की किताब तबकात, अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम बिन कतीबा (अल मत्फी 270 हिजरी) की किताब अल इमामत व अल सियासत, अहमद बिन दाऊद (अल मत्फी 282 हिजरी) की किताब एखबारूल तवाल, मुहम्मद बिन जरीर तबरी (अल मत्फी 300 हिजरी) की किताब तारीखे तबरी, मरूजुज ज़हब और किताबुल अशराफुल तबनिया वगैरा। यह तसानीफ़ जिस दौर की हैं वह मुतक़देमीन का दौर कहलाता है।

पांचवी सदी हिजरी के आगाज़ से मुतवस्तीन का दौर शुरू है। इस दौर में इब्ने असीर, समआनी, ज़हबी, अबुल फ़िदा, नवेरी और सियुती वगैरा ने नाम पैदा किया लेकिन उन लोगों में खास कमी यह थी कि तारीख में इज़ाफ़ा के बजाय उन्होंने जो तरीक़ इख़्तेयार किया वह यह था कि मुतक़देमीन में से किसी की तसनीफ़ सामने

रख ली और उसमें तगय्युरात पैदा करके उसकी हैयत बदल दी लेकिन इसके बावजूद उन किताबों को अवामी हलके में खातिर ख्वाह मकबूलियत हासिल हुई। तारीख इब्ने असीर और तारीखे तबरी ने तो यह शोहरत और मकबूलियत हासिल की कि अकसर कुदमा की किताबें नापैद हो गईं। इब्ने असीर और तबरी के बाद जो मोअर्रेखीन पैदा हुए उन्होंने भी अपनी किताबों का माखिज इब्ने असीर और तबरी की किताबों को करार दिया। इस फ़ेहरिस्त में इब्ने खल्दून का नाम शामिल नहीं किया जा सकता इस लिये कि इसका अन्दाज़े तहरीर सबसे अलग है।

मुख्तसर यह कि उमवी और अब्बासी दौर में तसनीफ़ात व तालीफ़ात का काम बकसरत हुआ और झूठी अहादीस, मोहमल रिवायत और गलत वाकियात की बुनियाद पर ख़ूब किताबे लिखी गईं और चूंकि उमवी और अब्बासी हुक्मरानों ने दौलत और ताक़त का इस्तेमाल कर के खुसूसी तवज्जो और दिल चस्पी के साथ किताबें लिखवाईं लेहाज़ा जाहिर है कि तारीख का तदवीनी मरहला उन्हीं की निगरानी में तय हुआ और उन्हीं की मरज़ी के मुताबिक़ तारीखी वाकियात किताबों में मरकूम किये गए। इस काम में मुलूकियत, इमारत, डिक्टेटर शिप, शाही और शहनशाही के साथ उसके नाजायज़ टुकड़ों पर पलने वाले खुशामदी, दरबारी, जागीरदार, ओहदेदार, काज़ी, मुल्ला, मुफ़ती, रावी, ज़मीर फ़रोश ओलमा और इमान फ़रोश मोअर्रेखीन सभी शामिल थे। जिन्होंने मिल कर इस्लामी तारीख को मसख करने में अपनी साज़िश कोशिश सरफ़ रक दी जिसका नतीजा यह हुआ कि हज़ारों

की तादाद में जाली हदीसे, फ़र्जी रवायतें और ग़लत व मोहमल वाकियात क़लम के जरिये इस्तेहकाम पा गये।

यह भी एक तारीखी हकीकत है कि मुआविया और उसके बाद के इस्तेबदादी दौर में यह ना मुम्किन था कि कोई शख्स जबानी या तरीरी तौर पर आले मोहम्मद (स.अ.व.व.) के फ़जाएल व मुनाक़िब बयान करता। अगर वह ऐसा करने की सई करता भी तो उसकी ज़बान गुद्दी से खींच ली जाती उसके हाथ पाओं काट दिये जाते और उसकी आंखों में लोहे की गर्म सलाखें चला दी जाती। यही सबब है कि इस दौर में सच्चाई खामोश रही और तारीख का दामन झूटी हदीसों, जाली रवायतों और ग़लत वाकियात से छलक पड़ा। चुनान्चे शेख मुफ़ीद अलह रहमा ने जब अपनी किताब इरशाद के लिये क़लम उठाया तो वाकियाते करबला को दर्ज करते हुए इब्तेदा ही में उन्होंने यह वज़ाहत कर दी कि इन बयानात का तअल्लुक तमाम तर अरबाबे तारीख व सियर से है, मैंने सिर्फ़ इस मुक़ाम पर नक़ल कर दिया है। इसका मतलब यह हुआ कि शेख मुफ़ीद अलैह रहमा ने तारीख की तहकीक व सेहत का काम अपने बाद के मोहक़केकीन व मोअरखीन पर छोड़ दिया।

तारीख का एक इम्तेयाज़ यह भी है कि शरियत के अलूम व फ़ुनून का ताल्लुक फ़ने तारीख से नहीं बल्कि एक मक़सूस व महदूद दुनिया से है और इससे इन्सान के अक्राएदी ज़जबात वाबस्ता होते हैं और ताअस्सुब व तंग नज़री के इमकानात भी पाये जाते हैं। तारीख के मसाएल इससे बिल्कुल मुख्तलिफ़ हैं। इससे अमूमन

जज़बात व एहसासात का राबता नहीं होता और यह कहने की गुजांइश बाकी रहती है कि मोअर्रिक ने दयानत दारी व ग़ैर जानिबदारी से काम लिया है। चुनान्चे यही वह रास्ता है जिस पर मोहकिक्र बसीर जनाबे फ़रोग काज़मी मौजूदा दौर में गामज़न हैं और तहक़ीक़ व हक़ाएक़ की रौशनी में दीनी खिदमात अन्जाम दे रहे हैं।

मौसूफ़ का हक़ आशना व हक़ीक़त निगार क़लम इस्लामी दुनिया में मोहताजे तारूफ़ नहीं है। उनकी किताबों में अल ख़ोलफ़ा, तफ़सीरे करबला, हज़रत आयशा की तारीख़ी हैसियत, जदीद शरीयत और सैय्यदा सकीना (अ.स.) वग़ैरा वह माया नाज़ किताबें हैं जो मक़बूलियत के दर्जे पर फ़ायज़ हो कर अवाम से ख़िराजे तहसीन हासिल कर चुकि हैं यहां तक कि बाज़ किताबों का तर्जुमा भी दूसरी ज़बानों में हो रहा है जो इन्शाअल्लाह जल्दी ही मंज़रे आम पर आजायेगा।

ज़ेरे नज़र किताब तफ़सीरे इस्लाम ख़ुसूसी इम्तेयाज़ात निगारिश की िंबना पर ब्रादरम फ़रोग काज़मी की क़लमी काविशों का वह तारीख़ी सहीफ़ा है जिसके दामन में इस्लाम व तौहीद और इब्तेदाये आफ़रेनश की झलकियों के साथ साथ आदम (अ.स.) शीश (अ.स.) इदरीस (अ.स.) नूह (अ.स.) हूद (अ.स.) सालेह (अ.स.) इब्राहीम (अ.स.) इस्माईल (अ.स.) इस्हाक़ (अ.स.) लूत (अ.स.) ज़ुलकरनैन (अ.स.) याक़ूब (अ.स.) यूसुफ़ (अ.स.) अय्यूब (अ.स.) शुऐब (अ.स.) मूसा (अ.स.) हिज़ख़ि़ल (अ.स.) यूशा बिन नून (अ.स.) इलयास (अ.स.) लुक़मान

(अ.स.) दाऊद (अ.स.) सुलेमान (अ.स.) शेया (अ.स.) हैकूक (अ.स.) ज़करिया  
(अ.स.) यहीया (अ.स.) अरनिया (अ.स.) दानियाल (अ.स.) अजीर (अ.स.) ईसा  
(अ.स.) और खिज़र (अ.स.) वगैरा के मोतबर व मुस्तिनिद हालात और उनके दौर  
के वाकियात पूरी तफ़सील के साथ जलवा गर हैं। खास बात यह है कि तारीख़ की  
दीगर किताबों की तरह जनाबे फ़रोग काज़मी की यह किताब सिर्फ़ पैगम्बरे  
इस्लाम (स.अ.व.व.) के हालात व वाकियात तक ही महदूद नहीं है बल्कि यह  
तमाम आइम्मा ए अतहार (अ.स.) के हालात से गुज़र कर हज़रत वलीउल अस्त्र  
अज्जलल्लाह फ़राजा के वाकियात पर तमाम हुई है। इस तरह कारेईने कराम को  
एक ही किताब में आदम (अ.स.) से इमामे अस्त्र (अ.स.) तक तमाम हालात मिल  
जायेंगे।

दर हकीकत मोहकिके बसीर जनाब फ़रोग काज़मी का यह वह कलमी कारनामा  
है जो मिल्लते इस्लामिया के लिये बहुत ज़रूरी था। तफ़सीरे इस्लाम के उन्वान से  
यह किताब यकीनन क़ौम के अहम तकाज़ों को किसी हद तक पूरा कर सकेगी  
और मोअल्लिफ़ की तरफ़ से आलमे इस्लाम खुसूसन मिल्लते जाफ़रिया के लिये  
एक गिरां क़द्र तोहफ़ा साबित होगी। मेरी दुआ है कि परवरदिगारे आलम मौलूफ़  
मौसूफ़ की इस मेहनत को कुबूल फ़रमाये और उन्हें अजरे अज़ीम अता करे। मेरी  
नज़र में जनाबे फ़रोग काज़मी मुबारकबाद के साथ मुकम्मल तौर पर हौसला



अफ़ज़यी के भी मुस्तहक़ हैं। अल्लाह करे ज़ोरे क़लम और ज़्यादा। फ़कीर दरे आले  
मोहम्मद (अ.स.) (सैय्यद ज़ाहेद अहमद रिज़वी)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्हम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन वस सलातो वस्सलामो अला सय्यदिल  
अम्बिया ए वल मुरसलीन मोहम्मदिव व आलहित तय्येबीनत ताहेरीन

## इस्लाम और तौहीद

अमीरूल मोमेनीन हज़रत अली इब्ने अबी तालिब (अ.स.) ने फ़रमाया तमाम  
हम्द उस ख़ुदा के लिये है जिसकी मदह तक बोलने वालों की रसाई नहीं जिसकी  
नियामतों को गिनने वाले गिन नहीं सकते न कोशिश करने वाले उस का हक़ अदा  
कर सकते हैं न बलन्द परवाज़ उसे पा सकते हैं न अक़लो फ़हम की गहराईयां उस  
की तह तक पहुँच सकती है उसके कमालो ज़ात की कोई हद मुअय्यन नहीं न  
उसके लिये तौसीफ़ी अल्फ़ाज़ है न उसकी इब्तेदा के लिये कोई वक्त है जिसे शुमार  
में लाया जा सके न उसकी कोई मुद्दत है जो कहीं पर ख़त्म हो सके।

‘ ‘ दीन की इब्तेदा उसकी मारेफ़त है कमाले मारेफ़त उसकी तस्दीक़ है  
कमाले तस्दीक़ तौहीद है कमाले तौहीद तनज़ियाओ एख़लास है और कमाले  
तनज़ियाओ एख़लास यह है कि उस से सिफ़तों की नफ़ी की जाए क्यों कि हर

सिफ़त शाहिद है कि वह अपने मौसूफ़ की गैर है और हर मौसूफ़ शाहिद है कि वह सिफ़त के अलावा कोई चीज़ है लिहाज़ा जिसने ज़ाते इलाही के अलावा सिफ़ात माने उसने ज़ात का एक दूसरा साथी मान लिया और जिसने ज़ात का दूसरा साथी माना उसने दुई पैदा की, जिसने दुई पैदा की उसने जुज बना डाला और जो उसके लिये अजज़ा का कायल हुआ वह उससे बे खबर रहा। ”

इस्लाम क्या है?

‘ ‘ इस्लाम एक ऐसा दीन है जिसकी असासा ओ बुनियाद हक़ व सदाक़त पर कायम है यह उलूम और मारेफ़त का एक ऐसा चश्मा है जो अक़लों दानिश के दरियाओं को ज़ौलानियां अता करता है ऐसा चिराग़ जिससे मोताद्दित चिराग़ रौशन होते हैं एक ऐसा मनारा ए नूर है जो अल्लाह की राह को रौशन व मुनव्वर करता है। यह उसूलों और अक़ाएद का ऐसा मजमूआ है जो हक़ व सदाक़त के हर मुतलाशी को सुकून और इतमिनान बख़शता है अल्लाह ने इस्लाम को ही अपनी खुश्रूदी का ज़रिया और एताअत व इबादत का बलन्द तरीन मेयार करार दिया है। इस्लाम ने तमाम मुसलमानों को बिला तफ़रीक़ आला एहकाम, बलन्द उसूलों मोहकम दलायल और नाक़ाबिल और नाक़ाबिले तरदीद तफ़व्वुक़ से नवाज़ा है। अब मुसलमानों का फ़र्ज़ है कि शानो अज़मत को कायम रखे उस पर पुरखुलूस दिल से अमल करें उसके मोतक़ेदात से इन्साफ़ करें इसके अहकाम की सही तौर पर तामील करें और अपनी जिन्दगियों में इसे मुनासिब मुक़ाम दे। ”

## इस्लाम

इस्लाम इन्सान को एताअत एबादत और खुदा शिनासी की दावत देता है अगर जहने इन्सान किसी माबूद के तसव्वुर से खाली हो तो न एताअत का सवाल होता है न एबादत ओ रेयाजत का और न किसी आईन (शरिअत) की पाबन्दी का क्यों कि जब कोई मंज़िल ही सामने न होगी तो मन्ज़िल की तरफ़ बढ़ने के क्या माअनी? और जब कोई मक़सद ही पेशे नज़र न होगा तो उसके लिये दग व दौ करने का क्या मतलब? अल बता जब इन्सान की अक़ल व फ़ितरत उसका रिश्ता किसी माफ़ौक़ल फ़ितरत ताक़त से जोड़ देती है और उसके ज़ौके परसतारी व जज़्बाए उबूदियत उसको किसी माबूद की तरफ़ झुका देता है तो वह मनमानी करने के बजाए अपनी ज़िन्दगी को मुख्तलिफ़ क़िस्मों की पाबन्दियों की ज़न्जीरों में जकड़ा हुआ महसूस करने लगता है। इन्ही पाबन्दियों का नाम दीन है जिसका आगाज़ खुदा की मारेफ़त और उसका एतराफ़ है और इसके भी मुख्तलिफ़ मदरिज हैं।

## पहला दरजा

यह है कि फ़ितरत के विजदानी एहसास और ज़मीर की रहनुमाइ से या एहले मज़हब और उलेमा की ज़बान से सुनकर इस अन देखी हस्ती का तसव्वुर ज़हन में पैदा हो जाए जो खुदा कही जाती है। यह तसव्वुर दर हक़ीक़त फिकरो नज़र की जिम्मेदारी और तहसीली मारेफ़त का हुक्म आयद होने का अक़लन पेश खेमा है

लेकिन तसाहुल पसन्द और माहौल के दबाव में असीर हसतियां इस तसव्वुर के पैदा होने के बावजूद तलब की ज़हमत गवारा नहीं करती इस लिये वह तसव्वुर तस्दीक की शकल एख्तेयार नहीं करता और वह मारेफ़त से महरूम हो जाती है और इस महरूमी पर वह मवाख़जा की मुस्तेहक़ हो जाती है लेकिन जो शख़्स इस तसव्वुर की तहरीक से मुतास्सिर हो कर क़दम आगे बढ़ाता है और उस पर ग़ौरो फ़िक्र ज़रूरी समझता है इस लिये दूसरी मंज़िल फ़हमो इदराक की होती है।

## दूसरा दरजा

इदराक और फ़हम का यह है कि मख़लूक़ात मसनूआत और कायनात की नैरंगियों से खल्लाके आलम का पता लगाया जाय क्यों कि हर नक्श नक्काश के वजूद पर और हर असर मोअस्सिर की कारफ़रमाइ पर एक ठोस और बेलचक दलील है चुनान्चे इन्सान जब अपने गिर्दों पेश का जायज़ा लेता है तो उसे कोई ऐसी चीज़ दिखाई नहीं देती जो किसी साने की कारफ़रमाइ के बग़ैर आलामे वजूद में आ गई हो यहां तक कि कोई नक्शे क़दम बग़ैर राहरू के और कोई इमारत बग़ैर मेमार के खड़ी होते नहीं देखता तो वह क्यों कर यह बावर कर सकता है कि यह नीलगूं आसमान और इसकी पहनाइयों में आफ़ताब व महताब की तजल्लियां और यह ज़मीन और उसकी वसअतों में सबज़ा व गुल की रानाईयां बग़ैर किसी साने की सनअत तराज़ी के मौजूद हो गई होंगी लेहाज़ा मौजूदाते आलम और नज़मो कायनात के देखने के बाद कोई इन्सान इस नतीजे तक पहुँचने से अपने

दिल और दिमाग को नहीं रोक सकता कि इस जहाने रंग और बूका कोई बनाने और सवारने वाला है।

## तीसरा दरजा

यह कि इस माबूद का इकरार वहदत के एतराफ़ के साथ हो बगैर इसके खुदा की तस्दीक़ मुकम्मल नहीं हो सकती क्यों कि जिस खुदा के साथ और भी खुदा माने जायेंगे वह एक नहीं होगा और खुदा के लिये एक होना ज़रूरी है क्यों कि एक से ज़्यादा होने पर यह सवाल पैदा होगा कि इस कायनात को एक ने खल्क किया है या कई खुदाओं ने मिलकर पैदा किया है और अगर एक ही ने खल्क किया है तो उसमें कोई खुसूसियत होना चाहिये वरना इस एक को बवजह तरजी होगी जो अक्लन बातिल है और अगर मुख्तलिफ़ खुदाओं ने मिल कर बनाया है तो दो हाल से खाली नहीं या तो वह दूसरों की मदद के बगैर अपने उमूर की अन्जाम देही न कर सकता होगा या उसकी शिरकत व तावुन से बेनियाज़ होगा पहली सूरत में उसका मोहताज व दस्त नगर होना और दूसरी सूरत में एक फेल के लिये कई मुस्तक़िल फ़ाएलों का कारफ़रमा होना लाज़िम आयगा और यह दोनों सूरतें अपने मुक़ाम पर बातिल की जा चुकी हैं और अगर यह फ़रज़ किया जाए कि सारे खुदाओं ने तमाम मौजूदात को आपस में बांट कर बक़दरे हिस्सा व बक़दरे जुस्सा ईजाद किया है तो इस सूरत में तमाम मम्लूकात के हर वाजिबुल वजूद से यक्सा निस्बत न रहेंगी बल्कि अपने सिर्फ़ बनाने वाले से ही निस्बत होगी हालांकि

हर वाजिब को हर मुम्किन से और हर मुम्किन को हर वाजिब से यकसां निस्बत होना चाहिये क्यों कि तमाम मुम्किनात असरपज़ीरी में और तमाम वाजिबुल वजूद असर अन्दाज़ी में एक से माने गये हैं तो अब उसे एक माने बग़ैर कोई चारा नहीं है क्यों कि मुताअदिद खालिकों के मानने की सूरत में किसी चीज़ के मौजूद होने की गुंजाइश ही बाकी नहीं रहती और ज़मीन और आसमान नीज़ कायनात की हर शै की तबाही बरबादी ज़रूरी करार पाती है। खुदा वन्दे आलम ने इस दलील को कुरआने मजीद में इन लफ़्ज़ों में पेश किया है :- “ लव काना फी हेमा इलाहातो इल्लाहे ले फ़सादता ” अगर ज़मीनों आसमान में अल्लाह के अलावा और भी खुदा होते तो यह ज़मीनों आसमान दानों तबाह और बरबाद हो जाते।

### चौथा दरजा

यह है कि खुदा को हर नुक्साओ ऐब से पाक समझा जाए और जिस्मो जिस्मानियात, शक्ल व सूरत तमसीलो तशबीह मकान व ज़मान हरकत व सुकून और इज्ज व जेहेल से मुनज़्जा माना जाए क्यों कि इस बाकमाल व बे ऐब ज़ात में न किसी नुक्स का गुज़र हो सकता है न उसके दामन पर किसी ऐब का धब्बा उभर सकता है और उसको न किसी के मिस्ल व मानिन्द ठहराया जा सकता है क्यों कि यह तमाम चीज़े वुजूब की बलन्दियों से उतार कर मकान की पस्तियां में आने वाले हैं चुनान्चे कुदरत ने तौहीद के पहलू ब पहलू अपनी तनज़ीह ओ तकदीस को जगह दी है।

1. कुल होवलाहो अहद अल्ला हुस्समद लम यलिद वल यूलद वलम या कुल्लहू कोफ़ोवन आहद।

कह दो अल्लाह यगाना है, उसकी ज़ात बे नियाज़ है, न उसकी कोई औलाद है न वह किसी की औलाद है, और न उसका कोई हम पल्ला है।

2. उसको निगाहें देख नहीं सकती अलबत्ता वह निगाहों को देख रहा है और वह हर शै से आगाह और बा खबर है।

3. अल्लाह के लिये मिसाले न गढ़ो बे शक अस्ल हकीकत को अल्लाह जानता है।

4. लैसा कमिस्लेही व हुआ समीउल बसीर।

कोई चीज़ उसके मानिन्द नहीं है वह सुनता भी है और देखता भी है।

## पांचवा दरजा

वह है जिससे मारेफ़त मुकम्मिल होती है कि उसकी ज़ात में सिफ़ात को अलग से न सिमोया जाए कि ज़ाते अहदियत में दोड़ की झलक पैदा हो जाए और तौहीद अपने सही मफ़हूम को खो कर एक तीन और तीन एक के चक्कर में पड़ जाए क्यों कि उसकी ज़ात जौहर ओ अर्ज़ का मजमुआ नहीं कि उसमें सनअतें इस तरह कायम हो जिस तरह फूल में खुशबू और सितारों में चमक बल्कि उसकी ज़ात खुद तमाम सिफ़तों का सर चश्मा है और वह अपने कमालो ज़ात के इजहार के लिये किसी तवस्सुत की मोहताज नहीं अगर उसे आलिम कहा जाता है तो इस बिना पर

कि उसके इल्म के आसार नुमाया हैं और अगर उसे कादिर कहा जाता है तो इस लिये कि कायनात का हर ज़र्ज़ा उसकी कुदरत व कारफ़रमाई का पता दे रहा है और समी व बसीर कहा जाता है तो इस वजह से कि कायनात की शिराज़ा बन्दी और मखलूकात की चारासाज़ी देखे और सुने बग़ैर नहीं हो सकती मगर उन सिफ़तो की नमूद उसकी ज़ात में इस तरह नहीं ठहराई जा सकती जिस तरह मुम्किननात में है कि उसमें इल्म आए तो आलिम हो हाथ पैरों में तवानाई आए तो वह कादिर व तवाना हो क्यों कि सिफ़त को ज़ात से अलग मानने का लाज़मी नतीजा दुइ है और जहां दुई का तसव्वुर हुआ तो तौहीद का अक्रीदा रूख़सत हुआ।

इस लिये अमीरूल मोमेनीन (अ.स.) ने ज़ाएद बरज़ात सिफ़ात की नफ़ी फ़रमा कर तौहीद के ख़द व ख़ाल से आशना फ़रमाया है और दामने वहदत को कसरत के धब्बों से बदनुमा नहीं होने दिया इससे यह मुराद नहीं कि उसके लिये कोई सिफ़त तजवीज़ ही नहीं की जा सकती कि उन लोगों की मसलक की ताइद हो जो सुलबी तसवुरात तसवीरात के भयानक अंधेरो में ठोकर खा रहे हैं हालांकि कायनात का गोशा गोशा उसकी सिफ़तों के आसार से छलक रहा है और मखलूकात का ज़र्ज़ा ज़र्ज़ा गवाही दे रहा है कि वह जानने वाला है कुदरत वाला है सुनने और देखने वाला है और अपने दामने रूबूवियत में पालने वाला और साया ए रहमत में परवान चढ़ाने वाला है मक़सद यह है कि उसकी ज़ात में अलग से कोई चीज़ तजवीज़ नहीं की जा सकती कि उसे सिफ़त से ताबीर करना सही हो क्यों कि जो ज़ात है



वही सिफ़ात है और जो सिफ़ात है वहीं ज़ात है इसी मतलब को इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) की ज़बान फ़ैज़ तरजुमान से सुनिये और फिर मज़ाहिबे आलम के अक़ीदा ए तौहीद को इसकी रौशनी में देखिये और परखिये कि तौहीद के सही मफ़हूम से रूशिनास करने वाली शख़िसियत कौन थे? आप फ़रमाते हैं :-

हमारा खुदा ए बुजुर्ग हमेशा से इल्म आलिम रहा हालांकि मालूम अभी अदम के परदे में था और ऐन समी व बसीर रहा लाहांकि किसी आवाज़ की गूँज बलन्द थी न कोई दिखाई देने वाली चीज़ थी और ऐन कादिर रहा हालांकि कुदरत के असरात को कुबूल करने वाली कोई शै न थी फिर जब उसने उन चिज़ों को पैदा किया और मालूम का वजूद हुआ तो उसका इल्म मालूमात पर पूरी तरह मुनतबिक़ हुआ और मक़दूर के ताआलुक से उसकी कुदरत नुमायां हुई।

यह वह अक़ीदा है जिस पर आईमा ए अहलेबैत का इजमा है मगर सवादे आजम ने इसके ख़िलाफ़ दूसरा रास्ता इख़तेयार किया है और ज़ात व सिफ़ात में आलहेदगी का तसव्वुर पैदा कर दिया है चुनान्चे शहरिस्तानी तहरीर फ़रमाते हैं :- अबूल हसन अशतरी कहते हैं कि अल्लाह कुदरत, हयात, इरादा, कलाम और समाओ बसर के ज़रिये आलिम, कादिर, जिन्दा मुरीद, मुताकल्लिम और समी व बसीर है।

अगर सिफ़तों को इस तरह ज़ाएद बरज़ात माना जाएगा तो दो उमूर से ख़ाली नहीं या तो यह सिफ़तें हमेशा से उसमें होगी या बाद में तारी हुई होगी। पहली

सूरत में जितनी इसकी सिफ़तें मानी जायेंगी उतने ही क़दीम और मानना पड़ेंगे जो क़दामत में उसी के शरीक होगी और दूसरी सूरत में उसकी ज़ात को महले हवादिस करार देने के अलावा यह लाज़िम आएगा कि वह इन सिफ़तों के पैदा होने से पहले न आलिम हो न क़ादिर हो न समी हो और न बसीर। यह अक़ीदा बुनियादी तौर पर इस्लाम के ख़िलाफ़ है।

अमीरूल मोमेनीन (अ.स.) ने एक दूसरे ख़ुत्बे में मिल्लतें मुसलेमा को नसीहत करते हुए इस्लाम और तौहीद के बारे में इरशाद फ़रमाया :-

में तुम्हें उस अल्लाह से डरने की नसीहत करता हूं कि जिसने तुम्हें पैदा किया और जिसकी तरफ़ तुम्हें पलटना है वही तुम्हारा कामरानियों का ज़रिया और तुम्हारी आरज़ुओं की आख़री मंज़िल है तुम्हारी राहे हक़ उसी से वाबस्ता है और वही ख़ौफ़ व हिरास के लिये तुम्हारे लिये पनाहगाह है।

दिल में अल्लाह को ख़ौफ़ रखो क्यां कि यह तुम्हारे दिलों के रोग का चारा फ़िक्र व शऊर की तारीकियों के लिये उजाला है जिसमों की बिमारी के लिये शिफ़ा सीनों की तबाहकारियों के लिये इस्लाह नफ़स की कसाफ़तों के लिये पाकीज़गी आंखों की तीरगी के लिये नूर दहशत के लिये ढारस और जिहालत के अंधेरों के लिये रोशनी है। सिर्फ़ ज़ाहिरी तौर पर अल्लाह की इताअत का जामा न ओढ़ो बल्कि उसे अपना अन्दरूनी पहनावा बनाओ न सिर्फ़ अन्दरूनी पहनावा बल्कि ऐसा करो कि वह तुम्हारे बातिन में उतर जाए और दिल में रच बस जाए और उसे अपने मामलात

पर हुक्मरान हश्र पर वारिद होने के बाद मन्जिले मकसूद तक पहुँचने का वसीला, खौफ़ के दिन के लिये सिपर, क़ब्र के लिये चिराग़, तनहाई की तवील वहशत के लिये हमनवा व दमसाज़ और मंज़िल की अन्दोहनाकियों से रिहाई का ज़रिया करार दो क्यों कि खुदा की इताअत, मसाअबो आलाम, खौफ़ो दहशत और भडकती हुई आग के शोलों से बचाती है। जो तक़वा को मज़बूती से पकड़ लेता है तो मुसीबतें उसके करीब होते हुए भी दूर हो जाती हैं। तमाम उमूर तल्ख़ी व बदमज़गी के बावजूद शीरी हो जाते हैं। तबाही व हलाकत की मौजें हुजूम करने के बाद छट जाती हैं और दुश्चारियां सख़्तियों में मुबतेला करने के बाद आसान हो जाती हैं। क्रहत और नायाबी के बाद लुत्फ़ व करम की झड़ी लग जाती है, रहमत बरग़शाता होने के बाद फिर झुक पड़ती है।

‘ ‘ उस खुदा से डरो, कि जिसने पन्दोमोआजेमत से तुम्हें फ़ाएदा पहुँचाया, अपने पैग़ाम के ज़रिये वाज़ो नसीहत की, अपनी नेअमतों से तुम पर लुत्फ़ व एहसान किया उसकी बन्दगी और नियाज़मन्दी के लिये अपने नफ़सो को पाक करो, उसकी फ़रमाबरदारी का पूरा पूरा हक़ अदा करो। ’ ’

‘ ‘ इस्लाम ही वह दीन है जिसे अल्लाह ने अपने पहचनवाने के लिये पसन्द किया, अपनी नज़रों के सामने उसकी देख भाल की, उसकी तबलीग़ के वास्ते बेहतरीन ख़लाएक को अन्जाम फ़रमाया, अपनी मोहब्बत पर उसके सुतून खड़े किये, उसकी बरतरी की वजह से तमाम दीनों को सरनिगू किया और उसकी

बलन्दी के सामने सब मिल्लतों को पस्त किया। उसकी इज़्जत, अज़मत और बुजुर्गी के ज़रिये दुश्मनों को ज़लील और उसकी नुसरत और ताईद से मुखालेफ़ीन को रूसवा किया, उसके सुतून से गुमराही के खम्बों के गिरा दिया। प्यासों को उसी के दरियाओं से सेराब किया और पानी उलचने वालों के ज़रिये हौजों को भर दिया फिर उसे इस तरह मज़बूत किया कि इसके बन्धनों से शिकस्तो रेख्त नहीं न उसके हुक्क की कड़ियां एक दूसरे से अलग हो सकती हैं न उसके क़वानीन महो हो सकते हैं, न उसके सफ़ेद दामन पर स्याही का धब्बा उभर सकता है, न उसकी इस्तेक्रामत में पेंचोखम पैदा हो सकते हैं न उसकी कुशादा राहों में कोई दुश्धारियां हैं, न उसके चिराग़ गुल हो सकते हैं, न उसकी खुशगवारियों में तल्ख़ि का गुजर होता है इस्लाम ऐसे सुतूनों पर हावी है जिसके पाए अल्लाह ने हक़ की सरज़मीन पर कायम किये हैं और उनकी असासा व बुनियाद को इस्तेहक़म बख़्श है। अल्लाह ने इस्लाम में अपनी इन्तेहाइ रज़ामन्दी, बलन्दतरीन अरकान अपनी एताअत की ऊंची सतह को करार दिया है चुनान्चे अल्लाह के नज़दीक इसके सुतून मुस्तहक़म, उसकी इमारत सरबलन्द, उसकी दलील रौशन, उसकी ज़ियाए नूरपाश और उसकी सलतनत ग़ालिब है जिसकी बीखकनी दुश्धार है, उसकी इज़्जत व विकार को बाकी रखो, उसके एहक़ाम की पैरवी करो, उसके हुक्क अदा करो और उसके हर हुक़म को उसकी जगह पर कायम करो। ” (माख़ुज अज़ नहजुल बलागा)

अमीरूल मोमेनीन हजरत अली इब्ने अबी तालिब (अ.स.) के अक़वाल व नसायह की रौशनी में तौहीद का जो हकीकी तसव्वुर निगाहे इन्सानी में उभरता है वह यह कि खुदा क़दीम है यानि हमेशा से है और हमेशा रहेगा। खुदा क़ादिर है यानि हर चीज़ पर कुदरत रखता है। खुदा आलिम है यानि हर चीज़ का जानने वाला है। खुदा बसीर है यानि कोई ज़ाहिर व बातिन उससे मख़फ़ी नहीं है हालांकि वह आंख व कान वगैरा नहीं रखता, खुदा मुताकल्लिम है यानि जिस चीज़ में चाहे कुव्वते गोयाई पैदा कर दे जैसे कि उसने दरख़्त मक़े आवाज़ पैदा कर दी जो मूसा (अ.स.) से बातें करता था या पत्थर के संग रेज़ों से तकल्लुम पैदा कर दिया जो रसूल (स.अ.व.व.) की रिसालत की गवाही देने लगे। खुदा सादिक़ है यानि उसका कलाम सच्चा और दुरूस्त है। खुदा लाशरीक़ है वह अपनी ज़ात में किसी को शरीक़ नहीं करता। खुदा मुरक्क़ब नहीं यानि वह जिस्म व अरज़ और जौहर से नहीं बना। खुदा ला मकान है यानि वह कोई मकान व मुक़ाम नहीं रखता बल्कि अपनी कुदरते कामिला से हर जगह और हर शै में मौजूद है खुदा की ज़ात में हुलूल नहीं खुदा हर ऐब से बरी और पाक व साफ़ है खुदा को कोई देख नहीं सकता न दुनियां में और न उक़बा में। खुदा बड़ा आदिल और इंसाफ़ करने वाला है और वह किसी उमूर में किसी का मोहताज नहीं है। खुदा ज़ालिम व जाबिर नहीं है यानि वह अपने बन्दों पर ज़ुल्म व ज़ब्र नहीं करता और खुदा जिस्मो जिस्मानियत से मुबर्रा है।

कुरआन भी कहता है कि खुदा शकल व सूरत, जिन्स व जिस्म और तशबीह व हदबन्दी के तसव्वुर से पाक है आखें उसे देख नहीं सकतीं। चुनान्चे मूसा (अ.स.) ने जब दीदार की ख्वाहिश जाहिर की तो इरशाद हुआ कि तुम मुझे देख नहीं सकते।

अफ़सोस है कि अमवी दौर के इक़तेदार परस्त उलेमा के एक मख़सूस गिरोह ने अली (अ.स.) की दुश्मनी और अदावत में वहदानियत के इस हकीकी तसव्वुर को यह कर पामाल कर दिया कि खुदावन्दे आलम अपनी मख़लूक के सामने जलवा अफ़रोज़ होगा और लोग उसे चौदहवी के चांद की तरह देखेंगे<sup>3</sup>। खुदा हर शबे जुमा आसमान से ज़मीन पर उतरता है और दुनियां की सैर करता है<sup>4</sup>। खुदा (हश्र के दिन) जहन्नुम में अपना पैर डाल देगा और वह भर जाएगा<sup>5</sup>। वह अपनी पिन्डली खोल कर देखेगा ताकि मोमेनीन इसे पहचान लें। वह हंसता है तो खुद हैरत में पड़ जाता है। खुदा के दो हाथ दो पैर और पांच उंगलियां हैं पहली उंगली आसमानों पर, दूसरी ज़मीनों पर, तीसरी दरख्तों पर चौथी पानी पर, और पांचवी तमाम मख़लूकात पर रखी हुई है। खुदा अर्श पर बैठा हुआ है और उसका जिस्म चार चार उंगल अर्श से बाहर निकला हुआ है और वह इस क़दर भारी व भरकम है कि उसके बोझ से अर्श चुर चुर करता है। हज़रत अबू बक्र बिन क़हाफ़ा का क़ौल है कि खुदा के ही हुक्म से इंसान जिना का मुरतकिब होता है। मौलवी शिब्ली नौमानी ने भी अपनी किताब इल्मे अहकाम में तहरीर फ़रमाया है कि इंसान को अपने

अफ़आल पर कुदरत नहीं है खुदा ही इंसान से नेकी भी कराता है और बदी की तरगीब भी देता है।

यही वह इक़वाल व हदीसों हैं जिन से बिरादराने अहले सुन्नत खुदा की रोयेत पर इस्तेदलाल करते हैं और उन अक़वाल व हदीसों की हक़ीक़त यह है कि उन्हें सहाबा के दौर में गढ़ा गया है। काबुल अहबार जो यहूदी था और उमर बिन खत्ताब के अहद में मुसलमान हुआ उसने यहूदी मोतेकादात को बाज़ मफ़क़दुल अक़ल रवायतों मसलन अबू हुरैरा और वहब बिन मबता के ज़रिये से इस्लाम में दाखिल कर दिया।

बुखारी व मुस्लिम में ज़्यादातर रवायतें अबू हुरैरा से मरवी हैं जो हदीसे नबवी और काबुल अहबार की हदीसों में तमीज़ नहीं रख पाते थे चुनान्चे उन्हें एक मरतबा उमर बिन खत्ताब ने महज़ इसी बात पर मारा कि वह यह हदीस बयान किया करते थे कि ज़मीन और आसमान को अल्लाह ने सात रोज़ में खल्क किया है।

यकीनन वहदहू ला शरीक से मुताअल्लिक यह मज़हक़ ख़ेज तसव्वुर खुदा की वहदानियत अज़मत व जलालत का मज़ाक उड़ाने के मुत रादिफ़ है। इस ग़लत और बातिल अक़ीदे से मुसलमानों को गुरेज़ करना चाहिये ताकि आख़ेरत में शरमिन्दगी और निदामत का सामना न हो और उस खुदा पर ईमान रखना चाहिये जो मख़लूक़ात की मुशाबेहत से बालातर, तौसीफ़ करने वालों के तौसीफी कलेमात

से बलन्दतर, अपने अजीब नजमो नस्क की बदौलत देखने वालों के लिये सामने आशकारा और अपने जलालो अजमत की वजह से वहमो गुमान और फिक्रो आहाम की नज़रो से पोशीदा है। जो आलिम है बगैर उसके कि किसी से कुछ मालूम करे जो हर चीज़ जानने वाला है बगैर उसके किसी से कुछ पूछे न उसपे रात की तारीकियां मुहीत होती है और न वह दिन की रौशनी से क़स्बे ज़िया करता है।

## इब्तेदाए आफ़रीनश और अहदे मिसाक़

न ज़मीन का खाकी फ़र्श था न आसमान का नीलगू शामियाना न आफ़ताब की ज़िया बारियां थी न माहो अन्जुम की नूर पाशिया न फ़िज़ाओं की सर गोशियां थीं न हवाओं की सर मस्तियां न पहाड़ों की सर बलन्दियां थीं न सर सबज़ाओं शादाब घाटियां न ठहरे हुए समन्दर थे न बहते हुए दरिया न तायरों की खुशनवाइयां थीं न दरिन्दों की बज़म आराइयां, न दिन का उजाला था न रात का अन्धेरा गर्ज के कुछ न था फ़क़त एक खुदा की ज़ात थी जो बेनियाज़ी के आलम में अपने अनवारे समदिया से अपने कमाल और जमाल का मुशाहेदा कर रही थी।

फिरएरादए कुदरत से एक जौहरे नूर पैदा हुआ जिसके हिसार मे अनवार के तेरह मुक्क़े और चमक रहे थे। इन्हीं अनवारे ताहिरा की बदौलत आदम की हमागीर ज़ुलमते वुजूद की सलाहियतो से जगमगा उठी।



अल्लामाए कुस्तेलानी का कहना है कि जब परवरदिगारे मखलूक़ात की ईजाद का इरादा किया तो नूरे मौहोम्मदी को अपने अनवारे समदियां से खल्क़ फ़रमाया ऐ जाबिर इब्ने अन्सारी से रिवायत है कि मैंने हज़रत रसुलल्लाह से पूछा कि या रसुल्लाह सबसे पहले खुदा ने किस चीज़ को खल्क़ फ़रमाया। हज़रत ने जवाब दिया कि सबसे पहले खुदा ने तेरे नबी के नूर को अपने नूर से खल्क़ फ़रमाया। अल्लामा मसूदी ने मुरव्वजुज जंहब मे हज़रत अली ;अणसद्ध से रिवायत की हैं कि जब अल्लाह ने तकदीरे मखलूक़ात और आफ़रीनश की खिलक़त का इरादा किया तो आसमान और ज़मीन की पैदाइश से कब्ल अपने नूर से एक शोलाए नूर को पैदा किया जो हमारे रसूल हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.अ.व.व.) की शक़ल में पैदा हुआ।

यनाबेउल मोअदहत और कोकबदुरी वगैरा में हज़रत रसूले खुदा (स.अ.व.व.) से मरवी है कि मेरा और अली का नूर एक था जो खिलक़ते आदम (अ.स.) से चौदह हज़ार साल कब्ल खुदा की बारगाह में ताअत व तकदीस करता था यहां तक कि आदम की खिलक़त हुई और खल्लाके कायनात ने इस नूर को उनके सुल्ब में रखा फिर वही नूर एक नबी के सुल्ब से दूसरे नबी के सुल्ब में मुन्तक़िल होता हुआ अब्दुल मुत्तलिब के सुल्ब में आया उसके बाद खुदा ने इस नूर को दो हिस्सों में तकसीम कर दिया, इस तरह कि मेरा हिस्सा अब्दुल्लाह के सुल्ब में और अली का हिस्सा अबू तालिब के सुल्ब में ठहरा पस अली मुझसे और मैं अली से हूँ। हज़रत

अली (अ.स.) से भी यही रिवायत है कि खुदा ने हम अहलेबैत के नूर को हजरत आदम से चौदह हजार साल कब्ल खल्क फ़रमाया।

बहरहाल यह खल्लाके कायनात की पहली तखलीक थी कि उसने अपने नूर से अपने हबीब (स.अ.) और उसके वसी के नूर को खल्क फ़रमाया। उसूले काफ़ी में है कि खुदा ने अपने नूर से मोहम्मद (स.अ.व.व.) अली (अ.स.) और फ़ातिमा (स.अ.) के नूर को पैदा किया फिर यह लोग हज़ारों किरन ठहरे रहे, उसके बाद अल्लाह ने दुनियां की तमाम चीज़ों को खल्क किया, फिर इन मख्लूक़ात की तखलीक पर अम्बिया को शाहिद बनाया और एताअत और फ़रमाबरदारी इन (अम्बिया) पर फ़र्ज़ की।

हजरत उस्मान बिने अफ़ान ने हजरत उमर बिने ख़ताब से रिवायत की है कि अल्लाह तआला ने अपने फ़रिशतो को हजरत अली इब्ने अबि तालिब (अ.स.) के नूरे दहन से पैदा किया है। कुरआन मजीद का इरशाद है कि यह मशियते खुदा है इनका कोई क़ौल या अमल खुदा के हुक्म के बग़ैर नहीं होता यह वही करते हैं जो खुदा चाहता है।

इसके बाद मशियते परवरदिगार ने क़यामत तक पैदा होने वाली मख्लूक़ की रूहों को खल्क फ़रमाया और इन रूहों में से जुमला अम्बिया व मुरसलीन की अरवाहे मुकद्देसा को एक मरकज़ पर जमा कर के उनसे अपनी रूबूबियत और

पैगम्बरे आखेरूज्जमा की नबूवत पर इमान का अहद लिया। कुरआन में यह वाकिया यूं मज़कूर है :-

तरजुमा :- खुदा ने पैगम्बरों से इकरार लिया कि मैं तुम्हें जो किताब और हिक्मत दूँ उस पर अमल करना और अगर (तुम्हारी जिन्दगी में) तुम्हारे पास हमारा रसूल (मोहम्मद (स.अ.व.व.)) आए और वह तुम्हारी किताबों (और नबूवत) की तसदीक करे तो तुम उस पर ईमान ले आना और उसकी मदद करना। फिर दरयाफ्त किया कि क्या तुम ने इकरार कर लिया और मेरे अहद का बोझ उठा लिया? सब ने कहा हां ! हमने इकरार कर लिया, तो इरशाद हुआ कि अब तुम इस कौलो करार पर एक दूसरे के गवाह हो जाओ और देखो मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हुआ जाता हूँ।

मुफ़स्सेरीन ने कुरआन की आयत के बारे में अलग अलग तफ़्सीरों की हैं जिनका खुलासा यह है कि जन्नत से निकलने के 300 बरस बाद जब हज़रत आदम की तौबा कुबूल हुई तो उनकी पुश्त से तमाम रूहें निकाली गईं और उन से तीन तरह का वादा लिया गया। पहला यह कि तमाम इंसानों से कहा गया कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? सब ने जवाब दिया, बेशक तू हमारा रब है। दूसरा वादा आलिमों से लिया गया कि तुम अल्लाह के हुक्म की तबलीग करना और तीसरा वादा नबियों से लिया गया जिसका बयान ऊपर लिखी कुरआन की आयत में है। इस वादे और इकरार की तफ़्सीर में ंहें कि खुदा ने अम्बिया से फ़रमाया कि

अगर मैं तुम्हें किताब दे कर नबूवत का ताज तुम्हारे सर पर रख दूँ और मेरे बन्दे तुम्हारे उम्मती बन जायें और तुम्हारी नबूवत का आफ़ताब पूरी तरह चमक रहा हो और उस वक़्त मेरा हबीब तुम्हारे बीच में जलवा अफ़रोज़ हो तो तुम्हारा फ़र्ज़ होगा कि तुम उस पर इमान ले जाओ क्यों कि उसके आते ही तुम्हारे दीन और किताबें मन्सूख हो जायेंगी। बोलो क्या तुम्हें मन्ज़ूर है? जब तमाम नबियों ने इक़्रार कर लिया तो हुक्म हुआ कि अब तुम इस पर एक दूसरे के गवाह बन जाओ और देखो मैं भी तुम्हारे साथ गवाह बन जाता हूँ।

यह बात गौर करने की है कि खुदा ने अपनी रूबूबियत और नबी की नबूवत पर इमान का वादा लेते वक़्त, पैग़म्बरों के अलावा किसी को एक दूसरे का गवाह नहीं बनाया और न वह खुद किसी की गवाही में शामिल हुआ, आख़िर इसकी वजह क्या थी? इसे बस खुदा ही जाने, लेकिन यह कहना ग़लत न होगा कि परवरदिगारे आलम मुतलक़ है और उसके इल्म में यह बात थी कि आं हज़रत का ज़माना कोई नबी न पायेगा उसके बावजूद इक़्रार लिया जाना इस बात की दलील है कि यह वादा अम्बिया के गिरोह के लिये नबियों के गिरोह के लिये आख़िरी पैग़म्बर पर इमान की अलामत बन जाए। चुनान्चे हर नबी अपने इस अहद पर कायम रहा और शबे मेराज बैतुल मुक़द्दस में रसूल अल्लाह के पीछे नमाज़ पढ़ कर इस वायदे को पूरा और सच कर दिखाया। जैसा कि अबू हुरैरा से रिवायत है कि रसूलल्लाह ने फ़रमाया कि मेराज की शब हज़रत मूसा (अ.स.), इब्राहीम (अ.स.), ईसा

(अ.स.) के साथ तमाम अम्बिया बैतुल मुकद्दस में जमा हो गए यहां तक कि नमाज़ का वक़्त आया और मैं उनका इमाम हुआ।

पैग़म्बर ने फ़रमाया कि अल्लाह ने मुझसे कहा कि मैं मोहम्मद मैंने तमाम नबियों से अपनी रूबूबियत तेरी नबूवत और अली कि विलायत का इकरार लिया है। इमाम बाकिर (अ.स) ने फरमाया कि परवरदीगार ने हमारे शियों से अपनी रूबूबियत, रसूले खुदा की रिसालत और हमारी विलायत का इकरार लिया है। हज़रत अली का इरशाद कि खुदा ने कलमए कुन से एक नूर पैदा किया और उस नूर से मेरे भाई मोहम्मद को और मुझे, और मेरी जुरियत को खल्क फरमाया बस हमी नुरुल्लाह है. हमी रुहुल्लाह हैं और हम ही कलमतुल्लाह है। खुदा को मखलूक देख नहीं सकती मगर हमारी वजह से उसकी ज़ात व सिफात को समझ सकती है. फिर खुदा ने सारी अहद मेरे अहद मेरे भाई रसूले खुदा के साथ इस तरह लिया है कि हम एक दुसरे की मदद और नुसरत करते रहें, इसलिए मैंने आपकी मदद और नुसरत में कोताही नहीं की, कदम कदम पर आप के साथ रहा आप के दुश्मनों से जिहाद किया और उन्को क़त्ल किया। उस्मान बिन अफ़ान हज़रत उमर इब्ने खत्ताब से रवायत करते हैं कि अल्लाह ने अपने मलाएका और फरिशतों को अली इब्ने अबितालिब के नूर से खल्क फरमाया है।

ऐसी सूत्र में यह कहना ग़लत नहीं होगा कि जिस वक्त अम्बिया और मूरसलीन से अहद लिया जा रहा था उस वक्त उन के साथ उन के अहलेबैत भी हिजाब व अनवार के परदों में थे। और जिस वक्त आदम आबों-गिल के दरमियांन थे उस वक्त भी ये पाक हस्तियाँ इल्में लदुन्नी की मालिक थी और शायद यही वजह थी कि हज़रत अली ने दावा किया कि अगर मेरे लिए मसनदें कज़ा बिछा दी जाये और मैं उस पर बैठ जाऊँ तो तौरैत वालों के लिए तौरैत से, इन्जील वालों के लिए इन्जील से, ज़बूर वालों के लिए ज़बूर से और कुरान वालों के लिए कुरान से फैसला करूंगा-। और शायद इसीलिए आप ने मिम्बर से एलान किया ऐ लोगों, जो पुंछना चाहो पुछ लो इससे पहले कि मैं तुम्हारे बीच से उठ जाऊँ, खुदा की कसम मैं जमीन के रास्तों से ज्यादा आसमान के रास्तों को जानता हूँ, मेरे अन्दर तमाम इल्म बहरे ज़ख़ार की तरह मौजे मार रहे हैं मैं इसारे नबूवत का खजाना हूँ मैं गूजरे हुए लोगों के हालात जानता हूँ, और उन बातों को भी जानता हूँ, जो आइन्दा पेश आने वाली हैं, मुझसे किलाबे खुदा के बारे में सवाल करो खुदा की कसम कोई आयत ऐसी नहीं जिसके बारे में मुझे इल्म न हो कि दिन के उजाले में नाज़िल हुई या रात के अन्धेरे में पहाड़ पर नाज़िल हुई या मैदान में।

इन अक़वाल रवायात और आयात से ज़ाहिर होता है कि रोज़े अजल परवरदिगार ने अम्बिया से अपनी वहदानियत, नबी-ए-मुरसल की नबूवत और अली कि विलायत का इकरार लिया और जब वह इस इकरार की मन्ज़िल से गुजर

चुके तो उनके लिए मन्सबे नबूवत का इन्तेखाब हुआ, इस से जाहिर है कि अम्बिया के ईमान की अलामत की बूनियाद, अल्लाह की रूबूबियत, नबी की नबूवत, और अली की वलायत का इकरार है, इसमें कमी की कोई गुंजाईश नहीं है। अब मुस्लमानों को ये समझ लेना चाहिए कि इन तीनों चीजों में से किसी एक में भी कमी आ गयी तो ईमान नहीं रह सकता, और मुसलमान, मुसलमान नहीं रह सकता।

रुहों की खिलकत और अहद व पैमान के बाद माअदों की सूरतगरी हुई और इसके साथ ही खुदा वनदेआलम ने अपने इरादा-ए-कुदरत से कुशादा फैजाओं खलाई वसअतों की खल्क फरमाया और उन्हें हवा और पानी से भर दिया नीचें पानी की तुफानी लहरें थी और ऊपर हवा के तेज व तुन्द झोंकें, फिर यही हवा पानी के अन्दर चली और उसके सख्त थपेड़ों ने पानी को इल तरह मंथ दिया कि जैसे दही मथा जाता है इससे झाग और बुखारात पैदा हुए फिर यही झाग और बुखारात हवा के दोश पर वलन्द होकर फजाओं में मुहीत व मुन्जमिद हो गये जिन से सात आसमानों की तखलीक हुई। परवरदिगार ने आसमान के नीचले तबके को इस अन्दाज से ठहराया कि न सुतूनों की जरूरत पड़ी और न बन्धों की। फिर चाँद, सूरज, और सितारों की चमक दमक से उसे अरासता किया और सातों आसमानों के दरमियाँन खला पैदा करके उन्हें मलायक के वजूद से भर दिया।

यह मलायक तमाम माद्री कसाफतो से पाक और आलाइशों से बरी है। उन का काम सिर्फ अल्लाह की इबादत व इताअत हैं चुनानचें उनमें जो मलाएक सर ब सजूद वह सजदे से सर नही उठाते, जो रूक में है वह सीधे खड़े नही होते और जो क्रयाम में है वह अपनी जगह नही छोड़ते। न उन पर नींद तारी होती है न सुस्ती व काहिली का गलबा होता है. न उनमें भूल- चूक पैदा होती है और न यह सहो व निसयात का शिकार होते हैं उनमें कुछ वही-ए-इलाही के अमीन है जो अल्लाह का पैगाम ले कर रसूल की तरफ आते जाते है कुछ बन्देगाने खूदा के निगेहबान और जन्नत के पासबान हैं और कुछ वह हैं जिनके कदम मज़बूती से ज़मीन की तहों में जमें हुए हैं और उनकी निगाहें जलाले किबरियाई के सामने झुकी हुई है।

इन उमूर से फ़रागत के बाद, इरादाए कुदरत से मौजें मारते हुए पानी की सतह पर उसी के झाग से बालाई की तरह एक मोटी सी तह जमना शुरु हुई जिसने ज़मीन की शकल इख्तेयार की और जहां से यह तह जमना शुरु हुई उसका नाम मक्का है मगर चूँकि ज़मीन के नीचे पानी ही पानी था जो थपेड़ो पर थपेड़े मार रहा था इसी लिए वह मताहरिक थी उसे रोकने और मुनजमिद करने के लिए खुदा ने पहाड़ो को पैदा किया जिन की मेखे ज़मीन के सीनों में पैवस्त हो गयीं ताकि वह अपनी जगह से वह जुम्बिश न कर सकें। इन पहाड़ो से फिर पानी के चश्में फूटें जिन्हो ने आईन्दा खूशक ज़मीनों की सेराबी का इन्तेज़ाम किया और



जहां चश्मों का पानी नहीं पहुँच सकता था वहा के लिए बादल पैदा हुए जो पानी के जखीरे अपने साथ लेकर सफर करते हैं और खुशक मकामात को सेराब करते हैं।

चश्मो की आबयारी और बादलों की आबबारी से जमीन में नमूँ की कूच्चत पैदा हुई और फर्शे गेती पर सब्जा लहलहाने लगा, सरसब्ज व शादाब दरख्त झुमने लगे अब आलम में रंग बू की कमी न थी मगर दरियाओं की रवानी, समन्दरों का शोर और बादलों की गरज के अलावा इस दुनिया में कोई आवाज़ न थी। इस भयानक सन्नाटे को चहल पहल में बदलने के लिए कुदरत ने हैवानात को खल्क किया, यहां तक की चरीन्दों,परिन्दो,और दरिन्दों का जमघटा लग गया, लेकिन इस मखलूक में नज्म व जब्त का कोई शऊर न था और पुरी कारगाह डहकते शोलों और गरजते हुए दरिन्दो,और खौफ नाक भेड़ियों व अजदहों से महशरिस्तान बनी हुई थी। खुदा वन्दे आलम ने इसकी तन्जीमकारी के लिए आग से बनी हुई मखलूक जिनों को खल्क फरमाया लेकिन इस मखलूक ने नज्मों जब्त कायम करने के बजाए अपनी शोला मिजाजी की बदौलत रुए जमीन पर गैजो गजब की आग भडका दी और खुद ही बाहेमी खूरेंजी और जंग और जिदल में मस्रुफ हो गये और परवरदिगार की इताअत से मुहँ मोड़ कर उसके एहकामात की खिलाफवर्जी पर उतर आए। आखिर कार यह पूरी कौम कहरें इलाही का शिकार होकर फेना के घाट उतर गयी, बस वही रह गये जो अल्लाह की नज़र में रहमो करम के मुस्तहक थे,

उनमें से एक जो इन्तेहाई इबादत गूजार था अपनी इबादत और रियाज़त के नतीजे में इस तरह बचा कि उसे मलाएका की सफ़ों में जगह दे दी गयी उसका नाम इज़राइल था। जो बाद मे इबलीस और शैतान के नाम से मशहूर हुआ।

## अबुल बशर हज़रत आदम अ०.

बनी जान (कौमें जिन) की तबाही और बरबादी के बाद, एक रवायत और कौलें मुरसल के मुताबिक इस दुनिया की सरज़मीन 4000 साल तक सुन्सान, वीरान और गैर आबाद पड़ी रही। फिर मशियत की तरफ से मलाएका की सफों में यह एलान हुआ कि मैं ज़मीन पर अपना एक खलिफ़ा (नायब) मुकर्रर करने वाला हूँ। फरिशतें, जो जिन्नात का बाहमी कुशतों खून व इवरतनाक अन्जाम देख चुके थे, कहने लगे, माबूद क्या तू ऐसे को अपना खलीफा मुकर्रर करेगा जो ज़मान पर खुरेंजी और फसाद बरपा करे हांलाकि हम तेरी तसबीह और तकदीस करते हैं। जवाब मिला कि मेरी सारी हिकमते राज़ में है और जो कुछ मैं जानता हूँ वह तुम नहीं जानते। फ़रिशते खामोश हो गये।

दुबारा फिर एलान हुआ कि मैं मिट्टी से एक मक़सुस मखलूक (इन्सान) को पैदा करने वाला हूँ, और देखों जब मैं इसका पुतला तैयार कर के इसमें रुह दाखिल करू तो तुम उसके सामने अपनी अपनी पेशानियां सजदें में रख देना। इस ऐलान को भी तमाम मलाएका ने सुना और किसी ने इन्कार नहीं किया।

अब खालिक ने अपनी कुदरते खास के इन्तेज़ाम से नरम और सख्त शिरीं और शोराज़ार, हमवार व नाहमवार ज़मीन से मिट्टी जमा की और उसे पानी में इतना भिगोया कि वह साफ हो कर निथर गयी, और तरी से इतना गूँधा की उसमें

लस पैदा हो गया, और उससे एक ऐसा पैकर बनाया जिसमें जोड़ है, मोड़ है, आज्ञा है, और मुख्तलिफ हिस्से हैं, फिर उसे यहां तक सुखाया कि थम सकें और उसे यहां तक सुखाया कि वह खन्खनाने लगें। फिर एक वक्ते मुअय्यन और मुददतें मुकररा तक उसे यहीं रहने दिया, फिर उसमें रुह फूँकी तो वह ऐसे इन्सान की सूरत में उठ खड़ा हो गया जो कवाए ज़ेहनी तो हरकत देने वाला, फिकरी जौलानियों को बरुए कार लाने वाला, आज्ञा व जवारे से खिदमत लेने वाला, हाथों और पैरों को चलाने वाला, और एसी शिलाख्त का मालिक है जिसके ज़रिये वह हक व बातिल में तमीज़ कर सकें।

मुल्ला बाकिर मजलिसी अलैहिरहमा ने सै० इब्ने तारुस और उन्होने मुसफे इदरीस के हवाले से तहरीर फरमाया है कि एक शम्बे की सुबह को अल्लाह ताआला कि वह तीनतें आदम के अजज़ा को बाहम मखलूत करके खमीर करे, चुनांचे इस फरिश्ते ने 40 साल तक उस मिट्टी को गुँधा, फिर 40 साल में वह लसदार हुई, उसके बाद 40 साल ही हज़रत आदम का पुतला तैयार हुआ।

मज़क़रा रवायत से पता चलता है कि इन्सान के पैकरे खाकी मुद्दते तखलीक 120 बरस है। अब इस सजदे की मन्ज़िल मलाएका के सामने थी। जिसके लिए हज़रत आदम की खिलकत से कल्ब परवरदिगारे आलम की तरफ से ऐलान हो चुका था। चुनांचे बरोज़े जुमा खल्लाके आलम ने हज़रत आदम के पैकरे खाकी में अपनी पसन्दीदा रुह उन्हें एक जीते जागते और ब शऊर इन्सान की शकल में

फरिश्तों के सामने पेश कर दिया। हुक्मों खालिक के मुताबिक मलायका ने अपनी पेशानियाँ सजदें में रख दी लेकिन इबलिस ने यह कह कर इन्कार कर दिया कि मैं इस मखलूक को सजदा नहीं करूंगा, इस लिए की इसकी खिलकत मिट्टी से हुई है और मेरी खिलकत आग से, जो मिट्टी से बहरहाल अफ़ज़ल है, इबलिस का यह इस्तेक़बार, यह गुरूर और यह इन्कार ग़ज़बे इलाही का सबब बना और परवरदिगार ने उसे अपनी जवारे रहमत से और मलायका की सफ़ों से निकाल कर मरदूँ बारगाह करार दे दिया, जिसका नतीजा यह हुआ कि उसकी 4000 साल की इबादत व रियाज़त खाक में मिल गयी। इबलिस मलायका की सफ़ों से बाहर तो हो गया लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी, बल्कि परवरदिगार से उसने इन्सान की अज़मत और बरतरी को शिकस्त देने के लिए कयामत तक की ज़िन्दगी और मोहलत लेली और कहा कि मैं तेरी इस मखलूक और उसकी नसलों को गूमराह करके यह साबित कर दूंगा कि यह अज़मत और बलन्दी का मुस्तहक नहीं है जो तेरी तरफ़ से उसे अता की गयी है। परवरदिगार ने भी उसे यह कह कर उसे ज़िन्दगी और मोहलत दे दी कि उस मखलूक की नस्ल में मेरे कुछ ऐसे भी होंगे जो नेकी और बशरीयत की उस मन्ज़िले कमाल पर फ़ायज़ होंगे जहाँ तक तेरी रसाई ग़ैर मुम्किन है।

हज़रत आदम को आदम इसलिए कहा जाता हैं कि वह अदीमुल अर्ज़ यानी ज़मीन की मिट्टी से खल्क हुए चूँकि उनकी खिलकत में नर्म और सख्त, शीरी व

शोर, हमवार व नाहमवार ज़मीन की मिटटी इस्तेमाल हुई है इसलिए इन्सानों में मुखतलिफ़ रंग और मुखतलिफ़ मिजाज़ के इन्सान पाए जाते हैं। सिनफे निसवां की पहली फर्द, हवा की खिलकत उस मिटटी से हुई जो हज़रत के पहलू और पसलियां बनाने से बच गयी थी। हज़रत हव्वा को हज़रत आदम अ० का शरीके जिन्दगी करार दिया और अर्श पर दोनो का निकाह हुआ।

परवरदिगार ने इन दोनों को सुकूनत का हक़ दिया और तमाम अनवाओ अक़साम के फल और मेवे जात खाने की इजाज़त दी, लेकिन एक मखसूस दरख्त के बारे में मना कर दिया कि इस के नज़दीक न जाना।

इबलीस चूँकी हज़रत आदम अ० ही की बदौलत मरदूदे बारगाहे इलाही करार पाया था इसलिए वह इनका दुश्मन था और उससे हर वक्त यह फिक्र दामनगीर रहती थी कि उन्हें किस तरह जन्नत से निकलवाया जाए। आखिर कार हव्वा के ज़रिये वह हज़रत आदम को समझाने में कामयाब हो गया कि ममनुआ दरख्त के नज़दीक गये बगैर वह अगर उसका फल खाए तो कोई मुजाएका नहीं है, चुनांचें आदम बीवी के कहने पर अमल कर बैठें और इबलिस अपने मक़सद में कामयाब हो गया।

इस ममनुआ दरख्त का चखना था कि जन्नत के लिबास आदम व हव्वा के जिस्मों से उतर गये और वह आसमान की बलन्दी से बेदखली के बाद ज़मीन की पसती में फेक दिये गये।

आदम व हव्वा ने जन्नत से निकल कर दुनिया के जिस मुकाम पर पहले पहल अपने कदमों को रखा वह सरज़मीनें हिन्द की वादी सरानदीप है, यहां से दोनों ने मक्के की तरफ हिजरत की। आदम कोहे सफा पर पहुँचे और हव्वा कोहे मरवा पर पहुँची। यहाँ पहुँच कर आदम और हव्वा ने अपने उस फेल पर जो शैतान के कहने से जन्नत में सरज़द हुआ था, तौबा व अस्तगफार और गिरीयाज़ारी शुरू की, जिसे खुदा ने 300 बरस के बाद पंजतन अ० के नामों की बरकत से कुबूल फरमाया और जिबराईल को हुक्म दिया की वह एक खैमा जन्नत से ले जाएं और उसे ज़मीन पर नसब कर दें जो खानाए काबा के लिए मखसूस की गयी है। जिबराईल आये उन्होंने खैमा नसब किया और उसके हाथ ही उन्होंने हुदुदे काबा के चारों कोनों पर पत्थर नसब कर के हद बन्दी कर दी। हुक्ममें इलाही के मुताबिक़ जिबराईल ने उन पत्थरों में से एक कोहे मरवा, एक कोहे सफा एक कोहे तूर और एक को, जबलूस सलाम (नजफ़े अशरफ़) से लिया। फिर उन्होंने हजरे असवद को नसब किया जो जन्नत से आया था और कोहअहुक़बीस पर बतौरे अमानत रखा हुआ था। इस पत्थर के बारे में बाज़ मोअर्रेखीन का बयान है कि यह एक फ़रिश्ता था जो अहदे मीसाक़ का अमीन था, चुनाँचें खुदा ने चाहा की यह अहद ज़मीन पर जारी हो लिहीज़ा उसने फरिश्ते को हजरे असवद की शक़ल में तबदील कर दिया और खाना-ए-काबा के लिए मखसूस कर दिया कि लोग अपने अहद व पैमान को इसके ज़रिये याद करते रहें।

हज़रत आदम ने जिबराईल के साथ हुदूदें हरम का तवाफ़ किया और बाद में चारों कोनों पर नस्ब करदीं। पत्थरों की बुनियाद पर काबा की दीवारों को बलन्द किया। अल्लाह ने अपने इस पहले नब को जरूरियाते जिन्दगी की हर शै के इल्म से आरासता करके दुनिया में भाजा था लिहाज़ा वह मुतमईन थे। लेकिन सबसे बड़ा मसला उनके सामने अफ़ज़ाईशे नस्ल का था। क्योंकि नवये बशर में सगे बहन और भाई के दरमियान सुन्नते तजवीज़ का जारी होना दुरूस्त न था, इस मुशकिल को खुदा ने हुरों के ज़रिये आसान कर दिया जैसा कि तारीख़ बताती है कि हज़रत आदम के फ़रज़न्द हज़रत शीस का नीकाह नज़ला नामी एक हूर से हुआ था और दुसरे बेटे आसिफ़ का निकाह मन्ज़ला से हुआ था और वह भी हूर थी। इस तरह हज़रत आदम की नस्ल आगे बढ़ी और फली फूली।

हज़रत आदम अ० के यूं तो बहुत से बेटे थे मगर हज़रत शीस अपने बाप के कमालात के हामिल थे लिहाज़ा वही उनके वसी और जानशीन करार पाए. उनके अलावा दुसरे बेटों में दो भाई हाबील व काबील थे जो सिफ़ात और किरदार में एक दुसरे के मुखालिफ़ थे यानि हाबील इन्तेहाई नेक ख़सलत थे और काबील इन्तेहाई बद तीनत। नेकियों की बिना पर बाप की चश्मे इल्तेफ़ात हाबील पर ज़्यादा रहती थी इस लिए काबील उनके लिए अपने दिल में बुग़जो हसद रखता था।



एक रवायत में यह है कि हज़रत आदम ने हाबील को अपना वसी बनाने का इरादा ज़ाहिर किया था, इस पर काबील बेहद नाराज़ हुआ और उसने ये ख्वाहीश ज़ाहिर की कि मुझे वसी बनाया जाए। इस पर हज़रत आदम ने फैसला किया कि तुम दोनों भाई खुदा की राह में अपनी अपनी कुबानियां पेश करो, जिस की कुरबानी कुबूल हो जाएगी वही मेरा वसी होगा।

इस वक्त शरफे कुबूलियत का मेयार यह था कि आसमान से एक आग का शोला उतरा था और वह कुरबानी को जलाकर खाक कर देता था। चुनांचे दोनो भाईयों ने अपनी अपनी कुरबानियों को बारगाहे इलाही में पेश की। खुदा ने हाबील की कुरबानी कुबूल कर ली और काबील की कफे अफसोस मल कर रह गया। उसी वक्त से काबील हाबील का जानी दुश्मन बन गया। एक दिन जब हाबील जंगल में अपनी बकरीयां चरा रहे था तो काबील ने मौक़ा पाकर क़तल कर दिया। यह पहला इन्सानी खुन था जो ज़मीन पर बहाया गया।

इस इरतेकाबे क़त्ल के बाद काबील को यह फिक्र दामनगीर हो गयी की अब लाश को क्या किया जाए। इतने में दो कव्वे लड़ते हुए ज़मीन पर गिरे और उनमें एक ने दुसरे को हलाक कर दिया। फिर उसने अपनी चोंच और पंजों से ज़मीन में एक गड्ढा खोदा और मरे हुए कव्वे को उसी में रख कर दफ़न कर दिया। काबील

यह माजरा देख रहा था चुनांचे उसने भी यही तरीका अपनाया और एक गड्ढा खोद कर हाबील की मय्यत को उसमें दफन कर दिया।

जब हज़रत आदम को यह पता चला कि काबील ने हाबील को क़त्ल कर दिया तो वह इस क़दर रोए कि ज़मीन आसुओं से तर हो गयी। तबरी व कामिल वगैरह में है कि इस सानिहे ग़म पर आदम ने गिरया भी किया और चन्द अशआर नज़म करके नौहा भी पढ़ा।

तारीख़ की किताबों में ये भी मिलता है कि आग ने जब काबील की कुरबानी को ठुकरा दिया और हाबील क़त्ल हो गये तो काबील ने एक आतिश कदे की दाग बेल रखी और वहीं से आतिश परसती का आगाज़ हुआ जो आज भी जारी है।

हज़रत आदम की उम्र जब 230 बरस की हुई तो हज़रत शीस पैदा हुए और जब 636 बरस की उम्र में दुनिया से रेहलत हुई तो उस वक़्त आप की आँलादों में(पोते, परपोते) की तादाद 40000 तक पहुँच गई थी मगर आप ने उन लोंगो को बगैर अपने खलीफा के नही छोड़ा और न उनको मौक़ा दिया कि वह अपना सरदार खुद मुक़रर करें चुनांचे अपनी वफात से क़बल उन्होने अपने फरज़न्द शीस को बूला कर तहरीरी तौर पर अपना वली-ए-अहद मुक़रर कर दिया। और उन्होने यह वसीयत कर दी कि काबील और उनकी अवलादों से पोशीदा रखें।

जिस तरह खुदा ने आदम की खिलफत के मामले में खलीफा मुनतखब करने का एखतेयार फरिशतों को नहीं दिया उसी तरह खिलाफत के बारे में हजरत आदम ने किसी इन्तेखाब का इखतेयार अपनी अवलादों को नहीं दिया और तहरीर लिख कर यह सराहत फरमादी कि हर नबी जबानी या तहरीरी तौर पर अपना खलीफा व जानाशीन मुकरर कर सकता है। अब इसके बाद कोई जमाअत अपने इन्तेखाब, शुरा या इस्तेखलाफ की बुनयाद पर किसी को खलीफा बनाती है या किसी नबी को तहरीरी वसीअत में माआने होती है तो उसका यह फेल कतई तौर पर सीरते आदम के खिलाफ है।

मोअरिख अबुलफेदा का कहना है कि हजरत आदम 6216 बरस कबल हिजरत नबवी दुनिया में वारिद हुए थे और 636 बरस की उम्र में आप का इन्तेकाल हुआ। दीगर किताबों में है कि हजरत ने 630 बरस की उम्र में जुमें के दिन इस दुनिया से रेहलत की। जिबराईल और उनके साथ कुछ मलाएका ने उन्हें गुस्ल व कफन दिया, हजरत शीस ने नमाजे जनाजा पढाई और उनके जसदे खाकी को एक ताबुत में रखकर मक्का की सरजमीन पर दफन कर दिया। हजरत आदम के एक बरस के बाद हजरत हव्वा का इन्तेकाल हुआ। और वह भी अपने शौहर के पहलू में दफन हुई। जब तुफाने नुह आया तो हजरत आदम के ताबूत को निकाल कर नूह

अ० ने अपनी कश्ती में रख लिया था। तुफान खत्म हुआ तो वह ताबूत नजफ में अमीरुल मोमनीन हज़रत अली अ० के मजारे मोक़ददस के करीब दफ़न किया गया। कहा जाता है कि हज़रत आदम का क़द पैंतीस 35 गज सत्तर हाथ था। नव्यैते सजदा।

मलायका ने हज़रत आदम अ० को जो सजदा किया उसके बारे में उल्माए फ़रीक़ैन का इत्तेफ़ाक़ है कि वह सजदा ताज़ीमी था। बैज़ावी रक़म तराज़ है कि परवरदिगार ने इसलिए फरिश्तो को आदम के सजदे का हुक्म दिया कि वह फज़िलते आदम के अमलन मुतारिफ़ हो जाए और उन्हें इस बात का यकीन हो जाए कि हम ने आदम के बारे में जो कहा था वह दुरुस्त न था। शरई नुक्ते नज़र से सजदा दर अस्ल ख़ुदा के लिए था और आदम की हैसियत उस वक्त क़िबले जैसी थी, यानि आदम को सजदा ताज़ीमी था कि यूसुफ़ के भाईयो ने यूसुफ़ को सजदा मिस्र में किया।

तफ़सीरे साफ़ी में है कि चूंकि हज़रत आदम अ० के सुल्ब में मोहम्मद व आले मोहम्मद का नूर था जो तमाम मखलूक़ात से यकीनन अफज़ल है लिहाज़ा ख़ुदा ने मलायका को सजदे का हुक्म दे कर उनकी अज़मत को ज़ाहिर किया, यानि जो सजदा किया गया वह इस नूर के लिए ताज़ीमन इकरामन ख़ुदा के लिए अबुदियतत और आदम के लिए एताअतन था। तबरी में है कि आदम के लिए फरिश्तों का सजदा ताज़ीमी था क्योंकि सजदा अल्लाह के सिवा और किसी को

नहीं किया जो सकता और उस वक्त आदम को उसी तरह क़िबले की हैसियत हासिल थी जिस तरह हमारे लिए खानें काबा है, काबे का शरफ़ ज़ाहिर करने के लिए हमारी पेशानियां काबे की तरफ झुकाई जाती है। आदम का शरफ़ ज़ाहिर करने के लिए मलाएका की पेशानियां उनकी तरफ झुकाई गयीं। शेख अलहिन्द मौलाना मोहम्मद हसन देव बन्दी लिखते हैं कि जब हज़रत आदम का खलीफा होना मुसल्लम हो चुका तो फरिश्तों को और उनके साथ जिन्नातों को हुक्म हुआ कि हज़रत आदम की तरफ सजदा करें और उन को सजदए माबूद का क़िबला बनाए जैसा कि सलातीन अद्वलन अपना वली अहेद मुकरर करते हैं फिर रियाया को नज़रें पेश करने का हुक्म देते हैं ताकि किसी को सरताबी की गुन्जाइश न रहें।

अजाएबुल क़सम में है कि फरिश्तो ने हुक्म सजदा की मोकम्मल तामील की और सौ साल बरायतें पाँच सौ साल सजदे में पड़े रहे जब सजदे से सर उठाया तो देखा कि इबलीस सामने खड़ा है और उसकी शकल व सूरत बदल गयी है, यानि वह मलक के बजाए देव की सूरत में कर दिया गया है यह देख कर मलाएका कमाले इताअते बारी और शुक्रे खुदा वन्दी में फिर चले गये, मलाएका के इन्ही दोनों सजदों की वजह से नमाज़ की हर रकत में दो सजदे करार दिये गये हैं।

## हज़रत शीश अ०

हज़रत शीस की विलादत का वाक़िया तारीखों में यूँ मिलता है कि एक दिन हज़रत आदम और हव्वा एक पाकीजा मकाम पर बैठे हुए महवे गुफ़्तगू थे। कि जन्नत से एक जू-ए-आब जारी होकर दोनों के करीब पहुँचा और इसी के साथ साथ जिबराईले अमी भी कुछ फरिश्तो को लिए हुए वारिद हुए, उन्होंने आकर हज़रत आदम को सलाम किया, आदम ने जवाबे सलाम दिया उसके बाद जिबराईल ने आदम के सामने जन्नती मेवों का एक तबक पेश किया और कहा कि इसे नोश कीजिये और आप आबे बेहिशत से गुल्ल करके हव्वा के पास जाइये क्योंकि आज नूरे मोहम्मदी तुम्हारे सुल्ब से रहमे हव्वा में मुन्तिकिल किया जाएगा और तुम्हरी वही की बुन्याद पड़ेगी।

हज़रत आदम ने इस हुक्मे इलाही की तामील की और हज़रत हव्वा इसी शब हामेला हुई। मोद्धते हमल गुजरने के बाद एक फरजन्द की विलादत हुई जिसका नाम शीस रखा गया।

तारीखे खमीस में है कि चूँकि नूरे मोहम्मदी को हज़रत आदम के सुल्ब से मुन्तिकिल होकर हज़रत शीस के सुल्ब में आना था इसीलिए उनकी विलादत में खास एहतेमाम किया गया।

अजाएबुल कसस और हयातुल कुलूब मे है कि जब हज़रत शीस सिने बुलूग पर पहुँचें तो जिबराईल नाज़िल हुए है और आदम से कहा कि ए आदम तुम फलां मकाम पर कल शीस को लेकर पहुँच जाओ और मैं भी फरिशतों को लेकर वहाँ आ जाऊंगा। आदम ने इस इजतेमा का सब्ब दरयाफ्त किया तो जिबराईल ने कहा कि शीस से नूरे मोहम्मदी के मोताल्लिक एहदो मीसाक लेना है। दूसरे दिन हज़रत आदम मकामे मोइयना पर पहुँच गये, हज़रत जिबराईल भी हजारो फरिशतो को लेकर वहाँ आ गये, और हज़रत शीस से अहदे मीसाक लिया गया और उन्हे कुछ हिदायें

जिस वक्त हज़रत शीस मोतावल्लिद हुए उस वक्त हज़रत आदम की उम्र 230 बरस की थी। आप की नस्ल हज़रत शीस से ही चली। और हज़रत शीस के अहद मे अवलादे आदम दो गिरोह मे तकसीम हुई एक काबील की पैरव, जो आतश परस्त हुई दूसरी हज़रत शीस की पैरव जो खुदा परस्त रही।

हज़रत शीस अवलादे आदम मे इन्तेहाइ मोहतरम बुजुर्ग अपने वालिद से मुशाबेह और खूबसूरत थे। इन पर 50 सहीफे नाज़िल हुए। और जब इनकी उम्र 612 बरस की हुई तो इन्तेकाल हुआ। इन्तेकाल से कब्ल इन्होने अपना वसी अनूश को मोकरर किया और अनूश ने कीनान को कीनान ने महलाईल को और महलाईल ने यारो को यारो ने अखनूख को अपना वसी और जानाशीन मोकरर किया जो हज़रत इदरीस कहलाए।

## हज़रत इदरीस अ०

आप को इदरीस इसलिए कहा जाता है कि आप अपनी क़ौम के लोंगों को, अल्लाह की रूबूबियत, मआरेफत, इबादत, इताअत और इन्सानी ज़ाबताए हयात का दरस दिया करते थे। आप हज़रत आदम की सातवीं पुश्त में मोतावल्लिद हुए, अंग्रेज़ मोहक्कि ने आप और हज़रत आदम का दरमियानी वक्फ़ा 622 बरस बताया है।

आप लहीम शहीम, फरबे और वलन्द कामत थे, नर्म आवाज़ से आहिस्ता आरिस्ता बाते करते थे। अल्लामा अब्दुल वाहिद हनफी देवबन्दी का कहना कि खुदा ने आप को दस चीज़ों से मुम्ताज़ और मुन्फरिद किया था

आप नबीये मुरसल थे

आप पर 30 सहीफे नाज़िल हुए

इल्में नुजूम जानते थे

कल्म से लिखने की इबतेदा की

कपड़ा इजाद किया

जंगी अस्लहे इजाद किया

जेहाद कायम किया

काफ़िरों और उनकी गिरफ्तारी का तरिका इजाद किया



लोगों को लिबास पहन्ना बताया

खुदा ने आपको जिन्दा आसमान पर उठाया

कुछ मोअरिखों का कहना है आपने तकरीबन 100 शहर आबाद किये। अल्लामा मजलिसी अलैहिर्रहमा का बयान है कि आप मस्जिदे सहला मे दर्स देने के अलावा खयाती का काम भी करते थे और वहीं रहते भी थे कशफुल गम्मा में है। आप को 72 ज़बानों पर कुदरत हासिल थी और आप हर ज़बान मे तबलीग का काम अन्जाम देते थे। रौज़ा तुल सफा में है कि आप ही ने बुर्जों में आफताब की मुन्तकाली से लोगों को आगाह किया और रुय ते हिलाल के बारे में बताया बुर्जों के नाम तजवीज़ किये नुजूम कि इसतेलाहें कायम की और अपने इल्म से अम्बिया की तादाद बताई।

दुनिया मे आप ने 365 साल तक कारे तबलीग अन्जाम दिया इसके बाद अल्लाह ने आप को जिन्दा आसमान पर उठा लिया। आसमान पर उठाये जाने से पहले आप ने उमुरे दीनी अपने साहबज़ादे मुतवशलख को अपना जानशीन बनाया। मुतवशलख ने वक्ते आखिर अपने फ़रज़न्द लमकया लामख को जानशीन मोकरर किया। और उनसे वह वसीयते की जो आप के बुज़ूर्गों ने आप से की थी। लमकया लामिख की उम्र 800 बरस की हुई और उनकी वफात तुफाने नूह से 620 साल पहले बताई जाती है। उन्ही लमक के साहबज़ादे हज़रत नूह थे।

## हज़रत नूह अ०

आप को नूह इस लिए कहा जाता है कि आप ने अपनी गुमराह क्रौम की सरकशी, और अज़ीयत रसानी पर 650 बरस तक नौहा. किया। मुखतलीफ हदीसों और रवायतों में आप का नाम अब्दुल आला, अब्दुल मलक, अब्दुल शकूर, अब्दुल गफ़ार और सकन बताया गया है। आप गुदाज़ जिस्म बलन्द व बाला क़द के इन्सान थे. चेहरा पतला कदरे लम्बा, आँखें बड़ी और दाढ़ी घनी थी। खुदा ने आप को 2500 साल की ज़िन्दगी अता की लेकिन इस उम्र में मोअर्रेखीन के दरमियान इखतेलाफ है कि कब आप मनसबे नबूअत पर फायज़ हुए, किसी रवायत में 850 बरस, किसी रवायत में 840 बरस, किसी में 860 बरस, किसी में 400 बरस, किसी में 250 बरस तहरीर किया है तबरी में सिर्फ 50 साल तहरीर है जो मेरे खयाल में किताबत की ग़लती का शाखसाना है।

मोअर्रेखीन इस बात पर मोताफिक है कि आप ने 650 साल तक तबलीगी खिदमत अन्जाम दी लेकिन चूंकि आप काबील की अवलादों पर मबउस हुए थे जो इब्तेदा ही से गुमराह, सरकश, आतिश परस्त, ज़िनाकार, जराएम पेशा और नाफरमान थी इसलिए आप की तबलीगी कोशिशों का कोई खास नतीजा बरामद न हुआ और आप के मोतक़दीन की तादाद 80 से ज़्यादा न हो सकी।

आप पर कोई सहीफ़ा नाज़िल नहीं हुआ। कबले नुबूत भी आप अपने बाप दादा के मज़हब पर थे और इन्तेहाई इबादत गुज़ार, मुत्तकी, परहेज़गार, मोवारिद और

खुदा परस्त थे। अपनी क़ौम की इज़ा रसानियों से परेशान होकर आप ने उनसे अलाहेदजी इखतेयार करली थी और कुफ़े के करीब सिम्त फ़ुरात के किनारे एक ग़ैर आबाद मुकाम पर रहते थे और वहीं हम वक्त खुदा की इबादत में मस्रुफ रहते थे।

अल्लामा मजलिसी इब्ने ताउस के हवाले से रक़म तराज़ हैं कि जब आप की उम्र का एक तवील हिस्सा गुज़र गया तो आप की ख़िदमत में जिबरईल आयें और उन्होंने कहा कि ऐ नूह तुम गोशो नशीन क्यो हो तुम बाहर निकलो और भटकी हुई क़ौम को राहे रास्त पर लाने की कोशिश करो, आप ने फरमाया, यह क़ौम बड़ी बेकार है, न मेरी सुनती है न मेरी तरफ रुख करती है और न मुझे पहचानती है। जिबरईल ने फरमाया अगर ये लोग नरमी से राहे रास्त पर आने को तैयार नहीं है तो उनसे जिहाद करों। आप ने फरमाया, मैं उनके मुकाबले में जिहाद की ताक़त व तवानाई नहीं रखता। जिबरईल ने कहा अगर खुदा ताक़त व तवानाई अता कर दे तो।

जिहाद करोगे। आप ने फरमाया यकीनन में जिहाद करूँगा। इस पर जिबरईल ने कहा ऐ नूह मैं खुदा की तरफ से भेजा गया फरिश्ता हूँ, इस वक्त अल्लाह ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है बाद सलाम के कहा है कि मैंने तुम्हें ताक़त व तवानाई दे कर नबूवत के मन्सब पर फायज़ कर दिया है अब तुम तबलीग के लिए गोशा छोड़ कर मैदान में निकलो और फरीज़ाए नबूवत अदा करो, खुदा तुम्हारे साथ है वह तुम्हारी मदद करेगा। यह सुनना था कि नूह अ० अज्म व हिम्मत के साथ एक

सफेद असा लेकर उठ खड़े हुए और खुदाई ताकतों को समेट कर तबलीग की गरज से एक ऐसी बस्ती में दाखिल हुए जहाँ लोग ईद की खुशियाँ मना रहे थे, अतिश परस्ति में मशगूल थे और आग भड़क रही थी, नाराए तौहीद बलन्द किया और फरमाया। ऐ गुमराह कौम के लोगों आगाह हो जाओ कि तुमनें शैतानी जामा पहन रखा है, हकीकी खुदा से मुन्हरिफ होकर, आग और बुतों की परसति कर रहे हो जो तुम्हे जहन्नुम की तरफ ले जाने वाली हैं अगर तुम्हे जहन्नुम की आग से बचना है तो खुदाए वहदहू लाशरीक की इताअत करो, मैं तुम्से यही एकरार लेने आया हूँ क्योंकि अल्लाह ने मुझे तुम पर नबी मोकरर किया हैं। मगर बदबखतो ने एक न सुनी, हालांकि उन पर हैबत तारी हुई और उनका आतिश कदा गुल हो गया।

आतिश कदा के गूल होने और हजरत नूह की इस दिलेराना गुफ्तगु से एक तरफ तो आतिश परसतों पर खौफ व हिरास और सरासीमगी के आसार तारी थे और दुसरी तरफ अमुरा बिनते हमरान नामी एक हसीन व जमील दोशीजा पर उन कलमात का यह असर हुआ की वह उसी वक्त ईमान ले आयी, उसका ईमान लाना था कि पुरी कौम, पुरी बस्ती,बल्कि गिरदो नवाह मे एक तहेलका मच गया। अमुरा का खौफ ज़दा बाप, उस पर इस कदर बेरहम हुआ की उसने बेटी को कैद कर के एक कमरे में बन्द कर दिया कि जब तक वह अपने इस फैल पर तौबा नही करेगी उस का खाना पानी बन्द रहेगा। वह जिन्दा रहे ख्वाह मर जाए, रफता रफता अमुरा का एक साल का अर्सा गुजर गया। और जब दरवाजा खोल कर देखा गया

तो वह पहले से बेहतर हालात में थी, और उसकी पेशानी में एक नूर चमक रहा था। लोगों ने इस्तेजाबाना लहजे में उससे पूछा कि वे साल भर तक बगैर खाने और पानी के क्यों कर जिन्दा रही, उसने कहा कि जब भुख और प्यास से मेरी जान लबों पर आ गयी तो जिन्दगी की कोई उम्मीद बाकी न रही तो मैंने नूह के परवरदिगार से दुआ की और मुझे बेहतर से बेहतर खाना व पानी मिलने लगा। बा एजाज़ हज़रत नूह अ० मेरे कमरे में आते थे और मुझे सेरो सेराब करके चले जाते थे, इसलिए मैं तनोमन्द और तन्दुरुस्त हूँ, यही अमुरा बाद में हज़रत नूह की जोजियत में दाखिल हुई और उनके बत्न से साम की विलादत अमल में आयी।

बहर हाल अमूरा बिन्ते हमरान के यह मोजिज़ा नुमा वाकियात भी काबील की अवलादों पर असर अन्दाज़ न हुए क्योंकि यह पूरी क़ौम इब्तेदा ही से आतिश परस्त व बुत परस्त थी, मुस्तजाद यह कि उनसे हज़रत शीस की क़ौम के लोगों ने भी इख्तेलाफ़ कर लिया था और उनके साथ भी इन्सानियत सोज़ हरकतों और बुराईयों की तरफ़ मायल हो गये थे, आतिश परस्ती, बुत परस्ती, जिनाकारी, आबरु रेज़ी, शराब खोरी और बद अमली उनका मोकद्दर बन चुकी थी, फिर शैतान भी उनकी बद कारियों में उनका मोईन व मददगार था, इसलिए उस वक्त का पूरा इन्सानी मोअशरा बुराईयों और बद आमालियों के समन्दर में गरक हो चुका था।

हज़रत नूह 650 साल तक इस क़ौम की इस्लाह के लिए सरगरदां व परेशान रहे और जब ज़मीन पर उस क़ौम के गुनाहों और मासियत का बोझ ज़रूरत से ज़्यादा

बढ़ गया और कोई खातिर खवाह नतीजा बर आमद न हो सका तो आप ने खुदा की बारगाह में बद्दुआ के लिए हाथ बलन्द किये और फरयाद की कि परवरदिगार इस क्रौम पर अपना अज़ाब नाज़िल फरमा और उन्हे नेस्त व नाबूद कर दे।

अल्लाह ने नूह अ० की यह फरयाद सुन ली, लेकिन उसके साथ ही जिबरईल के ज़रिये यह पैग़ाम भी दिया कि ऐ नूह अ० तुम अपनी क्रौम को मेरे अज़ाब की खबर भी देते रहो और उन्हे राहे रास्त पर आने का मौक़ा भी फ़राहम करते रहो। इस पर नूह अ० ने यह ख्वाहिश ज़ाहिर की की फ़िलहाल औरतों को अक्रीमा कर दिया जाय ताकि ताकि वक्ते अज़ाब बच्चे महफूज़ रह सके। खुदा ने नूह अ० की यह ख्वाहिश पूरी की, औरतों को अक्रीमा कर दिया और उनका बच्चा जनना बन्द हो गया। इसके बाद हुक्म में इलाही के मोताबिक हज़रत नूह अ० अपनी क्रौम को अजाबे इलाही के बारे में मुतला करते रहे यहां तक कि एक ज़माना गुज़र गया और खुदा ने उन्हे कश्ती की तैयारी का हुक्म दिया।

## कश्ती की तैयारी

रवायतों में है कि जिबरईल आसमान से कुछ दरख्तों के पौधे लेकर आये थे जिन्हे हज़रत नूह ने लगाया, उनकी देख भाल और आबयारी की और जब 40 साल में दरख्त तैयार हुए तो उन्हें काट कर यकजा किया गया और एक सौ बीस बरस में यह अमल तीन बार दोहराया गया कि हज़रत नूह अ० इन दरख्तों के

बीज बोते रहे और तैयारी पर चालीस साल के बाद उन्हें काटते रहे। आखिर कार खुदा का हुक्म हुआ कि ऐ नूह अ० इन दरख्तों से एक लाख चौबीस हजार तख्तें तैयार कराओ। इस हुक्ममें रब्बानी पर नूह अमल पैरा हुए और तकरीबन निस्फ सदी की मेहनत और जाफिशानी के बाद जब तख्तों की तादाद मोकम्मल हो गयी तो फिर हुक्म हुआ कि इन तख्तों पर तमाम अम्बियाओं के नाम लिख दिये जाए। यह काम जिबरईल की मदद से शुरू हुआ और अम्बियाओं के इस्मा ग्रामी लिखे जाने लगें, लेकिन दुसरे दिन हज़रत नूह अ० ने देखा कि पहले दिन जो नाम तख्तों पर लिखे जा चुके थें वह महो हो चुके हैं वह हैरान और परेशान हुए और दुबारा उन नामों को फिर लिखा। तीसरे दिन फिर मिट गये, यह माजरा देख कर हज़रत नूह अ० सख्त फिक्रमन्द थे। वही आयी ऐ नूह, तुम अम्बियाओं के नामों को लिखने का आगाज़ मेरे नाम से करो और मेरे हबीब (मोहम्मद) के नाम पर खत्म करों। चुनांचें इस ग़ैबी तालीम की रौशनी में जनाबें नूह अ० ने इबतेदा की और जब तमाम अम्बिया के अस्मा तख्तों पर लिख चुके तो आसमान से एक निदा आयी की अब कश्ती का आगाज़ करो। कश्ती के तमाम तख्ते जोड़ दिये गये लेकिन आखिर मे चार तख्तों की जगह फिर रह गयी। फिर जनाबे नूह अ० ने जिबरईल से पुछा की इन चार तख्तों पर क्यो लिखा जाए जिबरईल ने फरमाया कि अम्बिया के इन तमाम अस्मा के साथ साथ जब तक अली अ०, फातिमा अ०, हसन अ०, हुसैन अ० का अस्माए मुबारक शामिल न होगा, उस वक़्त तक कश्ती

की तकमील नामुम्किन है. क्योंकि तमाम अस्माए मुबारक में खुदा और उसके हबीब के नामों के अलावा यही नाम ऐसे है जो उस कश्ती को जुमला आफते अर्जी व समावी से महफुज रख सकते है और उन्ही नामों की बरकत से पैगम्बरों को अजमत बखशी गयी है। जनाबे नूह अ० ने बराए एहताराम तख्तों पर उन नामों को भी लिखा और जब चारों तख्ते कश्ती में लग गये तो परवरदिगार ने फरमाया कि ऐ नूह अ० अब कश्ती मुकम्मल हो गयी।

अल्लामा मजलिसी का बयान है कि तख्तों की तराशकारी और कश्ती की तैयारी में काफी आदमीयों की जरूरत थी, चुनांचे इसके लिए हजरत नूह अ० ने खुदा की बारगाह में दुआ की ऐ पालने वाले मुझे कुछ मददगार मोहय्या कर, हुक्म हुआ कि ऐ नूह अ० यह ऐलान करदे की जो शख्स मेरे काम मे मदद करेगा उसके लिए मेरा परवरदिगार, लकड़ी का बूरादा सोने चाँदी में तबदील कर देगा। इस एलान के बाद लालच मे कुछ लोग आने लगे और कश्ती खुदा की निगरानी में जिबरईल की हिदायत के मुताबिक तैय्यार होना शुरू हो गयी।

अल्लामा जजाएरी बहवलए किताबुल खेराज में तहरीर फरमाते है कि रसूलल्लाह ने फरमाया:

जब हजरत नूह अ० कश्ती की तैय्यारी मे मसरुफ हुए तो जिबरईल ने उन्हे कीले मोहय्या की जिनकी तादात एक लाख उनतीस हजार थी। हजरत नूह अ० जिबरईल की हिदायत के मोताबिक उन कीलों को कश्ती के तख्तों मे पेवस्त करते



रहे यहाँ तक की जब आखरी पाँच कीले रह गयी और नूह अ० ने उनकी तरफ हाथ बढ़ाना चाहा तो वह नूरानी हो गयी और उनसे शूआएं फूटने लगी। यह माजरा देख कर हजरत नूह अ० हैरान हुए तो जिबरईल ने फरमाया कि इन कीलों से पंजतन का नाम वाबस्ता है यानी यह कीलें मोहम्मद स०, अली अ०, फातेमा स०, हसन अ०, हुसैन अ०, के नामों से मन्सूब है लिहाजा ऐ नूह अ० पहली कील को कश्ती की दाहिनी तरफ, दुसरी को बाई तरफ, तसरी को दरमियान में, चौथी को बाई तरफ वाली कील के नीचे और पाँचवी को दाहिनी तरफ वाली कील के नीचे ठोक दो नूह अ० ने ऐसा ही किया लेकिन जब आखरी कील लगाने लगे तो उनहे इस तख्ते पर खुन की तरी नज़र आई, उन्होने घबरा कर जिबरईल से पुछा कि क्या माजरा हैं जिबरईल ने वाक्या बताया जिस पर वह बहुत रोए और कातिलाने हुसैन पर लानत की।

मोअररेखीन का बयान है कि इस कश्ती की तैय्यारी मे 250 साल लगे। इस कश्ती की लम्बाई, चौड़ाई, और ऊचाई में मोहक्केकीन के दरमियान इखतेलाफ है। याकूब ने तीन सौ हाथ लम्बाई और पचास हाथ चौड़ाई तहरीर की है, अल्लामा मजलिसी का कहना है कि लम्बाई तीन सौ हाथ, चौड़ाई 250 हाथ और ऊचाई 33 हाथ थी। तबरी ने 1200 गज लम्बाई और 40 गज चौड़ाई बताया गयी है। लेकिन ये दुरुस्त इसलिए नहीं है कि इमाम जाफ़रे सादिक अ० का कौल है कि 1200 एक हजार दो सौ हाथ, चौड़ाई 800 आठ सौ हाथ और ऊचाई 80 अस्सी हाथ थी।

हज़रत ईसा अ० के अहद में उनके हाएरीन ने यह ख्वाहिश ज़ाहिर की कि जो तुफाने नूह का हाल बयान कर सके। जनाबे ईसा ने ज़मीन से एक मुट्ठी ख़ाक उठाई और क़ाब बिन साम बिन नूह की रुह को उसमें समों कर उससे तूफ़ाने नूह का वाक़या दरयाफ़त किया, हज़रत ईसा ने कशती की लम्बाई पुछी तो उसने बताया कि 1200 हाथ लम्बी थी और उस पर सर पोश भी था ताकि उसमें सवार होने वाला बारिश से महफ़ूज़ रह सकें।

(अजाएबुल क़सस)

## तूफ़ान

उलेमा और मोअर्रेखीन ने तूफ़ान के जो वाक़यात बयान किये हैं उनका खुलासा यह है कि हज़रत नूह अ० की बीवि कूर्फे में अहानी तन्दूर में रोटियां तैयार कर रही थी जो हज़रत आदम अ० की बीवि हव्वा की मिलकीयत में था। चंद्र औरतें भी यहाँ मौजूद थी जो कशती और तूफ़ान का तज़क़िरा कर के हज़रत नूह अ० का मज़ाक़ उड़ा रही थीं कि अचानक तन्दूर के अन्दर एत ज़ोरदार धमाका हुआ और ज़मीन के सीने से पानी का धारा उबल पड़ा। जो औरतें मज़ाक़ उड़ा रही थी वह यह कहती हुई भार्गी की हमें जिस अज़ाब की ख़बर थी वह नाज़िल हो गया। नूह की बीवि रोटियां छोड़ कर नूह की तरफ़ भागी और उनसे सारा वाक़या दरयाफ़त किया, वह भी दौड़ते हुए तन्दूर के पास आये और इस ख़याल से की अपने एहलो

अयाल को महफूज करले, उन्होने तन्दूर का दहाना एक बड़े पत्थर से ढक दिया और हुकमें इलाही का इन्तेज़ार करने लगे। फ़ौरन हुकम हुआ कि जिस क़दर हो सके अपने अहलो अयाल और बाईमानको लोंगों को लेकर कश्ती में सवार हो जाओ और अपने हमराह जुमला मखलूकात का एक एक जोड़ा भी लेलो। नूह ने कहा पालने वाले इस उजलत में दुनिया भर के जानवरों और परिन्दों को कैसे जमा कर, इरशाद हुआ कि वह मेरे हुकम से खुद तुम्हारे पास पहुंच रहे हैं। चुनांचे दुनिया भर के मखलूक एक हवा के झोकें से हज़रत नूह अ० तक पहुंच गये। उन्होने सब को इस तरह सवार किया कश्ती के नीचले हिस्से में दरिन्दों को, परिन्दों को और दीगर चौपायों को रखा। दरमियानी हिस्से में खुरद्वनी आशया और दीगर ज़रूरयात का सामान रखा और बालायी हिस्से में अपने अहलो अयाल और दीगर बाईमान लोगों की एक मुखतसर सी जमाअत को ठहराया। जानवरों में चीटी, चूंकि सबसे छोटी और उसके पायमाल हो जाने का अन्देशा था, इसलिए उसको बलायी हिस्से में रखा। एक रवायत में है कि कश्ती में जब सब जानवरों और परिन्दों को सवार किया जाने लगा तो तीतर सबसे पहले सवार हुआ। अल्लामा इसमाईल सब ज़ावारी का कहना है कि चूंकि तीतर मोहिब्बें एहलेबैत होता है। इस लिए हज़रत नूह अ० ने उसे सबसे पहले सवार किया।

कुरानी सराहत के साथ जुमला मोअर्रेखीन और मोहदसीन का बयान है कि जब तन्दूर से पानी उबलना शुरू हुआ तो हज़रत नूह ने अपनी ज़ुरियत से फ़रमाया कि

वक्त बहुत कम है लिहाजा तमाम लोग बउजलत कशती मे सवार हो जाएं इस हुक्म की तमील नूह के बेटों साम, हाम और याफिस,नीज़, बीवी उमूरा के साथ दीगर ने भी की जो बाईमान और मोमिन थे, लेकिन उनका एक बेटा केनान, जो नाफ़रमान और सरकश था और एक बीवी जिसका नाम दामेला था, इस हुक्म से बरी उज़जिम्मा रहे, उन्होने नाफ़रमानी सरताबी की और कहा कि यह कशती आप ही को मुबारक हो, हमारे लिए बुलन्द और बाला पहाड़ो की चोटियां काफी है। शायद यही केनानी सीरत थी जिस पर अमल करते हुए हज़रत उमर ने रसूलल्लाह से फरमाया था कि हमारे लिए कुर्आन काफी है।

इमाम जाफ़रे सादिक अ० फ़रमाते है कि नूह के बेटे किनान ने जिस पहाड़ पर भरोसा किया था वह कोहे नजफ था जिसकी चोटियां बड़ी सर बलन्द थीं केनान का भरम खाक मे मिलाने के लिए खुदा वन्दे आलम ने इस पहाड़ को ज़र्रो मे तबदील करके हवा मे उड़ा दिया और इसकी जगह एक दरिया बहने लगा जिसका नाम “नै” हुआ फिर वह दरिया खुशक हो गया, और किसी शय के खुशक होजाने को अरबी जबान मे “जफ़” कहते है इसीलिए इस मकाम को “जफ़” कहा जाने लगा। फिर कसरते इस्तेमाल की बिना पर “नैजफ़” रफ़ता रफ़ता नजफ हो गया और यह वही जगह है जहां हज़रत आदम हज़रत अली- ए- मुर्तुजा और नूह अ० की कब्रें हैं।

हजरत आदम के बारे में तारीखें यह बताती हैं कि वह मक्के में दफन हुए थे, लेकिन तूफान के मौके पर हजरत नूह ने उनके ताबूत को अपनी कशती में रख लिया था, और एक रवायत में यह है कि आप का ताबूत लहद से बुलन्द होकर पानी की सतह पर आ गया था जिसे नूह अ० ने अपनी कशती में ले लिया था और तूफान खत्म होने के बाद उन्हें नजफ में दफन कर दिया।

अमीरुल मोमेनीन हजरत अली अ० की कब्र के बारे में यह रवायत है कि इसे हजरत नूह ने बादस्तेखुद तय्यार की थी और सियानी ज़बान में एक तख्ती लिख कर इसमें रख दी थी कि इस कब्र को नूह पैगम्बर ने आखिरुज जमा के वसी हजरत अली अ० के लिए तैयार किया है। चुनाचें हस्नैन अ० ने अमीरुल मोमेनीन को दफन किया।

मुख्तार यह है कि जब सब लोग कशती में इत्मेनान से सवार हो गये तो हजरत नूह अ० ने तन्दूर का दहाना खोल दिया और खुद भी दौड़ कर कशती में सवार हो गये। तन्दूर के मुंह का खुलना था कि ज़मीन का पानी आसमान से बाते करने लगा और आसमान का पानी ज़मीन के गरकाब करने लगा। देखते ही देखते कायनात ठाटें मारते हुए समन्दरो की आमाज गाह नज़र आने लगी। फिर आफताब को गहन लगा और दुनिया की रौशनी पर एक भयानक अन्धेरा मोहित हो गया। हजरत नूह अ० इस अन्धेरे को देख कर फिक्रमन्द और परेशान हुए चुनांचे खुदा ने जिबराईल के ज़रिये अपने नबी की खिदमत में दो मोती भेजे। उनमें एक दिन में

अपनी चमक से कश्ती में उजाला करता था और दूसरा दिन में, जिससे दिन और रात का फर्क मालूम होता था और नमाज़ का वक्त पता चलता था।

तूफान का आगाज होते ही जनाबे नूह अ० ने कश्ती के बादबान खोल दिये थे और वह पानी की सतह के साथ साथ ज़मीन छोड़ कर आसमन की तरफ बुलन्द हो गयी थी कि तुन्दो तेज हवाओं के झोंकों ने उसे कुच्चते रफ्तार अता की और वह एक सिम्त चल पड़ी। उसने पहले दो दुनिया का एक चक्कर लगाया फिर पानी से खेलती हुई खानोए काबा के करीब आयी और सात मरतबा इसका तवाफ करके जिधर हवा का रुख था उधर रवाना हुई।

रवायतों से ये साबित होता है कि खानोए काबा तूफानों नूह में गरके आब नहीं हुआ बल्कि पानी की सतह के साथ साथ वह भी आसमान की तरफ बुलन्द होता रहा, इसलिए इसे बैतुलअतीक कहा जाता है।

कश्ती पूरी कुच्चत के साथ रवां दवां थी मौजों के थपड़े बुलन्द होकर गुनाहों की दुनिया और इस आसी मखलुक की गरक आबी का तमाशा देख रहे थे कि एक मुकाम पर कोई इनसानी सर पानी से उभरा और दर्द नाक चीख के साथ आवाज़ आई कि अब्बा जान मुझे बचा लीजिए, शफकते पिदारी गालिब आइ नूह ने बेटे का बाज़ु पकड़े के लिए हाथ बढ़ाया ही था कि हुकमें इलाही ने वही रोक दिया। नूह अ० ने फरमाया कि परवरदिगार, तेरा वादा है कि तु मेरे एहल को बचाएगा, हुकम हुआ की ये तेरे अहल से नहीं है तेरे अहल से वही है जो इबादत और इताअत

गुजार है और तेरे साथ कश्ती में है। मालुम हुआ कि गैर सालेह अमाल की बिना पर अवलाद, अहल से खारिज हो जाती है। चुनांचे नूह अ० का बेटा डुब गया और नूह अ० हुक्में इलाही के सामने कुछ न कर सकें। अलबत्ता मशीअत ने नूह अ० और उनके बेटे के दरमियान एक मौज हायल कर दी थी ताकि हज़रत नूह अ० अपने बेटे को डूबते हुए न देख सके।

मोअररेखीन का कहना है कि हज़रत नूह की कश्ती करबला की सरज़मीन पर पहुंची तो गिरबाद (भंवर) में फंस गयी और ज़रे ओ ज़बर होने लगी, अन्देशा था की कही गरक़ न हो जाए यह कैफियत देख कर हज़रत नूह अ० घबरा गये और उन्होने खुदा की बारगाह में अर्ज़ किया कि परवरदिगार यह क्या माजरा है. क्या हम सब गरक़ हो जाएंगें, निदा आयी आले मोहम्मद को अपनी नियात का ज़रिया करार दो और उनके वसीले से दुआ मांगो, नूह ने दुआ मार्गी और कश्ती पर जब कुछ ठहराव के आसार मुरत्तब हुए तो फरमाया मेरे माबूद ये कौन सी जगह है जहाँ मेरी कश्ती भी हिचकोले खा रही है और मेरा दिल भी डुब रहा है। इरशाद हुआ की ऐ नूह अ० ये करबला है जहां आले मोहम्मद की कश्ती खुन में गरक़ होगी और एक दुसरी रवायत में है जब नूह अ० की कश्ती कैद खानाए शाम के सर के ऊपर से गूजरी तो उस वक्त भी वह मुतज़लज़िल व मुतलातिम हुई और नूह अ० ने इस मक़ाम के बारे में भी परवरदिगार से पुछा तो उन्हें जवाब मिला कि ये कैद खानाएं शाम है। जहां ज़ुरियते रसूल मोकय्यद की जाएगी।

अल्लामा मजलिसी अलैहिर रहमा का बयान है कि चलते चलते जनाबे नूह अ० की कश्ती का सीना जब कोहे जूदी से टकराया तो एक हैबतनाक आवाज़ बलन्द हुई और ये उस वक्त खत्म हुई जब जनाबे नूह अ० ने आले मोहम्मद को सुकून व करार का वसीला बनाया।

इन तमाम वाक्यात का तसल्लुल यह बताता है कि जाते इलाही के अलावा हज़रत नूह अ० की कश्ती के हक़ीकी पासवान व निगेहबान मोहम्मद अ० अली अ०, फातमा स०, हसन अ०, हुसैन अ० थे। किसी की मजाल नहीं कि नुक़से कुदसिया खमसा के रौशन चिरागो को बुझा सके।

हज़रत नूह अ० की कश्ती 10 रजबूल मोरज्जब को कूफ़े से रवाना हुई छः माह ज़ेरे आसमान सफ़र करने के बाद कोहे जूदी पर ठहरी। अहलैबेत की कश्ती भी छः माह ज़मीन पर चलती रही। नूह की कश्ती कूफ़े से चल कर करबला पर गिरदाब पर मुबतिला हुई और कश्तीये अहलैबेत मदीने से चलकर करबला मे नज़रे तुफाने सितम हुई, शायद इसलिए रसूल ने फरमाया हो कि मेरे अहलैबेत की मिसाल कश्तिये नूह के मानिनद है जो इसमे सवार हुआ वह निजात पा गया, और जिस ने इसे छोड़ दिया वह गरक हो गया।

चालीस शबाना रोज़ पानी बरसता रहा और ज़मीन से पानी उबलता रहा। जब कौमे नूह गरकाब होकर अपना वजूद खो बैठी तो परवरदिगार ने अजाब का सिलसिला खत्म करके तूफान के इख्तेताम का फैसला किया चुनांचे फिर ज़मीन



को हुकम हुआ कि पानी पीजा, आसमान को फरमान जारी हुआ की वह बारिश रोक दे, बस इस हुकम के बाद ही पानी घटना शुरू हो गया कश्ती अहिस्ता अहिस्ता आसमान की बुलन्दी से नीचे उतरने लगी। क्रौस व कजह ने जाहिर होकर जब अम्न का पैगाम दिया तो हजरत नूह अ० ने सजदाए शुक्र में अपनी पेशानी रख दी। इस तूफान में खुदा की मखलूकात में से वही बचे जो कश्ती में सवार थे बाकी सब कुछ खत्म हो गया।

बेशतर मोअर्रेखीन का ख्याल है कि कोहे जूदी मूसल में वाका है लेकिन जदीद माहैरीन आसारे कदीमा और मोहक्केकीन ने दलीलों की रोशनी में यह वाजे किया है कि मशहूर तसव्वुराती परसतान वाला कोहकाफ जो रुस में वाके है उसी का एक बुलन्द तरीन हिस्सा कोहे जूदी कहलाता है और उसकी तफसील मोतादिद कुतुबे तारीख में भी मज़कूर है।

हजरत नूह अ० तकरीबन दो माह कोहे जूदी पर कयाम फ़रमा रहे और जब ज़मीन का पानी कद्रे खुशक हुआ तो वह कश्ती से उतरे और उन्हें भी उतारा जो उनके साथ इस कश्ती में सवार हुए थे।

मोअर्रेखीन की एक जमाअत का कहना है कि चरिन्द, परिन्दों के अलावा इस कश्ती में इन्सानों की तादाद 80 थी जो औरतों और द कुलव मर्दों पर मुशतमिल थी लेकिन मेरा तहक्कीकी नज़रिया है कि यह तादाद कूल 72 नुफूस पर मुशतमिल थी जिसकी मुनासेबत करबला के उन शहीदों से है जो अपनी मिसाल आप थे मेरे

इस नज़रिये को अल्लामा जलालुद्दीन सिवती के इस कौल से भरपूर तकवियत हासिल होती है जिसमें मौसूफ ने इशारा किया है कि कश्तीये नूह अ० में बेहतरीन मोमिन सवार थे।

## हज़रत नूह अ० से शैतान की गुफ्तगू

मोतबर रवायत मे है कि नूह अ० जब कश्ती से उतरे और उन्होंने इतमेनान की सांस ली तो उन्हें इब्लीस उनकी खिदमत में हाज़िर हुआ और उसने कहा ऐ नूह अ० आप का मुझ पर बहुत बड़ा एहसान है। नूह अ० ने फरमाया, आखिर मेरा वह कौन सा अमल है जो तेरे नज़दीक एहसान का सबब बना. इबलिस ने जवाब दिया कि अल्लाह के नबी आप ने खुदा से अपनी क़ौम के लिए बद-दुआ करके तमाम काफ़िरों को एक साथ अज़ाब की आग में झोंक दिया और वह इस आग में फना होकर सीधे जहन्नूम की आग में चले गये और दर हकीकत मेरा यही दिली मकसद था। अगर ऐसा न होता तो मुझे खौफ़ लाहक़ रहता कि आप की तबलीग़ कहीं इन पर असर अन्दाज़ न हो जाए और वह कहीं इमान न क़बूल कर लें। ऐ नूह अ० आप का यह एहसान मुझ पर कम नहीं है कि आप ने मुझे उनके बहकाने से निजात दे दी। चुनांचे इस एहसान के बदले में मैं आप को यह बताना चाहता हूँ की वह मवाके कौन कौन से है कि जिन मौक़ो पर मैं इन्सान पर क़ाबू हासिल करके उसे ज़ेर करता हूँ। हज़रत नूह अ० ने फ़रमाया कि जल्द बता कि तेरी

कुरबत से मुझे छुटकारा मिलें। इबलिस ने संजीदगी से बताना शुरू किया कि पहला मौका तो वह है कि जब इन्सान गुस्से की हालत में होता है, दूसरा मौका तो वह है कि जब दो अजनबी मर्द और औरत तन्हाई में होते हैं और तीसरा मौका वह है कि जब कोई शख्स दो आदमियों के दरमियान फैसला करता तो मैं फैसला करने वाले शख्स से इन्तेहाई करीब होता हूँ। फिर इबलिस ने कहा कि ऐ नूह मेरी दो बातें और सुन लीजिए अक्वव यह कि हसद और गुरुर से हर आदमी को बचना चाहिए क्योंकि इसी हसद और गुरुर की वजह से मैं मलउन और मतऊन करार दिया गया, दूसरे यह कि इन्सान को हिर्स और तमा से दूर रहना चाहियें क्योंकि हिर्स और तमा ही की बदौलत हज़रत आदम जन्नत से निकाले गये। यह कह कर इबलीस हज़रत नूह अ० की निगाहों से ओझल हो गया।

## हज़रत नूह अ० की रहलत

मुअर्रेखीन का कहना है कि जब हज़रत नूह अ० की रेहलत का वक्त आया, उस आप धूप में बैठे थे कि मलाकुल मौत का वरुद हुआ आप ने खन्दापेशानी से उनका इस्तेक़बाल करते हुए फ़रमाया कि क्या इतनी इजाज़त है कि मैं धूप से उठ कर साए में आये और बैठ जाऊँ। कहा, हा इजाज़त है, चुनांचे जब हज़रत नूह अ० साए में आये मलकुल मौत ने अपना काम शुरू किया तो आप से पुछा कि ऐ अल्लाह के नबी आप ने बड़ी तवील उम्र गुजारी है, अब यह बताइये कि आप की

नज़र में मुद्दते हयात क्या मायने रखती है. फ़रमाया, बस इतनी की धूप से उठ कर साए में आ गया हूँ। इसके बाद मलकुल मौत ने रुह कब्ज़ की और अल्लाह का यह नबी हमेशा के लिए दुनिया से रुखसत हो गया।

अबू मोअन्निफ लूत बिन यहया खज़ाई अपनी तहकीकी किताब कंजूल निसाब में हज़रत नूह अ० की रेहलत के बारे में लिखते हैं कि हज़रत नूह अ० कही जा रहे थे कि रास्ते में उन्होंने देखा कि चार आदमी एक कब्र की तैयारी में मसरुफ़ है, नूह ने उन्हें पुछा कि यह कब्र किसकी है. जवाब मिला की एक बन्दाए खुदा की है, फरमाया मेरी कोई खिदमत दरकार है. कहा कि आप इस कब्र में लेट जाए तो हम इस बन्दाए खुदा के तुलो अर्ज़ का अन्दाज़ा कर ले। हज़रत नूह अ० इस कब्र में लेट गये और वहीं उनकी रुह कब्ज़ कर ली गयी। अबू मोअन्निफ़ कहते हैं कि वह चारों अशखास, जिबराईल अलैहिस्सलाम है मिकाईल अ० इसराफ़ील अ० और इज़राईल अ० थे।

रवायतो में यह भी है कि हज़रत नूह अ० को उस मुकाम पर दफ़न किया गया जहाँ उन्होंने तूफान के बाद हज़रत आदम के ताबूत को दफ़न किया था। या जहाँ बाद में अमीरुल मोमनीन हज़रत अली अ० दफ़न हुए।

अल्लामा मजलिसी अलैहिर्रहमा मोतबर रवायतो के हवाले से रकम तराज़ है कि हज़रत अली अ० ने वक्ते शहादत अपने फ़रजन्दों इमामे हसन अ० और इमामें हुसैन अ० से यह फरमाया था कि मेरे जनाजे के अगली सिम्त तुम लोग हाथ न

लगाना जिस तरफ भी वह जाए उसे जाने देना और जहां ठहर जाए वहां रखकर जमीन से मिट्टी हटाना एक कब्र बरामद होगी उसमें मेरे जनाजे को दफन कर देना। चुनांचे अमीरुल मोमनीन का जनाजा चलते चलते एक मुकाम पर रुक गया और वहा की मिट्टी हटायी गयी तो एक कब्र बरामद हुई जिसके अन्दर एक कतबा भी रखा हुआ था और उसमें सरबानी जबान में तेहरीर था कि इस कब्र को हजरत नूह अ० ने वसी ए मुस्तेफा हजरत अली अ० इब्ने अबुतालिब के लिए तूफाने नूह अ० से सात सौ साल पहले तैयार किया है। मुस्तानद रवायतों से यह साबित है कि हजरत अली अ० नज़फ़े अशरफ में दफन है और आप के सरे मुबारक से मुलहक हजरत नूह अ० और हजरत आदम अ० की कब्रे हैं.

इमामे जाफ़रे सादिक अ० फ़रमाते है कि हजरत नूह आ० 850 बरस की उम्र में मबऊस हुए, 650 साल उन्होने कारे तबलीग अन्जाम दिया, 200 बरस कश्ती तैयार की और तूफान के बाद 500 बक्रिया हयात रहे। इस तरह हजरत नूह अ० की उम्र 2500 बरस की हुई है।

हजरत जाफ़रे सादिक अ० से यह रवायत भी है कि खुदा ने हजरत नूह अ० को बज़रियाए वही इस अम्र से मुत्तला फरमां दिया था कि आप के बाद ज़ालिम व जाबिर सलातीन बर सरे इक्तेदार आएंगे और जब्र व तशद्दुद और जुल्म व जौर का ग़लबा होगा लिहाज़ा आप अपने फ़रज़न्द साम को जब अपना वसी मुकर्रर करें तो यह ताकीद भी फरमा दें कि जब तक तुम में हूद नामी एक शक्स ज़ाहिर न हो

सबरो जब्त के साथ जिन्दगी बसर करना चुनांचे हजरत नूह अ० ने उस अमरे इलाही से अपने बेटे साम को मुत्तला किया और साम ने अपनी कौम को बाखबर किया।

## तहक्रीकात व इन्कशाफ़ात

पाकिस्तानी मोहक्किफ हकीम सैय्यद महमूद गिलानी अपने तहक्रीकी मकाले में तहरीर फरमाते है कि 1651 ईसवी की जुलाई में रुसी माहरीन आसार कदीमा की एक टोली बादी ए काफ़ में देखभाल कर रही थीं और गालेबन किसी नई कान की तलाश में मसरुफ़ थी। कि एक मुक़ाम पर उसे लकड़ी के कुछ बोसिदा टुकड़े नज़र आये गुप आफिसर ने उस जगह को कुरेदना शुरू किया तो मालूम हुआ कि बहुत सी लकड़ीया संगलाख ज़मीन में दबी हुई हैं। माहरीन ने चन्द सतही अलामत से अन्दाजडा कि यह लकड़ीया कोई गैर मामूली और पोशीदा राज़ अपने अन्दर रखती है। उन्होने उस मक़ाम की खुदाई निहायत तवज्जो से कराई, बहुत सी लकड़ीया और दीगर अशिया बरामद हुई, लकड़ी की एक मुस्तातील तावीज़ नुमा तख्ती भी बोसीदगी और कुहन्गी इख्तेयार कर चुकी है लेकिन चौदाह इन्च तूल और दस इन्च अर्ज़ रखने वाली यह तख्ती इक़तादी तगैसात से महफ़ुज़ है। 1652 ईसवी के आखिर मे माहरीन ने अपनी तहक्रीकात को लिबासे तकमील पहनाकर यह इन्केशाफ़ किया कि मज़कुरा लकड़ी हज़रत नूह अ० की उस मारुफ़ कश्ती से

ताल्लुक रखती है। जो कोह काफ़ की एक चोटी (जूदी) पर आकर ठहरी थी जिस पर किसी कदीम ज़बान मे चन्द हुरुफ कन्दा है उसी में लगी थी।

जब यह तहकीक हो चुकी की काफ़ से बरामद होने वाली लकड़ीयां वाकई कश्तीए नूह अ० की है तो अब यह अम्र तशना रह गया कि पुरअस्मार चूबी तख्ती और उसपर लिखे हुए हुरुफ की हकीकत क्या है।

रूस की सोतियत हुकूमत के ज़ेरे एहतेमाम इसके रिसर्चिंग डिपार्टमेन्ट नें मज़कूरा कश्ती की तहकीक के लिये माहेरीने आसारे कदीमा का एक बोर्ड कायम किया, जिसने 27 फरवरी 1653 से अपना काम शुरू कर दिया इस बोर्ड के अराकीन मुन्दरजाज़ील थें।

1 सौले नौफ प्रोफेसर शोबाए लिसानियात मासको युनिवर्सिटी (2) ईफहाने खीनू, माहिरे सनेसे सने कदीमा, लूलूहान कालेज चाइना (3) मीशाइन, लव फ़ाजिग आफ़ीसर आला आसारे कदीमा, (4) तानमोल गौरफ, उसतादे लिसानियात कैफरद कालेज (5) डीराकीन, माहिर आसारे कदीमा लाएनन इन्सिट्यूट (6) एम एहमद कोलार्ड, नाज़िम जिटकोमन रिसर्च एसोसिएशन (7) मेजर कोलोफ, निगरा दफतर तहकीक़ात मोताल्लिका एसटालिन कालेज।

इन, सातों माहेरीन ने अपनी तहकीक़ात पर पूरे आठ महीने सर्फ़ करने के बाद पुरइसरार तख्ती से मोताल्लिक यह इनकेशाफ़ किया कि जिस लकड़ी सें नूह अ० की कश्ती तैयार हुई थी, उस लकड़ी से यह तख्ती भी बनाई गई है और नूह अ०

ने इसको अपनी कश्ती मे तबर्क और तकद्दुस के तौर पर हुसूले अम्नो आफियत और अजदियाद बरकत व रहमत के लिए लगाया था।

इस तख्ती पर कन्दा हूरुफ को रुसी माहेरीन ने आठ माह की मगजमारी और दिमागी काविशो से बमुशकिल तमाम पढा और रुसी ज़बान में इसका तर्जुमा किया। फिर मिस्टर एन एफ माकिस माहिरे अलसने क़दीमा बरतानिया (मानचिस्टर इंग्लैड) ने इस रुसी ज़बान के तर्जुमे को अंग्रेज़ी ज़बान में मुन्तकिल किया और उसका उर्दू तर्जुमा यूँ है कि (ऐ मेरे खुदा, मेरे मददगार अपने मक़द्दस नुफूस के तुफैल में अपने रहमो करम से मेरा हाथ पकड़, मोहम्मद अ० अली अ०, फातेमा अ० हसन अ० हुसैन अ० अज़ीम तरीन और वाजिबुल एहतेराम है तमाम दुनिया इन्ही के लिए कायम की गयी है इन नामों की बदौलत मेरी मदद कर तू सिराते मुस्तक़ीम की तरफ रहबरी करने वाला है।)

गैलानी मौसूफ लिखते है कि जिस वक़्त यह इबारत मन्ज़रे आम पर आयी तो मोलाहदा ज़नादेका और कुफ़ारों मुन्केरीन की आँखें खुल गयी और उन्हे शदीद हैरत मे मुब्तला इस बात ने किया कि कश्ती की तमाम लकड़िया तो खुर्दा और बोसीदा हालत में बरामद हुई मगर नुफूसे खमसा के अस्माए गिरामी वाली यह तख्ती हज़ारहा साल गुज़रने पर भी मुकम्मिल महफूज़ रही और तगय्यूरात उसको कोई गज़न्द न पहुंचा सके। यह तख्ती (आज भी) रुस के मरकज़े आसारो तहक़ीकात (मासको) में हिफ़ाज़त से रखी हुई है।



## हज़रत हूद अ०

हज़रत हूद अ० हज़रत नूह अ० की सातवीं पुश्त में मुतावलिद हुए। इनका शजराए नसब हूद बिने रियाह बिने जादब बिने आद बिने साम बिनै नूह अ० पर तमाम होता है। तबरी ने वालिद का नाम शालिख बताया है, मुम्किन है कि अब्दुल्लाह का दुसरा नाम शालिख रहा हो।

जनाबे हूद अ० खसलत और आदत और शकल और सूरत मे अपने जद हज़रत आदम से बहुत मुशाबेह थे। यह नूरानी चेहरा, खूबसूरत खदोखाल सिडौल जिस्म और बलन्द और बाला क़दोक़ामत के मलिक थे, दाढ़ी घनी और दराज़ थी।

ख़ुदा ने उन्हे क़ौमे आद (जो मुल्के यमन और किजडरे मौत में इलाक़ाए एहकडाफ की तरफ बकसरत आबाद थी) की हिदात के लिए बी की हैसियत से दुनिया में भेजा।

इस क़ौम के लोग इन्तेहाई तनों मन्द जसीम, ताकतवर, सरकश मगरूर बदतीनत, बदकिरदार और माफ़रमान थे। बुत परस्ती और बातिल परस्ती उनका बुनियादी अक़ीदा था और उसी को वह दीन, ईमान और मज़हब समझते थे। उनके क़द चालीस चालीस पचास पचास गज़ के होते थे और उनके सीने दस दस गज चौड़े होते ते यह ज़मीन पर खड़े होकर ऊंचे ऊंचे पहाड़ों की बड़ी बड़ी चट्टानों को अपनी जगह से खिसका देते थे। यह लोग बड़ी बड़ी ज़मीनो के मालिक थे। इनका

पेशा ज़िराअत और बागबानी था। इनके बागात इन्तेहाई खुबसूरत और सरसब्ज और शादाब होते थे और उसमे खजूर व दीगर मेवें जात की पैदावार बकसरत होती थी। उनका रहन सहन शाहाना था। उनके मकान पत्थरों के बने हुए सेह मन्ज़िला और चहार मन्ज़िला होते थे।

हज़रत हूद अ० ने जब अपनी उम्र की चालीसवीं मन्ज़िल में क़दम रखा तो खुदा ने उन्हें, इसी गुमराह व बरगशता क़ौम पर मबूस किया और उसके साथ ही हज़रत हूद अ० ने अपनी मन्सबी ज़िम्मेदारियों के तहत कारे तबलीग़ की इबतेदा की, उन्होंने क़ौमे आद के लोगो को समझाया कि तुम लोग उस खुदा की इबादत करो जिसने तुम्हें पैदा किया है और जिसकी तरफ तुम्हें पलट के जाना है। उस खुदा की इताअत करो जो तुमहारी कामरानियों को ज़रिया और आरजुओं की मन्ज़िल है, उस खुदा के सामने सरे जियाज़ खम करो जो तुम्हारे मालो दौलत मे इजाफा करने वाला है। ऐसे खुदाओं की परस्तिश से क्या फ़ायदा, जो न तुम्हें कुछ दे सकते हैं और न तुम्हारे किसी काम आ सकते हैं।

यह पहला मौका था कि अपने खुदाओं के बारे मे हज़रत हुद की ज़बान से खिलाफे उम्मीद इस किस्म के कलमात सुन कर बुत परस्तों के बातिल अक़ीदो पर एक कारी ज़र्ब लगी जिससे ख़िजिल होकर उन लोगो ने जनाबे हूद अ० का मज़ाक उड़ाया और उन्हें बुरा भला कहा।

इसके बाद एक दूसरे मौके पर जब कौमे आद के बहुत से सरदार एक जगह इकठ्ठा थे तो हज़रत हूद अ० भी वहां जा पहुंचे और उन्हें दावते हक़ दी सरदारों ने कहा ऐ हूद अ० पहले तुम अच्छे भले थे अब तुम्हे यह क्या हो गया है, जनाबे हूद अ० ने फ़रमाया अल्लाह ने मुझे मन्सबे नबूवत पर फायज़ करके तुम्हारी इस्लाह के लिए मुकर्रर किया है। बस यह सुन्ना था कि वह लोग उन पर झपट पड़े उन्हें जदो कोब किया और इस बेदर्दी से गला घोटा कि जनाबे हूद अ० बेहोश हो गये। एक दिन एक रात की मुसल्लसल बेहोशी के बाद जब उन्हें होश आया तो उन्होंने खुदा की बारगाह में फरयाद की और कहा। पालने वाले तूने देखा कि इन बदबख्तों ने मेरे साथ क्या ज़ुल्म किया है। हुक्म हुआ कि ऐ हूद अ० तुम मलूल और रंजीदा न हो और मोहकम इरादों के साथ इसी तरह कारे तबलीग़ जारी रखो आज से मैंने तुम्हें वह रोब, वह दबदबा, वह कुव्वत और वह हैबत अता करदी है कि आइन्दा यह लोग तुम्हारी तरफ आँख उठाकर देखने की हिम्मत भी नहीं कर सकते। हज़रत हूद अ० को अपने खुदा की इन बातों पर पुरा पुरा एतमाद और भरोसा था इसलिए वह फिर बेखौफ़ व खतर उन काफ़िरों के दरमियान गये और उन्होंने राहे हक़ की दावत दी। लोगों ने कहा, ऐ हूद अ० पहली मार में तुम बच गये लेकिन इस बार तुम्हे खत्म करके ही दम लेगें, वरना अपनी इस तबलीग़ से बाज़ आ जाओ। हूद अ० ने फरमाया कि यह तुम्हारे हक़ में बेहतर होगा कि तुम अपने साब्रिका गुनाहों की तौबा कर लो और सीधे रास्ते पर आ जाओ वरना मेरा खुदा

जहां रहीम व करीम है वहां क़हार व जब्बार भी है। हज़रत हूद अ० की इस गुफ़्तगू में वह एतमिनान व दबदबा था कि मुलहदीन के दिलों में वह खोफ पैदा उआ कि वह वहां से भाग खड़े हुए और अपनी क़ौम के सरदारों से मारा माजरा बयान किया, चुनांचे एक दिन पूरी क़ौम एक मरकज पर जमा हुई और यह तय पाया कि सब लोग एक साथ मिल कर हूद अ० को क़त्ल करदें चुनांचे इस इरादे से वह लोग हूद अ० के पास पहुंचे और चाहा कि हमला करके उन्हे क़त्ल कर दें, हज़रत हूद अ० ने हालात की नज़ाकत को महसूस किया और एक ऐसा नारा बलन्द किया कि सब के सब दहशत ज़दा होकर मुंह के बल ज़मीन पर गिर पड़े।

इन वाक़ियात को मोतबर रावियों के ज़रिये बहुत से उलेमा और मोअर्रेखीन ने लिखा है। बहरहाल हज़रत हूद अ० की तबलीग़ इधर जारी रही और उधर उसके रददे अम्ल में क़ौमे आद के लोगों की सरकशी और नाफ़रमानी बढ़ती गयी चन्द अफ़राद के अलावा किसी ने इमान कुबूल नही किया हांलांकि जनाबे हूद अ० इस क़ौम को हर मन्ज़िल में मोहकम दलीलों के ज़रिए इस क़ौम के लोगों को बराबर शिकस्त देते रहें और शिकस्त के नतीजे में यह लोग हज़रत हूद अ० को साहिर जादुगर और न जाने क्या क्या कहते रहें।

जह हज़रत हूद अ० ने 760 साल तक तवील तबलीगी कोशिशों के ज़रिये हुज्जत तमाम कर ली और पानी सर से ऊंचा हो गया तो आपने परवरदीगार से इनपर अज़ाब नाज़िल करने की इस्तेदुआ की।

चुनांचे सबसे पहले खुदा ने इस कौम के लोगों पर चीटियों तो मुसल्लत किया जो इनकी नाक व कान के जरिये हलक के अन्दर उतर जाती थी और काट काट कर इन्हें मौत के हमकिनार कर देती थीं। आखिर कार तंग आ कर इन लोगों ने शहरों की सुकूनत तर्क कर दी और अपनी जान बचाने की गरज से माल व पता छोड़ कर दुसरे इलाकों में चले गये। इस आफत नागहानी के बाद भी जब लोगों की आँखे न खुल सकीं और वह वदस्तूर अपने मसलक पर अड़े रहे तो खुदा ने इन्हें कहत मे मुबतेला किया क्योंकि इनकी जिन्दगीयों और ऐश, कोशिशयों का सारा दामोदार ज़राअत पर था। कहत ने जब इन्हे फाका कशी के दहाने पर ला कर खड़ा कर दिया और वह भुखों मरने लगे तो कौम के सरदारों ने एक वफ़द मर्सद बिन साद बिन अफीर की क़यादत में हज़रत हूर के पास रवाना किया कि वह इनसे मिलकर बारिश के लिए दुआ का तालिब हों चुनांचे वफ़द हज़रत हूर की खिदमत में हाज़िर हुआ और इन्की गुफ्तगू से मुतास्सिर हो कर पहले अल्लाह की वहदानियत और हूद की नबूवत पर ईमान लाया फिर उसने कहा कि ऐ अल्लाह के नबी आप खुदा से दुआ कीजिए कि वह हमें इस कहत से निजात से निजात दे।

हज़रते हूद ने बारिश के लिए दुआ की, और फरंमाया कि परवरदिगार इस गुमराह कौम को एक मौका और दे जवाब मिला कि ऐ हूद इनसे कह दो कि बस यह आखरी मौका और हैं। गरज यह कि हज़रत हूद ने इनको हुकमें इलाही से आगाह किया और यह मुजदा सुनाया कि जाओ तुम्हारे शहरों में बारिश होगी।

चुनांचे जब वफद वापस गया तो उनके शहरों में ऐसी बारिश हुई कि खुशक ज़मीनें सेराब हो गयीं और सुखी हुई खेती फिर लहलहाने लगी। बागात सरसब्जो शादाब हो गये। लेकिन इस एहसान फरामोश क्रौम के दिल में न हज़रते हूद के लिए कोई जज़बा पैदा हुआ और न उनके तरजे अमल में कोई तबदीली वाके हुई। बल्कि खुदाए वहदहू लाशरीक के मुक़बिलमें उसकी नाफरमानियां जुरअतें जसारतें और हिम्मतें कुछ और बढ़ गयीं लेकिन परवरदिगार इन्हे मोहलत देता रहा और जब यह क्रौम किसी सूरत से राहे रास्त पर न आयी तो मशीयते इलाही को जलाल आ गया और हज़रते हूद को यह हुक्म हुआ कि इन्हें मुकम्मल अज़ाब की खबर दे दो।

इस आखरी अज़ाब की इब्तेदा यूं हुई कि खुदा वन्दे आलम ने इस क्रौम के चारो तरफ रेत व बालू के बुलंद व बाला दीवारें खड़ी करके इसके अंदर इन्हें महसुर कर दिया ताकि कोई शख्स राहे फरार इकतेयार न कर सके। अल्लामा मजलिसी अर0 तहरीर फरमाते हैं कि इस क्रौम के अफराद रेत व बालू के टीलों को हटाते थे मगर वह फिर इनके गिर्द और ऊंचे हो जाते थे और इन टीलों से यह आवाज़े आती थीं ऐ हूद तुम फिक्र न करो यह टीले इनके लिए अज़ाब बन जायेंगे। फिर खुदा ने हवाओ को हुक्म दिया कि वह इस कौम का काम तमाम कर दें। चुनांचे ऐसी तेज़ व तुन्द हवायें चलीं कि जिसने दरख्तों को जड़ो से उखाड़ फेका, पहाड़ो से बड़े बड़े पत्थर आसमान की तरफ बलन्द होते और ज़मीन के सीनों में धंस जाते थे।

लेकिन चूंकि हवा इन्तेहाई तेज़ी व शिदत के साथ ज़मीन के अन्दर से निकल रही थी। लिहाज़ा वह इन पत्थरों को गेंद की तरह फिर आसमान की तरफ उछाल देती थी। मोअर्रेखीन का बयान है कि यह हवा जो अज़ाब की शक्ल में क्रौमे आद पर मुसल्लत हुई थी एक हफता रात व दिन चलती रही। यहां तक की पुरी क्रौम नेस्तोनाबुद हो गयी। इनके बागात व मकानात सब खाक में मिल गये। और पत्थरों के बड़े बड़े किले रेत की शक्ल में तब्दील हो गये बाज़ रवायतों में है कि यह हवा क्रौमें आद के लोगों को ज़मीन व आसमान के बीच बुलन्द करती थी और ऊपर से इस तरह पटकती थी कि इनके जिस्मों की हड्डियां रेज़ा रेज़ा हो जाती थी।

अल्लामा मजलिसी का कहना है कि ज़मीन अहकाफ में अब भी क्रौमे आद के मकानात और इनकी हड्डियों के ढांचे रेज़ो की शक्ल में मौजूद हैं। इस हवा का नाम बादे अक्रीम है जो इन्तेहाई तेज़ व तुन्द होती है और जब यह चलती है तो तमाम नबातात को जला कर खाक कर देती है। क्रौमे आद को जडातुल आमाद भी कहा जाता है। क्योंकि इन्होंने पहाड़ो से बड़े बड़े सुतून तराश कर अपने बुलंद मकानों में लगाये थे। इस क्रौम की आबादी वाले इलाकों को एहकाफ़ इसलिए कहा जाता है कि यह खिता रेगिस्तानी था और अहकाफ़ के माने रेत हैं और यह अज़ाब क्रौमे आद पर चूंकि चहार शम्बा को नाज़िल हुआ था। इसलिए खुदा ने इसको रोज़े नहस मुसतमिर किया है। जब मोतसिम का दौर आया तो उसने इस एलाके के

एक मक़ाम बर्तानिया में एक कुंआ खुदवाया मगर 300 गज़ खुदवाई के बावजूद इसमें पानी न निकला आखिर तंग आकर इसने खुदाई बन्द कर दी। और अपना इरादा तर्क कर दिया फिर जब मुतावक्किल का ज़माना आया तो इसने इस कुएँ की अस्सरे नौ खुदाई शुरू करायी।

चुनांचे खुदाई करते करते एक पत्थर की चट्टान नज़र आयी और जब इसको तोड़ा गया तो इसके अंदर से हवाएं सर्द का झोंका बाहर आया जिसने तमाम लोगों को हलाक कर दिया और जितने भी इस कुएँ के आस पास थे सब के सब मौत के घाट उतर गये। जब यह खबर मुतावक्किल को मालूम हुई तो वह सख्त हैरान हुआ और उसने तमाम उलमा को जमा करके उइनसे इसके बारे में दरियाफ्त किया लेकिन कोई कुछ न बता सका। आखिर कार इमामे अली नकी को सारे हालात से आगाह किया तो आपने तहरीर फरमाया कि यह जगह कौमे आद के शहरों की है। जो हवाएं तुन्द से हलाक हो गये इसलिए कि जब खुदा ने हज़रत हूद अ० को उनकी तरफ भेजा तो उन्होने तकज़ीब की और खुदा की नाफरमानी करते रहे तो खुदा ने उन पर हवा का अज़ाब मुसल्लत किया जिसने उनकी पूरी कौम को हलाक कर दिया। हज़रते हूद अ० के साथ वही लोग इस अजाब से महफूज़ रहे जो ईमान कुबूल कर चुके थे।

रवायतो से यह पता भी चलता है कि वक्ते अज़ाब हज़रते हूद ने परवरदिगार के हुक्म से एक बहुत बड़ा हेसार खँचा था और जो लोग अल्लाह की वहदानियत पर



ईमान ला चुके थे इन्हें लेकर वह इसी हिसार में दाखिल हो गये थे। हज़रते इमामे अली अ० का कौल है कि हवा की पाँच किस्में हैं जिनमें से एक का नाम बादे अक्रीम और मे इस की शर से खुदा की पनाह तलब करता हूँ तारीखों की किताबों से यह पता तो चलता है कि हज़रते हूद अ० ने 760 सालों तक कारे तब्लीग अन्जाम दिया लेकिन यह पता नहीं चलता कि आपकी वफात के वक्त आप की मजमुई उम्र क्या थी और मुफस्सेरिन व मोअर्रेखीन के दरमियान इस अम्र मे इखतेलाफ है कि आप कहा दफन हुए बाज़ का बयान है कि हज़रे मौत के किसी गार में है। बाज़ का कहना है कि मक्के में हज़रे इसमाइल के आस पास मदफुन है।

हज़रत इमामे हसन अ० का कौल है कि मेरे वालिद हज़रत अली अ० ने बादे अज़्ज़रबत मुझसे फरमाया था कि मुझको नजफ में मेरे भाईयों हूद और सालेह के दरमियान दफन करना।

### **इरमें जातुल - एमाद की हकीकत**

शेख तुसी और इब्ने बाबुबिया का बयान है कि एक शख्स अब्दुल्ला बिन कलाबा का उँट खो गया था। वह इस अदन के सहाराओं और बयाबानो मे तलाश करता फिर रहा था कि अचानक उसकी नज़र एक शहर पर पड़ी जो खुबसुरती में अपनी मिसाल आप था। इस शहर के चारो तरफ एक फसील थी जो बेश कीमत

जवाहेरात से मुजैयन थी। इस फसील के अन्दर बहुत से कस्र बने थे और उन कस्रो पर उंचे उंच परचम लहरा रहे थे।

अब्दुल्ला बिन क़लाबा शहर के करीब आया और फ़सील के साये में मुक़ीम हो गया। वह तीन रोज़ तक वहां क़याम पज़ीर रहा लेकिन उसने न तो किसी को शहर के अन्दर जाते देखा और न शहर के बाहर आते देखा। चुनांचे उसको यह जुस्तु जु हुई कि आखिर यह माजरा क्या है और इस शहर की खामोशी का राज़ क्या है। इसने शहर में दाखिल होने का इरादा किया और तलवार नियाम से बाहर निकालकर फ़सील के किनारे किनारे एक तरफ चल पड़ा। थोड़ी दूर चलने के बाद इसे दो बुलन्द कामत दरवाज़े नज़र आये जो इन्तेहायी खुशबुदार लकड़ी से बने थे। और इन्हे ज़र्द और सुर्ख रंग के याकूत से मुरस्सकिया गया था। अब्दुल्ला यह हाल देखकर हैरत व इस्तेजाब के आलम में कुछ देर चुप चाप खड़ा रहा। फिर एक दरवाज़ा खोलकर अन्दर दाखिल हो गया था। यह देख कर सख्त तअज्जुब में मुब्तला हुआ वहां जितनी भी इमारतें हैं सब की सब याकूत के सुतूनों पर क़ायम हैं और हर इमारत पर एक बाला खाना है। जो तेला व नुकरा मखारीद याकूत व ज़मर्द से बनाया गया है और इमारतका फर्श मुश्कओ अम्बर से बना है लेकिन किसी मतानफ़िस का दूर दूर तक पता नहीं है। वह यह वीरानी देख कर कुछ खौफ़ ज़दा हुआ फिर इसने इन इमारतों के अतराफ में नज़र डाली बहुत से चमन व खुबसुरत बागात दिखायी दिये। जो फूलों और फलों से लदे हुए थे और जां बजां

दूध की तरह साफ व शफ़फ़ाफ नहरे जारी थी। गर्ज़ कि मोतियों और ज़ाफ़रान व मुशको अम्बर से अपना दामन भरा और खामोशी से बाहर आ गया। दुसरे रोज़ वह अपने नाके पर सवार हुआ और जिधर से आया था। उधर रवाना हो गया।

जब अब्दुल्ला अपने घर पर पहुंचा तो उसने सारा माजरा लोगों से बयान किया जिसे सुनकर लोग हैरत ज़दा हो गये। रफ़ता रफ़ता यह खबर माविया तक पहुंची। तो इसने हाकिमे सनआ के पास अपना एक कासिद रवाना किया और अब्दुल्ला बिन क़लाबा को तलब किया जब वह आया तो माविया ने ख़लवत में इससे सारा हाल मालूम किया अब्दुल्ला ने जो कुछ अपनी आंखो से देखा था बयान कर दिया। फिर माविया ने काबुल अहवार नामी एक शख्स को तलब किया जो साबेका बातों का इल्म रखता था। जब काब आया तो माविया ने इससे पूछा कि क्या तुमने ऐसे किसी शहर का हाल किसी से सुना या किताबों में पढ़ा है जो सोने और चाँदी और जवाहरात से बना हो और इसकी इमारतें याकूत व ज़र्मरुद के सुतूनों पर क़ायम हो और इसके अन्दर दूध की तरह साफ व शफ़फ़ाफ नहरे जारी हों। काब ने कहा हां इस शहर को शद्दाद पिसरे आद ने बनाया था और इरमें ज़ातुल माद यही है जिसका तज़केरा खुदा ने कुराने मजीद में किया है और इसके वस्फ़ में कहा है कि लम युखलोको मिसलोहा फिल बेलाद यानी इस शहर का मिस्ल और कोई शहर नहीं है। माविया ने कहा कि इसका मुफ़स्सल हाल बयान करो। इसने कहा कि

आद कौमे हूद से था। इसके दो बेटे थे। एक का नाम शदीद था और दुसरे का नाम शद्दाद था जब आद ने रेहलत की तो शद्दाद बादशाह हुआ और खुदा ने सल्तनते अज़ीम इसको अता की।

शद्दाद को किताबों के मुतालेआ का बेहद शौक था चुनानंचे जब इसने बेहिशत का जिक्र पढा और इसकी इमारतों के कसरों के हालात से आगाह हुआ तो इसने हुक्म दिया कि खुदा की बेहिशत के मुकाबले में वैसी ही बेहिशत मेरे लिये दुनिया में तैयार की जाये। सौ आदमी इसके बनाने पर मामूर हुए और हर आदमी को उसके हजार मद्दगार मोहय्या किये गये। लोगों ने कहा कि इतना सोना चांदी और जवाहेरात कहां से मोहय्या होगा। शद्दाद ने कहा कि क्या तुम नहीं जाते कि सारी दुनिया मेरे कब्जे में है। कहा जानते हैं। शद्दाद ने कहा कि सोने चांदी और जवाहेरात कि कानों में अपने आदमी मुकर्रर करो जो इन आशिया की फ़राहमी करें। इसने इन तमाम सलातीने ममलेकत के नाम फरमान जारी किये दस बरस में सोना, चांदी और जवाहेरात जमा किये गये। और तीन सौ बरस में जन्नते शद्दाद बन कर तैयार हुयी।

जब शद्दाद को यह इत्तेला दी गयी कि तेरे हुक्म के मुताबिक बेहिशते अर्जी बनकर तैयार हो चुका है। तो शद्दाद अपने लशकर और अहले ममलेकत के हमराह इसका मोआयना करने की गरज से रवाना हुआ और जब वह बेहिशत के करीब

पहुंचा तो हक्के तआला ने इस पर और इसके तमाम हमराहियों पर एक ऐसी सदा आसमान से नाज़िल की कि वह सब के सब हलाक हो गये। न शद्दाद खुद इस बेहिश्त में दाखिल हो सका न ही उसके साथियों को इसमें दाखिला होना नसीब हुआ। जिसका नाम इरमें जातुल आमाद है। अल्लामा मजलिसी का बयान है कि इस वक्त शद्दाद की उम्र नौ सौ साल की थी।

## हालाते हज़रते सालेह अ०

हज़रते सालेह बिन अबीद बिन आसिफ बिन रासिख बिन अबीद बिन आमिर बिन समूद निन इरम बिन साम बिन नूह अ० हज़रते नूह की दसवीं पुश्त में मुतवल्लिद हुए। जब तक आप हयात रहे अपने लिए कोई घर नहीं बनवाया। आप का हुलिया मुखतलिफ़ किताबों में अलग-अलग अन्दाज़ में मोअर्रेखीन ने तहरीर किया है। जिसकी मजमुयी सूरत यह है कि आप का क़द लम्बा चेहरा बेजावी पेशानी कुशादा आंखें बड़ी जिस्म फ़रबे और रंग गोरा था। और आप हमेशां बरहेना पैर रहते थे।

आप बचपन ही से बड़े ज़ाहिद व मुत्तकी व परहेज़गार और इबादत गुज़ार थे परवरदिगार ने सोलह बरस की उम्र में सन्सबे नबूवत पर फाएज़ कर दिया और उसी वक्त से आप कारे तबलीग़ की अन्जाम देही में मसरुफ़ हो गये। जिसका सिलसिला 120 साल तक जारी रहा। खुदा ने आपको क़ौमें समूद पर मबऊस

फरमाया था। जो वादियेकरा से तेरह किलो मीटर की दूरी पर हजर नामी एक मक़ाम पर आबाद थीं और इसका हल्क़ए मस्कन न सिर्फ़ हजर बल्कि दूर दराज़ तक फैला हुआ था।

यह क़ौम बुत परस्त थी और 70 बुतों को अपना ख़ुदा तस्लीम करती थी। जब सालेह इस क़ौम को मुद्दतों बुतपरस्ती से मना करते रहे और समझाते रहे कि तुम लोग उस ख़ुदा की इबादत करो जो याफ़ता व लाशरीक है। और जिसके सिवा कोई माबूद नहीं है। लेकिन जब यह लोग न मानें और हज़रते सालेह इनके जाहिलाना अफ़आल से आजिज़ आ गये तो उन्होंने पूरी क़ौम के सरदारों को जमा किया और फरमाया कि मैं तुम लोगों जिहालत से तंग आ चुका हूँ। अब सिर्फ़ यह सूरत रह गयी है कि हमारे तुम्हारे दरमियान अमली मुनाज़ेरा हो। यानी तुम लोग हमसे सवाल करो और इस सवाल को हम अपने ख़ुदा से पूरा करा दें तो तुम लोग ईमान ले आओ या फिर हमें इजाज़त दो कि हम तुम्हारे ख़ुदाओं से सवाल करें और वह उसे पूरा कर दें। तो हम अपने चंद साथियों के साथ तुम लोगों से किनारा कश हों जायें। और किसी दूसरी जगह चले जायेंगे। लोगों ने कहा कि तुम्हारी यह बात दुरूस्त है। मुनासिब होगा कि ईद के मौक़े पर यह मारका आराई हो जाये।

चुनांचे जब ईद का मौक़ा आया तो क़ौमे समूद की सरबरआवुरदा अफ़राद अपने बुतों को नहला धुला कर एक जंगल में ले गये। और इनके साथ ही वह लोग खाने पीने का सामन भी ले गये। और जब ईद की खुशियां मना चुके तो हज़रते सालेह

को बुलवाया और उनसे कहा कि वह उनके खुदाओं से सवाल करें इन्हें पूरा यकीन था कि सालेह का हर सवाल पूरा होगा। क्योंकि इनके खुदाओं में अकसर शैतान हुलूल कर जाता था। जो इन बुत परस्तों को गुमराही के रास्ते पर कायम रखने के लिए इनसे बातें किया करता था। और इन्हें तरह तरह की झूठी तसल्ली दिया करता था। मगर अल्लाह के नबी के सामने शैतान की क्या मजाल थी कि वह उन बुतों में हुलूल करता। या इनकी ज़बान में बातें करता।

गर्ज कि हज़रते सालेह इन बुत परस्तों के बड़े बुत के पास गये और इसके नाम से इसे आवाज़ दी। लेकिन कोई जवाब न मिला फिर लोगों ने कहा कि दूसरे बुत को पुकारों आपने इसे भी आवाज़ दी वह भी खामोश रहा यहां तक कि जनाबे सालेह ने उन्होंने एक एक कर के देकर बुतों को मुखातिब करना चाहा मगर कोई न बोला तब आपने फरमाया कि तुम्हारे यह खुदा गूंगे हैं, बहरे हैं, बेजान हैं और मजबूर हैं। जब यह मेरी आवाज़ पर बोल नहीं सकते हैं तो यह मेरा सवाल कैसे पूरा कर सकते हैं। फिर आपने फरमाया कि अब तुम सब लोग मुझसे मिल कर अपनी ख्वाहिशों को ज़ाहिर करो मैं इन्शाअल्लाह अपने खुदा से ज़रूर पूरी करा दूंगा। इस पर लोगों ने कहा कि ऐ सालेह इस वक्त हमारे खुदाओं को न जाने क्या हो गया जो खामोश हैं तुम हमें एक मौक़ा और दो ताकि हम इन्हें राजी कर लें। चुनान्चे हज़रते सालेह ने इन्हें मोहलत दी और वापस चले आये। चन्द दिनों के बाद फिर पूरी कौम इकट्ठा हुई बुतों के सामने फर्श बिछाया गया और सब के सब

इस पर लोटने लगे। जब लोटते लोटते थक कर बेहाल हो गये तो उन लोगों ने फरियाद ओ ज़ारी शुरू की और कहा कि ए हमारे खुदाओं हमें ज़लील और रूसवा न करो। सालेह को जवाब दो वरना हम मुंह दिखाने के काबिल न रहेंगे। इतने में किसी बुत के अन्दर छिपे हुए शैतान ने जोरदार क़हक़हा बुलन्द किया जिसका मतलब लोग यह समझे कि इनके खुदाओं ने अपनी रज़ा मन्दी ज़ाहिर की है। उन्होंने फौरन हज़रते सालेह को बुलवाया और कहा कि हमारे खुदा हमसे राज़ी हो गये हैं। अब आप इनके सामने अपनी ख्वाहिश बयान करें। हज़रते सालेह ने साबेका अन्दाज़ से फिर बुतों को मुखातिब करना शुरू किया। मगर नतीजा कुछ न निकला और सिवाये खामोशी के कोई जवाब न मिला। तो हज़रते सालेह ने फलमाया की मेरी हुज्जत तमाम हो चुकी है। अब तुम लोगों को चाहिए कि तुम अपनी ख्वाहिश बयान करो और मैं अपने खुदा से पूरी करा दूं मगर शर्त यह कि अगर तुम्हारी ख्वाहिश पूरी हो जाये तो तुम्हें मेरे खुदा पर ईमान लाना होगा।

चुनान्चें अरबाबे समूद ने अपनी क़ौम के बुजुर्ग व मोअतबर 70 आदमी इस बात के लिए मुन्तखब किए कि वह हज़रते सालेह से सावाल करें और अगर वह पूरा हो जाये तो पूरी क़ौम इनका मसलक कुबूल कर ले। ग़ज कि वह 70 अफराद हज़रते सालेह को एक पहाड़ की तरफ ले गये और वहां उनसे कहा कि अपने खुदा से कहो कि इस पहाड़ी से एक सुर्ख रंग की उटनी पैदा करे। जो दस माह की हामला हो। और जिसकी लम्बाई एक मील की हो।



हज़रते सालेह ने फरमाया कि यह काम मेरे लिए मुश्किल और दुशवार हो सकता है लेकिन मेरे परवरदिगार के लिए बहुत आसान है फिर आपने दुआ के लिए हाथ बलन्द किये और पहाड़ की तरफ इशारा किया अभी दुआ तमाम न हुई थी कि पहाड़ पर एक जलजला तारी हुआ और के मुहीब आवाज़ के साथ उसमें शिगाफ पैदा हुआ जिससे ऊटनी का सर बाहर निकला देखते ही देखते एक चीख के साथ वह बाहर आ गयी। कुतरत का यह करिशमा देखकर सब लोग हैरान रह गये और हज़रत सालेह से कहने लगे कि तुम्हारे परदिगार ने बेशक हमारी बात मान ली। और महारी ख्वाहिश पूरी हुई। अब इससे कहो कि वह हमें इस ऊटनी के शिकम से बच्चा पैदा कर के भी दिखाये। हज़रते सालेह ने फिर दुआ कि और उसी वक्त इसके शिकम से बच्चा पैदा हुआ।

इसके बाद जनाबे सालेह ने क़ौम समूद के लोगों से फरमाया कि अगर और कोई ख्वाहिश है तो उसे भी बयान करो उन्होंने कहा कि नहीं हम मुतमइन हो गये। बेशक तुम्हारा खुदा सच्चा और इबादत व इताअत का मुसतहक है अब तुम इस ऊटनी को लेकर हमारी क़ौम के पास चलो ताकि जो कुछ हमने देखा है वह और लोगों से बयान करें और इन्हें तरगीब दें कि वह लोग भी ईमान ले आयें हज़रते सालेह अपने नाक़े के हमराह इनके साथ चल पड़े लेकिन रास्ते ही में 70 आदमियों के दरमियान इखतेलाफ पैदा हुआ और 64 अफराद फिर मुतद हो गये और इस करिशमये कुदरत को हज़रत सालेह के सेहरओ जादू से ताबीर करने लगे

सिर्फ 6 आदमी बाकी रहे लेकिन बाद में इनमें से भी एक शख्स शक व शुब्हे में मुब्तेला होकर इमान से फिर गया।

इस बाहमी इखतेलाफ का नतीजा यह हुआ कि क्रौमे समूद में से चंद लोग ईमान लाये बाकी लोगों ने यह कह दिया कि यह सब जादू है। हम अपने खुदाओं को नहीं छोड़ सकते हैं।

### नाकेय सालेह का अन्जाम और अज़ाब

हज़रते सालेह ने हुक्मे इलाही के मुताबिक अहले समूद के दरमियान यह एलान कर दिया था कि तुम्हारी वादी का पानी एक रोज़ मेरा नाका पियेगा और दूसरे दिन तुम्हारे जानवर सेराब हुआ करेंगे। मोअर्खीन का बयान है कि नाका अपनी बारी पर सारी वादी का पानी पी जाता था और इस क़द्र दुध देता था कि पूरी क्रौम इससे सेराब होती थी। फिर कुछ सरकशों ने बाहम यह मशवेरा किया कि इस ऊंटनी को खत्म कर देना चाहिए। क्योंकि इसकी वजह से हमारे जानवरों को दीसरे दिन पानी मिल पाता है और जब तक यह ज़िन्दा रहेगी उस वक्त तक यही होता रहेगा। बाज़ मोअर्खीन का कहना है कि इस काम के लिए क्रौमे समूद के सरदारों ने कुछ इनाम भी मुकरर किया।

चुनांचे केताम नामी एक औरत के एक आशिक़ केदार जो वलदुज्जेना था अपने साथियों की मदद से ऊंटनी को उस वक्त पै कर दिया जब वह वादी से पानी पी कर

वापस आ रही थी वह पहलू के भल ज़मीन पर गिरी और खून में लोटने लगी फिर उस ज़ालिम ने उसे खत्म करके इसका गोश्त क़ौम के लोगों में तकसीम कर दिया। ऊंटनी के बच्चे ने जब अपनी मां का यह हाल देखा तो वह भाग कर पहाड़ पर चढ़ गया। और आसमान की तरफ मुंह उठाकर खुदा से फरियादो जारी करने लगा। जिसके नतीजे में गैज़े इलाही जुम्बिश में आया।

बजरिया वही हज़रते सालेह को हुकम हुआ कि ऐ सालेह इन ज़ालिमों को अज़ाब की ख़बर दे दो। और इनसे कह दो कि मेरी तरफ से इन्हें तौबा के ले तीन दिन का मौका दिया जाता है वरना यह लोग अज़ाब में मुब्तला होंगे। जिसकी अलामत यह होगी कि कल सुबह तक इनके चेहरे ज़र्द हो जायें फिर दूसरे दिन सुर्ख और तीसरे दिन सियाह हो जायेंगे। अगर इस पर भी इन लोगों ने तौबा न की तो यह पूरी क़ौम के घाट उतर जायेगा।

चुनान्चे इस खुदाई फैसले से हज़रते सालेह ने अहले समूद हो आगाह किया लेकिन वह लोग अपनी सरक़शी पर अड़े और सालेह की बातों पर कोई तवज्जह न दी बल्कि इनका मज़ाक उड़ाया। गरज़ कि रात गुज़रने के बाद जब दूसरे दिन सुबह हुई तो अहले समूद के चेहरे ज़र्द थे। कुछ ने कहा कि सालेह की बतायी हुई पहली अलामत ज़ाहिर हो चुकी है। अब हमें क्या करना चाहिए। कुछ ने काह कि यह भी सालेह का एक जादू है जिसके जरिये वह चाहते हैं कि हम उनका कहना

मान लें और अपने खुदाओं को छोड़ दें लिहाजा इस पर हमें ध्यान नहीं देना चाहिए।

दूसरे दिन सुबह के वक्त इनके चेहरे सुर्ख हुए। तो कुछ लोग तशवीश में मुबतेला हुए। और कुछ ने कहा कि हम इस फरेब में मुबतेला होने नहीं। दीसरे दिन इनसे चेहरे सियाह हो गये मगर इस सरकश क्रौम ने की परवाह न की और कहा कि ख्वाह हमारी जानें चली जायें लेकिन न हम तौबा करेंगे और न ही हम सालेह की बात पर तवज्जो देंगे।

और हुज्जत तमाम हो चुकी थी। इसलिए कुदा की तरफ से अज़ाव में कोई ताखीर भी न थी। चुनान्चे तीसरा दिन गुजकर कर जपब रात आयी और लोग अपने अपने घरों में सो गये तो निस्फ़ शब को एक आवाज़ गूंजी ऐसी भयानक आवाज़ कि जिससे कानों के पर्दे फट गये। दिल टुकड़े-2 और जिस्म पारा पारा हो गये और जब सुबह हुई सतो वह तमाम अहले समूद जो ना फ़रमान और सरकश ते अपने अपने घरों में मुर्दा पड़े थे। फिर आसमान से एक शोला उतरा जिसने इनकी लाशों को राक के ढेर में तब्दील कर दिया सिर्फ वही लोग बचे जो सालेह और उनके कुदा पर ईमान ला चुके थे। तबली का कहना है कि यह क्रौम शाम और यमन के दरमियानी हिस्सा यानी होजाज़ और हरमैन में आबाद थी। और खुदा ने इसपर बिजली और ज़लज़ले का अज़ाब नाजिल किया।

अल्लामा मजलिसी हयातुल कुलूब में काबुल अहबार से रवायत करते हैं कि जब कौमे समूद ने यह तय किया कि नाक्रे को पै कर दिया जाना चाहिए। तो कोई शख्स हमें ऐसा हिम्मत और दिलेर नहीं मिलता था जो इस काम के अन्जाम दे सके। कदार को केताम नामी एक औरत ने इस काम पर तैयार किया जो इसकी मासूका थी और अपने वक्त की हसीन व जमील औरतों में इसका सुमार होता था।

## असहाबे रस का वाक्रेया

यानी मोअर्रेखीन का खयाल है कि (रस) वह कुआं है जो मक्के के रास्ते में वाक्रे है। इस कुएँ से कुछ फासले पर एक दरिया था और इस दरिया के किनारे वह अस्हाबे रस की बस्ती कहलाती थी। यह लोग इन्तेहाई खुन्खवार सरकश और जाहिल थे। हजरते सालेह अनपी तब्लीग के इब्तेदाई दौर में लोगों की हिदायत के ले अपने नुमाइन्दे भी भेजा करते थे। चुनान्चे भेजा जिसे इन लोगों ने कत्ल कर दिया फिल दूसरा भेजा वह भी कत्ल कर दिया गया। यहां तक कि तीन नुमाइन्दे यके-बा-दीगरे कत्ल कर दिये गये तो आपने चौथा नुमाइन्दा भेजा और इसके साथ अपना एक वली भी बेजा चुनान्चे एत दूसरे की मदद से यह लोग महफूज़ रहें और कारे हिदायत अन्जाम देते रहे मगर असहाबे रस की खूंखार सरिशत पर इनकी हिदायत का कोई असर न हुआ उन्होने खुदा की इताअत कुबूल करने से इनकार

किया और कहा कि हमारा खुदा दरिया में रहता है जिसे हम सजदा करते हैं और वह साल में ईद के मौके पर जाहिर होता है।

हजरते सालेह के वली ने कहा कि मैं अपने खुदा का एक हकीर बन्दा हूँ लेकिन अगर तुम्हारा कुदा मेरी इताअतरफरमाबरदारी करने लगे तो क्या तुम लोग मेरे खुदा की इताअत कुबूल कर लोगें असहाबे रस ने का कि अगर ऐसा हुआ तो हम तुम्हारे खुदा पर ईमान ले आयेंगे। इस परवलीये सालेह ने कहा कि अच्छा तो ईद के दिन फिर आऊंगा। ईद का मौका आया तो दोनों नुमाइंदै वहामं पहुंचे असहाबे रस दरिया के किनारे जमा ते। यह लोग भी वहां बैठ गये.और असहाबे रस के खुदा का इन्तेज़ार करने लगे।

थोड़ी देर में एक देव पैकर मछली नमूदार हुई जो चार मछलियों पर सवार ती असहाबे रस इसे देखते की सजदे में गिर पड़े और अपनी अपनी मुरादें मांगने लगे हजरते सालेह के वली ने इस मछली से कहा कि ऐ मछली बहुकमे खुदा तू मेरे पास चली आ वह अपनी सवारी के साथ मेरे पास आ वह चारों मछलियों से साथ इनके पास आ गयी। फिल कहा कि वापस जा और दरिया में गर्क हो जा। वह वापस हुई और तरिटया की तह में गर्क हो गयी लेकिन असहाबे रस यह सब कुछ अपनी आंखों से देखने के बावजूद ईमान नहीं लाये बल्कि इन लोगों ने हजरते सालेह के वली की तकज़ीब की और इन्हें जादूगर ठहराया जिसके नतीजे में वह अज़ाबे इलीहरी का शिकार हुए एक तेज़ और तुन्त हवा का तूफान आया जिससे

असहाबे रस को मैं इनके मवेशियों समेत तरिया में गर्क कर दिया। और इनके वजूदसे दामने गेती को पाक कर दिया इसके बाद हज़रत सालेह के दोनों नुमाइन्दे इस कुएं के पास पहुंचे जिसका नाम रस था। और इसके अन्दर असहाबे रस का सोने और चांदी का खज़ाना था जिसे इन लोगों ने निकाला और जो लोग ईमान लाने की वजह से तूफ़ान की ज़द से बच गये ते इनके दरमियान तक़सीम कर दिया और हज़रते सालेह की खिदमत में वापिस आ गये।

तबरी का कहना है कि इन दोनों अज़ाबों के बाद हज़रते सालेह वह मकान छोड़ कर पिलस्तीन की तरफ़ उन लोगों के साथ हिज़रत कर जो ईमान ला चुके थे।

## हज़रते सालेह का मदफ़न

आम मोअररेखीन का खयाल है कि आप का इन्तेक़ाल मक्का - ए- मोअज़्ज़मा में हुआ और वहीं आप दफ़न भी हुए। लेकिन अइम्मए अहलेबैत की मोअतबर रवायात से यह वाज़ेह होता है कि आप नजफ़े अशरफ़ (इराक़) में मदफ़न हुए और आप की क़ब्र वहीं है। जैसा कि इमामे हसन अO से ज़रबत लगने के बाद अमीरल मोमेनीन हज़रते अलीO ने फरमांया था कि मुझे नजफ़ में हज़रते हूद और हज़रते सालेह के दरमियान उस क़ब्र में दफ़न करना जो हज़रते नूह की बनायी हुई है। इस तरह आप की उम्र के बारे में भी इख़तेलाफ़ है। किसी ने 58 साल और किसी

ने 85 साल किसी ने 180 साल किसी ने 200 साल और किसी ने 250 साल बताया है। मेरे नजदीक आखरी कौल तहकीक शुदा और दुरुस्त है।

नाक्रेय सालेह और हजरत अलीO के वाक्रेयात में मुताबेकत

नाक्रेय सालेह को जब हम वाक्रेयाते अलवी के आइने में देखते हैं तो दोनों में हैरत अंगेज मुताबेकत नजर आती है।

1. नाक्रेह सालेह अगर अल्लाह की निशानी था तो अमीरल मोमेनीन भी आयतुल्लाह थे।

2. नाक्रेह सालेह अगर पहाड़ के पत्थरो के पहाड़ से नमूदार हुआ तो हजरत अली भी पत्थरो से बनी इस अजीम इमारत में पैदा हुए जिसका नाम काबा है।

3. नाक्रेह सालेह के दूध से अगर लोग सेराब होते थे तो हजरत अली के चश्मए इल्म भी लोगो को सेराब करता था।

4. नाक्रेह सालेह को अगर पै किया गया तो हजरत अली अO को भी शहीद किया गया।

5. नाक्रेह सालेह को पै करने वाला केदार अगर वलदुज्जेना था तो हजरत अली अO का कातिल इब्ने मुल्जिम भी जेनाजादा था।

6. अगर केदार पस्ता क़द और करंजा था तो इब्ने मुल्जिम भी पस्ता क़द और करंजा था।



7. नाक़ेह सालेह को अगर क़िताम नामी औरत के इश्क में पै किया तो हज़रत अली को क़िताम नामी औरत के आशिक़ ने कत्ल किया।

8. नाक़ेह सालेह के पै होने पर अगर खुदा की तरफ से अज़ाब नाज़िल हुआ तो वारिसे अली का ज़हूर भी दुश्मनाने आले मोहम्मद के लिए अज़ाब होगा।

9. अगर हज़रते सालेह की क़ब्र नजफ में है तो हज़रत अली अO का मज़ारे अक़दस नजफ में है।

10. अगर हज़रते सालेह बरोज़े हश्र अपने नाक़े पर सवारर होंगे तो हज़रत अलीअO भी नाक़ए जन्नत पर सवार होकर बरामद होंगे।

11. रसूलअल्लाह सO ने हज़रत अली से पूछा कि ऐ अली क्या तुम जानते हो कि पहले के लोगो मे बदबख़्तीरिन इन्सान कौन था। हज़रत अली ने फ़रमाया कि ऊटनी की कोचें काटने वाला। फिर आप ने दरियाफ़त किया कि आखिरी लोगों में बदबख़्त तरीन लोग कौन है?फिर अर्ज़ किया कि यह खुदा और उसका रसूल बेहतर जानता है। रसूल अल्लाह ने फ़रमाया कि यह वह शख़्स होगा जो तुम्हारे सर पर ज़रबत लगायेगा और तुम्हारी दाढ़ी को तुम्हारे खून से खेज़ाब करेगा।

## सात चीज़ें

एक सवाल के जवाब में हज़रत इमामे हसन अO ने फ़रमाया कि अल्लाह की मखलूक मे सात चीज़े ऐसी हैं जो बत्ने मादर से नहीं पैदा हुई-

1. आदम

2. हव्वुआ
3. नाकए सालेह
4. गोस्फंदे इब्राहीम
5. मारे बेहिश्त
6. शैतान
7. किलाग हाबील और काबील यानी कौआ।

## हालाते हज़रते इब्राहीम अ०

नसब- हज़रत इब्राहीम बिन नाहूर बिन सारूग बिन अरगवा बिन फ़ालिग़ बिन आबिर बिन शलिख़ बिन किनान बिन अरफ़शद बिन साम बिन नूह अ०

विलादत – हज़रते नूह से 2040 साल बादनमरूद बिन केनआन के दौरै हुकूमत में आप कूफ़े (इराक) के नवाह में कोसारिया नामी गांव के एक गार में मुतावल्लद हुए। आपकी जाए विलादत के बारे में बाज़ मोअर्रेखीन ने बाबुल और बाज़ ने एहवाज़ भी तहरीर किया है। लेकिन मेरी तहकीक के मुताबिक कूफ़ा ज्यादा दुरूस्त है। गार में प की विलादत का वाक़ेया यूं बयान किया जाता है कि आपव का बुत साज़यो बुत परस्त चचा जिसका नाम (आज़र) था। नमरूद के दरबार में साही ज्योतिषि के मंसूब पर फाएज़ था और मुस्तक़बिल में आने वाले हालात के बारे में पेशिनगोइयां किया करता था। एक दिन उसने अपने इल्मे नज़ूम के ज़रिये नमरूद को यह ख़बर दी कि तेरी हुकूमत में ऐसा बच्चा पैदा होने वाला है जो तेरी बिसात उलट कर तेरी तबाही और हलाकत का सबब बनेगा।

नमरूद चूंकि आज़र की बात पर यकीन व भरोसा करता था इसलिए इसने अपनी हुकूमत में हर तरफ मनादी करा दी कि आज की तारीख से कोई मर्द अपनी रत के साथ मुक़ारेबत नहीं करेगा। जो औरत हामिला हो उसका हमल फौरी तौर पर गिरा दिया जाये। और जो बच्चा पैदा हो उसी क़त्ल कर दिया जाये। इस नमरूदी फरमान पर सख़्ती से अमल हुआ और हज़ारो मर्द व रतों को मुक़ारेबत के

जुर्म में कैद कर लिया और हर नवजइदा मासूम बच्चा मौत के घाट उतार दिया गया।

इसी ज़माने में मादरे इब्राहीम बी हामेला थीं मगर खुदा की कुदरत से इनका हमल जाहिर न हुआ। यहां तक कि जब हज़रते इब्राहीम अ० की विलादत का वक्त करीब आया आप पर वज़ये हमल के आसार मुरतब हुए और दर्दे जेह में मुब्तेला हुईं। तो आप ने घर से बाहर निकल कर पहाड़ के एक गार में पनाह ली और वहीं हज़रते इब्राहीम अ० पैदा हुए। विलादत के बात इस खौफ से कि बच्चा कहीं क़त्ल न कर दिया जाये। दूसरे दिन हज़रत इब्राहिम अ० की वालिदा ने इन्हें खुदा के हवाले किया और गार का दहाना एक पत्थर से बन्द करके पने घर वापस आ गयी।

हज़रते इब्राहीम अ० के सामने यह पहली इम्तेहानी मंज़िल थी जब आप गार की तन्हायी में अपनी मां की आगोशे तरवियत और दूध से महरूम हो गये। लेकिन चूंकि नबूवत का ताज प के सर पर रखा जाने वाला था। इसलिए कुदरत ने अपने इन्तेज़ामें कास से आपके दाहिने हाथ के अंगूठे से एक दूध का चश्मा जारी किया जिससे आप सिकम सेर होने लगे। इस दूध में कूवते नमूं इस क़द्र ज़्यादा थी कि बच्चा एक माह में जितना बढ़ता है. हज़रते इब्राहीम एक दिन में इतना ही बढ़ते थे। ममता से मजबूर होकर कभी- 2 आप की वालेदा भी लोगोंम की नज़रें बचा कर गार में तशरीफ ले जातीं और अपने बच्चे को दूध पिला कर नीज़ प्यार

वगैरा कर के वापस चली आती थीं। सवा साल के अरसे में ही हज़रते इब्राहीम इस काबिल हो गये थे कि वह अच्छी तरह गुफतगू करने लगे थे।

एक दिन हज़रते इब्राहीम अ० ने अपनी वाल्दा से फरमाया कि ऐ मादरे गिरामी आप मुधे यहां से गर ले चलिए ताकि देखूं कि इस दुनिया के हालात क्या हैं। आप की वालेदा ने कहा ऐ बेटा अभी इसका मौका नहीं हा अगर नमरूद को खबर हो गयी तो वह तुम्हें कत्ल करवा देगा। रफता रफता गार में रहते रहते हज़रते इब्राहीम को 13 साल की मुदत गुजर गयी। एक दिन फिल आप ने पलमाया कि ऐ मादरे गिरामी आप मुधे गर ले चलिये। आपने फरमाया कि ऐबेटा अच्छा मैं तेरे चचा आजटर के खयालात मालूल कर लूं और इससे इजाज़त ले लूं तो तुझे ले चलूं। चूंकि वह नमरूद का खास आदमी है।

कहीं तेरे बारे में कुछ कह न दे यह कह कर वाल्दए इब्राहीम रुखसत हो गयीं और जब वह थोड़ी दूर निकल गयीं तो हज़रते इब्राहीम भी इनके पीछे पीछे चल पड़े और अपने घर गये। जब आजर की नज़र हज़रते इब्राहीम पर पड़ी तो हैरत अंगेज़ हुआ और उसने मादरे इब्राहीम से पूछा कि यह कौन है फरमाया कि यह मेरा बेटा है जो तेरह साल कब्ल नमरूद के खौफ से फलां गार में पैदा हुआ था। और मैंने आज तक इसे लोगों की नज़रों से पोशीदा रखां। इस पर आजर सखत बरहम हुआ और कहा कि अगर नमरूद को इसकी खबर हो गयी तो वह इसे जिन्दा नहीं छोड़ेगा। फिलहाल तुम यह वादा करो कि अपनी ज़बान बन्द रखोगे।

रवायतों से पता चलता है कि आजर ने जनाबे इब्राहीम की वालदा से अपवी जबान बन्द रखने का वादा तो कर लिया लेकिन अक्सर उसके दिल में यह खयाल पैदा होता कि वह नमरूद को उसकी खबल दे दे। लेकिन जब हजरते इब्राहीम का चेहरा इसकी नज़रों के सामने आता तो इसके दिल में आप की तरफ से मोहब्बत जोस मारती और वह अपना खयाल तर्क कर देता था। अल्लामा मजलिशी अलैहिर्रहमा अपवी किताब हयातुल कूलूब में तहरीर फ़रमाते हैं कि हजरत इमामे हसन अ० का यह क़ौल नक़ल किया है कि हजरते इब्राहीम इन्तेहायी ख़ूबसूरत और हसीन और जमील थे। ख़ूबसूरती का यह आलम ता जिसकी नज़र आप पर पड़ती थी उसके दिल में आप की मोहब्बत पैदा हो जाती थी।

हजरत रसूल ख़ुदा स० अ० का क़ौल है कि हजरते इब्राहीम शक़ल व सूरत में मुझसे बहुत मुशाबेह थे। रवायतों से यह भी पता चलता है कि हजरते इब्राहीम ख़ूबसूरती में हजरते यूसुफ़ के हुस्न के बराबर थे।

## आज़र की हकीकत

बाज़ मोअर्रेखनी यह न समझ सकेकि आजर दरअस्त इब्राहीम का बाप था या चाचा। चुनांचे इस ज़ैल में उलमाए तफ़ासीर और सियर तारीख़ ने बड़ी-बड़ी बहसों की हैं और आख़िर कार यह नतीजा बरामद किया है कि आजर दर हकीकत इब्राहीम का चचा ही था। जैसा कि अल्लमा अब्दुल अली ने शरण मुस्लिम में

तहरीर फरमाया है कि आजर के बारे में सही कौल यह है कि वह हज़रते इब्राहीम का चचा था। आप के वालिद तारीख थे। क्योंकि अरब का दस्तूर था कि जो चचा अपने भतीजे की परवरिश करता था वह उसका बाप कहलाता था।

इसी उसूल के तहत खुदा ने भी कुरआने मजीद में फरमाया है कि इज़ क़ाला इब्राहीमा लेअबी (जब जनाबे इब्राहीम ने अपने अब से कहा) यहां तहकीक के खिलाफ अगर कोई यह बात कहता है कि कि खुदा ने इब्राहिम के बाप को बुत परस्त कहा है तो हमारा जबाव यह है कि बाप का लफज़ चचा के लिए भी इस्तेमाल होता है। जैसे कि हज़रते याकूब के फरज़न्दो ने इब्राहीम, हज़रते इस्माइल, हज़रते याकूब के माबूद की इबादत करते हैं। इसमें हज़रते याकूब के फरज़न्दो ने हज़रते इस्माई को खभी हज़रते याकूब का बाप कहा है। हालांकि यह मालूम है कि हज़रते इस्माइल आप के बाप न थे बल्कि आप के चचा थे। यह भी एहतेमाल है कि हज़रते इब्राहीम के बुतपरस्त बुजुर्ग का तज़केरा है इससे मुराद आप का नाना हो। क्योंकि अरबी ज़बान में नाना को भी बाप कहते हैं। नमरुद के दरबार से वाबस्ता होने के बावजूद आजर अपने पेशे के लिहाज़ से सनमसाज़ व बुततराश था। चुनान्चे वह बुत बनाया करता था। और अपने बेटोंको दिया करता था कि वह इन्हें बाज़ार में ले जाकर फ़रोखत करें। एक दिन हज़रते इब्राहीम को भी कुछ बुत दिये और इनसे भी कहा कि इन्हें ले जाओ और बाज़ार में फरोखत करो। हज़रते इब्राहीम ने इन बुतों की की गर्दनों में रस्सी बांधी और इन्हें घसीटते

हुए बाज़ार में ले गये और वहां पुकार पुकार कर कहने लगे कि ऐ भाइयों मैं ऐसी चीज़ बेचने लाया हूं जो किसी को भी फायदा नहीं पहुंचा सकती। और न ही इससे किसी को कोई नुकसान का अन्देशा है। फिर आप इन बुतों को पानी के करीब ले जाते थे और इनसे कहते थे कि तुम्हें प्यास लगी होगी लो पानी पी लो कभी कहते कि ऐ बुतों कुछ बातें करो बुतों के साथ हज़रते इब्राहीम का यह बरताव देख कर तमाम बाज़ारी लोग शशदर रह गये। जब आजर को इस तौहीन का हाल मालूम हुआ तो वह भी आपे से बाहर हो गया और इसने हज़रते इब्राहीम को घर में कैद करके इन पर घर से निकलने पर पाबन्दी आयद कर दी।

## तारीखे इस्लाम का आगाज़

इस्लाम जो अल्लाह का पसन्दीदा दीन और कुरआनी आयात का मजमुआ है हमेशां से था और हमेशा रहेगा। तमाम अम्बियाए मुरसलीन की तब्लीगी कोशिशें सिर्फ और सिर्फ इस्लाम के लिए थीं। चुनान्चे जो हज़रते आदम पैगाम लाये वह भी इस्लाम था। और जो शीस इद्रीस और नूह जिस अम्र की तब्लीग की वह भी इस्लाम था।



इसी तरह जितने अम्बियाए मुरसलीन मबऊस हे वह सब इसनलाम ही के मुबल्लिग थे। इस लेगाज से आदम नूह और तमाम अम्बिया के सरगुजार हयात सब इस्लाम की तारीख का जुज है। मगर हजरते इब्राहीम से पहले इस्लाम इस्लाही तौर पर इस्लाम के नाम से मौसूम न था। कुरआने मजीद से पता चलता है कि लफजे इस्लाम का आगाज हजरते इब्राहीम के वक्त से हुआ। आप ही ने इस दीने इलाही के पौरों का नाम सबसे पहले मुस्लिम रखा। जैसा कि इरशाद हुआ है (इवीसवाकुम उसमुस्लेमीनी मिनकब्ले) और सबसे पहले इस लकब से मौसूम होने लावे हजते इब्राहीम और इनके फ़रजंद इस्मीइल ते जिन्होंने अपनी नक्ष में इनके बाकी रहने की दुआ भी की। जैसा कि कुरआने मजीद का बयान है कि (परवरदिगार) हमें आपनी बारगाह में मुस्लिम कराह दे और हमारी नस्ल में भी एक उम्मत करार दे जो तेरी बारगाह में मुस्लिम हो। इससे काफ़ ज़ाहिर है कि औलादे इब्राहीम जो लोग नस्ले इस्माइल से हैं वह इस्लाम ही के पैरो समझे जायेंगे।

चूंकि इनके बुजुर्गों का दीन यही था। जिसकी बका के लिए इन्होंने बका के लिए उन्होंने दुआ फरमायी। मेरे नज़दीक नस्ले इस्हाक़ का सिलसिला बी ख्वाह वह ईसाई पर मबनी हो या मूसा पर उसूली तौर पर इस्लाम ही से मुन्सलिक है। यह और बात है कि इनकी शरियतें मखसूस थी जिनकी वजब से इनके पैरो बाद में यहूदी और नस्रानी के नाम से मैसूम हुए। मगर यह शरीयते बनी इस्राइल से

मुखतस थीं औलादे इब्राहीम व इस्माइल के कतई नहीं थीं। औलादे इस्माइल के लिए सिर्फ दीने इब्राहीम था जो कानून और शरीअत के एतेबार से इस्लाम कहलाता था और ब नस्से कुरआन यहूदियत और नसरानियत के मुकाबले में था जैसा कि कुरआनि से वाजेह है कि इब्राहीम न यहूदी ते न ईसाई बल्कि वह दीने इलाही के पैरो और मुसलमान थे। वह मुशरिकों में से नहीं थे।

हजरते इब्राहीम ही वह पहले शख्स हैं जिन्होंने अपने अमल के जरिये मेहमान नवाजी का दर्स दिया खतने का हुकम जारी किया। मूछों और नाखूनों को तरशवाया मिसवाक की, बालों को कंधी से संवारा, पानी से नाक और मुंह साफ करना बताया, नवाज पढने का कग्म दिया और इसका तरीका बताया। सजदे मुअय्यन किये और पानी से इस्तिनजे का तरीका राएज किया। कुछ मोअर्रेखीन ने लिखा है कि आप ने तीशे से अपना खतना खुद किया। इस रवायत से मुझै इत्तेफाक नहीं है क्यूंकि इमाम और पैगम्बर खतना शुदा नाफ बुरीदा पैदा होता है। हजरते इब्राहीम को खुदा ने पहले नबी फिर रसूल बनाया इसेक बाद इमामत के मन्सब पर फाएज किया।

जिससे यह मालूम होता है कि खुदा की नजर में इमामत का मन्सब तमाम मनासिब से लन्द है। और शायद यही वजब थी कि जनाबे इब्राहीम ने अपनी नस्ल में इमामत की दुआ भी की थी।

## हज़रते इब्राहीम के तबलीगी कारनामे

हज़रते इब्राहीम अ० के दोर में मुशरेकीन के दरमियान तीन तरह के शिर्क राएज थे।

1. चांद, सितारों और सूरज की परस्तिश
2. इसनाम परस्ती
3. इन्सान परस्ती

आप ने इन तीनों बातों के खिलाफ खुल कर एहतेजाज किया और बड़े ही हकीमाना अंदाज़ में इन्हें तस्लीम करने से इन्कार किया। चुनान्चे जब रात की तारीकी छायी और सितारा नज़र आया तो प ने फरमाया कि यहब मेरा परवरदिगार है और जब वह गुरुब हो गया तो कहा मैं कुरुब हो जाने वाली चीज़ को पसन्द नहीं करता। फिर चांद को चमकते हुए देखा तो फरमैया कि क्या यह मेरा खुदा है? जब वह भी कुरुब हो गया तो बोले कि आगर मेरा हकीकी खुदा मेरी हिदायत न करता तो मैं भी गुमराहों की तरह होता और जब सूरज निकला तो फरमाया कि यह तो सबसे बड़ा है क्या यह मेरा खदा हो सकता है। जब वह भी गुरुब हो गया तो कहा कि ऐ मेरी कौम वालों जिन जिन चीज़ों का तुम खुदा समझते हो मैं इन सब चीज़ों से बेज़ार हूं यह हरगिज़ खुदा नहीं हो सकते। मेरा खुदा तो बस वही है जो ज़मीनो आसमान का पैदा करने वाला है और मैं मुशरेकीन में से नहीं हूं।

हजरते इब्राहीम का इन चीजों का खुदा कहना बतौर इस्तेक़हाम और इनकारी के था और क्यूंकि मुशरेकीन में इस वक्त लोग चांद, सूरत और सितारों की खुदायी के कांयल थे और आप काहिन को माकूल करना और दलील के जरिये खुदाये यकता की खुदाई साबित करना मन्जूर था इसलिए यह तकरीर फरमाई रर यह समझा दिया कि इन चीजों में हुदूस व इमकान की अलामत पायी जाती है। क्यूंकि तगय्यूर व हरकत सिर्फ मुमकिन के लिये है लिहाजा इनके लिए एक ऐसे खालिक की जरूरत है जिसमें किसी क्रिस्म का तगय्यूर न पाया जाता हो। और वह न किसी तरह मजबूर हो जैसे चांद तारे वगैरह और न ही इसकी हुकूमत महदूद हो जैसे नमरूद वगैरह। यह खयाल न करना चाहिए कि माज़अल्लाह हजरते इब्राहीम पहले मुशरिक थे लबकि आपने मुशरेकीन को अक़वाल और नज़रियात को महज़ फ़र्ज करके फिर इसे ग़लत साबित किया।

दूसरी तरह का शिर्क इस्लाम परस्ती की शकल में राएज था। यानी बुतों की परस्तिश और इबादत की जाती थी। यह वह वाज़ेह शिर्क है जिसके मुर्तकिब गिरोह का इस्तेलाही नाम मुशरेकीन हुआ। और यह शिर्क लोगों के दरमियान आज भी कायम है। और इसके खिलाफ जनाबे इब्राहीम ने अपने ही घर से जेहाद शुरू किया।

क्यूंकि आप का चचा (जिसे आप खुद भी बाप कहते थे) और कुरआने मजीद बी बाप ही के लफज़ से याद करता है। बुतपरस्ती का बहुत बड़ा अलमबरदार था।

हज़रते इब्राहीम ने आज़र को पहले नर्म लहजे में समझाया कि आप ऐसी चीजों की इबादत क्यों करते हैं। जो न सुन सकती हैं न देखती हैं और न आपको कोई फायदा पहुंचा सकती हैं। यह सिलसिला काफी दिनों तक जारी रहा। और जब आज़र पर इब्राहीम के समझानवे बुझाने का कोई असर न हुआ तो आपका लहजा बदला। और अंदाजे गुफतुगू में तलखी पैदा हुई।

चुनान्चे आपने फरमाया तुम कुछ बुतों को अपना खुदा बनाये हुए हो। मैं तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को खुली हुई गुमराही में देखता हूं जब इस गुफतुगू का भी आज़र पर कोई असर न हुआ तो आपने पूरी क़ौम के दिल में अमली चोट लगाने का एक मन्सूबा जेहन में मुरतब किया और इस की तकमील के लिए वह मौका निकाला जब तमाम मुशरेकीन अपनी ईदगाह में कोई मुशरेकाना रस्म अदा करने जा रहे थे। आज़र ने इब्राहीम को भी ले जाना चाहा। मगर आप ने अपनी अलालत का उज़्र कर के जाने से इन्कार कर दिया। (इसी का नाम तकय्या है) और जब सब लोग चले गये तो आपने खाना और थोड़ा खाना और तीशा अपने साथ लेकर मरकज़ी बुत खाने में दाखिल हुए। जहां कसीर तादाद में बुत रके हुए थे।

चुनान्चे आप एक-एक बुत के सामने जाते और इससे कहते कि खाना खाओं और मुझसे बाते करो। जब वह कोई जवाब न देता तो उसका सर और पांव तीशे से काट देते थे। रफता रफता आप ने तमाम बुतों का यही हाल कर दिया और जो सबप से बड़ा बुत था उसेक गले में तीशा लटका कर अपने घर वापस चले आये।

जब ईदगाह से रस्म की अदायगीके बाद लोग अपने अपने घर लौटो और बुतों की शिकस्ता हालत देखी तो पूरी क्रौम में कोहराम बरपा हो गया। कुछ लोगों ने कहा कि यह इब्राहीम नाम का एक नौजवान रहता है जो हमारे बुतों को बुरा भला कहता है। यह हरकत इसी की हो सकती है।

गर्ज कि कुछ लोगो ने हज़रते इब्राहीम को पकड़ लिया और नमरुद के पास ले गये इससे सा माजरा बयान किया। और कहा कि यह आजर का भतीजा है इसी ने हमारे बुतों को तोड़ा है। नमरुद ने आजर को तलब किया और कहा कि तुमनें हमें धोखा दिया जो इसको हमसे पोशीदा रखा कि अब यह जवान हो गया है। आजर ने कहा कि यह काम दरअस्ल इसकी मां का है जो यह कहती थी कि मैं नमरुद को जवाब दे लूंगी। नमरुद मे जनाबे इब्राहीम की मां को बुलवाया और उनसे पूछा कि तुमने हमसे इस बच्चे को क्यो छुपाया। जबकि बच्चा पैदा होने पर मेरा हुक्म इसकी गर्दनजदनी का था।

मादरे इब्राहीम ने फरमाया कि ऐ नमरुद मैंने इस बच्चे को इसलिए छुपाया कि लोगों के मासूम बच्चे कत्ल होने से बच जायें जैसा कि तुझे बताया गया है कि तेरी हुक्मत में एक ऐसा बच्चा पैदा होगा जो तेरी तबाही और बरबादी का बाएस होगा। अगर यही वह बच्चा है तो हलाक कर दिया जायेगा। और बाकी बच्चे बच जायेंगे। और अगर वह यह नहीं है तो मेरा बच्चा बच जायेगा। यह दलील नमरुद पर कारगर हुई और मादरे इब्राहीम से मज़ीद बाज़ पुरसी के बजाये वह फिर जनाबे

इब्राहीम से मुखातिब हुआ और इनसे दरियाफत किया कि क्या तूने हमारे खुदाओं के साथ यह सुलूक किया है कि वब पारा-पारा हो गये। जनाबे इब्राहीम ने फरमाया कि मैं ऐसा क्यों करने लगा। मेरा खयाल है कि यह काम इस बड़े बुत का है जिसकी गर्दन में तीशा लटका हुआ पाया गया है। अगर वह बोलता हो तो खुद पूछ लो। नमरुद इस जवाब पर महबूत रह गया क्योंकि यह लतीफ पैराया मैं इसके खुदाओं की आजजी और बेबसी की इज़हार था। जो जनाबे इब्राहीम ने कहा इन्सान परस्ती के ज़ैल में नमरुद अपने को खुदा कहलवाता था।

चुनान्चे हज़रते इब्राहीम ने इसके इस गुरुर को भी तोड़ा जब इसने आपसे सवाल किया कि तुम अपना परवरदिगार किसे समझते हो। जवाब दिया कि मेरा परवरदिगार वह है जो जिलाता भी है और मारता भी है। नमरुद ने कहा मैं भी मारता और जिलाता हूं इस तरह कि किसी बेगुनाह की जान ले ली और एक ऐसे शख्स की जान बख़्श दी जिसके लिए मौत की सज़ा का हुक्म हो चुका था। हज़रते इब्राहीम ने कहा कि मेरा परवरदिगार सूरज को मशरिक से निकालता है। तुम अगर खुदाई का दावा करते हो तो मगरिब से निकाल दो। वह काफ़िर इब्राहीम की यह बात सुनकर दंग रह गया और खामोशी के अलावा इससे कोई जवाब न बन पड़ा मगर इसके नतीजे में उसका ग़ैज़ और ग़ज़ब जनाबे इब्राहीम के खिलाफ़ बहुत बढ़ गया और उसने लोगों के मशविरे के बाद यह तय किया कि जनाबे इब्राहीम को जिन्दा आग में जला दिया जाये।

हज़रते इब्राहीम क़ैद कर लिये गये और उन्हें आग में जलाने का इन्तेज़ाम किया जाने लगा। पूरी क़ौम ने मिलकर एक माह तक लकड़ियां जमा कीं और फिर उसमें आग देकर मुशतइल किया गया यहां तक कि शोले बलंद होकर आसमान से बातें करने लगे। रवायतों में आग की कैफियत यह बतायी गयी थी कि उसके एतेराफ में तीन मील तक के परिंदे परवाज़ नहीं कर सकते थे। नमरुद ने अपने लिए एक बहुत ही ऊंचा मुक़ाम तामीर करवाया था ताकि वह वहां से बैठकर हज़रते इब्राहीम का तमाशा देख सके।

अब मसला हज़रते इब्राहीम को भड़कती हुई आग में डालने का था। लिहाजा उसके लिए मिनजनीक तैयार किया गया और जनाबे इब्राहीम को जंजीरों में जकड़ कर इस मिनजनीक में बैठाया गया फिर आग में फेंक दिया गया। लिखा है कि जिस वक़्त हज़रते इब्राहीम आग की तरफ चले तो आसमान करवटें लेने लगा और ज़मीन के सीने से एक आवाज़ बलंद हुई कि ऐ परवरदिगार तेरी इस दुनिया में हज़रते इब्राहीम के अलावा तेरी इबादत करने वाला फिलहाल दूसरा कोई नहीं है। क्या तू राजी है कि इन्हें आग में जला दिया जाये। लेकिन हिकमते इलाही खामोश रही और अब तक इसकी कुदरते कामला किसी भी मंज़िल में कुदरते इलाही मज़ाहिम हो जाती तो ज़ालिमों के जुल्म की आखिरी हद सामने न आती और न ही साबिर के सब्र का पता चलता। फिर ज़ालिमो को यह कहने का मौका फराहम



हो जाता कि हज़रते इब्राहीम को जलाने का मकसूद ही न था हम तो फकत धमका रहे थे।

लेकिन हज़रते इब्राहीम जब मिनजनीक से जुदा हो गये तो इनका इखतेयार की मंज़िल खत्म हो गयी। अब अगर ज़ालिम खुद भी चाहता कि हज़रते इब्राहीम आग से बच जायें तो यह खुद भी उसके बस की बात थी। यानि जूलम की हद तमाम हो चुकी थी। मलाएका ने जब हज़रते इब्राहीम को हवा के दोश पर आग की तरफ बढ़ते हुए देखा तो वह भी बेचैन हो गये। और बारगाहे इलाही में यह अर्ज़ करने कि ए परवरदिगार तेरा खलील आग में जलाया जा रहा है। तू खामोश क्यों है जवाब मिला कि अगर वह मुझसे मद्द तलब करेगा तो मैं ज़रूर करूंगा। जिबरईल से सब् न हुआ और कहा कि ए परवरदिगार अगर तेरी इजाज़त हो तो मैं तेरे खलील की मद्द करने के लिए जाऊं। हुक्म हुआ कि अगरप मेरा खलील तुम्हारी मद्द कुबूल करे तो ज़रूर जाओ। हज़रते इब्राहीम भड़कती हुई आग से मुतसिल होने ही वाले थे कि जिबरईल हाज़िर हुए। उन्होंने कहा या खलील अल्लाह क्या आप को मुझसे कोई हाजत तो है मगर तुमसे नहीं और जिससे हाजत है उससे कुछ कहने की जरूरत नहीं आयी और आग को हुक्म हुआ “यानारोकूनी बरदंव व सलमान अला इब्राहीम” ए आग इब्राहीम के लिए सलामती के साथ बुरुदत अखतियार कर इस हुक्म के साथ ही आग की फितरत बदली और वह सर्द होना शुरू हुई और इस

हृद तक सर्द हुई कि हज़रते इब्राहीम के दांत बजानवे लगे फिर वह एतेदाल पर आयी तो वह भड़कते हुए शोले गुलज़ार बने और दहकते हुए अंगारे लाला बन गये।

यहां तक कि इस करिशमें कुदरत को देखकर नमरूद भी बेअखतियार होकर चीख उठा कि खुदा हो तो ऐसा जैसा कि इब्राहीम का खुदा है। होना तो यह चाहिए था कि रइस मुशाहिदये कुदरत के बाद पूरी क्रौम ईमान ले आती। मगर इन बदबखतों के कुफ्रों एनाद में कोई कमी नहीं आयी बस मुखतसर से लोगों ने नमरूद से छिपकर (तक्रय्या करके) ईमान कुबूल किया। नमरूद अपनी इस शिकस्त परल मुंह दिखराने के काबिल नहीं रह गया था। इसलिये उसने हज़रते इब्राहीम के मामलात में कुछ दिनों तक खामोशी इखतेयार की। जिसके नतीजे में हज़रते इब्राहीम एलानिया तौर पर तबलीग के मैदान पर उतर आये ताकि इस क्रौम पर खुदा की तरफ से कोई अज़ाब नाज़िल होने से पहले वह हुज्जत तमाम कर लें। इस वक्त हज़रते इब्राहीम की उम्र 16 साल की थी (तबरी)।

## नमरूद का इबरत नाक अंजाम

नमरूद अपनी शिकस्त व नीकामी पर एक साल तक खामोश रहा मगर जब उसने देखा कि हज़रते इब्राहीम अपने मौकिफ पर अड़े हुए हैं और कारे तबलीग तेजी से जारी है तब वह बदबखत जुनून में गिरफतार होकर हज़रते इब्राहीम के खुदा से जंग पर आमादा हो गया। उसने आप को पिर तलब किया और कहा

(कुरआने मजीद पारा 17 आयत 5) ऐ इब्राहीम में तुम्हारे खुदा से जंग करना चाहता हूं क्या वह मुझसे मुकाबले के लिये तैयार है।

हजरते इब्राहीम ने फरमाया कि क्या तू मेरे कुदा से अपनी शिकस्त का इंतेकाम लेना चाहता है। पिर हजरते इब्राहीम ने बारगाहे इलाही में अर्ज की ऐ खुदा नमरूद तुझसे जंग का खवाहिशमंद है। इसे क्या जवाब दूं हुक्म हा कि कहा दो नमरूद अपना लशकर जमा करे। नमरूद ने छः माह में लशकर इकट्ठा किया और जब तमाम तैयारियां मुकम्मल हो गयीं तो वह तीरो कमानों नैजों और तलवारों से लैस लशकर लेकर एक मैदान में डट गया और हजरते इब्राहीम को बुलवा कर कहा कि अपने खुदा से कहो कि अपना लशकर लेकर आये।

इजरते इब्राहीम ने कहा घबराता क्यों है हलाकत के ले मेरा परवरदिगार का लशकर जरूर आयेगा। नागहा मगरिब की सिम्त से एक घटा उठी जो तेजी से नमरूद के लशकर पर मुहीत हुई। लोगों ने देखा तो पता चला कि एक काली घटा सियाह रंग के मच्छरों की एक अजीम फोज है जो अजाब की शक्ल में नाज़िल हुई है। नमरूद के सिपाही घबराहट और बौखलाहट में इधर उधर भागने लगे। मगर उन्हें मफ़र कहा एक - एक सिपाही से लाखों की तादाद में मच्छर लिपट गये और उनका खून चुस - चूस कर सब को कैफरे किरदार तक पहुंचा दिया। एक मच्छर बाद में आया था इसे खुदा ने नमरूद पर मुसल्लत किया था। जो उसकी नाक के रास्ते से दिमाग में घुस गया चुनान्चे जब वह काटता था तो नमरूद चीखने लगता

था। और उसे एसी सख्त अजीयत होती थी कि जब तक इसके सर पर जूताकारी नहीं होती थी उसको चैन नहीं आता था। यह सिलसिला 40 साल तक जारी रहा। और रोज़आना जूते खाते खाते अखिरकार वह उसी अजाब में मर गया।

## जिलावतनी और हिजरत

हजरते इब्राहीम के मुकबले में नमरूद की यह दूसरी शिकस्त थी जिस पर बराफरोखता होकर उसने आपको अपने मुल्क से जिलावतन कर दिया फरमान जिलावतनी के बाद जदनाबे इब्राहीम ने हिजरत का फैसला किया। और अपनी बीवी सारा जो (बकौले तबरी) आपके चचा हारान बाज़ मोअर्रेखीन के मुताबिक़ अपनी खाला की साहबजटादी थीं के लिए एक संदूक बनवाया ताकि वह इसमें बैठकर सफर कर सकें फिर आपने अपना सरमाया (पूंजी) और तमाम माल व असबाब (जिसमें ऊंटों, भेड़ों और बकरियों का ग़ल्ला भी शामिल था) लिया और अपने भतीजे हजरते लूत के साथ ईराक से शाम की तरफ़ रवाना हो गये। यह तीनों अफराद इस्लाम के पहले मुहाजिर हैं। यह काफ़िया ईरान में कुछ रोज़ मुक़ीम रहा। वहां रोज़ाना शब को ज़लज़ला आता था। जब पहली रात जनाबे इब्राहीम ने इस मुक़ाम पर क़याम किया तो यह मुक़ाम ज़लज़ले से महफूज़ रहा। वहां के लोगों ने कहा कि क्या सबब है कि जो आज रात खहर में ज़लज़ला नहीं आया। ज़रूर कोई बुजुर्ग़ शख्स हमारे शहर में आया है। दूसरी रात फिर खैरियत से गुजरी। अब लोग आप की तलाश में निकले और जब मुलाक़ात हुई तो लोगों ने कहा कि आप अब

इसी शहर में बूद व बाश इखतेयार करें हम आप की खिदमत करेंगे क्योंकि आपही के कदमों की बरकत से हमें जलजालें से निजात मिली है। आप ने फरमाया कि तुम्हारे इलाके में फिलहाल ठहरने का की इरादा नहीं है। मगर खुदा से यह दुआ करूंगा कि वह आइंदा भी तुम्हारे शहर को जलजलो से महफूज रखे। फिर आप ने वहां दो चार दिन कयाम किया फिर आप मिस्र के ले रवाना हो गये। उस वक़्त मिस्र पर तूलीसनामी फिरौन की हूकूमत थी। और वह इन्तेहायी नफसपरस्त और इन्तेहायी बदकार था।

जब इसे हज़रते इब्राहीम के आने की खबर मालूम हुई और उसके हाशिये बरादरों ने यह भी बताया कि उनके साथ एक इन्तेहायी हसीन व जमील औरत भी है तो उसने दोनों को अपन दरबार में तलब किया और जनाबे सारा की तरफ इशारा करके हज़रत इब्राहीम से पूछा कि यह खातून तुम्हारी कौन हैं आप ने फरमाया कि यह मेरी बहन हैं। यह एक हकीकतआमेज़ तकय्या था जिस पर आप ने अमल किया और आप का जवाब इसलिए दुरूस्त था कि जनाबे सारा आप की बीवी होने के अलावा आप की चचाज़ाद बहन भी थीं। तूलीश ने जब जनाबे सारा के हुस्नो जमाल को देखा तो इस पर शैतानी नफ़स का ग़लबा हुआ। चुनान्चे इसने बेइखतेयार होकर अपना हाथ आप की तरफ बढ़ाने का इरादा किया ही था कि कुदरते इलाही ने उसे मफ़लूज (लुंजा) कर दिया।

यह करिश्मा देखकर तूलीश का सारा भूत चश्मेज़दन में उतर गया। और वह अपनी इस बेहूदा हरकत पर नादिम हुआ आखिरकार उसने तौबा की और जनाबे इब्राहीम ने दुआ फरमायी तो उसका हाथ ठीक हो गया। इस वाक्ये के बाद उसको जनाबे सारा की अज़मत का एहसास हुआ। और उसने आप की बड़ी क़द्र और बहन का मरतबा दिया इसके साथ ही खिदमत के लिए एक कनीज़ बतौर तोहफ़ा पेश की जिसका नाम हाजरा था। नीज़ काफी नज़राना वग़ैरह देकर इन्हें अपने यहां से रुख़सत किया। यह लोग यहां से शाम की तरफ़ रवाना हुए और चंद मुक़ामात की रद्दोबदल के बाद हज़रते इब्राहीम जनाबे सारा के साथ फिलिस्तीन में मुक़ीम हुए और हज़रते लूत को उरदुन के नवाही इलाकों में बगरज़े तबलीग़ भेज दिया यह है इस्लाम के वह इब्तेदायी नुक़्श जो मसाएब व आलाम गुरबत और जिला वतनी को अपना सरमायए इफतेखार बनाये हुए थे। इसलिए तो पैग़म्बरे इस्लाम ने फरमाया कि इस्लाम का आगाज़ ही गुरबत और जिलावतनी से है।

## हज़रते इस्माईल कि विलादत और हिजरत

जनाबे हाजरा के लिए परवरदिगार ने यह शरफ़ मख़सूस कर दिया था कि हज़रते इस्माइल की विलादत उनके बत्न से हो। इसलिए जनाबे इब्राहीम को शाम में रहते हुए एक अरसा गुज़र गया। मगर आप का दामन आरजुए औलाद से अब तक खाली था उम्र ज्यादा हो जाने की वजह से जनाबे सारा भी औलाद की तरफ

से मायूस हो चुकीं थीं। चुनान्चे हज़रते सारा ने हज़रते इब्राहीम से कहा कि आप मेरी कनीज़ हाजरा से जो अभी जवान हैं अक़दकर लें शायद इन्हीं के बत्न से खुदा आपको कोई औलाद अता करदे। जो आप की जानाशीन हो।

हज़रते इब्राहीम ने जनाबे सारा की तजवीज़ पर अमल करते हुए जनाबे हाजरा से अक़द फरमाया और इज़जवादी ताअल्लुकात कायम किये। जिसके नतीजे में हज़रते इस्माइल मुताविल्लद हुए इस वक्त हज़रते इब्राहीम की उम्र 86 साल की हो चुकी थी। हज़रते इस्माइल की विलादत के बाद अद्ल के दायरे में रह कर हज़रते इब्राहीम की मज़ीद और ख़ुसूसी तवज्जे का हज़रत हाजरा की तरफ़ मबजूल हो जाना और हज़रते हाजरा की तरफ़ से जनाबे सारा के दिल में रश्क व हसद का पैदा हो जाना एक फितरती अमल था जिसका इज़हार इस शकल में हुआ कि जनाबे सारा मुसतकिल मख़जून व मग़मूम रहने लगीं और इन्हें यह एहसास परेशान करने लगा कि ख़ुदा ने हाजरा के बदन से इब्राहीम को बेटा अता किया और मेरी गोद खाली रखा।

एक दिन हज़रते इब्राहीम ने जनाबे सारा से हुज़न व मलामत का सबब दरियाफ़त किया तो आपने फरमाया कि कुछ नहीं। बस मैं यह चहाती हूँ कि आप हज़रते हाजरा और हज़रते इस्माइल को मुझसे अलाहदा कर दें और कहीं दूर ले जाकर इनके क़याम का इंतेज़ाम करदें। हज़रते इब्राहीम जनाबे सारा की मोहब्बत इताअत फरमा बरदियों और कुरबानियों की वजह से इन्हें बहुत चाहते थे क्योंकि

वह एक बेहद इताअत गुजार और फरमा बरदार बीवी थीं इसके अलावा आप के सर पर इनके एहसानात भी बहुत ज़्यादा थे। शादी के बाद इन्होंने अपनी तमाम दौलत और जायदाद हज़रते इब्राहीम को हिबा कर दी थी। मगर इन तमाम बातों के बावजूद मिजाज़े इब्राहीम को मुक्कदस परेशानी पर मागवारी की शिकन उभर आयी और चेहरे पर कबीदा खातिरी के आसार मुरत्तब हो गए। मगर मशीयते इलाही से इस परदे में अज़ीम उम्मत के लिये एक अज़ीम मरकज़ की तशकील व तामील का मुरक्का देख रही थी।

इसीलिए परवदिगार का हुक्म हुआ कि ऐ इब्राहीम सारा की जो ख्वाहिश है उस पर अमल करो इस हुक्म में इलाही के सामने हज़रते इब्रहिम के लिए इसके अलावा कोई चारएकार न था कि वह इसकी तामील फौरी तौरफ़ करें चुनान्चे उन्होंने शीरख्वार इस्माइल को गोद में उठाया और जनाबे सारा को साथ लिया और अपने माबूद पर भरोसा करके घर से निकल खड़े हुए। कहां अर्जे फिलस्तीन कहां सरज़मीने मक्का मगर जिस रहनुमाए मुतलक़ ने जनाबे सारा की ख्वाहिश पर अमल करने का हुक्म दिया था। उसी की रहनुमाई में आप ने अपना सफर तमाम करके एक ऐसे बेआबोगेयाह मैदान को मंज़िल करार दिया जहां न कोई दरखत था न कोई चश्मा ता न कोई सबज़ा न ग़िजा की फराहमी का की ज़रिया था न वहां पानी की सबील की कोई सूरत।



मुख्तसर यह कि जहां कुछ न था वहां आप ने खुदा की ज्ञात पर भरोसा रखने वाली अपनी पाक बाज बीवी और मासूम फरजंद इस्माइल को छोड़ा। एक मशक पानी और कुछ खाने का सामान दिया और आसमान की तरफ हाथ बुलंद करके यह दुआ फरमायी कि पालने वाले तेरा खलील अपनी जुरियत को तेरे घर के जेरे साया छोड़ कर जा रहा है। लोगों के दिलों को इनकी तरफ मोड़ दे और इनकी हिफाजत फरमा। इसके बाद आप शाम की तरफ वापस पलट गये और कभी इनकी खबर गीरी के लिए आते जाते रहे। इमामे जाफ़रे सादिक अ० का इरशाद है कि जब आप फिलस्तीन से मक्कए मोअज़्जा का इरादा करते थे तो खुदा वंदे आलम के हुक्म से ज़मीन सिमट जाती थी और आप आनेवाहिद में मक्कए मोअज़्जमा पहुंच जाते थे। दुसरे या तीसरे दिन हज़रते इब्राहीम का दिया हुआ एक मशक पानी जनाबे हाजरा के पास खत्म हो गया और हज़रते इस्मिल पर प्यास का ग़लबा हुआ तो आप पानी की तलाश में निकलीं और सफा व मरवा के दरमियान सात चक्कर लगाये जिसकी यादगार मनासिब हज में हमेशां के लिए क़ायम है।

सातवें चक्कर के बाद जनाबे हाजरा थक गयीं और पानी न मिला तो मायूस होकर अपने फरजंद इस्माइल के पास वापस आयीं और कुदरते इलाही का यह हैरत अंगेज़ करिशमा देख कि बच्चे के पैरों तले साफ और शफ़फ़ाफ़ व शीरीं पानी का एक चश्मा उबल रहा है। यही वह चश्मा है जो बाद में आबे ज़मज़म कहलाया। खुशक ज़मीन से पानी का बरामद होना था कि चारों तरफ से तायरों का झुरमुट

अपनी अपनी प्यास बुझाने के लिए वहां जमा हो गया और इन्हीं तायरों की रइनुमाई से इन्सानों का गुजर भी वहां हुआ और रफता रफता सर जमीने मक्का आबाद होने लगी। दर हक्रीकत यही दुनिया - ए - इस्लाम के मरकज़े अक्रीदत का संगे लस संगे बुनियाद था जिसकी तारीख में भूख प्यास, बेसरो सामानी, संगे बूनियाद था। जिसकी तारीख मे भूख प्यास, बेसरो सामानी,संगे बुनियाद था। जिसकी तारीख में भूख प्यास गूरबत सब ही चीजें नुमाया तौर पर नज़र आती हैं।

## हज़रते इसहाक़ की विलादत

जनाबे सारा की उम्र 60 साल की हुई तो जिबरईल ने उन्हें यह खुशखबरी सुनाई कि खुदावन्दे आलम आप को एक फरज़न्द अता करने वाला है यह सुनकर जनाबे सारा को सख्त हैरत हुई और आपने जिबरईल से फरमाया कि अब मैं बूढी हो चुकी हूं और औलाद पैदा करने की तमाम सलाहियतें दम तोड़ चुकी हैं। किसी फरज़ंद का अब क्या सवाल है। जिबरील ने कहा यह कादिरे मुतलक़ का हुक्म और अम्मे इलाही है इसीलिए यकीनन ऐसा ही होगा। जिब्रईल की इस यक्रीन दहानी के चन्द दिनों के बाद मसलहते एज़दी ने करवट ली और जनाबे साराह को हैज़ जारी हुआम मुद्दत खत्म हुई तो आप हामला हुई और जनाबे इस्हाक़ 10 माह 3 दिन शिकमे मादर में रहकर दुनिया में तशरीफ़ लाये। इमामे जाफरे सादिक़ अ० ने फरमाया है कि सारा से पहले दुखतराने अम्बिया हैज़ से मुस्तसना थीं। क्योंकि हैज़

उकूबत में दाखिल है हज़रते इस्हाक अपने वालिद हज़रते इब्राहीम से इस कद्र मुशाबेह थे कि बाप और बेटे के दरमियान इम्तेयाज़ मुश्किल था। इसलिए खुदा ने हज़रते इब्राहीम के दाढ़ी के बालों को सफेद कर दिया ताकि दोनों में फर्क पैदा हो जाये।

## हज़रते इस्माइल की कुरबानी

हज़रते इब्राहीम की तरफ से खुदा की बारगाह में पेश की जाने वाली तमाम कुरबानियों में हज़रते इस्माइल की कुरबानी वह अहम व अज़ीम कुरबानी है जिसका ज़िक्र खुसूसियत के साथ कुरआने मजीद में मौजूद है। और जिसका इजमाल यह है कि हज़रते इब्राहीम ने ख़्वाब में देखा कि वह अपने बेटे को ज़िबह कर रहे हैं। यह हुक्मे इलाही क्योंकि ख़्वाब की हालत में मौसम हुआ था। और इसकी सूरते वही इल्हाम या ग़बी आवाज़ की न ती। इसलिए जनाबे इब्राहीम ने उस दिन कोई क़दम नहीं उठाया। दूसरी रात फिर यही ख़्वाब देखा और वह दिन भी तरद्दुद और कश्माकश में गुज़र गया। तीसरी रात को बैनहू फिर वही ख़्वाब देखा तो आपने महसूस किया कि हुक्म की तामील ज़रूरी है। आपने अपने बेटे इस्माइल से फरमाया ऐ बेटा मैं बराबर यह ख़्वाब देख रहा हूँ कि मैं अपने हाथों से तुम्हें ज़िबह कर रहा हूँ। तो बेटे ने भी फरमाया कि बाबाजान जो आपको हुक्म हो रहा है उस पर आप अमल कीजिये इन्शाअल्लाह आप मुझे साबेरीन में पायेंगे।

जब जनाबे इब्राहीम ने अपने फरजोद का यह अज़म और इरादा देखा तो बीबी हाजरा के पास आये और उनसे फ़रमाया कि मुझे एक छुरी और रस्सी देदो। बीबी हाजरा ने मतलूबा चीजें फराहम कर दीं। और यह दोनों बाप बेटे घर से निकल खड़े हो गये। एक मखसूस मक़ाम पर पहुंच कर हज़रते इब्राहीम ने अपनी क़बा ज़मीन पर बिछाई और जनाबे इस्माइल को उनकी ख्वाहिश के मुताबिक़ हाथ पैर बांध कर पेशानी के बल पर लिटा दिया। इसके बाद आपने अपनी आंखों पर पट्टी बांध ली ताकि बेटे के ज़िबह होने और तड़पने का मंज़र न देख सकें पिर आपने इस्माइल की पुश्ते गर्दन पर छुरी रखकर उसे पूरी कूपत से चलाना ही चाहा था कि हुक्में इलाही सो जिबरईन ने छुरी पलट दी दूसरी बार फिर यही हुआ क्योंकि निगाहे कुदरत जनाबे इस्माइल की नस्ल में एक बड़ी कुरबानी का मुरक़का देख रही थी और इब्राहीम के ख्वाब की ताबीर इसी कुरबानी अज़ीम में मस्तूर थी। इसलिए हुक्म की तामील के साथ - साथ हज़रते इस्माइल को बचाना भी मक़सूद था। चुनान्चे तीसरी मरतबा हज़रते इब्राहीम ने जब छुरी फेरी तो हज़रते इस्माइल बचाने गये और इनकी जगह दुमबा जबह हो गया।

हज़रते इब्राहीम ने आंखों से पट्टी हटायी तो यह देखकर हैरान हो गये कि हज़रते इस्माइल सजदए शुक्र में और इनकी जगह मजबूह दुम्बा पड़ा हुआ है। आपदम ब खुद खड़े थे कि निदा आयी ऐ इब्राहीम तुमने अपना ख्वाब सच कर दिखाया। हम नेकी करने वालों को जज़ाए ख़ैर देते हैं (कुरआने मजीद सूरे सफ़ात

आयत 108) और हमने इस कुरबानी का फिदया जबहे अजीम यानी एक बड़ी कुरबानी को करार दिया जो इस्माइल की नस्ल में मुजमर है और ऐ इब्राहीम हमने तुम्हारे दरजात बुलन्द करके तुम्हें इमाम बना दिया। इब्राहीम ने अर्ज की परवरदिगार क्या यह मंसब मेरी लाद को बी अता होगा इरशाद हुआ कि हां मगर जो जालिम होंगे वह इस मंसब से महरूम रहेंगे।

जब जनाबे हाजरा को अपने बेटे की कुरबानी का हाल मालूम हुआ और उन्होंने इस्माइल की गर्दन पर छुरी का निशान देखा तो वह बेहद गमगीन हुई और इनके दिल में यह ख्याल पैदा हा कि अगर दुम्बा न आता तो मेरा बच्चा इस्माइल जबहा हो जाता चुनान्चे वह इस गम में बीमार हुई और फिर इस दुनिया से रेहलत कर गयीं।

अहले किताब यहूदी व नसारा इस म के दावेदार हैं कि हजरते इब्राहीम ने अपने ख्वाब की बिना पर जो कुरबानी अल्लाह की बारगाह में पेश की वह हजरते इस्माइल की न थी बल्कि हजरते इस्हाक की थी। मगर कुरआन और बाईबिल के सायाकओ सबाक से इस बात की वजाहत होती है कि वह हजरते इस्माइल ही थे। दराएत भी इसकी ताइद में है इसले कि अगर यह वाक़ेया जनाबे इस्हाक से मुताल्लिक होता तो उसकी यादगार बनी इस्राइल में नज़र आती। क्योंकि हजरते इस्हाक बनी इस्राइल के मूरिसे आला थे। मगर इनकी मज़हबी रवायात में किसी किस्म की कोई यादगार इस वाक़ये से मुताल्लिक नहीं मिलती। बरखिलाफ इसके

कि औलादे इस्माइल में इस वाक्ये अजीम की यादगार कायम है जो आज तक ईदुलअज़हा और मनासिके हज के मौके पर कुरबानी की शकल में मनायी जाती है।

उमर इब्ने अब्दुल अजीज ने अपने दौर में यहूदी आलिम से यह दरियाफ़त किया कि हरजते इब्राहीम ने हज़रते इस्माइल की कुरबानी पेश की थी हज़रते इस्हाक की उसने कहा कि अहले किताब (यहूदो व नसास) के उलमा क इस बात का यकीन है कि जबहीउल्लाह हज़रते इस्माइल हैं मगर रशक व हसद की बिना पर वह लोग यह चाहते थे कि यह फ़ज़ीलत इनके जद के लिये साबित न हो और तुम्हारे जद के लिये साबित न हो (हयातुल कुलूब जिल्द 1 सफा 280)

### खानए काबा की तामीर

जब हज़रते इस्माइल ने सिने बुलूग की मन्जिलों में क़दम रखा को परवदिगार ने हज़रते इब्राहीम को हुक्म दिया कि तुम और इस्माइल मिल कर खानए काबा की तामीर करो।

खानाए काबा की तामीर दरहक़ीक़त मुसलमानों और दीने इस्लाम के एक मुक़द्दर मरकज़ की तामीर थी जो तमाम आलमीन के लिए सरमायए निजात नीज़ बनस्से कुरआन अल्लाह का घर है। गर्ज़ दोनों बाप बेटे इस तामीर में मसरुफ़ हुए। हज़रते इब्राहीम मेमारी कर रहे थे और हज़रते तामी में मसरुफ़ हुए। हज़रते इस्माइल मज़दूर का काम अंजाम दे रहे थे। हालांकि कबीलए जुरहम के लोग

मक्के में कसरत से आबाद हो चुके थे और मज़दूरों की कमी न थी मगर शायद खालिक को यही मन्ज़ूर था कि उसका घर हज़रते इब्राहीम और हज़रते इस्माइल के मुताबिक हाथों से बने यही वह मौक़ा था कि जब हज़रते इब्राहीम इस्माइल की मदद से खानए काबा की दीवारें ऊंची करते जाते थे और अपने ज़ुरियत के लिए इस्माइलपर बरकरार रहने की दुआ करते जाते थे जिसका ज़िक्र इब्तेदा में हो चुका है। जब खानए काबा की तामीर मुकम्मल हो गयी तो जनाबे इब्राहीम को हुक्म हुआ कि अब तुम हज का ऐलान करदो चुनान्चे आपने ऐलान फ़रमाया और लोगों को हज्जे बैतुल्लाह की दावत दी। इस दावत मे कुछ ऐसी तासीर थी कि तमाम अरब में खवाह वह मोमिन हों या काफ़िर ससे मुताअस्सिर हुए बग़ैर न रह सका यहां तक कि जब हुजूरे खत्मी मरतबत स0 मबऊस ब रेसालत हुए तो उसी वक़्त अरब का मआशेरा नमाज़ रोज़ा, ज़कात, और दीगर दीनी फ़राएजी की अदायगी से बेगाना था। मगर हज की रस्म उस वक्त बी कायम थी।

## हज़रते इब्राहीम की रेहलत

हज़रते इब्राहीम उलुलअज़म पैगम्बर थे और आप का लकब खलीलुल्लाह था और खुदा की बाहगाह में आप का यह मरतबा था कि हज़रत रसूलउल्लाह स0 को आप की शरीयत को कायम रखने का हुक्म हुआ। 175 साल की उम्र में जब आपने इस दुनिया से रेहलत की और कुदसे जलील में दफन किये गये।

## हज़रते इस्माइल और इस्हाक़ का मुख़तसर तअरूफ़

### हज़रते इस्माइल

हज़रते इस्माइल हज़रते इब्राहीम की दुआ से मुतावलिद हुए आप अपने वालिदे बुजुर्गवाल की शरीयत पर गामज़न थे और इसी की तब्लीग़ करते ते आप का तब्लीगी दायरए कार तमाम हेजाज़ यमन और बैरूत तक फेला हुआ था आपनै अपनी शादी क़बीलए जुरहम में रमला नामी एक दोशीज़ा से की थी जिसके बत्न से खुदा ने आप को बारह बेटे अता किये जो सब के सब सरदारी के ओहदे पर फाएज़ थे। इन औलादों की औलादों इस कसरत से हुई कि ज़मीने मक्का सुकूनत के मामले में इनके लिए तंग हो गयी और बहालते मजबूरी इन्हें दूसरे शहरों में आबाद होना पड़ा। अरब की तारीख़, अरबों को तीन हिस्सों में तकसीम करती है। पहला हिस्सा जो यमन की नस्ल योरा बिन कहतान से था अरबे आलेबा कहलाया इसमें क़बाएले आद व समूद तसम व जदलीस और जुरहुम ऊला थे। इनका कुफ़्र व ऐलान जब हद से ज़्यादा बढ़ गया तो यह अज़ाबै इलाही का शिकार हुए। इसलिए इनको क़बाएले वाएदा (नेस्त व नाबूद शुदा क़बीला) कहा जाता है कि दूसरा हिस्सा अरबे मुताअर्रबा कहलाया यह वह थे जो अरबे आरेबा से अज़दवाजी रिशतों के साथ मुन्सलिक हुए इऔर फिर इनि औलादों में अरबी ज़बान में नशोनुमां पायी चाहे



जमजम के नमूदार होने पर कबीले जुरहम जो सरजमीने मक्का पर कर आबाद हुआ इन्हीं कबाएल में था और इन्हें जुरहमें सानीया कहा जाता है।

जनाबे इस्माइल ने इसी कबीले में नशोनुमा पायी। इसीलिए इब्तेदा ही से प की जबान अरबी थी। फिर आप ने इसी कबीले में शादी भी की इसलिए आपनकी औलादों की भी मादरी जबान अरबी हुई। यह क्रौम तीसरें हिस्से पर मुश्तमिल थीं जो अरबे मुस्तअरबा कहलाया अपब का मुस्तकबिल प वेकार दुनिया में कयामत तक के लिए इसी अपने मुस्तहरबा से वाबस्ता हुआ। अरबे आरेबा पहले ही फ़ना हो चुके थे।

अरबे मुस्तहरबा की नस्लें मुम्किन हों कि सहरायी कबाएल में हों। मगर तारीख में उनका कोई नामों निशान नहीं मिलता। अलबत्ता तमाम आलम में जो अरब के इज्जत व इफतेखार के अलम बरदार हैं वह आले इस्माइल ही हैं। जो दुनिया भर में फैले हुए हैं। यह खुदा का वह लवादा है जो उसने इब्राहीम से नस्ले इस्माइल के बारे में किया था कि मैं उनकी नस्ल में बरकत दूंगा और इनमें बारह सरदार करार दूंगा इस वायदे का जिक्र तौरैत में सफरे तकरीन बाब 17 में भी है हज़रते इस्माइल के बोटों में कीदार की नस्ल बहुत फली पूरी और हिजाज़ में आबाद हुई यही पैगम्बर इस्लाम के मूरिसे आला हैं। जनाबे इस्माइल का आबाद होना खानए काबा जमजम का बरामद होना मक्कए मोअज्जमा का आबाद होना खानए काबा की तामीर होना मनासीके हज का जारी होना 10 जिल्हिज्जा को

तमाम दुनिया के मुसलमानों में रस्में कुरबानी का कायम होना वगैरह शामिल है आप ने अपने वालिदे बुजुर्गवार की मौजूदगी में 133 साल की उम्र में इन्तेकाल फरमाया।

## हज़रते इस्हाक़

हज़रते इस्हाक़ हज़रते ब्राहीम की पहली बीबी जनाबे सारा से स वक्त पैदा हे जब उनकी उम्र 70 साल की हो चुकी थी। कुरआने मजीद में आप से मुताअल्लिक़ की सा वाक़या नहीं मिलता जिसे तारीखे इस्लाम का जुज़ करार दिया जाये। अलबत्ता तौरैत में कुछ वाक़यात मज़कूर हैं जो हर ऐतेबार से नाक़बिले कुबूल हैं। आपके वालिद हज़रते इब्राहीम ने शाम में आपके अपना जानशीन मुकर्रर किया था तबरी का कहना है कि जब हज़रते इस्माइल की रेहलत का ज़माना करीब आया तो उन्होंने भी आप ही को अपना जानशीन करार दिया और अपनी बेटी की शादी आप के बेटे ऐस से की इससै वाज़ेह होता है कि इस्माल और इस्हाक़ के दरमियान ताअल्लुकात नेहायत खुशगवार थे और दोनों भाई सुकूनत की बिना पर बहुत दूर होने के बावजूद एक दूसरे के दिल के बहुत करीब थे।

हज़रते इस्हाक़ की शादी जनाबे इब्राहीम के चचा आजर की पोती रफ़का बिनते नाहेरा से ही जिनके बत्न से दो लड़के याकूब, इस्मिल और ऐस पैदा हुए याकूब की औलादें बनी इस्मिल कहलार्यीं। ऐस सुर्ख रंग के थे इनका एक बेटा रोम नामी पैदा

हुआ जिसका रंग ज़र्द था इस वजह से औलाते रोम बनी असगर कहलार्यो चुनांचे जितने रोमी हैं वह सी रोम और इसके भाइयों की औलादें हैं। इस्हाक़ ने बरस की उम्र में रेहलत की और अपने वालिद हज़रते इब्राहीम की कब्र के पास दफ़न किए गए।

## हजरते लूत अ०

हजरते लूत, हजरते इब्राहीम के हकीकी भतीजे और उन पैगम्बरों में ते जो खनता शुदा पैदा हुए। इराक से हिजरत और फिलिस्तीन में कयाम के बाद हजरते इब्राहीम ने आपको रदुन के नबाही इलाकों में तब्लीग पर मामूल किया था। जहां उन्हें एक एसी बदआमाल और सरकश क्रौम से सावेका पड़ा जो नफ़सानी ख्वाहिशात की तनमील। (लवायता) यानी इगलामबाजी के जरिये किया करती थी। मर्दों के अलावा इस क्रौम की औरतें बी अपने नफस की तस्कीन के लिये बाहम चिपटी लड़ाया करती थीं। जिन शहरों में यह क्रौम आबाद ती वह सदूम और सैदूम लुदना और उमरिया के नाम् से मशहुर थे। जनाबे लूद ने उनकी इस्लाह और हिदायत में कोई दकीका उठा नहीं रखा। मगर उनकी तालीमात और हिदायात का इस क्रौम की तरफ से जवाब यह मिला कि उन्होंने आपस में यह तय किया कि लूत को संग सार कर दिया जाये। या पिर इन्हें शहर से बाहर निकाल दिया जाये क्योंकि यह पारसायी का दर्स देते हैं और बदफेलियों में हमारे साथ शिरकत नहीं करते।

## क्रौमे लूत में लवाता (एगलाम) की इब्तेदा कब और कैसे हुई

इस ज़ैल में अल्लामा मजलिसी र०अ० ने अपनी किताब हयातुल कुलूब जिल्द अक्वल में इमामे बाकिर अ० का एक क़ौल नक़ल किया है। जिसका खुलासा यह है कि इस शर्मनाक फेल के इरतेकाब से पहले यह क्रौम शराफ़त और नेकियों की

तरफ माएल थी और इनकी तमाम खूबियों में एक खूबी यह भी थी कि जब यह किसी काम से कहीं जाते थे तो सारे मर्द एक साथ मिल कर जाते थे। और अपने घरों में अपनी औरतों को तनहा छोड़ जाते थे। शैतान इन्हें गुमराह करने में रात दिन फिक्र में लगा रहता था और नई - नई तरकीबें सोचा करता था। चुनान्चे एक मौके पर औरतों की तनहायी से उसने फायदा उठाया और एक खूबसूरत औरत का भेस बदल कर इसने कुछ मस्तूरात को चिपटी के जरिये लुत्फ अन्दोज होने की तालीम दी। फिर वह उनकी ज़राअतों की तरफ मुतावज्जे हुआ और इन्हें नुकसान पहुंचाने की गरज़ से उसने हरे भरे खेतों और बागों को तहस नहस करना शुरू किया। जब कभी उस क़ौम के अफराद शहर के बाहर जाते तो वह उनकी इमलाक को तबह व बरबाद करता।

यहां तक कि लोग आजिज़ व परेशान हो गये तो उन्होने आपस में यह मशविरा किया कि जो शख्स हमारे बागों व खेतों को नुकसान पहुंचाता है उसकी ताक में रहना चाहिए। चुनान्चे वह लोग ताक में लग गये आखिरकार एक दिन एक इन्तेहायी हसीन न जमील और खूबसूरत लड़के को गिरफ्तार किया और उससे पूछा कि क्या तू वही है जो हमारे खेतों और बागों को तबाह करता है। उसने इकरार किया तो सबों की राय इस अम्र पर मुत्तफ़िक हुई कि इसे क़त्ल कर दिया जाये। चूंकि शाम ढल चुकी थी और रात अपनी जवानी की तरफ बढ़ रही थी।

लिहाजा कत्ल का मामला दूसरे दिन पर रखा गया और उस लड़के को एक शख्स की निगरानी और सुपुदगी में रात भर के लिए दे दिया गया।

वह शख्स उसको अपने घर ले आया और जिस कमरे में खुद सोता था और उसी में लड़के का इन्तेजाम भी कर दिया ताकि वह नजरों से ओझल न होने पाये। जब रात काफी गुजर चुकी थी और तमाम घर के लोग सो गये तो लड़के ने फरियाद शुरु की और कहा कि मेरा बाप हर शब मुझको अपने पेट पर सुलाता था इसलिए मुझे नींद नहीं आ रही है। उस शख्स ने कहा यह बात है तो मेरे पेट पर सो जा लड़का उसके पेट लेट गया और रफता रफता इसने कुछ ऐसी हरकतों की कि उसने इस शख्स को अपने साथ बदफेली पर आमादा कर किया और पूरी रात दोनों लवाएता से लुत्फअन्दोज होते रहे। यह लड़का दरहकीकत शैतान था जो सुबह होने से पहले ही गायब हो गया। सुबह हुई तो वह शख्स अपनी कौम के लोगो से मिला और उसने रात का माजरा और लवाता की लज्जत और कैफियत से इन्हें आगाह किया जिसे उन्होंने बेहद पसन्द किया और इसी दिन से यह फेले कबीहा इनके शरस्त में दाखिल हो गया। अल्लामा मजलिसी की इस रवायत से यह बात वाजेह भी होती है कि इन्सान पर जब गुमराही और नफसानी ख्वाहिशात का भूत सवार होता है तो वह शैतान को भी नहीं छोड़ता। बहर हाल रफता रफता नौबत यहां तक आगयी जो मुसाफिर इनके शहर की तरफ से गुजर जाता था तो उसे यह जेर कर देते थे और वह अपनी बचाने में कामयाब न होता था।

लवाता के अलावा इस क़ौम के लोगों में जो आदतें नुमायां थी वह यह थी कि (1) यह लोग जरूरत से ज्यादा मन्हूस और बखली थे। (2) गुरूर की बिना पर इस कद्र लम्बा लिबास पहनते थे कि वह चलते वक़्त ज़मीन पर ख़त खँचता था। (3) अज़राहे तकब्बुर अपने पैरहन और क़बा के बटन खुले रखते थे। (4) महफ़िलों में एक दूसरे के मुंह पर रियाह सादिर करते थे। (5) लोगों के सामने एलानिया एगलामबाज़ी करते थे। (6) गुस्ले जनाबत नहीं करते थे। (7) पैशाब करके पानी नहीं लेते थे। (8) पैखाने के बाद आबदसत नहीं लेते थे। वग़ैरह जनाबे लूत ने मुसलसल तीस बरस तक इस क़ौम को राहे रास्त पर लाने की अनथक कोशिशों की लेकिन आप की तब्लीगी कोशिशों का कोई असर न हुआ।

बिलाआखिर मायुस होकर आपने बहालते मजबूरी इस क़ौम पर अज़ाब की ख़ुदा से इल्तेजा की। परवरदिगार ने चार फरिशतो को अज़ाब के लिए मामुर किया। जिसके सरबराह हज़रते जिबरईल थे। यह चारो फरिशते खूबसूरत लड़को की शक़ल में हज़रते लूत के पास इस वक़्त पहुंचे जब वह शहर से बाहर अपने खेतों और बाग़ों की आब पाशी कर रहे थे और शाम हो चुकी थी। जनाबे लूत ने इन्हे हैरत से देखा और पुछा की आप लोग कौन हो और किस मक़सद से यहां आये हैं। उन्होने कहा कि मुसाफिर हैं चुंकि शाम हो चुकी है इसलिए आज की रात हम लोग आप के यहां क़याम करना चाहते हैं और आप के मेहमान होना चाहते हैं। जनाबे लूत ने फरमाया की तुम्हारी मेहमानी मुझे मन्ज़ूर है लेकिन इस बात से भी तुम्हें

आगाह कर देना चाहता हूँ कि इस शहर के लोग इन्तेहायी सरकश और बद किरदार हैं मेहमान को मायुब समझते हैं और उन्हें लूट लेते हैं और लड़कों और मर्दों से बदफेली किये बगैर उन्हें नहीं छोड़ते मेरी समझ मे नहीं आता कि किस तरह तुम लोगों को अपना मेहमान बनाऊँ। फरिश्तो ने कहा रात ज्यादा हो गयी है आज तो हम आप ही के मेहमान होंगे।

गर्ज की जनाबे लूत इन लोगों को अपने घर लें आये और जब घर के अन्दर सब लोग दाखिल हो गये तो जनाबे लूत ने अपनी ज़ौजा को (जो उसी क़ौम की थी) और जिसकी ज़ात से जनाबे लूत को यह खतरा था कि कंही वह इन मेहमानों के आने की खबर अपनी क़ौम वालों को न दे दे। अपनी ज़ौजा को अलग बुलाया और उससे कहा कि इन मेहमानों को आने की खबर किसी को न होने पाये अगर तूने मेरा कहा माना तो मैं तेरी गुजशिता नाफ़रमानियों को माफ़ कर दूंगा। उसने कहा बेहतर है। ऐसा ही होगा लेकिन जब हज़रते लूत मुतमईन हो कर मेहमान की मेहमान नवाज़ी की तरफ़ मुताव्वजे हो गये तो उनकी ज़ौजा ने मेहमानों की आमद की खबर अपनी क़ौम वालों को कर दी। नतीजा यह हुआ की जनाबे लूत का घर चारो तरफ़ से घेर लिया गया। मुहासेरीन का मुतालेबा था कि मेहमानों को हमारे हवाले कर दिया जाये ताकि हम अपना शौक़ पुरा करें।

जनाबे लूत ने फरमाया कि हमारी पाको पाकीज़ा लड़कियां तुम्हारे लिए काफ़ी है। खुदा के कहर से डरो और मुझे ज़लील (हमारी लड़कियों से मुराद क़ौम की



लड़किया हैं क्योंकि हर पैगम्बर अपनी उम्मत के लिए बाप के मसावी होता है।) व रुस्वा न करो लेकिन वह लोग न मानें और जनाबे लूत की कोई बात सुनने के बजाय शिद्दत पर उत्तर आये तो आपने बेबसी के आलम में खुदा की बारगाह में फरियाद की और कहा कि पालने वाले तू देख रहा है कि मेरी कौम मेरे उपर कहाँ तक मुझ पर जुल्म कर रही है। काश मुझे भी कूवत हासिल होती तो मैं भी इन जालिमो को जवाब देता। यह सुन कर जिबरईल ने कहा कि ऐ लूत आपको मालूम होना चाहिए कि आप के साथ खुदा की बहुत बड़ी ताकत है। फरमाया वह क्यों कर जिबरईल ने कहा मैं जिबरईल हूँ और मेरे साथ तीनों लड़के भी जो इस वक्त आप के मेहमान हैं फरिश्ते हैं हम लोग इस कौम पर अज़ाब के लिए आये हैं लूत ने फरमाया कि फिर देर किस बात की है।

जिबरईल ने कहा कि नुजूले अज़ाब के लिए सुबह का वक्त मुअय्यन है। उस वक्त का इन्तेज़ार कीजिये। अभी यह बात हो ही रही थी कि यह लोग लूत के घर का दरवाज़ा तोड़ कर घर के अंदर दाखिल हो गये। बस इनका दाखिल होना था कि जिबरईल ने अपने परों को जुम्बिश दी जिसकी हवा से सबके सब अन्धे हो गये। जैसा कि कुरआन ने कहा कि हमने उन्हें अन्धा कर दिया क्योंकि इन लोगों ने नाजायज़ फेल की ख्वाहिश की थी। बीनायी जाने के बाद वह एक दुसरे पर गिरते पड़ते भागने लगे और तमाम शहर में यह खबर फैल गयी कि लूत ने जिस अज़ाब की खबर दी थी खुदा की तरफ से इसकी इत्तेदा हो चुकी है।

अल्लामा मजलिसी हयातुल कुलूब में रकम तराजड हैं कि कौमे लूत मे एक शख्स काहिन व आलिम भी था जब उसे सारा हाल मालूम हुआ तो उसने कहा कि बेशक यह वही अज़ाब है इससे बचने की सूरत सिर्फ यही है कि तुम लोग हज़रते लूत के घर का मुहासेरा कर लो। ताकि वह यहां से निकल कर जाने न पायें इस लिए कि जब तक वह तुम्हारे तहमियान रहेंगे। खुदा की तरफ से अज़ाब का नुज़ूल नही होगा। गर्ज कि पूरी क़ौम यकजा हुई और सभी ने मिलकर दुबारा हज़रते लूत का घर घेर लिया जब निस्फ शब गुज़री तो जनाबे लूत से जिबरईल ने कहा कि आप अपने घर वालों को यहां से लेकर निकल जाइये। तो हज़रते लूत ने फरमाया मैं किस तरह जाऊं चारों तरफ तो मुहासेरा है।

फिर जिबरईल ने मुहासेरीन और जनाबे लूत के दरमियान नूर का सुतून कायम किया और फरमाया कि इसी सुतूने नूर के सहारे आप निकल जाइये। आपको कोई न देख सकेगा। मगर शर्त यह है कि आप मे कोई शख्स पीछे मुड कर न देखे। मुखतसर यह कि जनाबे लूत अपने घर वालों के साथ निकले और जिबरईल के बताने के मुताबिक एक तरफ रवाना हो गये। अभी थोड़ी ही दूर गये होंगे कि लूत कि बीवी ने जो उनके हमराह थी पीछे मुड कर देखा उसका मक़सद दरअसल यह था कि अपनी क़ौम वालों को हज़रते लूत के जाने की इत्तेला कर दें। नागहा उस पर आसमान से एक पत्थर गिरा और वह वहीं ढेर हो गयी।

इसके बाद जब खुदावंदी अज़ाब का मुअय्यन वक्त करीब आया तो हज़रते जिबरईल ने अपने साथी फरिश्तों कीमद्द से अपना काम इस तरह शुरू किया कि क्रौमे लूत की आबादी वाले चारों शहरों को ज़मीन की तह से उठा कर इस कद्र बलंद किया कि अहले आसमान को अरबाबे लवायता और उनके जानवरों की आवाज़े सुनाई देने लगीं जो चीख व चिल्ला रहे थे।

फिर जिबरईल ने इन शहरों को इस तरह पलटा दिया कि पूरी क्रौम धरती में समा गयी और आबादी का वुजूद सफए हस्ती से मिट गया जो लोग इस शहरों से बाहर थे उन पर आसमान से पत्थरों की बारिश हुई जिससे वह लोग भी हलाक हो गये। इन वाक़ेयात का ज़िक्र करते करते हुए परवरदिगार ने कुरआने मजीद में इरशाद फरमाया है कि हमने क्रौमे लूत की बस्ती के ऊपरी हिस्से को ज़मीन के नीचे का हिस्सा कर दिया। और आसमान से पत्थरों की बारिश की। (1) कुरानें मजीद बारहवां पारा आयत न0 7 (2) तारीखें तबरी जिल्द पहली सफह 187 यह वाक़्या हज़रते आदम अ0 के 3422 साल के बाद बयान किया जाता है।

## जुलकरनैन का वाक़ेया

तारीखी और पुरानी सराहत्तों से यह पता चलता है कि रूम के शहंशाह अयास या अब्दुल्ला बिन ज़हाक़ बिन माद का लक़ब जुलकरनैन और सिकंदर था इस अम्र में

उलमा के दरमियान इखतेलाफ हे कि आप पैगम्बर थे या नहीं बेशतर का यह कहना है कि आप पैगम्बर नहीं थे। मगर आप के खुदा परस्त और मुकर्रबए बारगाह होने से इन्कार नहीं किया जा सकता।

इसमें शक नहीं कि आप क नेक तीनत नेक खसलत और पाकबाज़ इन्सान थे आप का दिल बचपन ही से नूरे इमान से रौशन व मुनव्वर था शायद यही वजह थी कि इबतदा में आपने तबलीग का रास्ता अपनाया और अपनी कौम के लोगों को नेकियों और खदापरस्ती की तालीम देने लगे चुनान्चे एक दिन कारे ह्दयत की अन्जाम देही के दौरान कुछ शरपसन्दों ने आप के दाहिनी तरफ एक ऐसी ज़रब लगायी कि आप जांबहक हो गये और सौ साल एक दूसरी रिवायत के मुताबिक पाँच सौ साल तक मौत की नींद सोया किये इसके बाद मशीयते खुद ने फिर आप के सर पर बाएँ तरफ ज़रब लगायी और आप सौ साल तक फिर मिर्दा पड़े रहे यहाँ तक कि खुदा ने आप को फिर जिन्दा किया और सर के ज़ख्म खुर्दा दोनों हिस्सों में सीगों की जड़ की तरह उबार पैदा करके तमाम दुनिया की बादशाही अता कर दी मुवरेखीन का कहना है कि चूंकि मौत के बाद प को परवरदिगार ने दोबारा जिन्दा किया इसलिए आप को जुलकरनैन कहा जाता है कुरान-ए-मजीद से इस बात की सराहत भी होती है कि खुदा ने सलतीन की सफ़ में सिर्फ चार अशखास को तमाम दुनिया की जमीन पर हुक्मत का हक़ दिया

जिनमें नमरूद और बख्तेनसर दोनों काफ़िर थे और दो मोमिन थे जो हज़रते सुलेमान और सिकन्दर जुलकरनैन के नामों से मशहूर हुए।

जब खुदा ने सिकन्दर जुलकरनैन को शिकोह दबदबा और एकतेदार का मालिक बना दिया और इज्जत, कूवत, हैबत व हुकूमत आता कर दी तो उन्होंने दुनिया का सफर करके अपनी सलतनत की वसअतों का जायजा लेने का इरादा किया चुनान्चे वह रूप से निकले और चलते आफताब के गुरुब होने की जगह पर पहुंचे वहां उन्होंने देखा कि कायनात को रोशनी देने वाला और नूर बरसाने वाला सूरज सियाह रंग की कीचड़ के एक चश्में में डूब रहा है। और इस चश्मे के करीब एक क़ौम भी आबाद है अभी यह करिश्मा देख ही रहे थे कि परवरदिगार का इरशाद हुआ ऐ जुलकरनैन तुम इस क़ौम को सजा दोगे या इनके साथ हुस्ने सुलूक करोगे।

जुलकरनैन ने कहा पालने वाले हम सरकशों, मुशरिकों और ज़ालिमों को सज़ा देंगे क्योंकि वह तेरी तरफ से भी बरोज़े क़यामत अज़ाब सुलूक करेंगे। चूंकि वह क़यामत में जज़ाते ख़ैर का मुसतहक़ होगा। इस क़ौम के लोगों के बारे में मुवरेख़ीन और मुफ़स्सेरीन का कहना है कि यह नास्तिक काफ़िर, क़दावर, सुर्ख़बालों, करंजी आंखो वाले थे। इनका लिबास हैवानों की खाल और ग़िज़ा जानवरो का गोशत था।

इस अजीबो ग़रीब मुक़ाम का मुशाहेदा करने के बाद जुलकरनैन ने एक दूसरे सिम्त का रुख़ किया और चलते-चलते उस मुक़ाम पर पहुंचे जिस जगह से

आफ़ताब निकलता है वहां भी इन्होंने एक ऐसी आबादी देखी कि जिनके सरों पर आफ़ताब तुलू हो रहा था और सर छुपाने के लिये कोई साया नहीं है। इस क़ौम के बारे में मुफ़स्सेरीन व मुअर्रेखीन का कहना है कि यह लोग वहशी थे इन्हें घर बनाने का सलीका नहीं था। ना धूप से बचने का कोई ज़रिया था। अलबत्ता जब तेज़ बारिश होती थी तो यह पहाड़ के ग़ारो में पनाह ले लेते थे। औरर घास-फूस इनकी गिज़ा थी और यह लोग जानवरो की तरह ज़िन्दगी बसर करते थे। जुलकरनैन ने यहां से एक तीसरा रास्ता इख़्तियार किया और चलते-चलते जब एक पहाड़ के दो किनारों के दरमियान से गुज़रे तो वहां देखा कि वहां भई एक क़ौम आबाद है। जिसकी ज़बान अजीबो ग़रीब है। मगर चूंकि इन्हें खुदा ने मुख्तलिफ़ ज़बानों पर भी कुदरत अता की थी। इसलिए उन्होंने इस क़ौम के लोगों से बाचतीच भी की और इनका हाल भी पूछा इन लोगों ने इस बात की शिकायत की कि इस घाटी के पार याजूज-माजूज की क़ौम आबाद है। जो फ़साद बरपा करती है और जब वह हम लोगों पर खुरूज करते हैं तो हमारी ज़राअतों और बाग़ों को तबाह और बरबाद और हमारे सैकड़ों आदमियों को खा जाते हैं। अगर आप कहें तो हम लोग आप के पास इस गर्ज से चन्दा जमा करेंकि आप हमारे और उस क़ौम के दरमियान कोई मुसतहकम दीवार तामीरकर दें। ताकि बवक्ते खुरूज वह हमारी तरफ न आ सकें।

जुलकरनैन ने कहा मेरे परवरदिगार ने मुझे खर्च की जो कुदरत दी है वह तुम्हारे चन्दे से कहीं बेहतर है। मुझे तुम्हारा माल नहीं चाहिए। शर्त यह है कि अगर तुम लोग मेरी मदद व मेरी हितायत पर अमल करो तो मैं तुम्हारे और इस क्रौम के दरमियान एक आहनी दीवार (लोहे की) तामीर करके इनकी तबाहकारियों से हमेशा के लिए तुम्हें महफूज कर दूँ। गर्ज कि सब लोग जुलकरनैन की हिदायतों पर अमल करने के लिए तैयार और कमरबस्ता हो गये।

## याजूज और माजूज

यह एक बहुत बड़ी क्रौम है जो जानिबे शिमाल जमीन के आखिरी हिस्से पर पहाड़ों के दरमियान आबाद हैं। याजूज और माजूज इस क्रौम के यूरिसे आला थे। बाज़ रवायतों से पता चलता है कि याजूज और माजूज हज़रते याफ़िस बिन नूह की औलाद से दो गिरोह हैं और इनके जिस्मानी साख़्त की किस्में हैं।

पहली यह कि इनमें कुछ ऐसे लम्बे तडंगे हैं तो इनका क़द ताड़ के दरख़त के बराबर है। दूसरी किस्म के लोगो की लम्बायी और चौड़ाई दोनो बराबर है। और तीसरे किस्म के लोग जिनके कान बहुत ही बड़े है चुनान्चे वह अपने एक कान से बिछौने और दूसरे कान से ओढ़ने का काम लेते हैं। इनकी तादाद अहद जुलकरनैन में चार लाख थी। याजूज और माजूज की क्रौम में औरतें भी है और मर्द भी इनमें से कोई मर्द इस वक्त तक नही मरता जब तक कि वह एक हज़ार औलादें न करे।

यह बरहैना रहते हैं। चलते फिरते जानवरों की तरह जुफती खाते हैं। और हैवानों की सतह पर जिन्दगी बसर करते हैं। इन्के जिसमों पर रिछ की तरह बाल होते हैं। जिनसे ऐसी बदबू निकलती है जिसे कोई बर्दाशत नही कर सकता। इनकी आवाजे इतनी क्ररखत और बलन्द हैं कि मीलों के फासले से सुनी जा सकती है। असल गिज़ा इनकी मछली है।

चुनांचे जब इनके इलाकों में बारिश होती है तो पानी के साथ साथ मछलियां भी आसमान से बरसती है। और वही इनकी गिज़ा बनती है। लेकिन जब बारिश नही होती और इन पर भुख का गलबा होता है तो यह निकल पड़ते है और घास, दरखतों की पत्तियां, आदमी, जानवर, हराम हलाल जो इन्हे मिलता हैं सब खा जाते है। जिधर यह हमला करते है उस जगह को तहस नहस और तबाह व बरबाद कर देते है।

## दीवार की तामीर

ज़ुलकरनैन ने पहाड़ी क़ौम के लोगों से कहा कि मैं तुम्हें लोहे और ताम्बे के कानों का पता बताता हूं तुम लोग सबसे पहला काम यह करो कि वहां जाओ और लोहा और ताम्बा इकरट्ठा करो। पूरी क़ौम लोहा और ताबा लाने में लग गयी। इधर ज़ुलकरनैन ने अपनी हिक्मते अमली से दातों को पिघलाने वाला एक सुफूफ तैयार किया था। जिसकी खासियत यह थी कि जब वह लोहे या ताम्बे पर डाला जाता था तो वह पानी की तरह पिघल जाता था। मुखतसर यह कि पहाड़ी क़ौम



लोहा और ताम्बा लाती गयी और इस सफ़ुफ की मद्द से बड़ी बड़ी सिलें तैयार होती रहीं।

एक नामालूम मुद्दत में जब यह तमाम तैयारियां मुकम्मल हुईं और दीवार की तामीर का काम शुरू हुआ इस करंह की लोहे की तैयार शुदा सिलें तरतीब के साथ एक दूसरे पर जमायी जाने लगीं यह तक कि तीन मील लम्बी एक दीवार बुलन्द हुई फिर ज़ुलकरनैन ने इन्हें हुक्म दिया कि अब तुम लोग इस दीवार के चारों तरफ लकड़िया कजमा करो। पूरी क़ौम लकड़िया जमा करने में मसरूफ हुईं। और बड़े बड़े तनों और दरखतों को काट काट कर दीवार के चारों तरफ ढेर कर दिये गये। जब लकड़ियों का अम्बार लग गया तो जुलकरनैन ने कहा कि इसमें आग लगा दो और दूर से इसे धौकते रहो। धौकते धौकते जब वह दीवार सुर्ख अंगारा बन गयी तो ज़ुलकरनैन ने धातु पिघलाने वाले सफ़ुफ़ की मद्द से तांबा पिघला पिघला कर इस दीवार में डाल दिया। यहां तक कि दीवार इस करंह मजबूत और मुसतहकम हो गयी कि न तो याजूज और माजूज की क़ौम उस पर चढ़ सकती थी और न ही इसमें नक्रब के ज़रिये कोई रास्ता बना सकती थी।

दीवार की तकमील पर ज़ुलकरनैन ने सजदए शुक्मर अदा किया और कहा कि ये मेरे परवरदिगार की नीशानी और मेहरबानी है। कुरबे कयामत जब हुज्जतुल्लाह का जहूर होगा तो खुदा वन्दे आलम इस दीवार को मुनहदिम कर देगा। इसका वायदा सच्चा और अटल है।

अल्लामा मजलिसी अ० र० का कहना है जुलकरनैन के साथ दीवार बनाने में खुदा ने एक परिशता मुकर्रर किया था जिसका नाम रकारईल था।

## समन्दर की सैर

हयातुल कुलूब कससे जुलकरनैन में इमामे जाफरे सादिक अ०स० से मरवी है कि जब दुनिया के गोशे पर जुलकरनैन की हुकूमत मुसल्लम और मुस्तहकम हो गयी तो उनके दिल में समुन्दर की सैर और उसके गहराइयों का हाल मालूम करने का इशतेयाक पैदा हुआ। चुनान्चे उन्होंने शीशे का एक बड़ा तवील व अरीज़ सन्दूक बनवाया कताकि इसके अन्दर बैठ कर बाहरी चीजों का मुशाहेदा किया जा सके। जब इस संदूक के अन्दर हवा पानी और खाने वगैरा का सारा इन्तिज़ाम कर लिया गया तो वह इसे अपने कुछ हमराहियों को साथ लेकर समुंदर के किनारे पहुंचे और एक जहाज़ नुमा कशती पर सवार एक तरफ चल पड़े। जब इनकी कशमी समुन्दर के दरमीयान में पहुंची तो उन्होंने सन्दूक में एक रस्सी बांधी और अपने साथियों से कहा कि मुझे सन्दूक में बन्द कर के समुंदर में डाल दो। और मुझे तह की तरफ जाने दो। लेकिन इस बात का खयाल रहे कि जब मैं पानी के अन्दर से रस्सी को हरकत दूं तो मुझे ऊपर खेंच लेना। गर्ज कि जुलकरनैन समुंदर गहराइयों में उतरते गये। और समन्दरी अजायबात और इसके मख्लूकात को देखते गये यहां तक कि एक शख्स ने सन्दूक पर हाथ मारा और इसे अपनी तरफ मुतावज्जे

करना चाहा और पूछा कि ऐ जुलकरनैन कहां का इरादा है कहा चाहता हूं कि समन्दर की तह तक पहुंच जाऊं और वहां देखूं कि क्या है। इस शख्स ने जवाब दिया कि इस वक्त प इस जगह हैं जहां से तूफान के जमाने में हजरते नूह गुजरे थे और इनका तीशा कशती से गिर गया था और आज तक इसकी गहरइयों में उतरता चला जा रहा है। और अभी तक तह तक नहीं पहुंचा। लिहाजा मेरी बात मानिये तो इस जगह से वापस चले जायें। और अपने को मज़ीद खतरे में न डालें। जुलकरनैन ने इस शख्स के कहने पर अमल किया और रस्सी को हरकत देकर वापस पलटे और उस मुकाम पर आपने एक हद कायम कर दी जो सिद्धे सिकन्दरी कहलायी। आज वह जगह बाकी है।

## नमाज़ी से मुलाक़ात

जुलकरनैन समुंदर की सैर से लुत्फ अन्दोज होने के बाद वापस पलट रहे ते कि रास्तों में इन्होंने देखा कि एक शख्स नमाज़ में मसरूफ है और उसने इन्हें देख कर भी कोई तवज्जो न की तो वह ठहर गये। और जब वह शख्स नमाज़ से फारिग हो चुका तो वह उनके करीब गये और कहा कि तुमने मुझे देखकर भी मेरी तरफ तवज्जे नहीं की जानते हो मैं कौन हूं इसने कहा जानता हूं लेकिन मैं इस वक़्त उसकी मुनाजात में मसरूफ था। जिसकी बादशाही तेरी बादशाही पर ग़ालिब, जिसकी हुकूमत तेरी हुकूमत से बाला। मुझे खौफ था कि मैं अगर तेरी तरफ

मुतावज्जे हुआ तो वह कहीं नाराज न हो जाये। जुलकरनैन ने महसूस किया कि यह कोई खुदा परस्त शख्स है। लिहाजा उन्होंने कहा कि क्या तुम इस बात पर राजी हो कि मेरे साथ चलो ताकि मैं तुम्हें हुकूमत शरीक करूँ और उमूरे ममलेकत में तुम्से मदद हासिल करूँ।

इस शख्स ने जवाब दिया कि मैं चार शर्तों पर तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूँ। अक्वल यह कि तुम मुझे ऐसी नेअमत अता करो जो कबी जवाल पज़ीर न हो, दूसरे यहकि मुजे ऐसी सेहत दो जिसमें बीमारी का खतरा न हो, तीसरे यह कि मुझे ऐसी जवानी बखशों जिसमें बुढापा न हो और चोथी श्रत यह है कि मुझे ऐसी जीन्दगी देने का वादा करो जिसमें मौत न हो। जुलकरनैन हैरत ज़दा रह गये और उसने जवाब में कहा कि मखलूक़ात में कौन ऐसा है जो इन चीजों पर कादिर है। इस शख्स ने कहा तो पिर मुझे उसी के साथ रहने दो जो इन तमाम चीजों पर कुदरत रखता है। ए जुलकरनैन तुम बी इसके क़बज़ए कुदरत में हो। जुलकरनैन ने इस खुदा परस्त की गुफ्तुगू से इबरत हासिल की और आगे बढ़ गये।

## जुलकरनैन से चन्द सवालात

अल्लामा मजलिसी अपनी किताब हयातुल कुलूब में लिखते हैं कि जुलकरनैन का गुजर एक ऐसे शख्स के पास से हुआ जो आलिम था। उसने आपसे चन्द सवालात किया। उसने कहा ए जुलकरनैन आप मुझे इस बात से आगाह फरमाइये

कि वह दो चीज़ें कौन सी हैं जो अपनी किलक़त के बात से अब तक उसी हालत पर कायम हैं। वह दो चीज़े कौन सी हैं जो बाते अज़तकलीक़ अब तक रवां दवां हैं। वह दो चीज़ें से भी मुझे मुतेला फ़रमाइये जो एक दूसरे पर बराबर आती रहती हैं। और उन दो चीज़ों से बी आगाह कीजिए जो एक दूसरे की दुश्मन हैं। जुलकरनैन ने कहा वह दो चीज़ें जो किलक़त के बाद से अपनी हालत में बरकरार हैं वह ज़मीन व आसमान हैं। वह दो चीज़ें जो अब तक रवां दवां हैं वह आफ़ताब और महताब हैं। इसी तरह वह दो चीज़ें जो एक दूसरे के बाद जुहूर होती हैं वह दिन और रात हैं। वह दो चीज़ें जो एक दूसरे की दुश्मन हैं इन्सानकी जिन्दगी और मौत है। यह जवाबात सुनकर उस आलिम ने कहा बेसक तुम इस काबिल हो कि खुदा तुम पर अपनी नेअमतों और नवाज़िशों को जारी रखे।

## मुर्दों की खोपड़ियां

अल्लामा मजलिसी रक़मतराज़हैं कि इसी सफ़र के दौरान जुलकरनैन का गुज़र एक ऐसे शख्स के पास से बी हुआ जो मुर्दों की खोपड़ियां जमा किये हुए उन्हें उलट पुलट कर देख रहा है। जुलकरनैन ने उससे दरियाफ़त किया कि तुम इन खोपड़ियों में क्या देख रहे हो उसने जवाब दिया कि मैं जानना चाहता हूं कि इनमें कौन अमीरथा और कौन ग़रीब। मगर मुझे कुछ पता नहीं चलता।

जुलकरनैन समझ गये कि यह शख्स मुझे इबरात का दर्स दे रहा है और इसका मतलब सिर्फ मेरी तन्बीह है। चुनान्चे वह आगे बड़ गये।

## आबे हयात की तलाश

क्रौमे याजूज और माजूज की रोक के लिये आहिनी दीवार की तामीर के मौक्रे पर रक्राएल नामी जिस फरिशते को खुदा ने मासूर किया था जुलकरनैन की उससे दोस्ती हो गयी थी। चुनान्चे वह फरिशता कभी कभी अपने परवरदिगार से इजाजत लेकर जुलकरनैन के पास आया करता था और मुखलिफ मौजूआत पर दोनों में गुफतुगू हुआ करती थी। एक दिन जुलकरनैन ने उससे कहा ऐ रक्राएल काश में इतने दिनों तक जिन्दा रहता कि मैं अपने परवरदिगार की इबादत का हक अदा कर सकता। क्या इसकी कोई सूरत मुम्किन है। रक्राएल ने जवाब दिया कि हां। परवरदिगार ने ज़मीन से एक चश्मा पैदा किया है जिसका नाम आबे हयात है। उसके पानी में यह तासीर है कि जो शख्स उसे पी लेता है उसे मौत नहीं आती। जब तक अपनी मौत के लिए खुदा से इस्तेदुआ न करे। जुलकरनैन ने पूछा कि क्या तुम बता सकते हो कि वह चश्मा कहा है। रक्राएल ने कहा कि बस मैं इतना जानता हूं कि इसी ज़मीन के किसी मुक़ाम पर बहरे जुल्मात है और वह चश्मा इसी में है। मगर वहां तक पहुंचना नामुम्किन अम्र है। रक्राएल की ज़बानी यह खबर सुनकर जुलकरनैन को फ़िक्र लाहक़ हुई कि किस तरह बहरे जुल्मात का

पता लगाया जाए और किस तरह इस चश्मे तक पहुंचा जाये। चुनान्चे उन्होंने तमाम दुनिया के उलेमा व फ़ोक़हा और औसिया और औलिया को जमा किया जो आसमानी किताबों के माहिर और आसारे पैग़म्बरी को देखे हुए थे। उनसे दरियाफ़त किया सभी ने अपनी लाइल्मी का इज़हार किया। इस बज़्म में जनाबे ख़िज़ भी तशरीफ़ फ़रमा थे उन्होंने बताया कि वह जुल्मात और वह चश्मा मशरिक में है। मैंने इसका हाल हज़रते आदम के सहीफे में पढ़ा है। जनाबे ख़िज़ की इस निशानदेही से जुलकरनैन के हौसलों पर जवानी आ गयी।

चुनान्चे उन्होंने तमाम उलमा व फ़ोक़हा, होक़मा को अपने हमराह लिया और काफ़ी साज़ो सामा नीज़ लशकर के साथ जनाबे ख़िज़ की रहनुमायी में आबे हयात की तलाश में निकल खड़े हुए। और बारह साल तक मुसलसल सफ़र की सउबतें बरदाश्त करने के बाद बिला आख़िर उस बहरे जुल्मा तक पहुंच गये जिसका जिक़र रक़ाइल ने किया था। जुलकरनैन ने अपने लशकर को जुल्मात के किनारे ठहराया और उसमें से छह हज़ार अहले दानिश व अहले कमाल को मुनतख़ब करके उनसे फ़रमाया कि मैं इस ज़ोलमात में दाख़िल होकर इसे तय करना चाहता हूँ तुम्हारी क्या राय है। अक़सरीयत ने मुख़ालेफ़त की और कहा कि यह इरादा तर्क कर दीजिए। जुलकरनैन ने कहा मैं जो इरादा कर चुका हूँ वह अपनी जगह अटल है ख़्वाह कि मैं ज़िन्दा रहूँ या हलाक़ हो जाऊँ। उलमा व होक़मा ने भी समझाया

मगर जब जुलकरनैन किसी की बात मानने पर तैयार न हुए तो लौगो ने कहा कि आप को इखतेयार है मगर इस सफर में हम आप से माफी के ख्वास्तगार हैं।

इसके बाद जुलकरनैन ने खिज़्र से पुछा कि क्या जोलमात के सफर में आप मेरी रहबरी फरमायेगें। जनाबे खिज़्र ने जब अपनी रजा मंती का इजहार फरमाया तो जुलकरनैन ने इन्हे दो हजार का एक दस्ता फ़राहम किया और इस पर इन्हे सरदार मुकर्रर कर के और खुद भी चार हजार जांबाज़ों का दस्ता अपने साथ भी लिया। बाकी लशकर को यह हुक्म दिया कि वह इसी मक़ाम पर रहे और मेरी वापसी का इन्तज़ार करे। अगर बारह साल की मुद्दत गुज़र जाने पर मैं वापस पलट कर न आऊं तो तमाम लशकरियों को यह इखतेयार होगा कि जहां चाहे चलें जायें। गर्ज़ कि बाकरा घोड़ियों पर सवार छः हजार का यह अज़ीम काफ़ेला जोलमाल में अपनी मंज़िल की तरफ रवाना हुआ। सबसे पहले हज़रते खिज़्र दाखिल हुए उनके पीछे जुलकरनैन और उनका लशकर। सफर का तरीक़ा यह था कि जनाबे खिज़्र रवाना होते थे जुलकरनैन उसी मंज़िल पर क़याम करते जाते थे।

अल्लामा मजलिसी का कहना है कि जुलकरनैन को यह भी पता बताया गया था कि यहां आबे हयात का चश्मा वाक़ये है वहा मिनजुमला उनके 356 चश्में और भी है जो आबे हयात की तासीर नहीं रखते इसलिए वह अपने साथ नमक आलूदा खुशक मछलियां भी लाये थे। और उन्होंने जोलमात में दाखिल होने से पहले 360 मछलियां जनाबे खिज़्र अ0 को दी थी। ताकि ऐसा हंगाम आये तो वह 356



आदमियों में एक एक मछली तकसीम करें और एक एक आदमी को एक एक चश्में पर इस हिदायत के साथ मुकर्रर कर दें कि अगर वह अपनी मछली को इस चश्में में जिस पर वह मुकर्रर थें गोता दे। अगर वह मछली जिन्दा होकर चलनें लगे तो वह समझ लेंगे कि आबे हयात का चश्मा यही हैं। फिर इसकी खबर मुझे भी कर दीजिये। चुनांचे जनाबे खिज़्र जब इस मुकाम पर पहुचें जहां 360 चश्में थे। तो उन्होंने जुलकरनैन की हिदायत के मुताबिक अपने असहाब में से एक एक मछली 356 आदमियों में तकसीम कर के एक मछली अपने पास रख ली। फिर आपने इन आदमियों को अलग अलग चश्मों पर भेजा और एक चश्में पर खुद भी गये इत्तेफाक से जिस चश्में की जानिब जनाबे खिज़्र गये वही चश्मा आबे हयात का था।

जैसे ही आपने उस नमक आलूदा मुर्दा मछली को पानी में डाला वह जिन्दा हो गयी और पानी पर चलनें लगी. फिर आपने उसी पानी से गुस्ल किया और कपड़े धोये और उसे जी भर कर पिया। इसके बाद आप अपने असहाब के साथ जुलकरनैन के पास आये और इनसे सारा माजरा बयान किया और खडुशकडबरी दी। लेकिन जब जुलकरनैन को साथ लेकर चश्में के मुकाम पर फिर वापस आये तो लाख इस चश्में को तलाश करने की कोशिश की गयी लेकिन वह न मिल सका। यहां तक कि यह लोग इस मकाम से आगे बढ़ गये और बहरे जुलमात से आगे बढ़ कर रोशनी के समन्दर में पहुच गये। यह आफताब या महताब की

रोशनी न थी। बल्कि उसे अनवारे इलाही की तजल्ली से ताबीर किया जाये तो ज्यादा मुनासिब होगा। इस जगह की ज़मीन सुर्ख थी और इसके संगरेजे मरवारीद के थे। इस मक़ाम पर जुलकरनैन ने एक आलीशान महल को देखा जो चमक दमक के साथ अपनी खामोशी को दास्तान दोहरा रहा था।

जुलकरनैन ने जनाबे खिज़्र की निगरानी में अपने लशकर को महल के बाहर ठहराया और खुद तनो तनहा उसमें दाखिल हो गये। जंहा सिर्फ वीरानी नज़र आयी फिर उन्होंने देखा कि एक तरफ बालायी हिस्से पर जानें के लिए एक ज़ीना था आप बेधड़क इस ज़ीने से उपर पहुंचे तो वहां इन्हें एक इन्तेहायी खूबसूरत शख्स नज़र आया जिसकी शकल व सूरत इंसान की शकल व सूरत से मुशाबेह थी। वह शख्स सफेद लिबास में महफुस अपने मुंह पर हाथ रखे आसमान की तरफ कुछ देख रहा था। जुलकरनैन की आहट पर वह चौंका और उनसे पुछा कि तुम कौन हो कहा मैं जुलकरनैन क्या इनती अज़ीम और कुशादा दुनिया जिसे छोड़ कर तुम यहां आये हो काफी न थी। फिर इसने एक पत्थर का टुकड़ा उठा कर जुलकरनैन की तरफ फेंका और कहा कि इसे ले जाओ और इसको और पत्थरों के साथ वजन करो तुम्हें इससे अजीबो गरीब सबक मिलेगा।

जुलकरनैन ने वह पत्थर का टुकड़ा उठा लिया और वापस पलटे। फिर आपने अपने असहाब से सारा वाक्या बयान किया और पत्थर दिखाया और हुक्म दिया कि इस पत्थर के वजन की हकीकत से आगाह किया जाये। इस पत्थर का वजन

किया गया जिस चीज़ से भी वह तोला जाता था वजन में ज़्यादा ठहरता था। यहां तक कि एक हज़ार पत्थर इसके बराबर तराजू में रखें गये फिर भी वह वजन में ज्यादा ही रहा। जनाबे खिज़्र भी यह करिश्मा देख रहे थे। उनसे जुलकरनैन ने कहा कि क्यों इस पत्थर का वजन ज्यादा ठहरता है। हज़रते खिज़्र ने जवाब दिया कि यह मामला अभी हल हो जाता है। इस पत्थर को एक बार फिर वजन किया जाये। चुनांचे जैसे ही वह पत्थर तराजू के एक पल्ले में रखा गया जनाबे खिज़्र ने इस पर एक मुठ्ठी खाक डाल दी और कहा कि अब इसको वजन किया जाये। गर्ज कि इस पत्थर के मुक़ाबले में जब एक पत्थर रख कर तराजू उठायी गयी तो उसका वजन कम ठहरा।

हांलाकि खाक डालने से उसे बढ़ जाना चाहिए था। फिर वह पत्थर हर शय के मुक़ाबले में कम ही ठहरता चला गया। तो जुलकरनैन ने पुछा ऐ खिज़्र आखिर इसमें राज क्या है तो जनाबे खिज़्र ने फरमाया ऐ जुलकरनैन जिसने आपको यह पत्थर दिया है वह फरिश्ता था और इसने इस पत्थर के इस मामुली टुकड़ों को आप की मिसाल करार दिया है कि खुदा ने तमाम दुनिया की बदशाही आप को अता कर दी है फिर भी आप की हिरस व हवस में इज़ाफा होता जा रहा है। एक दिन आपकी यह हिरसों हवस खुद बखुद खत्म हो जाएगी। यह सुनकर जुलकरनैन पर रिक्कत तारी हो गयी उन्होने कहा की ऐ खिज़्र तुम सच कहते हो यह पत्थर

मेरे लिए दरसे इबरत है। अब मैं अपनी ज़िन्दगी सिर्फ़ इबादते खुदा में गुज़ारूंगा। इसके बाद जुलकरनैन और उनके लशकरी बहरे जुलमात मे दाखिल होकर वापस पलटे और जब वापसी पर भी आबे हयात का चश्मा जुलकरनैन को न मिला तो इस पर उन्होंने खिज़्र से कहा कि यह मेरी किस्मत है कि खुदा ने मुझको इससे महरूम रखा।

अल्लामा मजलिसी तहरीर फरमाते हैं कि आबे हयात की जुस्तजू के बाद वापसी पर जुलकरनैन ने दुमतहुल जिनदल के एक मक़ाम पर सुकूनत इखतेयार कर ली। और 500 बरस की उम्र में वहीं इन्तेकाल फरमाया।

## हज़रते याक़ूब व यूसूफ़ अ०

हज़रते इसहाक़ बिन इब्राहीम के दो बेटे जनाबे याक़ूब और ऐस जुडवां पैदा हुए उनकी विलादत के सौ साल बाद तक हज़रते इसहाक़ हयात रहे और जब वफ़ात का ज़माना करीब आया तो उन्होंने हज़रते याक़ूब को अपना खलीफ़ा और जानशीन मुकर्रर किया।

हज़रते याक़ूब की विलादत हज़रते ईसा से 1837 साल कब्ल हुई। जवान हुए तो आपने पहली शादी लेया बिनते लेयान बिनते शोराइल से की। उनके बत्न से छह बेटे यहूदा रूएल शमउन लावी ज़बालून और यशजर पैदा हुए दूसरा अक़द आप ने अपने मामू लोबान बिन नाबिर बिन आजर की बेटी रायल से फरमाया जिनके बत्न से एक लड़की वीना और दो लड़के यूसुफ़ और बनयामीन मुतावल्लिद हुए। चूंकि यूसुफ़ की वाल्दा रायील उनकी कमसिनी ही में इन्तेक़ाल कर गयीं थीं। इसलिये वह अपनी ख़ाला राहील की गोद में पले और बढ़े। नीज़ उन्हीं को अपनी मां कहते थे। हज़रते याक़ूब ने तीसरा अक़द राहील की एक कनीज़ से किया। उनके बत्न से भी दो बेटे दान और तफ़तानी हुए। चौथा अक़द आपने अपनी पहली बीवी लेया की कनीज़ से किया। इसके बत्न से भी दो बेटे हाद और अशर पैदा हुए। इस तरह हज़रते याक़ूब एक बेटी और मजमुई तौर पर बारह बेटों के बाप थे। लेकिन इन तमाम बेटों में हज़रते यूसुफ़ का हुस्न व जमाल इस क़दर शोहरए आफ़ाक़ था कि।

जो शख्स उन्हें एक मरतबा देख लेता था तो उनकी आंखों में उसकी तस्वीर उतर जाती थी।

## हज़रते यूसुफ़ का ख़्वाब

हज़रते यूसुफ़ जब बारह बरस के हुए तो उन्होंने यह ख़्वाब देखा कि आसमानों के दर खुल गये हैं। और एक ऐसा नूर जाहिर है कि जिसकी तजल्ली सै तमाम कायनात रौशन और मुनव्वर है। और मैं खुद एक अज़ीम पहाड़ की बलन्दी पर खड़ा हूँ। मेरे गिर्द व पेश हरे-भरे दरखतों की कतारें हैं और नहरे जारी हैं जिसकी मछलियां तस्बीहे इलाही में मशगूल हैं। फिर मुझे एक नूरानी पोशाक पहनायी गयी जिसके पहनते ही आलम के तमाम रमूज व असरार मुझ पर रोशन हो गये। फिर जमीन के खज़ानों की कुंजियां मेरे सुपर्द की गयीं। और सूरज और चाँद और ग्यारह सितारों ने मुझे सजदा किया। मुफ़सेरीन का कहना है सूरज से मुराद हज़रते याक़ूब अ० और चाँद से मुराद जनाबे यूसुफ़ की मां राहील और ग्यारह सितारों से मुराद उनके ग्यारह भाई।

हज़रते याक़ूब की आंख कुली तो रात ही में अपना ख़्वाब अपने वालिद याक़ूब से बयान किया। उन्होंने फरमाया बेटा इस ख़्वाब को अपने भाइयों से न बयान करना वरना वह तुम्हारे खिलाफ़ मक्कारी और अय्यारी की तदबीरें इख़तेयार करेंगे।

और इस अम्र में शक नहीं कि शैतान इन्सान का खुला हुआ दुश्मन है। तुमने जो ख्वाब देखा है उसकी ताबीर यह है कि परवरदिगारे आलम तुम्हें मनसबे जलीला पर फ़ाएज़ करेगा। बरगुज़ीदा करेगा और ख्वाबों की ताबीरों का इल्म देगा। जिस तरह उसने तुम्हारे दादा व पर दादा इस्हाक़ व इब्राहीम पर अपनी नेअमतें तमाम की हैं। उसी तरह तुम पर भी अपनी नेअमतें तमाम करेगा। यकीनन तुम्हारा परवरदिगार बड़ा अलीम और हकीम है।

जिस वक़्त दोनों बाप बेटों (याक़ूब और यूसुफ़) के दरमियान यह गुफ़तुगू हो रही थी। उस वक़्त यूसुफ़ के किसी भाई की बीवी जाग रही थी। चुनान्ते सुबह होते ही उसने सारा हाल अपने शौहर से बयान किया और उसके ज़रिये तमाम भाइयों में इस वाक़ये की ख़बर मशहूर हो गयी।

### **बरादराने यूसुफ़ के रश्क और हसद का सबब**

हज़रते याक़ूब यूसुफ़ को इस क़द्र चाहते थे कि उन्हें एक पल भी आंखों के सामने से ओझल होना गवारा न था। और यही वह वालहाना मोहब्बत थी जो बरादराने यूसुफ़के लिए रस्क ओ हसद का सबब बनी। चुनान्चे याक़ूब की दीगर औलादों ने अकसरों बेशतर उनसे इस बात की शिकायत भी की कि आप का तरज़े अमल यूसुफ़ के साथ कुछ और है और हमारे कुछ और है। यह सरासर आप की

नाइंसाफी है कि सारी मोहब्बतें व शफकते सिर्फ यूसुफ से लिए हैं। और हम लोग इससे महरूम है। मगर चूंकि याकूब के दिल में यूसुफ की तरफ से मोहब्बत का समन्दर ठाठें मार रहा था। इसलिए उन्होंने बेटों की इस शिकायत पर कोई तवज्जों नहीं दी। आखिरकार इसका नतीजा यह हुआ कि वह यूसुफ की दुश्मनी पर उतर आये। और आपस में मशविरा कर के यह फैसला किया कि इनका किस्सा ही तमाम कर दिया जाये। ताकि बाप की सारी मोहब्बतें और हमदर्दियां जो यूसुफ से वाबस्ता हैं वह हमारी तरफ मबजूल हो सकें।

## फ़रेब कारियां

जनाबे यूसुफ के सब बाई एक दिन अपने बाप याकूब की खिदमत में हाजिर हुए और उनसे कहने लगे कि आप यूसुफ को इतना चाहते हैं कि हर वक़्त इनको घर की चहार दीवारी में कैद रखते हैं। हमारी भी ख़वाहिश है कि हम लोगों के साथ वह खेलने-कूदने में कभी कभी हिस्सा लिया करें। लिहाज़ा आज हमारे साथ इसे भेजिये। वह हम लोगों के साथ जंगल में भेड़े भी चरायेगा और खेले-कूद भी लेगा। हम कोई ग़ैर नहीं है। हमारा भी यूसुफ पर हक़ है। आप हम पर भरोसा कीजिए हम इनकी पूरी तरह देख – भाल रखेंगे। याकूब ने फ़रमाया कि अगर तुम इसे अपने साथ ले जाओगे तो यक़ीनन मुझे सदमा होगा। इसके अलीवा मैं इस बात से बी डरता हूं कि ऐसा न हो तुम लोग खेल कूद में लग जाओ और यूसुफ की तरफ



से हरगिज़ गाफिल न होंगे। अगर खुदा न खास्ता ऐसा हो गया तो यकीनन हमारा शुमार निकम्मों में होगा। गर्ज कि जनाबे यूसूफ पसे पेश करते रहे और बरादराने यूसूफ इस्रार। यहां तक कि वह लोग अपनी फरेबकारियों में कामयाब हो गए। और हज़रते याकूब की कर्बनाक खामोशी को इजाज़त, खामोशी को इजाज़त समझकर उन लोगों ने यूसूफ का हाथ पकड़ा और इन्हें लेकर तेज़ी से जंगल की तरफ रवाना हुए। जब यह लोग जंगल में दाखिल हुए और एक ऐसे मक़ाम पर पहुंचे जहां यूसूफ की फरियाद सनने वाला कोई न था। तो इन लोगों ने चाहा कि इन्हे क़त्ल कर दें। मगर बड़े भाई ने मुखलेफत की और कहा कि इनके ख़ून में हाथ रंगने से क्या फायदा। ज़्यादा मुनासिब यह है कि इसको किसी कुएं में डाल दो यह खुद ही मर जायेगा। या फिर कोई राहगीर इधर से गुजरा तो वह इसे निकाल कर अपने साथ ले जायेगा। इस तरह हम क़त्ल के गुनाह से भी बच जायेंगे और हमारा मकसद भी पूरा हो जायेगा।

यह तजवीज़ सभी को पसन्द आयी चुनान्चे इन लोगों ने जनाबे यूसूफ को पहले मारा-पीटा फिर उनका पैरहन उतारा और इन्तेहायी बेदर्दी और बेरहमी से उनको एक कुएं में फेंक दिया। और ख़ुद कुछ फासले पर उनकी बर्बादी का तमाशा देखने के लिए बैठ गये। मगर कुदरते इलाही को यूसूफ की ज़िन्दगी मकसूद थी। इसलिए पहला मोजिज़ा यह हुआ कि उनके गिरते ही इस कुएं का सारा पानी

जमीन पी गयी और इसके सोते खुशक हो गये मगर जाहीर है कि जीन्दगी और मौत की इस कश-मकश के दौराना जनाबे यूसुफ की क्या कैफ़ियत रही होगी। इस यासो बीम के आलम में बस फ़क़त एक खुदा की ज़ात थी जो इनकी निगेहबानी और पासबानी कर रही थी। चुनान्चे जब यूसुफ़ ने फ़रयाद की कि पालने वाले तू देख रहा है कि मेरे भाई मुझ पर क्या-क्या जुल्म कर रहे हैं तो जवाब मिला कि अन्करीब हम तुम्हें बुलन्द मन्सब पर फाएज़ करेंगे। तब तुम इस फेले बद से इन्हें मुतानब्बेह करोगे। (करआने मजीद सुरए यूसुफ आयत 15)

## हज़रते यूसुफ़ का कुएं से बाहर निकलना और फ़रोख़त होना

अपने ख़ालिक से यूसुफ़ की फ़रयाद अभी नातमाम थी कि दूसरा मोज़िज़ा यह हुआ कि हुक्मे इलाही से एक मिस्री काफ़िला आकर उस कुएं के पास ठहरा। और उनमें से एक शख्स ने पानी के लिये कुएं में डोल डाला फिर क्या था। जनाबे यूसुफ़ ने इस डोल की रस्सी को मज़बूती से पकड़ा और डोल पर चढ़ कर बैठे गये। जब उस शख्स ने डोल को पूरी ताक़त से उपर खेंचा तो यह देख कर हैरान रह गया कि उस पर एक इन्तेहायी हसीन व जमील व ख़ुबसूरत लड़का बैठा हुआ है। उसने इन्हें बाहर निकाला और अपने काफ़िले वाले के पास ले आया।

बरादराने यूसुफ जो उनकी तबाही और बरबादी का तमाशा देखने के लिये कुछ फ़ासले पर मौजूद थे यह देखकर कि यूसुफ़ कुएं के बाहर निकल आये हैं। काफ़िले वालों की तरफ दौड़ पड़े और उनसे कहा कि यह हमारा गुलाम है जो ला पता हो गया था। अगर तुम लोग चाहो तो हमसे इसे खरीद लो वरना हमारे हवाले कर दो। जनाबे यूसुफ ने भी मसहलते ईज़्दी की बिना पर अपनी ज़बान इस मौक़े पर बन्द रखी। यहां तक कि उनके भाइयों से एक शख़्स मालिक बिन ज़अर ने बीस दिरहम में उन्हें खरीद लिया और काफ़िला आगे बढ़ गया। अब हज़रते यूसुफ के भाइयों को यह फ़िक्र लाहक हुई कि हज़रते याक़ूब को क्या जवाब दिया जाए।

चुनान्चे बाहम मशविरा करके उन लोगों ने एक भेड़ का बच्चा ज़बह किया और यूसुफ का पैरहन जो इन लोगों ने इन्हें कुएं में डालने से पहले उतार लिया था। भेड़ के खून में तर करके जब रात-रात की तारीकी मोहीत होने लगी तो घर की तरफ़ रवाना हुए। करीब पहुंच कर उन लोगों ने बड़ी सफाकी के साथ रोना पीटना शुरू किया और पछड़े खाते हुए घर में दाखिल हुए। जनाबे याक़ूब ने रोने का सबब पूछा तो वह कहने लगे कि जिस अम्र का आपने अंदेशा ज़ाहिर किया था वही हुआ। हम लोग यूसुफ को सामान के साथ छोड़ कर खेलने में मसरूफ़ हो गये और भेड़िया उन्हें खा गया। यह उनका खून आलूदा पैरहन है।

हालांकि हमें मालूम है कि अगर हम लोग अपनी बात में सच्चे भी हों तब भी आपको यकीन नहीं आयेगा। हज़रते याकूब ने जब हज़रते यूसुफ़ का पैराहन देखा तो कहा कि तुम लोगों ने महज़ अपने बचाव के लिये यह कहानी मुरतब की है। अगर भेड़िया खाता तो यह पैरहन फटा ज़रूर होता। ख़ैर जो तुम लोग कह रहे हो उसका फैसला खुदा ही करेगा। मेरे लिये तो सब्रो शुक्र के अलावा अब और कोई दूसरा रास्ता नहीं है। क्योंकि यूसुफ़ से तुम लोगों ने मुझे महरूम कर दिया है। यह कह कर आप ज़ारो क़तार रोने लगे। मोअर्रेखीन का कहना है कि आपने 21 साल तक फिराके यूसुफ़ में शबो रोज़ इस तरह गिरिया किया कि आंखों की बीनायी रुखसत हो गयी थी। कुरआने मजीद में है कि आप की आंखें सफ़ेद हो गयी थी।

## हज़रते यूसुफ़ अजीजे मिस्र और जुलैखा

जिस काफिले ने हज़रते यूसुफ़ को उनके भाईयों से खरीदा था। उसने अपनी तिजारती सामान में खूब मुनाफ़ा कमाया और काफिले वाले जब लोट कर अपने वतन (मिस्र) आये तो लोगों ने यूसुफ़ के हुसन व जमाल का मुशाहेदा किया। और यह खबर आम होते होते अजीजे मिस्र के कानों तक पहुंची। चुनान्चे उसने मालिनक बिन ज़अर को बुलाया और उनसे हज़रत यूसुफ़ को उनके बराबर दिरहम कि एवज़ खरीद लिया खरीदारी के बाद जब हज़रते यूसुफ़ उनके सामने पेश किये गये तो उसने इन्हें बग़ौर देखा और उनकी पेशानी में अनवारे पैगम्बरी को महसूस

किया तो उसने पूछा तुम्हारा नसब क्या है। फ़रमाया मैं याक़ूब का बेटा इस्हाक़ का पोता और हज़रते इब्राहीम का पर पोता हूँ।

यह सुनकर उसने अपनी बीवी जुलैखा को फ़ौरन तलब किया और जनाबे यूसुफ़ को उनके हवाले करके यह ताकीद कर दी कि तुम उनकी खिदमत करो और इनके आराम व आसाइज का पूरी तरह खयाल रखो। खुदा इनके सबब से हमें मज़ीद बरकतें अता करेगा। फिर मुम्किन हुआ तो हम उनको अपनी औलाद बना लेंगे। क्योंकि हमारा घर औलाद की नेअमत से खाली है। मुखतसर यह कि अज़ीजे मिस्र के घर में जनाबे यूसुफ़ ऐशो आराम से रहने लगे और उनकी देख भाल तरबियत और मोहब्बतें और शफ़क़क़तों में आला मेयारी सतह पर होने लगीं यहां तक कि आप जवान हुए। चढती हुई जवानी की मलाहत ने आपके हुसन व जमाल में चार चांद लगा दिये। चुनान्चे भरपूर शबाब हुस्नों जमाल चौदवीं रात को चांद की तरह दमकता हुआ चेहरा। हसनी नुक़श ख़बसूरत व दिलकश खंदो खाल देखकर अज़ीजे मिस्र की बीवी जुलैखा यूसुफ़ पर दीलों जान से फ़रेफ़ता हो गई। और उसके अन्दर नफ़सानी ख़्वाहिशात का ज्वालामुखी भड़कने लगा। और वह रात दिन इस फ़िक्र में रहने लगीं कि किस तरह यूसुफ़ को अपनी तरफ़ मुतावज्जे कर के इनसे तसकीने नफ़स का सामान फ़राहम किया जाये।

आखिरकर एक दिन मौका पाकर उसने जनाबे यूसुफ को अपने कमरे में बन्द कर लिय और खुद बरहैना होकर कहने लगी आओ यह मंजर देखकर यूसुफ के होश उड़ गये। उन्होंने फ़रमाया कि तुझे शर्म नहीं आती कि तू मुझसे फेले बद की तालिब है। जबकि तेरा शौहर मौजूद है। मेरा मालिक व मोहसिन है। भला यह क्योंकर मुमकिन है कि मैं उसकी ज़ौजा के साथ ज़िना करूं। जो खुदा की नज़र में गुनाहे अज़ीम है। मगर जुलैखा पर चूंकि नफस का भुत बुरी तरह सवार हो चुका था इसलिए वह यूसुफ की कोई भी बात सुनने को तैयार न हुई। और उसने इनका हाथ पकड़ कर अपनी तरफ खैचा और उनके ऊपर गिर जाये। हज़रते यूसुफ ने उस हाथ को झटका दिया और छुड़ाकर दरवाज़े की तरफ भागे। उसने झपट कर उनके कुर्ते का दामन पकड़ कर फिर अपनी तरफ खैचा। इसी अफ़रा तफ़री में हज़रते यूसुफ का दामन फट गया। और वह दरवाज़ा खोलकर हापतें कांपते बाहर निकले। तो अज़ीजे मिस्र को दरवाज़े पर खड़ा पाया। शायद पहले से ही कुछ सुन गुन पा चुका था। और इसी टोह में आया था कि यह दोनों क्या करते हैं।

यूसुफ के पीचे बरहैना हालत में जुलैखा बी निकली। चुनान्चे अज़ीजे मिस्र को देखा तो झट अपने शौहर से कहने लगी कि यह तुम्हारी बीवी के साथ बदकारी का इरादा करे इसकी सज़ा इसके सिवा और कुछ नहीं है कि इसे कैद कर दिया जाये। या दर्दनाक अज़ाब में मुब्तेला करदिया जाए। आप देख रहे हैं कि यूसुफ ने मेरी

वह हालत बना दी कि मैं बरहैना आप के सामने खड़ी हूं अजीजे मिस्र ने हजरते यूसुफ की तरफ खूंखवार और सवालियत नज़रो से उसकी तरफ देखा। आप ने फरमाया कि इसने खुद मुझसे फैले बद की ख्वाहिश की थी। मेरा कुसूर हरगिज़र नहीं है। मेरे परवरदिगार ने मुझे बहुत बचाया। अगर आप को यक्रीन न हो तो सारी हकीकत इस शीरखवार बच्चे से पूछ लें जो आप के करीब इस गहवारे में पड़ा है।

जुलैखा के खालाजाद या मामूजाद बाई का खलीका नामी बच्चा जिसकी उम्र सिर्फ चार माह की थी झूले में पड़ा था। अजीजे मिस्र ने कहा कि यह बच्चा जो बोल नहीं सकता तुम्हारी वह गवाबी क्या देगा। अजीजे मिस्र का यह कहना था कि वह बच्चा बहुकमें खुदा गोया हुआ और उसने कहा ऐ अजीजे मिस्र तुम यूसुफ का कुर्ता देखो कि आगे से फटा है या पीछे से। अगर यूसुफ के कुर्ते का दामन आगे से फटा हो तो यूसुफ खतावार हैं और गर पीछे से फटा है तो जुलैखा खतावार है। अजीजे मिस्र ने चार माह के बच्चे के मुंह से यह आवाज़ सुनी तो हैरतज़दा रह गया। और उसके दिल में खौफ पैदा हुआ।

चुनान्चे उसने यूसुफ के कुर्ते का दामन देखा जिसका दामन पीछे से फटा था। तो अजीजे मिस्र जुलैखा पर बरस पड़ा और कहने लगा कि यह सब तेरा मक्र व फरेब है। जबकि वह बेखता हैं तुझे चाहिये कि इनसे माफी मांग और खुदा से

अपने फेले बद पर तौबा और अस्तखफ़ार कर फिर उसने यूसुफ से कहा आप इस मामले को पोशीदा रखें क्योंकि यह मेरी इज्जतों आबरु का मसला है और इसकी तशहीर में मेरी सख्त बदनामी और रूसवायी है। मगर न जाने वे किस तरह इसकी खबर सारे शहर में फैल गयी और औरतों के दरमियान घर घर में यह चर्चे होने लगे कि अजीजे मिस्र की बीवी जुलैखा ने अपने परवर्दा नौजवान से फेले बद की कोशिश की और वह उस पर बुरी तरह आशिक व फ़रेफ़ता है।

## नीबू और छुरी

जब जुलैखा को यह खबर मालूम हुई कि शहर की औरतों और मर्दों में इसके इस फेले बद में हिक़ारत आमैज़ तज़किरे हो रहे हैं। और ज़रूरत से ज्यादा उसकी रूसवायी और बदनामी हो रही है। उसने शहर के मौहज्जब तरीन घरानों से चालीस ऐसी हसीन व ख़ुबसूरत औरतों को मुन्तख़ब करके अपने यहां दावत पर बुलाया जो हुस्नों जमाल में अपनी मिसाल आप थीं जब सब औरतें जमा हो गयी तो जुलैखा ने एक एक नेबू और एक - एक छुरी दे दी और कहा कि मैं यूसुफ को बुलाती हूँ जब वह तुम्हारे दरमियान से गुज़रने लगे तो तुम लोग अपना अपना नेबू काट लेना। फिर जुलैखा ने यूसुफ को बुलाया और कहा कि तुम इनके दरमियान से गुज़र जाओ।



चुनान्चे जब यूसुफ इनके दरमियान से गुजरने लगे तो सब औरतों ने उनके हुस्नो जमाल को देख कर इतनी बेखुद और मदहोश हो गयीं कि सभी ने नीबू के बदले अपने हाथों को काट लिया और कहने लगीं कि एक फरिश्ता है। रवायतो से पता चलता है कि उनमें से नौ औरतें बेहोश हो गयीं। इसके बाद जुलैखा ने इन औरतों को मुखातिब किया और कहा कि यह वही शख्स है जिसके बारे में तुम मुझ पर लानत और मलामत करती थीं। बेशक मैंने इससे फेले बद की ख्वाहिश की थी अगर यह मेरी बात पर अमल नहीं करेगा तो यकीनन कैद भी होगा और जलील भो होगा। जुलैखा की यह बातें सुनकर यूसुफ ने अपने परवरदिगार से दुआ की और कहा - कि पालने वाले जिस बात के लिये यह औरतें मुझसे ख्वाहिशमंद हैं उसकी बनिस्बत कैदखाना मुझे ज्यादा पसन्द है। सूरए यूसुफ आयात 33

## हज़रते यूसुफ और कैदखाना

खुदा की बारगाह में यूसुफ की दुआ मुस्तेजाब हो गयी। इस तरह कि अज़ीजे मिस्र ने सोचा कि इस बदनामी के दाग को धुलवाने के लिये मसलहतन कुछ अरसे तक कैदखाने में रखा जाये ताकि जुलैखा और दीगर औरतों से वह महफूज रह सकें। चुनान्चे हज़रते यूसुफ को उसने कैदखाने में कैद करके उस जगह रखा जहां दो कैदी और थे उनमें एक बादशाह का साक़ी यूनान और दूसरा शाही बवर्ची मजीला था। और यह दोनों बादशाह को ज़हर देने के इल्जाम में कैद किये गये थे।

एक दिन इन दोनों ने हज़रते यूसुफ़ से पूछा कि आप क्या सिफ़त और कमाल रखते हैं फ़रमाया मैं ख़्वाबों की ताबीरें जानता हूँ यह सुनकर इनमें से एक ने कहा कि मैंने यह ख़्वाब देखा है कि अंगूरों की शराब बना रहा हूँ आप ने फ़रमाया कि इसकी ताबीर यह है कि तुम बहुत जल्द इस कैद ख़ाने से रिहा होगे। और बादशाह के साक़ी बनोगे। दूसरे ने कहा कि मेरा ख़्वाब यह है कि मैं रोटियों का एक गट्ठर उठाये हुए हूँ और चीलें कौए इस पर मंडला रहे हैं आप ने फ़रमाया कि तुम क़त्ल किये जाओगे। और तुम्हारे सर का भेजा चील कौए खायेंगे।

चुनान्चे पहला शख्स रिहा होकर बादशाह का साक़ी बना और दूसरी शख्स को क़त्ल करके ऐसी जगह डाल दिया गया जहां उसके सर का भेजा चील कौए खा गये। जब पहले शख्स की रिहायी का परवाना आया था। इस वक़्त जनाबे यूसुफ़ ने उससे कहा था कि जब तुम बादशाह के साक़ी बन जाना तो मेरा भी तज़केरा उससे करना वह मेरे बारे में भी कुछ खयाल करे। मगर वह भूल गया। यहां तक कि कैदख़ाने में यूसुफ़ को सात साल गुज़र गये। बादशाह ने एक दिन ख़्वाब में देखा कि सात मोटी ताज़ी गायें सात दुबली पतली गायों को खा रही हैं। और गंदुम की सात हरी भरी बालियों से सात सूखी हुई बालियां लिपटी हुई हैं। बेदार हुआ तो उसे ताबीर मालूम करने की फ़िक्र लाहक़ हुई।

चुनान्चे उसने हुकूमत के तमाम वज़ीरों और दानिसवरों को जमा करके उनसे ख़्वाब बयान किया। और ताबीर चाही मगर सब के सब ताबीर बताने से कासिर रहे। और बाज़ों ने यह कह कर टाल दिया कि यह एक ख़्वाबे परेशां है इसकी कोई ताबीर नहीं है। इस मौक़े पर साक़ी भी मौजूद था। अचानक उसे अपना कैदखाने वाला ख़्वाब याद आया। उसने कहा अगर हुज़ूर मुझे कैदखाने तक जाने की इजाज़त दें तो मैं इस ख़्वाब की ताबीर ला सकता हूँ। चूँकि वहाँ ऐसा बरगुज़ीदा शख़ कैद है। जो ख़्वाबों की ताबीरों का मुकम्मल इल्म रखता है। बादशाह की इजाज़त से उस कैदखाने में गया पहले तो उसने जनाबे यूसुफ़ स अपनी भूल की माज़रेत की फिर बादशाह का ख़्वाब बयान किया।

आपने परमाया कि इसकी ताबीर यह है कि इस साल मुल्क मे सात साल तक गल्ला ख़ुब पैदा होगा। इस पैदावार के दरमियान बादशाह को चाहिए कि ज़रूरत के मुताबिक ही बालियों से गल्ला निकालने का हुक्म सादिर करे। बाक़ी को य़ुंही महफुज़ कर लिया जाए ताकि गल्ले में कीड़े वगैरह न लगे। क्योकि इसके बाद सात साल तक मुल्क सख्त व शदीद कहत मे मुब्तैला होगा। और यही महफुज़ कि हुई बालियों की गल्ला लोगों की जान बचायेगा। और सात साल की कहत के बाद फिर खुशहाली का दौर आयेगा। तो ज़रात और बागात पर फिर हरियाली छा

जाएगी। ख्वाब की ताबीर लेकर वह बादशाह के पास आया और सारा वाक्या बयान किया जिसे सुनकर हैरत ज़दा हो गया और बेहद मुताअस्सिर हुआ यहां तक कि उसने हुक्म दिया कि तुम फिर कैदखाने में जाओ और उन्हे मेरे पास लेकर आओ। वह शख्स फिर गया और उसने जनाबे यूसुफ़ को बादशाह का पैगाम सुनाया आप ने फ़रमाया कि मैं बादशाह की खिदमत में ज़रूर चलूंगा।

मगर मेरी एक शर्त है कि वह पहले जुलैखा और उन औरतों को जिन्होंने अपने हाथ काट लिए थे तलब करे। और उनसे पुछें कि मेरे बारे में अब इन्का क्या ख्याल है। वह अपनी गलतियां तस्लीम करने को तैयार है या नहीं। हज़रते यूसुफ़ के कहने पर बादशाह ने अज़ीजे मिस्र के ज़रिये उन तमाम औरतों को बुलवाया और जब वह आ गयी तो उनसे पुछा कि तुम लोग मुझे सच सच बताओ कि तुम्हारे मामले में युसुफ़ कि खता थी। कि तुम लोगों ने उनके मामले में मक्कारी व फरेब से काम लिया था। सब औरते खामोश रही मगर जुलैखा ने बैखोफ हो कर एतेराफ किया कि गलती हमारी थी। और हमने यूसुफ़ के साथ बद कारी का इरादा किया था। वरना हकीकत ये है कि वह बेखता और पाक दामन है। इस सच्चायी के जाहिर हो जाने के बाद बदशाह ने यूसुफ़ के फ़ौरी तोर पर रिहायी का परवाना जारी किया। और कहा कि इन्हें कैद से इज्जतो एहतेराम के साथ निकाल कर बाहर लाया जाये। गर्ज़ जब यूसुफ़ बादशाह के सामने लाये गये तो उसने उनको बगौर

देखा और बड़ी देर तक कुछ सोचता रहा। फिर उसने आपकी अकलमन्दी और दानिशमन्दी का अन्दाज़ा किया और कहा कि मैं आज से अपना मुकर्रब और अपना अमीन बनाता हूँ और इस बात का वायदा करता हूँ कि आप जो हुक्म देंगे उसकी तामील की जायेगी। क्या आपको यह पेशकश मंज़ूर है।

### हुकुमते मिस्र में हज़रते यूसुफ का मन्सब

हज़रते यूसुफ ने फरमाया कि अगर आप मुझ पर इस दरजे मेहरबान ही हैं और मेरी खिदमत की आप को ज़रूरत है तो इस मुल्क का शोब ए मालियात महारे हवाले कर दिजिए. क्योंकि मैं मुल्की खज़ानो की इस्लाही उमूर और हिसाबो किताब को बड़ी खुश उसलूबी और खूबसूरती से अन्जाम दे सकता हूँ। बादशाह ने यूसुफ की बात फौरन मान ली और मुल्की खज़ाने और उसकी जुम्ला इखतेयारात यूसुफ को सौंप दिये इस तरह आप मिस्र की हुकुमत मे सबसे पहले खज़ानों के अफ़सरे आला पर फायज़ हुए। और ओहदा सम्भालते हुए ही अपने कामों की अन्जाम देही में मस्रुफ हो गये। चुनान्चे सबसे पहले आप ने हुकुमत की आमदनी और खर्च पर तवज्जो फरमायी और एक ऐसा ज़ाबेता मुअय्यन किया जिस्से फ़ालतु अख़राजात का बोझ अज़ानो पर न पड़े। फिर आप ने टैक्सों और ज़जीयों को उसूली का एक कारगार निज़ाम और मन्सूबा मुरत्तब किया। जिसका नतीजा यह हुआ कि बहुत ही कम वक्फे मे तमाम खज़ाने दीरहम और दीनार से छलकने लगे। खज़ानों की

हालत जब इल्मीनान बख्श हो गयी तो आपने ज़ेराअत का शोबा भी अपने हाथ में ले लिया और माशीयात की तरफ मुतावज्जे हुए। आपकी कोशिशों और तदबीरों से जब पैदावार में नुमाया इज़ाफा होने लगा तो अनाज का ज़खीरा करने के लिए बड़ी बड़ी इमारते तामीर हुईं। और वसीय और अरीज़ गोदाम बनाये गये। जब यह सारा इन्तिज़ाम हो गया तो आप ने इस शर्त के साथ आम खरीदारी का ऐलान किया कि जो शख्स भी अपना फालतू गल्ला फ़रोख्त करना चाहे वह खोशों (बालियों) से दाना जुदा किये बग़ैर बाज़ारी भाव पर हूकुमत के हाथ फरोख्त कर सकता है।

इस तरह आप ने मुसलसल सात साल तक गल्ला इस्टाक किया। यहां तक की इतना ज़खीरा हो गया कि दस बरस तक मुल्क भर के लिए काफी हो सके। इसके चबाद जब क़हत साली के दौर का आगाज़ हुआ और बहरानी कैफियत पैदा हुई तो आपने जमा शुदा गल्ला बग़ैर मुनाफे के आवामं में फरोख्त करना शुरू किया।

लेकिन किसी भी शख्स को उसकी ज़रूरत से ज्यादा गल्ला नहीं दिया जाता था। महज़ इस गरज़ से कि कहीं मौका परस्त लोग उसकी तिजारत न करने लगे। चुनान्चे दूर दूर से लोग आते थे और मुखतलिफ आशिया के एवज़ गल्ला ले जाते थे। तारीखे बताती है. कि आप (यूसुफ) ने पहले साल दिरहम और दीनार के एवज़ लोगो को गल्ला फराहम किया। दुसरे साल ज़ेवरात वग़ैरह तीसरे साल जानवरों

और चौपाओं, चौथे साल गुलाम और कनीज़ो, पाँचवे साल घरों और असासुलबैत, छठे साल बाग़ो ज़मीनों और नहरों वगैरह के एवज़ ग़ल्ला दिया, सातवे साल जब लोगों के पास कुछ न रह गया तो उनकी जानों का मोल कर के ग़ल्ला दिया गया।

ग़र्ज़ कि पूरे मुल्क में कोई शख्स भी ऐसा नहीं रह गया जो किसी न किसी जाविये से आप का गुलाम न हो। इस तरह परवरदिगारे आलम ने आपके दामन से गुलामी का धब्बा मिटा कर पूरे मुल्क को आपका गुलाम बना दिया।

## भाईयों से मुलाक़ात

हज़रते यूसुफ़ के आबायी वतन पर भी क़हत का ज़बरदस्त असर पड़ा। वहां के लोग भी बुरी तरह मुताअस्सिर हुए। चुनांचे जब नौबत फ़ाके की आ गयी तो मजबूर हो कर याकूब ने भी जो यूसुफ़ के ग़म में रोते रोते नाबीना, कमजोर और जईफ़ हो गये थे अपने फरज़न्दों को ग़ल्ले की खरीदारी के लिए मिस्र रवाना किया। जब वह लोग वहां पहुंचे तो यूसुफ़ ने उन्हें पहचान लिया। मगर वह लोग उन्हें पहचानने से कासिर रहे। जनाबे यूसुफ़ ने अपने भाईयों से पूछा कि तुम लोग कौन हो और कहां से आये हो उन लोगों ने जवाब दिया कि हम लोग याकूब के फरज़न्द और वह इसहाक के बेटे और हज़रते इब्राहीम ख़हीउल्लाह के पोते हैं। पूछा तुम्हारे वालिदे बुजर्गवार क्यों नहीं आये हैं। कहा वह इन्तेहायी जईफ़ और कमजोर

हैं। इसके अलावा आखों की बीनायी से भी महरूम हैं। फिर आप ने दरियाफ़ किया कि तुम्हारा कोई भाई और भी है। कहाँ हां, एक सौतेला भाई और भी है। यह सुनकर आप नै फ़रमाया कि आइंदा जब तुम लोग आना तो अपने साथ उसको लेकर आना। वरना यह समझ लेना कि तुन्हारे लिए मेरे पास कुछ न होगा।

इसके बाद आपने भाईयों को इनकी ज़रूरत के मुताबिक़ ग़ल्ला दिया और उसकी जो कीमत उनसे उसूल हुई थी उसे भी नज़रें बचाकर इन्हीं के बोरों में रख दिया और इज़्जत के साथ इन्हें रूख़स्त किया। जब वह लोग अपने घर पहुंचे और बोरियों को खोला गया तो ग़ल्ले के साथ उन्हें उनकी अदा कर्दा कीमत वापस मिल गयी। ज़ाहिर है कि इस हुस्ने सुलूक पर इनकी ख़शियों का क्या आलम रहा होगा। इन्होंने अपने वालिद जनाबे याक़ूब से सारा वाक़ेया बयान किया और इनके साथ ही अज़ीज़े मिस्र (यूसुफ़) के एख़लाख़ व एहसान और हुस्ने सुलूक का तज़केरा भी किया और यह भी कहा कि आइंदा अगर आप हमें ग़ल्ले के लिए फिर भेजिये तो हमारे साथ बनयामीन को ज़रूर रवाना करें।

वरना यह समझ लें कि वहां मायूसी के अलावा कुछ न मिलेगा। क्योंकि अज़ीज़े मिस्र का कहना है कि अगर तुम उस भाई को लेकर न आये तो तुम्हारे लिए हमारे पास कुछ भी न होगा। हज़रते याक़ूब ने फ़रमाया कि मैं तुम लोगों के



साथ बनयामीन को उस वक़्त तक नहीं भेजूंगा जब तक तुम लोग खुदा को हाज़िरो नाज़िर जानकर यह हलफ न उठाओगे कि इनको अपने साथ हर हालत में वापस भी लाओगे।

चूँकि एक बार यूसुफ़ के मामले में तुम्हारी तरफ से धोखा हो चुका है। तमाम भाईयों ने इस बात का अहद लिया और कस्में खायीं कि ख्वाह हमारी जानें ही क्यों न चली जायें लेकिन बनयामीन इन्शाअल्लाह हर हाल में वापस आयेंगी। गर्ज कि जब आया हुआ ग़ल्ला खत्म हुआ तो बहालते मजबूरी हज़रते याकूब ने अपने तमाम फ़रज़न्दों से एहदे पैमाना लेकर बनयामीन को उनके साथ मिस्र रवाना कर दिया और यह ताकीद फरमा दी कि सब भाई एक ही दरवाजे से उस शहर में दाखिल न होना वरना नज़र लगने का अन्देशा है।

जब फ़रज़न्दाने याकूब बुनयामीन को साथ लेकर मिस्र पहुंचे और अलग अलग दरवाजे से शहर में दाखिल होकर हज़रते यूसुफ़ की खिदमत में हाज़ीर हुए तो बनयामीन को देखकर आपकी खुशियों का ठिकाना न रहा फिर आपने बनयामीन के इस तर्ज अमल पर भी गौर किया कि वह अपने भाईयों से अलग थलग हैं। और एक जगह खामोशी से बैठे हुए हैं। तो आपने उन्हें अपने पास बुलाया और पूछा कि क्या यह लोग तुम्हारे भाई नहीं हैं जिनके साथ तुम यहां तक आये हो।

जवाब दिया कि यह हमारे भाई जरूर है मगर मैं खुद ही इन लोगों से अलहदा रहता हूँ।

इसका यह सबब है कि मेरा हक्रीकी भाई था जिसका नाम यूसुफ था। बचपन में उसे यह लोग एक दिन अपने साथ जंगल में ले गये फिर वह वहां से नहीं आया। इन लोगों का कहना था कि उन्हें भेड़ियों ने खा लिया था। इन लोगों की इस बात पर मेरे बाप को आज तक यकीन नहीं है। हालांकि वह इस ग़म में रोते रोते अन्धे हो चुके हैं। जबसे इनके साथ मैं किसी अम्र में शरीक नहीं होता। वालिद के हुक्म से मजबूर होकर फ़लिस्तीन से यहां तक आया हूँ। मगर खुदा गवाह है कि इस सफ़र में इनसे बुल्कुल अलग थलग रहा। यहां तक कि जहां यह लोग क्रयाम करते थे वहां से कुछ दूर हट कर क्रयाम करता था। और इस वक्त भी लग हूँ जैसा कि आप देख रहे हैं। बनियामीन की यह अलम अंगेज़ गुफ़तुगू सुनकर यूसुफ़ का दिल रंजों ग़म की गहराइयों में डूबने लगा। और आंखों से आंसू टपकने के लिए बेकरार होने लगे।

मगर आप ने सब्रो ज़स से काम लिया और आप ने मज़ीद गुफ़तुगू के लिए अपने भाईयों से फ़रमाया कि तुम लोग थीड़ी देर के लिए बाहर चले जाओ और अपने इस भाई को मेले पास छोड़ दो। मैं तन्हायी मैं इससे कुछ बातें करना

चाहता हूं। गर्ज वह लोग जब बाहर चले गये तो हज़रते यूसुफ बनयामीन को एक अलहदा कमरे में आये और उनसे लिपट कर बहुत रोये जब दिल कुछ काबू में आया तो आप ने फरमाया कि मैं ही तुम्हारा गुमशुदा भाई हूं। अब तुम्हे खुश होना चाहिए और खुदा का शुक्र अदा करना चाहिए कि उसने हमें एक दूसरे से मिला दिया है। लेकिन इस राज को अभी तुम किसी पर जाहिर न करना और मेरा इरादा यह है कि तुम्हे अपने पास ही रोक लूं फिर वालिद को भी बुलवा लूंगा।

लिहाजा तुम्हें रोकने के लिये मैं जो क़दम उठाऊं उससे तुम परेशान न होना। क्योंकि यहां के क़ानून के मुताबिक कोई किसी को बगैर माकूल वजब के बगैर किसी जुर्म के रोक नहीं सकता। इस बात चीत के बाद हज़रते यूसुफ बनयामीन से रूखसत हो गये और वह अपने भाईयों के पास फिर वापस आ गया। हज़रते यूसुफ ने इन्हें रोकने की यह तदबीर इखतेयार की कि जब वह अपने सब भाईयों को गल्ला देने लगे तो बनयामीन के गल्ले वाली बोरी में बादशाह का एक तेलायी प्याला चुपके से रख दिया औह जब सब लोग यूसुफ से रूखसत हो कर और गल्ले ले कर शहर से बाहर निकले तो इन्हें फिर वापस बुलवायां और एक-एक तलाशी करने के बाद वह प्याला बिनयामीन के बोरे से बरामद करके इन्हे रोग लिया।

हालांकि दीगर भाईयों ने सख्त एहतेजाज भी किया कि बनयामीन का रोकना उसूली हैसियत से ग़लत होगा। क्योंकि हम लोग चोर नहीं हैं इन्हें आप छोड़ दीजिये। चूंकि हमारे वालिद इन्तेहायी ज़ईफ़ और कमज़ोर और नाबीना है। अपने एक बेटे के ग़म में रोते रोते उनकी आंखें सफ़ेद हो चुकी है। इसके बाद से ही वह बनयामीन को बहुत ज्यादा चाहते हैं। इसी लिए वह इनकी जुदाई का सदमा बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे।

इसके अलावा हमारा इनसे वायदा भी है कि हम बनयामीन को हर कीमत पर अपने हमराह वापस लायेंगे। लिहाज़ा आप चाहें तो हममें से किसी को रोक लें और इन्हें जाने दें। भला यह क्यों कर हो सकता है कि जिसके पास से माल बरामद हुआ है और उसके एवज़ में किसी दूसरे को रोक लूं। गर्ज कि यूसुफ़ बुनयामीन को उनके हवाले करने पर किसी कीमत पर राज़ी न हुए तो बड़े भाई यहूदा ने अपने भाईयों से कहा कि मैं बग़ैर बनयामीन को अपने साथ लिये हरगिज वापिस नहीं जाऊंगा। तुम लोग जाओ और जाकर वालिद को इस सूरते हाल से आगाह करो। इसके बाद जैसा उनका हुक्म होगा उसी पर अमल करूंगा।

चुनान्चे वह लोग अपने वतन वापस आ गये। हज़रते याकूब से सारा वाक़ेया बयान किया। बलाआखिर जनाबें याकूब ने अज़ीज़े मिस्र के नाम एक ख़त लिखा

जिसका मजमून यह था कि ऐ अजीज इस अम्र में कोई शक नहीं कि हम खानवादये नबूवत के अफराद हमेशां रंजोआलाम में मुब्तेला रहते हैं। क्योंकि परवरदिगारे आलम हमारा इम्तेहान लिया करता है। इधर बीस बरस से ज़्यादा मुसीबतों का सामना है। पहली अजीम मुसीबत यह थी कि मेरे लखते जिगर यूसुफ को इनके भाई सुबह के वक़्त सैर व तफ़रीह के बहाने से जंगल की तरफ ले गये थे और शाम को रोते पीटते इनका खून आलूदा कुर्ता वापस लाये और मुझसे बयान किया कि एक भेड़िये ने इनको फाड़ खाया है।

यह सुनकर दुनिया मेरी नज़रों में सियाह हो गयी और मैं इसके फ़िराक में इस कद्र रोया कि बीनायी जाती रही। इसके बाद इनके छोटे भाई बिन यामीन से मेरा दिल बहलता था कि मिस्र से वापस आकर लड़कों ने बयान किया है कि इसने चोरी की है और अजीज ने उसे गिरफ़्तार कर लिया है। हालांकि हम अहलेबैते बबूवत चोरी नहीं करते। गर्ज तुमने इसे कैद कर लिया है। जिसके सबब मेरी मुसीबतों में और भी इज़ाफा हो गया है। मुझ पर रहम करो और इसे छोड़ दो। यह खत लेकर याकूब के बेटे फिर मिस्र की तरफ रवाना हुए और वहां पहुंचकर मकतूब यूसुफ के हवाले किया जिसे पढ़कर इन्हें ताबे ज़बत न रही तन्हायी में जाकर खूब रोये और तीन मरतबा ऐसे ही किया जब किसी सूरत से ज़ब्त न हो सका तो आख़िरकार इन्होंने अपने भाईयों पर सारी हकीकत वाज़ेह कर दी। और कहा कि

बनयामीन मेरा हकीकी भाई है। बेशख खुदा ने मुझ पर फज़लो करम किया है और वह नेकियां करने वालों का अज़्र बरबाद नहीं करता। अब आज की तारीख से तुम लोगों पर कोई इल्ज़ाम नहीं है खुदा तुम्हारे गुनाहों को माफ करे। और वही सबसे ज़्यादा रहीम है।

## बीनायी की वापसी और हिजरत

इसके बाद हज़रते यूसुफ़ ने अपना एक कुर्ता अपने भाई को दिया और कहा कि इसको ले जाओ। और बाप की आंखों से मस करो। इन्शाअल्लाह उनकी बीनायी वापस आ जायेगी। फिर तुम लोग उन्हें और अपने अहलो अयाल को लेकर अपने पास आ जाना। कहा जाता है कि यह वही कुर्ता था जो नमरूद की आग तक सफर के दौरान हज़रते इब्राहीम के जिस्म पर था। और यूसुफ़ को रूखसत करते वक्त हज़रते याकूब ने इस कुर्ते को उनके बाजू पर बांधा था। इसकी खसूसियत यह थी कि जब वह किसी बीमार के जिस्म से मस किया जाता तो उसका सारा मर्ज जाएल हो जाता था। बहर हाल ब्रादराने यूसुफ़ ने जब वह कुर्ता जनाबे याकूब की आंखों से मस किया तो उनकी आंखें रोशन और मुनव्वर हो गयीं। तो इन लोगों ने सारा मिस्र का हाल याकूब से बयान किया। और यूसुफ़ के मिलने की खुशखबरी के साथ-साथ अपने साबेकाना फेल का एतेराफ़ भी किया फिर चन्द दिनों के बाद यह खानवादा फिलिस्तीन से हिजरत कर के मिस्र की तरफ रवाना हुआ। और जब यह

सब लोग मिस्र के करीब पहुंचे तो हज़रते यूसुफ़ ने शहर से बाहर निकलकर अपने वालदैन का इस्तेक्रबाल किया। इज़्जत व एहतेराम के साथ इन्हें महल में लाये और वालदैन को अपने तख्त पर बिठाया।

## जुलैखा से हज़रते यूसुफ़ का निकाह

हज़रते यूसुफ़ मिस्र की हुकूमत में जिस वक़्त खज़ानो के सरबराह मुकरर हुए थे इस वक़्त आप की उम्र 33 साल की थी। जब आप 40 साल के हुए तो बादशाह ने आप के हुस्न ततबीर और फहमो फरासत को देखते हुए अपना ताज उतार कर आप के सर पर रख दिया। और सलतनत के जुम्ला उमूर को आपके सुपूर्द करके खुद दस्त बरदार हो गया। चुनांचे इस ज़माने कहत में आप की हैसियत एक ताज़दार की थी इसी साल जुलैखा के शौहर ततफीर का इन्तेकाल हो गया। और उसके इन्तेकाल के बाद ज़माने कहत में जुलैखा भी एक एक दाने को मोहताज हो गयी। यहा तक कि वह भीख मांगने लगी। उसका यह हाल देखकर लोगों ने उससे कहा कि यूसुफ़ के पास क्यों नहीं जाती। उसने कहा हयामाने है। इसलिए हिम्मत नहीं पड़ती।

मगर जब लोगों का इसरार ज़्यादा हुआ तो एक दिन वह सरे राह खड़ी हो गयी। और जब उधर से हज़रते यूसुफ़ की सवारी गुज़रने लगी तो इसकी ज़बान से

बेसाखता यह अलफाज़ निकले कि “पाको पाकिज़ा है वह खुदा कि जिसने बादशाहों को नाफरमानी की वजह से गुलाम बना दिया और गुलामों को फरमाबरदारी की वजह से बादशाहत अता कर दी।” जुलैखा की ये आवाज़ यूसुफ के कानों से टकरायी तो उन्होंने सवारी रोक दी। उन्होंने उसे पास बूला कर पूछा कि क्या तुम जुलैखा हो उसने कहा कि हां। पूछा कोई हाजत उसने कहा हां ऐ यूसुफ जब मैं बुढियां हो चुकी हूँ तो तुम्हे मेरी हाजत का ख्याल आया काश जवानी में तुम्हारे दिल मे मेरी तरफ से कोई ख्याल पैदा होता यह सुनकर हज़रते यूसुफ जुलैखा को अपने हमराह कसरे शाही मे लाये और वहां उससे पूछा कि क्या तुमने मेरे साथ नारवा सुलूक नही किये? और क्या मुझे गुनाहों की तरफ माएल करने की कोशिश नही की?

जुलैखा ने कहां हां- यकीनन तुम्हारी बातें हकीकत पर मब्नी है। मगर इसकी वजह और मजबूरी भी थी।

यूसुफ ने फरमाया – वजह और मजबूरी क्या थी?

जुलैखा ने कहां – अक्वल यह कि परवरदिगार ने तुम को ऐसा हसीन पैदा किया और न मिस्र मे मेरी तरह खुबसूरत औरत पैदा होती। दुसरा कि मेरा शौहर नामर्द था। तीसरे यह कि मुझे आपसे फितरी तौर पर इश्क था।



यूसुफ ने फरमाया-अगर तू पैगम्बरे आखरुज्जमा के जमाने में पैदा होती और उनका हुस्नों जमाल देखती तो खुदा जाने तेरी क्या हालत होती। खैर अब तेरा इरादा क्या है।

जुलैखा ने कहा- तुम बेशक बरगुजीदा और पाक हो। खुदा से दुआ करो कि वह मेरी जवानी वापस कर दे। इसलिए कि मैं अब भी तुमसे निकाह की खवाहीश मंद हूँ।

चुनांचे हजरते यूसुफ ने दुआ फरमायी और खुदा वन्दे आलम ने जुलैखा की जवानी पलटा दी और इसके साथ ही उसके हुस्न मे मज़ीद इज़ाफा भी कर दिया। और जब हजरते यूसुफ ने उससे अक़द किया तो वह बाकरा थी। जुलैखा के बदन से हजरते यूसुफ के दो बेटे मुंशा और अफराहम मुतावल्लिद हुए। अफराहम हजरते मूसा के वसी यूशा के दादा थे। और एक बेटी रहीमा पैदा हुई। जो हजरते अय्युब की जौजा थी।

## वफात और मदफन

हजरते यूसुफ की मज़मुयी उम्र 110 साल की हुई। आप 18 साल तक कैद में रहे। और 80 साल तक हुकूमत की। जबकि हजरते याकूब की मजमुई उम्र 147 साल की हुई और इन्तेकाल के बाद वह अपने दादा हजरते इब्राहीम के पास दफन

हुए। जनाबे यूसुफ अपने वालिद के इन्तेकाल के बाद 23 साल तक ज़िन्दा रहे।

इसके बाद जब आप का इन्तेकाल हुआ तो आप मिस्र में दफन हुए।

## हज़रते अय्यूब अ०

खुदा के मखसूस बन्दो की हालत भी अजीबो गरीब होती है। कभी इनका इम्तेहान राहत व खुशहाली और ऐश व आराम में मुब्तला करके इनकी आजमाइश की जाती है। हज़रते अय्यूब बिन मूस बिन ऐस बिन इस्हाक बिन इब्राहीम अ० का शूमार भी उन खास बन्दो में होता है। जिन्हें खुदा ने इम्तेहान की खातिर ऐशओं आराम के बाद मसाएब व अलाम की सखतियों से हम किनार किया।

आप की वालिदा हज़रते लूत की साहबज़ादी थी जिनके साये शफ़क्कत से आप बचपन में ही महरूम हो गये थे। आप की ज़ौजा का नाम रहीमा था। जो जुलैखा के बदन से हज़रते यूसुफ़ की बेटी थी। बाज़ मोअर्रखीन ने आप की ज़ौजा का नाम ज़ेबा बिनते याकूब तहरीर किया है। और बाज़ में रहीमा को इब्राहीम बिन यूसुफ़ को दुखतर करार दिया है। जो मेरे नज़दीक ग़लत है।

हज़रते अय्यूब ऐसे शुक्र गुज़ार बन्दे थे कि ख़ल्लाके आलम में इनके दामाने तशक्कुर को मुखतलिफ़ किस्मों की नेअमतों मालो मता और दौलत सरवत नीज़ कसरते औलाद से भर दिया था। चुनान्चे मोअर्रखीन ने आप के बेटों की तादाद 25 बतायी है। मेहमान नवाज़ी तुरैइम्तियाज़ और इबादत और इताअत आपका शेआर थी। नीज़ इबादत और रियाज़त के लिए आप हमेशां ऐसा रास्ता इखतेयार करते थे जिसमें मेहनत और मशक्कत ज्यादा हो। आप के 80 बरस इन्तेहायी कुनून और

इतमिनान और असूदा हाली में गुजरे इसके बादज जो इन्तेहान का सिलसिला शुरू हुआ तो, तमाम औलादें मर गयीं, दोलत तबाह हो गयी, जानवर हलाक हो गये, खेतियां बरबाद हो गयी, फाकों पर फाके होने लगे और खुद तरंह - 2 की बीमारियों के शिकार हो गये। फिर वह मंज़िल भी आयी कि तमाम लोगों ने हज़रते अय्यूब को उनकी बीमारी की बिना पर छोड़ दिया। कोई न था जो उनका साथ देता उन मुसीबतों आलाम यास और नामुरादजी के आलम में खुदा की ज़ात के अलावा बस एक ज़ात आप की बीबी रहीमा की थी जो शबो रोज़ आप की देखभाल और आपकी तीमारदारी के फराएज़ अन्जाम देही में हमानत मसरूफ़ रहती थीं।

वह आप की खिदमत भी करती थीं और मज़दूरी करके हज़रते अय्यूब के खाने पीने का समान भी फराहम करती थीं। जब सात साल यूं ही गुजर गये तो एक दिन शैतान ने रहीमा से कहा कि तुम एक आला खानदान की औरत होकर इतनी मेहनत और मशक्कत करती हो। आखिरकार इसका सिला क्या है जबकि अय्यूब खुद सख्त तरीन बलाओं और शदीद तरीन मूजी मर्ज का शिकार हैं। आप ने जवाब दिया कि यह सब कुछ अल्लाह की तरफ़ से हैं।

उसी ने हमें नेअमर्तें अता की इज़्जत बख़शी माल व मता और कसरते औलाद से सरफराज़ किया और अब वही हमारा इम्तेहान ले रहा है। और हम बहर हाल

उसका शुक करते हैं। शैतान ने कहा यह तुम्हारी गलत फहमी है। इसकी कोई वजह और भी हो सकती है। यह कह कर शैतान ने जौजए अय्यूब के दिल में एक वस्वसा पैदा कर दिया। और शकूक व शुबाहात के दरवाजों को खोल दिया। रहीमा जब अपने शौहर के पास आयीं तो सारा वाक़ेया बयान किया। हज़रते अय्यूब ने फरमाया कि वह शैतान है जो तुम्हें खुदा की राह से बरगशता करना चाहता है। और हमें इम्तेहान में नाकाम करने की कोशिश कर रहा है। आशिरकार तुमने उसकी बातों पर तवज्जों ही क्यों की। याद रखो कि अगर मैं ठीक हो गया तो इस जुर्म की पादाश में तुम्हें सौ कमजियां मारूंगा कि तुमने ऐसे मलउन शख्स से मेरे इस इम्तेहान के बारे में गुफतुगू क्यों की जो खुदा की तरफ से हमें बरगशता करना चाहता है।

आखिर कार शैतान के वरगलाने और बहकाने से जब लोगों ने जनाबे अय्यूब को ताना देना शुरू किया और यह कहने लगे कि तुमने कोई पोशीदा गुनाह ज़रूर किया है। जिसकी सज़ा खुदा तुम्हें दे रहा है। और शैतान ने कहा कि तुम्हारा मर्ज इतना तुलानी हो गया है। मगर तुम्हारा खुदा तुम पर कोई रहम नहीं करता। तो आप का पैमानए सब्र छलक उठा। ज़ल्तो तहम्मूल की ताब न रही चुनान्चे आपने बारगाहे इलाही में दुआ की और फरमाया पालने वाले तू देख रहा कि मेरे उम्मती मुझे ताने दे रहे हैं और मुझ पर गुनाहों की तोहमत आयद कर रहे हैं। इसके

अलावा शैतान भी तरह तरह की अजीयते पहुंचा रहा है। तू बड़ा रहीम और करीम है। अब मुझे मसायबो आलाम से निजात दे।

चुनान्चे हुकम हुआ कि ऐ अय्यूब ज़मीन पर एक ठोकर मारो। गर्ज ठोकर का मारना था कि ज़मीन का सीना शक हुआ और उससे आबे शीरी व सर्द का एक चश्मा बरामद हुआ। जिससे आपने गुस्ल किया और पानी को पिया जिससे आप की तमाम तकलीफे दूर हो गयीं और परवरदिगार की रहमत ने आपको एक सेहतमंद इन्सान बना दिया। और इसके बाद खुदा ने पहले आपको जितनी नेअमत, दौलत और औलादें अता की थीं उससे ज़्यादा दोबारा अता कर दीं। फिर खुदा ने बीबी रहीमा के मामले में अय्यूब को अपनी कसम पूरी करने का तरीका यह बताया कि इन्हें सौ क़चियां मारने के बजाये सौ क़मचियों का एक मुट्ठा बनाकर सिर्फ एक बार मार दो। मोअर्रेखीन ने हज़रते अय्यूब के वाक़ेयात में इनके जिस्म में कीड़ों का पड़ना भी तहरीर किया है। जिसे मेरा ज़हन कुबूल नहीं करता। क्योंकि पैग़म्बरों में ऐसी कोई बीमारी नहीं होती जो लोगों के लिए सबबे कराहत बने।

मोअर्रेखीन ने हज़रते अय्यूब की उम्र 63 साल की बतायी है। इन्तेकाल से क़ब्ल 62 साल में आप ने अपने वसी व जानशीन मोहल को मुकरर फरमाया।

## हज़रते जुलकफल अ०

आप हज़रते अय्यूब के साहब जादे थे आपका नाम बशर और लक़ब जुलकफल था। आप अपने वालिद अय्यूब के बाद मन्सबे पैगम्बरी पर फायज हुए बहैसियते नबी लोगों को दीने हक़ और तौहीद का दर्स देते रहें आप चूँकि अज़इबतेदा ता इन्तेहा शाम में ही सुकूनत पज़ीर रहे। इसलिए 75 साल की उम्र में वही आप का इन्तेक़ाल भी हुआ। आपने अपना वसी अपेन फरज़ंद अब्दान को बनाया था।

## हज़रते शुऐब अ०

आप हज़रते इब्राहीम के फरज़ंद मदीन के बेटे मिनकाएल के साहबजादे थे। इस तरंह हज़रते इब्राहीम आपके पर दादा हुए। लेकिन बाज़ मोअर्रेखीन का खयाल है कि आप हज़रते इब्राहीम की औलाद में नहीं थे। बल्कि उन लोगों में से किसी शख्स की औलाद में से थे कि जो आप पर ईमान लाने के बाद उनके साथ हिजरत करके आए थे शाम में सुकूनित पज़ीर हो गए थे।

मदीना एक बस्ती का नाम भी था जो परज़न्दे इब्राहीम (मदीना) के नाम से मौसूफ थी। इस बस्ती में 40 घर थे। इन लोगों की हिदायत भी आप ही से मुताल्लिक थी। मदीन के लोगों में मिनजुम्ला और बुरी आदतों के दो तीन बातें

बहुत ही खराब थी। जिनमें हर शख्स मुब्तला था। अक्वल यह लोग रहजनी और चोरी के खूगर थे। और जो मुसाफिर इनकी बस्तदी से गुजरता था उसे लूट लेते थे। दूसरे नाप तौल में ज़्यादा लेना और कम देना इनकी सरिशत में दाखिल था। तीसरी यहलोग मुखरिक थे।

चुनान्चे आपने नाप तौल के लिए पैमाना ईजाद किया और वज़न मुकर्रर किये। लोगों का शिक से रोकते रहे। और चोरी और रहजनी की मुखलेफ़त में आवाज़ बुलन्द करते रहे। नीज़ उन्हें नमाज़ की तरगीब देते रहे। मगर इन पर कोई असर न हुआ। वह कहते कि तुम्हारी नमाज़ हमारे बाप दादा के खुदाओं की परशतिश से हमें रोकती है। नाप तौल के बारे में उनका कहना था कि आप हमें रोकने वाले कौन होते हैं। हमारा माल हम जिस तरह चाहें खरीदें और फरोखत करें। अगर हमारे ज़्यादा दखलन्दाजी करोगे तो हम तुम्हें संगसार कर देंगे।

गर्ज कि जब अहले मदीन अपनी हद से गुजर गये और जनाब शुऐब की तमाम तर इस्ली कोशिशें नाकाम हो गयीं तो खुदा ने उन पर अजाब नाज़िल करने का फैसला किया और इन्हे इस क़द्र शदीद गर्मी में मुब्तला किया कि सरदाबों में भी उन्हें चैन मयस्सर न आ सका। इसके बाद एक खुशक और सर्द अब्र का टुकड़ा नमूदार हुआ जिसके नीचे राहत की तलवाश में तमाम लोग जमा हो गये। तो एक



सदा बुलन्द हुई जिससे ज़मीन लरज़ने लगी और उस अब्र के टुकड़े से ऐसी आग बरसी कि सब के सब हलाक हो गये।

हज़रते शुऐब का दिल मोहब्बते इलाही से इस क़द्र मामूर था कि आप अपने परवरदिगार के लिए शबो रोज़ गिरया किया करते थे। यहां तक कि आप की मुसलसल गिरये की वजह से तीन दफ़ा आप की बीनामी चली गयी। और तीनों बार खुदा वन्देआलम ने उन्हें नूर बख़शा। आपके मोजिज़ात में से यह भी था कि आप जब किसी पहाड़ पर चढ़ने का कस्द करते थे तो इस पहाड़ की चोटी सर निगूँ होकर ज़मीन से लग जाती थी। और आप आसानी से इस पर चढ़ जाते थे। बाज़ रवायतों से पता चलता है कि हज़रते मूसा का असा भी आप ही का अतिया था। और हज़रते मूसा के क़ब्ल आपके पास इससे मोजिज़ात ज़ाहिर हुआ करते थे। तारीखों से यह इन्केशफ़ भी होता है कि आपने अपनी बेटी सफ़ूरा का निकाह हज़रते मूसा से किया था। आपकी विलादत और वफ़ात के बारे में तारीखें ख़ामोश नज़र आती हैं।

## हज़रते मूसा बिन इमरान अ०

हज़रते मूसा बिन इमरान बिन लावी बिन याकूब अ०। हज़रते ईसा अ० से पन्द्रह सौ 75 बरस क़ब्ल और हज़रते यूसुफ़ से 400 बरस बाद मिस्र की

सरजमीन पर मुतावल्लद हुए। आप का कद लम्बा आंखें नीली दाढ़ी घनी और दराज़ जिस्म पर बाल ज्यादा और रंग गंदुमी था। आप का नाम कबती जुबान में मूं और सी से मुरक्कब है। मूं को पानी और सी का इस्तेमाल दरखत के मानी में होता है। वजहे तसमिया यह बयान की जाती है कि वह सन्दूक जिसमें बन्द करके मूसा दरियाये नील में डाले गये थे बहते बहते कस्रे फिरऔन के किनारे एक दरखत के नीचे आकर ठहरा था। इसलिए पानी और दरखत की निस्बत से आप का नाम मूसा हुआ।

आप की वालेदा के नाम में इखतेलाफ है। मोहक्केकीन व उलमा फाहिया नजीबा अबाहेसा एयारखा, बुजाइद और खाएस वगैरह तहरीर किया है। मगर इस नतीजे तक नहीं पहुंचे कि हकीकतन आप का अस्ल नाम क्या था। मगर इस अम्र में इखतेलाफ नही है कि आप एक पाक बाज़ और इबादत गुजार इस्राइली खातून थीं। बनी इस्राइल को हज़रते यूसुफ ने मिस्र में आबाद किया था। और यही क्रौम यूसुफ के बाद इखतेदार की मालिक बनी। मगर अपने गलत तौरों तरीकों की वजह से बहुत जल्द अपना वेकार खो बैठी। और हुक्मत पर कबतियों का कब्ज़ा हो गया। जिसका आखरी ताजदार वलीद बिन मसअद था। जो फिरऔन के नाम से मशहूर हुआ।

यह बनी इस्राइल के हक में बड़ा ज़ालिम व जाबिर बादशाह था। जब किसी इस्राइली को सज़ा देता तो इस को जंमीन पर चितलेटा कर उसके हाथों और पैरों में लोहे की मेंखें ठुकवा देता था। जिसकी ताब न लाकर वह हलाक हो जाता था। हज़रते मूसा अपने घर में सबसे छोटे थे। आपके हकीकी भाई हारून आप से तीन साल बड़े थे। और उनसे बड़ी एक बहन थी जिसका नाम मरियम था। वह खानवाद - ए - याक़ूब का कालिब बिन यूक़ना को ब्याही थीं। और ज़्यादातर अपने वालदैन के घर में रहीं थीं। फिरऔन ने एक शब ख़्वाब में देखा कि बैतुल मुक़द्दस की तरफ से एक आतिशी शोला उठा जिसने मिस्र के तमाम क़िबतियों के घरों को जला कर राख कर दिया। मगर बनी इस्राइल को कोई नुक़सान नहीं पहुंचाया। इस ख़्वाब की ताबीर मालूम की गयी तो नुजूमियों और काहिनों ने बताया कि बनी इस्राइल में एक बच्चा पैदा होने वाला है जो बड़ा होकर फिरऔनियत का तख़ता पलट देगा और पूरी सलतनत को तबाह और बरबाद कर देगा। उसी वक़्त से फिरऔन के मज़ालिम बनी इस्राइल पर और ज़यादा बढ गये। और वह उन्हें अपना हरीफ़ समझने लगा। उसने फरमान जारी किया और दाइयां मुकर्रर की कि बनी इस्राइल की कोई औरत अगर हामेला हो तो उसको हमल जांया कर दिया जाये। और जल्लादों को इस अम्र पर मामूर किया कि अगर किसी के घर में कोई बच्चा पैदा हो तो वह उसे क़त्ल कर दें।

चुनान्चे हज़ारों औरतों के हमल गिरा दिये गये। और लातादाद मासूम बच्चे माओं की गोदों में ज़बह कर दिये गये। इस शोरिश के ज़माने में मूसा पैदा हुए। और खुदा की शान की वह फिरऔन की ही गोद में पले बढे और जवान हुए। वाक़ये का इजमाल यह है कि जनाबे मुसा की विलादत के बाद मादरे मूसा को यह फिक्र दामनगीर हुई कि कहीं उनका बच्चा क़त्ल न कर दिया जाये। तो वह बेहद परेशान और मुजतरिब हुई। यहां तक कि खुदा वंदेआलम ने बज़रियए वही उन्हें मुत्तला किया कि तुम कोई खोफ़ न करो और इस बच्चे को सन्दूक में बन्द कर के दरिया में डाल दो। हम इसके मुहाफ़िज़ हैं। और इसे फिर तुम्हारे पास पहुंचा देंगे। और इसे अपना रसूल बनायेंगे। (कुरआने मजीद सू० अलक़सस आयत 7) इस हुक्म में इलाही के बाद मादरे मूसा को तरद्दुद पैदा हुआ कि सन्दूक कहां से महैया किया जाये।

चुनान्चे वह हिज़क़ील बिन सबूर के पास गयीं जो फिरऔन का चचा ज़ाद भाई था और नज्जारी का काम करता था। उससे आपने पांच बालिशका एक लकड़ी का संदूक बनवाया मगर उसके इसरार पर आपने अपनी गरज़ भी बयान कर दी। लिहाज़ा हिज़क़ील इस इरादे से फिरऔन के दरबार में गये कि वह उससे यह वाक़या बयान कर दें। मगर खुदा ने उन्हें गोयायी से महरूम कर दिया। और वह इशारों के जरिये फिरऔन को अपनी बात समझा नहीं सके। और जब वह वहां से

वापस अपनी दुकान पर आये तो उनकी ज़बान फिर बहुक्में खुदा खुल गयी। फिर उन्होंने चाहा कि इस राज को तशत अज़बाम कर दें। तो ज़बान फिर बन्द हो गयी। इस बार इनकी आंखों से बीनायी भी रूखस्त हो गयी तो वह बहुत घबराये और खुदा की बारगाह में तौबा की तो उन्हें गोयायी और बीनायी फिर वापस मिली।

इसके बाद आप मूसा पर ईमान ले आये। और मोमिने आले फिरऔन कहलाये। जिसका ज़िक्र कुरआन में मौजूद है। इस सिलसिले में एक रवायत यह भी है कि वह सन्दूक जिबरइले अमीन मादरे मूसा की खिदमत में लेकर हाज़िर हुए थे। बहरहाल जब रात हुई और तमाम शहर पर तारीकी मोहित हो गयी तो मादरे मूसा ने अपने दिल पर पत्थर रख कर मूसा को सन्दूक में बन्द किया और सब्रो सूकुन की छाओं में दरिया के हवाले कर के तड़पती ममता के साथ घर वापस आ गयी। सूबह के वक्त आसिया ज़ने फिरऔन अपने कुछ कनीज़ों के साथ जब दरियाये नील के कनारे सैर के लिये निकली तो उसने देखा कि एक सन्दूक पानी की सतह पर तैर रहा है। जिसे हवा के नर्म व लतीफ झोंके आहिस्ता - 2 उसकी तरफ बढ़ रहे हैं वह खड़ी हुई इसके कनारे पर बैचैनी से इन्तिज़ार करने लगी। रफता रफता करके सन्दूक एक दरखत के निचे ठहरा जहां पानी बहुत ही कम था।

आसिया ने अपनी कनीजों को हुक्म दिया कि इसे बाहर निकालो चुनान्चे जब वह संदूक बाहर निकाल कर खोला गया उसने देखा कि सन्दूक के अन्दर एक इन्तेहायी हसीन व जमील व खूबसूरत बच्चा आराम से लेटा हुआ है। अपने दाहिने हाथ का अंगूठा चूस रहा है। खुदा की कुदरत की बच्चे को देखते ही इसके दिल में मोहब्बत का एक तुफान करवटें लेने लगा। चूंकि इसका दामन मुराद नेअमते औलाद से खाली था। इसलिए बेइखतेयार होकर उसने मूसा को गोद में उठा लिया और प्यार करने लगी। फिर वह उन्हें अपने सीने से लगाये हुए अपने महल में आई और फिरऔन से सारा वाक़ेया बयान किया और कहा कि अगर आप इजाज़त दें तो हम इसे पाल ले और अपनी औलाद बना लें। क्योंकि खुदा ने हमें तमाम नेअमते दी हैं मगर हम औलाद की नेअमत से महरूम हैं। फिरऔन बच्चे को क़त्ल करना चाहता था। और आसिया की बातों से मुतफ़िक् न था मगर मशीयते ऐज़दी मूसा की आइ में उसकी तबाही और बरबादी का तमाशा देखना चाहती थी। इसलिए आसिया ने खुशामद दरामद करके आख़िरकार उसे रज़ामंद कर लिया।

## दाईयों की तलाश

फिरऔन का राज़ी होना था कि यह खबर दूर-दूर तक फैल गयी कि आसिया को दरियाये नील से एक खूबसूरत बच्चा मिला है जिसे फिरऔन ने अपनी फरज़ंदी में ले लिया है। और अब इसे दूध पिलाने वाली एक दाया की तलाश है। यह खबर

सुनकर बहुत सी औरतें आर्यीं और लार्यीं गर्यीं। मगर जनाबे मूसा ने किसी की तरफ रूख भी न किया। यह बात जब मादरे मूसा को मालूम हुई तो उन्होंने समझ लिया कि उनका बच्चा फिरऔन के महल में पहुंच गया है।

लिहाजा मामता से मजबूर होकर अपनी बेटी का इस काम पर मामूर किया कि वह महल में जाकर वाक़ेया का पता लगाये और सही सूरते हाल से इन्हें मुत्तेला करे। मां के इस हुक्म पर वह क़सरे फिरऔन की तरफ रवाना हुई। और जब महल के करीब पहुंची तो उन्होंने देखा कि दूध पिलाने वाली कूछ पेशावर किबती औरतें ले जायी जा रही हैं।

चुनान्चे वह भी इन्हीं औरतों में दाखिल होकर अन्दर दाखिल हो गर्यीं। इस वक़्त मूसा आसिया की गोद में थे। पास ही फिरऔन भी खड़ा था। और औरतें बारी बारी बच्चे को दूध पिलाने की कोशिश में दिलों जान से मसरूफ़ थीं। मगर मूसा किसी की तरफ रूख नहीं कर रहे थे। थोड़ी देर में फिरऔन जब वहां से हट गया तो ख़्वाहरे मूसा ने आसिया से कहा कि तूझे मैं भी एक ख़ातून का पता बताऊं जिसका हसब व नसब व ख़ानदान बहुत ही अच्छा है। हो सकता है कि यह बच्चा इन्हीं की तरफ रूजू हो जाये। आसिया ने पूछा वह औरत किस क़बीले से ताअल्लूक रखती है। कहा बनी इस्राईल से।

आसिया ने कहा कि हमें किसी भी इस्राइली औरत की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि फिरऔन इस बात को कभी पसन्द नहीं करेगा। कि बनी इस्राइल की औरत इस बच्चे को अपना दूध पिलाये या इसकी परवरिश करे। कनीज़ों ने कहा कि जब बच्चा किसी का दूध नहीं पी रहा और इसकी जिन्दगी का सवाल है तो आप फिरऔन पर दबाव डालें और इससे कहे शायद यह बच्चा उसी का दूध पी ले। गर्ज कि जब कनीज़ों का इसरार हद से ज़्यादा बढ़ा तो आसिया फिरऔन के पास गयी और मादरे मूसा के बारे मुखतसर नसली तअररूफ़ के बाद उन्हें बुलाने की इजाज़त चाही। फिरऔन ने कहा अगर यह बच्चा भी बनी इस्राईल से हुआ तो हमारी तबाही और बरबादी का ज़िम्मेदार कौन होगा। लिहाज़ा क़िबती औरत तलाश करो। ताकि उसका दूध इस बच्चे खून में शामिल होकर इसकी इस्राइलियत और हमारी ख़्वाब की ताबीर को बदल दे। आसिया ने कहा जब इसकी नशोनुमां परवरिश और तरबियत हमारी निगरानी में आप के ज़ेरे साया होगी। तो यह खुदबखुद क़बती हो जायेगा। हमें डर व खौफ़ किस बात का।

मुखतसर यह कि थोड़ी सी बहसो मुबाहेसे के बाद आसिया ने बिल आख़िर फिरऔन को राज़ी कर लिया और मादरे मूसा तलब फ़रमायी गर्यीं। वह आर्यीं और जैसे ही अपना दूध मूसा की तरफ बढ़ाया तो उन्होने हुमक कर अपने दहन में ले



लिया। और पीने लगे फिरऔन के महल में खुशी की एक लहर दौड़ गयी। और आसियाओ फिरऔन का दामन मसरत तहनियतओ मुबारकबाद के फूलों से भर गया। इसके बाद फ़रऔन ने मादरे मूसा को दूध पिलाने के ले मुलाज़िम रख लिया। और उनकी तनख्वाह मुकर्रर कर दी। इस तरह खुदा ने वादे के मुताबिक़ उसका बच्चा उसको वापस कर दिया। और बाज़ाब्ता जनाबे मूसा की परवरिश होने लगीं।

## फिरऔन की दाढ़ी

जनाबे मूसा अभी डेढ़ बरस के थे कि एक दिन फिरऔन ने इन्हें गोद में उठा कर चाहा कि प्यार करें। अचानक आपने उसकी दाढ़ी पकड़ कर और जोरदार झटका दिया कि मुट्ठी भर बाल जड़ से उखड़ कर आप के हाथ में रह गये। और वह बदबखत तक़रीबन अपनी चौथाई दाढ़ी से महरूम हो गया।

बेशक फिरऔन के खिलाफ़ जनाबे मूसा का यह पहला ताज़ीरी कारनामा था। जिसने उसकी फिरऔनियत को चक्कर में डाल दिया। और वह बड़ी संजीदगी से यह सोचने पर मजबूर हो गया कि कहीं यह बच्चा वहीं तो नहीं जिसके बारे में नज़ूमियों ने पेशिंगोइयां की है। यह खयाल पैदा होते ही इसके ग़ैज़ो ग़ज़ब की कोई इन्तेहा न रही। और उसने इरादा किया कि मूसा को फ़ौरी तौर पर क़त्ल कर दें। मगर आसिया फिर आड़े आर्यी उन्हाँने कहा यह नासमझ और नादान बच्चों की

फितरत हुआ करती है। कि जिस चिज़ पर फौरन हाथ डाल देते हैं। और एक आप हैं कि अपनी मुट्ठी भर दाढ़ी के लिये मेरे बच्चे की जान लेना चाहते हैं यह कैसा इन्साफ है। फिरऔन ने कहा कि अगर तेरी नज़र में इसका यह फेल तिफलाना है तो मैं इसकी आजमाइश करूंगा। ताकि हकीकत वाज़ेह हो जाये। फिर इसके हुक्म के मुताबिक दो तबक इस नोअय्यत के तैयार किये गये। कि एक में दहकते हुए अंगारे थे और दूसरे में लालो जवाहीर।

इसके बाद यह दोनों तबक मूसा के सामने रख दिये गये और इन्हें आजमाइश के लिए छोड़ दिया गया। जनाबे मूसा के लिए यह एक बड़ा सख्त और इम्तेहानी मसला था कि एक तबक में आप की जीन्दगी थी और दूसरे में आप की मौत और इन दोनों के दरमियान फिरऔन तलवार लिये जल्लाद की तरह खड़ा था। अगर मूसा तिफलाना समझ को बरू ऐ कार ला कर लालो जवाहिर से भरे तबक की तरफ हाथ बढ़ा देते तो यकनन क़त्ल कर दिये जाते लिहाजा उन्होंने इस अक़ले सलील की बिना पर मिनजानिबिल्लाह रसूलों और पैगम्बरों को अता होती है। लालो जौहर की चमक दमक छोड़ कर अन्गारों का इन्तेखाब किया। आहिस्ता आहिस्ता आगे बढ़े और एक दहेक्ता हुआ अंगारा उठाया और मुंह में रख लिया फिर एक बार चीख मार कर रो भी दिए। ज़ाहिर है आप का मुंह भी जला होगा और

हाथ भी। लेकिन इसका नतीजा यह हुआ कि आप क़त्ल से बच गये। और फिरऔन का क़तिलाना इरादा हवा में उड़ गया।

## तब्लीग़ की इल्तेदा

तारीख़ों की छानबीन से यह बात वाज़ेह हो जाती है। कि हज़रते मूसा ने अपनी तब्लीग़ का आगाज़ अपने ही घर से शुरू किया। चुनान्चे जब सोलह बरस के हुए और आप ने अपने वालदैन के घर आने जाने में फिरऔन की तरफ से उन पर की पाबन्दी न रही तो उन्होंने सबसे पहले अपने ही खान्दान के अफ़राद को तौहीद का दर्स देना शुरू किया। रफ़ता रफ़ता यह सिलसिला और आगे बढ़ा और यहां तक पहुंचा कि बनी इस्राईल की दीगर मुक़तदिर हसतियां भी आपके दर से मुसतफीज़ होने लगीं। फिरऔन चूंकि अपनी खुदायी का दावेदार था। इसलिए इल्तेदा से ही आप उसके मुखलिफ़ थे और इस मुखालेफ़त में दरेपरदा आसिया ज़ने फिरऔन, हिज़क़ील और हारून भी आपेक हमखयाल और सहीम व शरीफ़ थे। जो फिरऔन के खौफ़ की वजह से हालते तक़य्या में अपनी जिन्दगियां गुज़ार रहे थे। मूसा के इन खयालात से फिरऔन भी बेखबर था। मगर जबयह खबरें आम हुईं और कुछ खुशआमदी लोगों ने उससे कहा कि जिसे आपने पाला है और वली अहद बनाया है वहीं आप का मुखालिफ़ है।

आप की खुदायी की नफ़ी करता और आप के खिलाफ लोगों को हमवार करता है। तो एक दिन फिरऔन ने मूसा को तलब किया और उनसे कहा कि मैं तुम्हारे मुताल्लिक वह बातें लोगों की ज़बान से सुन रहा हूँ जिन पर मुझे यक़ीन नहीं आता। यह बताओं कि क्या तुम मेरी खुदायी पर ईमान नहीं रखते।

मूसा ने जवाब दिया आप खुद ग़ौर फरमायें कि जब आप आम इन्सानों की तरह मजबूर व बेबस पैदा हुए हैं दूसरों के मरहूने मिन्नत आपकी यह ज़िन्दगी है तो फिर आप खुदायी का दावा किस बुनियाद पर करते हैं। दरहक़ीक़त खुदा तो वह है जिसने न सिर्फ़ आपको बल्कि तमाम आलमीन को खल्क किया जो हर जगह मौजूद है। मगर दिखायी नहीं देता जो ना बेबस है न मजबूर न वह किसी पर जुल्म करता है न किसी जालिम को पसन्द करता है।

आपका यह जाहो हशम यह एखतेदार यह इज्जत यह हुकूमत और यह महल और यह दौलतो सरवत सब उसी खुदा की बखसी हुई दौलत है तो फिर यह सरकशी, यह तकब्बुर और यह गुरूर क्यों। मैं आपको उसी खुदाए बरहक़ का वास्ता देता हूँ कि अपने गुनाहों की तौबा कीजिये और अपने को खुदा कहलवाना छोड़ दीजिये। मूसा की यह गुफ़्तुगू सुनकर फिरऔन दम बखुरदा रह गया। उसके होश हवास जाते रहे। और वह कुछ देर खामोश रहा फिर बोला अगर तुम्हारी जगह

और कोई मुझसे यह कलाम करता तो मैं इस वक़्त इसकी गर्दन उड़ा देता। क्योंकि मैंने तुम्हें औलाद की तरह पाला है लिहाज़ा इतनी मोहलत देता हूँ और अपनी जबान बन्द रखों और इस्लाह कर लो। वरना तुम्हें इसी जगंह क़त्ल कर डालूंगा। जहां तुम्हारी फरियाद का सुनने वाला कोई न होगा। इसके बाद मूसा के पास खामोशी के अलावा कोई चाराए कार न था।

लिहाज़ा आप चुप हो गये। क्योंकि अभी आप फिरऔन की हुकूमत और ताक़त से टकराने के क़ाबिल न थे। इसके अलावा आपने यह फैसला भी कर लिया कि अपने दीन व ईमान की सलामती के लिए फिलहाल इस शहर को छोड़ ही देना ज़्यादा मुनासिब होगा। चुनान्चे आप मौक़े की तलाश में रहने लगे और जब मौक़ा हाथ आया तो एक दिन खच्चर पर सवार होकर निकल पड़े।

## क्रिब्ती की मौत

शहर से बाहर निकल कर जनाबे मूसा ने कुछ फासला तय किया था कि इत्तेफ़ाक़न रास्ता भूल गये और चलते चलते रात की तारीकी में एक ऐसी जगंह पहुंचे जहां दो आदमी अपने अपने खुदाओं के बारे में झगड़ा कर रहे थे। इनमें एक इस्राईली था इसका कहना था कि खुदा वह है जो तमाम कायनात का ख़ालिक है। दूसरा शख्स क्रिब्ती था जो इस बात पर बाज़िद था कि फिरऔन खुदा है। मूसा भी

ठहर कर यह तमाशा देखने लगे। यहां तक कि दोनों के दरमियान मार पीट शुरू हो गयी। क्रिब्ती अपने इस्राइली हरीफ पर भारी पड़ रहा था। चुनान्चे इस पर गलबा हासिल करने के लिए इस्राइली शख्स ने मूसा से मद मांगी आपने उसकी हिमायत में क्रिब्ती के सीने पर एक घूंसा जड़ दिया जिसकी ताब न लाक वह चक्कर खाकर गिरा और मर गया।

दूसरे दिन आपने देखा कि वही इस्राइली एक दूसरे क्रिब्ती से झगड़ा कर रहा और आप से फिर इमदाद का तालिब है आप ने दोनों को छुड़ाने के लिए हाथ बढ़ाया ही था कि क्रिब्ती कहने लगा कि “ऐ मूसा जिस तरह तुमने एक आदमी को मार डाला है उसी तरह आज मुझे भी मार डालना चाहते हो। क्या तुम्हारा नज़रिया है कि दुनिया में मुसलेह बन कर रहने के बजाये सरकश बन कर रहो। अभी यह गुफगुतू हो ही रही थी कि मूसा ने देखा कि एक तरफ से हिजक्रील भागते हुए चले आ रहे हैं। और जब वह करीब पहुंचे तो उन्होंने मूसा से कहा कि क्रिब्ती की मौत की खबर फिरऔन को हो गयी है। और उसने शहर के तमाम बड़े आदमियों से मशविरे के बाद तुम्हें कत्ल कर देने का फैसला कर लिया है। नीज़ उसके गुमाशते तुम्हारी तलाश में सरगर्म अमल हो चुके हैं। लिहाज़ा जिस कद्र जल्द हो सके तुम यहां से निकल भागो।

## मूसा का मदीन में दाखिला और शादी

हिजकील के जरिये यह इत्तेला फराहम होते ही हजरते मूसा अ० मदीन की तरफ तेजी से रवाना हो गये। क्योंकि यह शहर फिरऔन की हुकूमत से बाहर था। दौराने सफर दीगर सउबतों के अलावा आपने आठ दिन तक मुसलसल फांके किये और दरखतों के पत्तों को अपनी जिन्दगी का वसीला करार दिया। किताबों मे मरकूम हैं कि फाकों से आप की यह हालत हो गयी थी की बदन का सारा गोश्त घुल कर खत्म हो गया था। सिर्फ हड्डिया रह गयी थी। और खाल इस कदर पतली हो गयी थी कि ऊपर से पत्तियों की सब्जी जाहिर होती थी। गर्ज कि आठवें दिन आप मदीन के एक कुएं पर पहुचे जो शहर से बाहर था।

वहां एक दरखत के नीचे लेट गये और कुछ देर आराम के बाद उठे तो आपने देखा कि कुएं के गिर्द एक भीड़ जमा है यह भीड़ चरवाहों की थी जो अपने अपने जानवरों को पानी पिला रहे थे। मगर इन्के पीछे दो लड़कियां भी खड़ी थी जिनके चेहरों से आशकार था कि वह किसी शरीफ और मोहज्जब घराने से तअल्लुक रखती है। जनाबे मुसा हमर्ददी के ख्याल से इन लड़कियों के पास गये और पुछा कि तुम क्यों खड़ी हो। उन्होने जवाब दिया कि जब सब चरवाहे अपने जानवरों को पानी पिला लेंगे तो हम भी अपनी बकरीयों को पिलायेंगे। इस भीड़ में हमारे लिये यह काम मुश्किल है।

चुनांचे जनाबे मूसा ने कुंए से पानी निकाला और उनकी बकरियों को सेराब कर के अपनी जगह पर आ कर बैठ गये। इस वक़्त आप पर भूख का सख्त तरीन ग़ल्बा था इसलिए आपने जानिबे आसमान देखा और फरमाया परवरदिगार तू मेरे लिये इस वक्त जिस नेअमत को मुनासिब समझ भेज दे। मैं इसका सख्त हाजत मंद हूँ। अभी आप की दुआ न तमात थी। कि इन लड़कियों में से एक लडकी पलट कर आप के पास वापस आयी और कहा कि मेरे साथ चलिए। आप को मेरे वालिद ने तलब किया है। ताकि वह बकरियों को पानी पिलाने की उजरत आपको अदा करे। मूसा ने पुछा कि उनका नाम व नसब क्या है। उस लडकी ने कहा शुएब नाम है और हज़रते इब्राहीम की नस्ल से ताअल्लूक रखते हैं। यह सुन कर हज़रते मूसा उनके पास तशरीफ लाये और फिर गुफ्तगू के दौरान अपना सारा हाल बयान फरमाया। शुएब ने फरमाया कि अब तुम कुछ अन्देशा न करो ज़ालिमों से तुम्हे नजात मिल चुकी है। फिर आपने इन बकरियों को पानी पिलाने के एवज़ मे कुछ देना चाहा मगर मूसा ने यह कह कर इनकार कर दिया कि मैं दुनिया के एवज़ में अपनी आखेरत नही बेचता जनाबे मूसा की यह दयानत दारी देखकर हज़रते शुएब की साहबज़ादी बोली बाबा जान आप इन्हे अपने यहां मुलाज़िम क्यों नही रख लेते। क्योकि सबसे बेहतर वह है कि जो अपने इरादों का पुख्ता और ईमानदार हो और इनमें यह दोनों बाते मौजूद है।



अपनी बेटी की इस तजवीज़ पर जनाबे शुएब खामोश हुए और बड़ी देर कुछ सोचते रहे और जब वह चली गयी तो आपने मूसा को मुखातिब कर के फरमाया मेरे ख्याल में मुलाज़ेमत तुम्हारे शयाने शान नहीं है। मैं यह चाहता हूँ कि पनी एक लडकी का निकाह तुम्हारे साथ इस मेहर के एवज़ मे कर दूँ। कि तुम आठ साल तक मेरे घर में रहो और मेरी बकरियों की देखभाल करो और अगर इस मुद्दत से ज्यादा यानी दस साल तक तुम्ने अपना काम अन्जाम दिया तो यह तुम्हारा मजीद एहसान होगा। वरना तुम्हे एखतियार होगा और इन्शाअल्लाह तुम मुझे नेकोकारों में पाओगे। मूसा ने कहा मुझे आपका हुक्म मन्ज़ुर है। मगर इसकी नोअय्यत सिर्फ मेरे और आपके माबैन सिर्फ मुआहेदे की होगी। और इसके बाद किसी जब्र या ज्यादती का हक आपको नही होगा। गर्ज़ कि इस मोआहदे की बुनियाद पर आपका निकाह जनाबे शुएब की छोटी बेटी सफूरा से हो गया। और वहीं रहने सहने भी लगे।

## असाए मूसा

कहा जाता है कि यह वह असा था कि जिसे हज़रते आदम अपने साथ जन्नत से लाये थे। और हज़रते इब्राहीम के बाद सिलसिला दर सिलसिला यह हज़रते शुएब तक पहुंचा था। इसकी खुसूसियत यह थी कि इसके एक तरफ़ दो शाखा था। जो हमेशा सर सब्जो शादाब रहता था। और अंधेरे में रोशनी का काम देता था।

यह असा जब दुश्मन पर हमलाआवर होता था तो एक मुहीब और खौफनाक अजदहा बन जाता था। इसकी जर्ब से पहाड़ टुकड़े - टुकड़े हो जाता था और दरियाओं का पानी खुशक हो जाता था। यह नाक्रा बनकर सवारी के काम भी आता था। और जिस जगह गाड़ दिया जाता था हरे भरे मेवेदार दरखत की शकल इखतेयार कर लेता था। एक दिन हज़रते मूसा ने जनाबे शुएब से कहा कि जब आपने बकरियां चराने का काम मेरे सुपुर्द किया है तो कोई लाठी भी दीजिए जो दरिन्दों जंगली जानवरों को दफा करने के काम में आये।

जनाबे शुएब ने अपनी बेटी से फरमाया फुंला असा उठा लाओ। और वह गयीं और एक असा लेकर वापस आयीं आपने फरमाया यह नहीं दूसरा असा लाओ वह बोली कि मैं क्या करूं बाबजान मैं जब दूसरा असा उठाने का क़स्द करती हूं तो यह असा खुद ब खुद उठ कर मेरे हाथ में आ जाता है। तो आपने फरमाया कि तो फिर इसी को दे दो। मालूम होता है कि मरज़िये इलाही यही है। और मूसा ही इस असा के मुसतहक़ है।

## हज़रते मूसा की मराजेअत

हज़रते मूसा को मदीन में रहते जब दस साल गुज़र गये और मुहेदा की मद्धत भी तमाम हो गयी तो एक दिन आपने जनाबे शुएब से अपनी वापसी की ख्वाहिस जाहिर की उन्होंने पूछा कि क्या सफ़रा को भी अपने साथ ले जाना चाहते हो।

आपने कहा हां इसके बाद जनाबे शुएब ने इन्तिज़ाम किया और मुखतलिफ़ साज़ों सामान के अलावा एक कनीज़ एक गुलाम कुछ बकरियां और कुछ ज़र नक़द देकर आपको रूखसत किया। मूसा मदीन से बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ रवाना हुए और जब काफी सफ़र तय हो गया तो रास्ते में अचानक सफ़ूरा के पेट में दर्द पैदा हुआ क्योंकि वह हामेला थीं। रात अंधेरी थी कुछ नज़र भी नहीं आता था। इसलिए मूसा थोड़ी दूर चलकर एक मक़ाम पर ठहर गये ज़रा देर के बाद आपने देखा कि एक तरफ़ कुछ फ़ासले पर आग़ रौशन है और शोले भड़क रहे हैं। ख़याल पैदा हुआ कि शायद यहां कोई आबादी है।

लिहाज़ा आपने सफ़ूरा से कहा कि मैं चाहता हूं कि तुम्हारे लिए थोड़ी सी आग़ ले आऊं और लोगों से रास्ता भी मालूम कर लूं। फिर आपने कनीज़ को सफ़ूरा के बारे में चन्द ताकीदें की और उस रूख़ पर रवाना हो गये जिधर आग़ जल रही थी। काफी राह पैमाई व जद्दो जेहद के बाद जब आप करीब पहुंचे तो एक सरसब्ज़ो शदाब दरख़त है जो चारों तरफ़ से आग़ से घिरा हुआ है मगर भड़कते हुए शोलों का इस पर कोई असर नहीं है। चुनान्चे जब आप इस दरख़त की तरफ़ आगे बढ़े तो वह पीछे खिसकने लगा यह करिशमा देखकर आप जब ख़ौफ़ से पीछे हटे तो वह आपकी तरफ़ आगे बढ़ने लगा। यहां तक कि आपके दिल में एक

मुकम्मल दहशत पैदा हो गयी। और आप वहां से भागने लगे तो इसी दरखत से आवाज़ आयी कि ऐ मूसा भागो नहीं तुम्हारा खुदा तुमसे कलाम करना चाहता है।

यह सुनकर मूसा ने अपने दिल को क़वी किया और ठहर कर फ़रमाया इसकी क्या दलील है कि यह आवाज़ मेरे खुदा ही की है। जवाब मिला कि अगर दलील चाहते हो तो तुम्हारे हाथ में जो असा है उसे ज़मीन पर डाल दो। तो आपने असा ज़मीन पर डाल दिया जो देखते ही देखते एक होलनाक अजदहा बन गया। उसकी लम्बाई दरखते खुरमै के बराबर थी और इसके मुंह से शोले निकलने लगे यह हाल देखर मूसा इस क़द्र खौफ़ जदा हो गए कि थरथराने लगे। फिर आवाज़ आयी कि ऐ मूसा डरो नहीं अब इस असे को उठा लो मूसा की हिम्मत जवाब दे चुकी थी। मगर अपना दिल मज़बूत करके उन्होंने अजदहे की दुम पर पांव रखा और इसे उठाना चाहा तो फिर वह असा बन गया। मूसा अभी आलमे हैरत में थे कि फिर आवाज़ आयी के ऐ मूसा तुम इस वक़्त वादिये मुक़द्दस में हो जिसका नाम तूर है। लिहाज़ा इसके तक़द्दुस का एहतेराम करो और अपनी नालैने उतार कर अपना दाहिना हाथ अपने गरेबान में डालो आपने गरेबान में डाला और जब बाहर निकाला तो वह इस क़द्र मुनव्वर था कि इसी शुआएं दूर दूर तक फैल गयीं। फिर थोड़ी देर बाद वह शुआएं तो ख़त्म हो गयी मगर मूसा की हतेली में सफेदी का वह निशान रह गया जिससे रोसनी निकल रही थी।

यही निशान यदे बैजा कहलाया। दरखत से फिर आवाज़ आयी कि ऐ मूसा हमने तुम्हें पैगम्बरी के साथ फिलहाल असा और यदे बैजा के मोजिजै दिये हैं। जो तुम्हारे लिए काफी है। अब तुम बेखौफ व खतर फिरऔन के दरबार में जाओ और कारे तबलीग अन्जाम दो इस पर मूसा ने कहा कि पालने वाले मेरे भाई हारून की जबान फसीतर है। लिहाजा तू इन्हे मेरा वज़ीर और मद्दगार बना दे ताकि वह कारे तबलीग में मेरा हाथ बटाए और मेरी नबूवत की तसदीक भी करें। हुक्म हुआ कि तुम फ़िक्र न करो हम तुम्हारे भाई को वज़ीर भी बनायेंगे और तुम्हें सलतनत व हुक्मत भी अता करेगे। हज़रते मूसा आग लेने गये थे और पैगम्बरी लेकर अपनी बीवी सफ़ूरा के पास वापस आये। सफ़ूरा के पास आये तो उन्होंने देखा कि वह एक खूबसूरत नवाज़ाएदा बच्चा गोद में लिये बैठी हैं।

फिर जनाबे मूसा ने सफ़ूरा से सारा वाक्या बयान किया। इन्हें तसल्ली दी और कहा कि मेरे लिये खुदा का हुक्म है कि मैं फिरऔन के दरबार में तबलीग की गरज़ से जाऊं लिहाजा ऐसी सूरत में मुनासिब होगा कि तुम यहीं से अपने बाप के घर वापस चली जाओ ताकि वहां सुकून और आलाम से रह सको मैं तुम्हारी खबर गीरी के लिए आता रहूंगा। और जब हालात साजगार हो जायेंगे तो मैं कुद तुम्हें अपने पास बुला लूंगा।

सफूरा ने आपकी इस बात से इत्तेफ़ाक किया चुनान्चे आपने इसी मक़ाम से इन्हें गुलाम व कनीज़ के हमराह में जुमला साज़ो सामान के मदीन की तरफ रवाना किया. और खुद मिस्र के लिए रवाना हो गये। और फिर सफूरा उस वक्त तक अपने बाप के पास मदीन में रहीं जब तक कि फिरऔन दरियाएं नील में ग़क न हो गया।

## कलीमउल्लाह

हज़रते मूसा से चूंकि खुदा ने कलाम किया था। इसलिए आपका लक़ब कलीमउल्लाह हुआ। यहूदियों और क़ब्तियों का शुमार आप ही की उम्मत में होता है। आप पर तौरैत नाज़ील हुई थी। (जिसका ज़िक्र आगे होगा) जो यहूदियों की मज़हबी किताब है। और आज तक वह लोग इसी को खुदा की किताब समझते हैं और हज़रते मूसा ही को अपना पैगम्बर मानते हैं। नीज़ हज़रते ईसा और हज़रते रसूले ख़ुदा स० व० नबूवत के मुन्किर हैं।

## हामान और कारून

यह फिरऔन का मोतमिद वज़ीर था औ इसकी खुदायी पर ईमान रखता था। मूसा से इसका अदावत व दुश्मनी शोहरए आफाक है। फिरऔन के हुक्म से एक पहाड़ पर इसने एक बुलन्द व बाला महल तैयार किया था। जिसकी ऊंचाई आसमान से बातें करती थी। कहा जाता है कि इस महल की तामीर में मजदूरों के अलावा 50 हजार मेअमारों ने हिस्सा लिया और कई साल में जब वह बन कर तैयार हुआ तो फिरऔन इसकी छत पर गया ताकि वह मूसा के खुदा को देख सके इसका खयाल था कि आसमान इसकी छतसे बहुत नज़दीक होगा। मगर जब वह हवां पहुंचा तो इसे आसमान वहां से इतना ही दूर मालूम हाआ कि जितना कि ज़मीन से था। वह बहुत नादिम हुआ और शर्म सारी व गैज़ की हालत में उसने मूसा के खुदा को पुकारना और ललकारना शुरू किया। जब जवाब न मिला तो इसने एक तीर आसमान की तरफ फेंका।

खुदा की कुदरत की वह जब तीर वापस होकर गिरा तो वह खून आलूदा था। जिसे देखकर वह खुशी से उछलने कुदने लगा और कहने लगा कि मैंने मूसा के खुदा को हलाक कर दिया। इस वाक्ये के दूसरे ही दिन ज़लज़ले के एक झटके ने इस महल को मिसमार कर दिया। और इसके गिरने से हजारों लोग मर गये।

## क्रारून

यह हज़रते मूसा का चचाज़ाद या खालाज़ाद भाई था। इल्में कीमिया से वाक्रिफ़ था इसलिए इसने इतनी दौलत जमा कर ली थी कि उसके खज़ानों की कुंजियां घोड़ों और खच्चरों पर बार की जाती थीं। यह हीरे जवाहेरात से मुरस्सा सुर्ख और सौख रंग के लिबास पहनता था। सफ़ेद घोड़े पर सवारी करता था। और जब अपने क्रस से निकलता था तो चार हज़ार सवार इसके अक्रब में तीन सौ गुलाम इसके दाहीनी तरफ ज़ेवरात व पुरतकल्लुफ लिबास से आरास्ता तीन सौ ख़ूबसूरत कनीज़ें बायीं तरफ चलती थीं। यह इन्तेहाई मगरूर व बखील था इसकी तबाही और बरबादी की वजह यह बयान की जाती है कि क्रिब्तियों की तबाही के बाद जब जनाबे मूसा ने हुकूमत जनाबे हारून के सिपुर्द कर दी और जब कोई कुरबानी करता तो इसका जानवर भी हारून के हाथ जीबह होता था। जिसे गैबी आग आकर उठा ले जाती थी।

इस पर क्रारून को हसद पैदा हुआ। और गुस्ताखाना मूसा से कहने का हुक्म ता वैसा ही मैंने किया उस वक्त से वह मूसा का सख्त दुश्मन हो गया। पने इसससे तौबा करने को कहा तो इसने आपका मज़ाक उड़ाया। जब ज़कात का हुक्म हुआ तो इसने कहा कि मैं नहीं दूंगा। हत्ता कि एक दीनार देने पर बी राजी न हुआ। और कहा कि मूसा हमें फ़कीर बनान चाहता है। एक दिन एक बदकार औरत को



अशरफ़ियां देकर इसने इससे कहा कि मजमए आम में मूसा पर तोहमत लगाये चुनान्चे दुसरे दिन जब वाज़ में हज़रते मूसा जिना की मज़म्मत कर रहे ते तो उसने कहा कि आप को बी लोग ऐसा ही जानते हैं। पिर इस औरत को उसने गवाहा में पेश करना चाहा। मगर खुदा की सान की इसको खौफ़ पैदा हुआ और इसने सच्चा वाकेया बयान कर दिया। और कारून की सरबेमोहर वह दोनों थैलियां दिखायीं। आखिरकार वह मजमए आम में ज़लील हुआ। इसकी इस हरकत पर जनाबे मूसा को जलाल आया चुनान्चै आपने बद्दुआ की खुदा का हुक्म हुआ कि ऐ मूसा मैं ज़मीन को तुम्हारे इख्तेयार में देता हूं। कारून के ले जो मनासिब समझो वह करो।

आपने फरमाया ऐ जंमीन इसे निगल जा कारूम में घरोबार और खजानों के घुटनों तक ज़मीन में धंस गया। तो उसने मान चाही तो आपने ज़मीन को पिर निगलने का हुक्म दिया तो वह कमप तक धंस गया। तीसरी बार जब हुक्म दिया तो वह अपनी दौलत समेत ज़मीन के अन्दर धंस गया कि सफ-ए-हस्ती से उसका नाम व निशान मिट गया।

## दरबारी मारके आराई

दस साल कबल हज़रते मूसा अपने वतन व घर से खाली हाथ निसले थे। मगर जब वापस आये तो पैगम्बरी की एक अज़ीम दौलत आके साथ थी। घर में दाखिल होते ही आपनै अपने वालदैन को अपने तमाम हालात और वाक़ेयात से आगाह किया और मदीन में हज़रते शुएब से मुलाक़ात और नीज़ अपनी शादी के बारे में बी तफ़सील से बताया। इसके बाद आपने दो दिन आराम किया और तीसरे दिन अपने भाई हारून को साथ लेकर फिरऔन व हामान की हिदायत को रवाना हुए।

दूसरी तरफ़ फिरऔन को हज़रते मूसा की तरफ़ लाहक़ था। इसलिए उसने दस बरस के वक़्फ़े में अपनी हिफ़ाज़त के खुसूसी इन्तज़ामात किये थे। और अपने पुराने महल को सात हिस्सों में तक़सीम करके हर हिस्से को एक हनी क़िला बना दिया था। इब्तेदायी और बैरूनी दोनों हिस्सों के दरमियान जो आमदो रफ़त का रास्ता था। इब्तेदायी और बैरूनी दोनों हिस्सों के दरमियान जो आमदो पफ़त का रास्ता था। इसे दोनों तरफ़ दहकते हे शेरों और गुराते हुए खूख़वार भेडियों के एक तूलानी आमाजगाह ती। जिसे चारों तरफ से लोहों के मज़बूत कटहरो से घेर दिया गया था। ताकि हंगामी हालात में इन दरिंदों से काम लिया जा सके।

वसती हिस्से में दरबार था जिसके दरमियान में फिरऔन और इसके वज़रा व मुहाफ़िज़ों के इल अस्सी हाथ ऊंची एक नशिस्तगाह बनायी गयी थी फिरऔन को अपने मुखबिरों के ज़िरिये जब यह मालूम हुआ कि मूसा अपने बी हारून के हमराह इसके महल की तरफ़ रवाना हो चुके हैं। तो इसने महल का सद्र दरवाज़ा

बन्द करवा दिया और शेरों और भेड़ियों को आज़ाद करा दिया ताकि वह लोग जैसे ही महल में दाखिल हो यह दरिंदे इनका काम तमाम कर दें।

गर्ज कि जनाबे मूसा और हारून जैसे ही बैरूनी गेट पर पहुंचे तो इसे बन्द पाया और कहने के बावजूद जब फिरऔन के सिपाहियों ने इसे खोलने से इन्कार कर दिया तो आपने इस पर अपना असा मारा। असा का पड़ना था कि दोनों पर खुल गयटे और आप बैखौफो खतर इसके अन्दर दाखिल हो गये। जब दरिंदों ने आपको देखा तो हमलाआवर होने के बजाये उन्होंने आप के कदमों में अपना सर झुका दिया और वह भी पके पीछे-पीछे दुम हिलाते हुए फिरऔन की तरफ चल पड़े आपने दूसरे दरवाज़े को भी असे की मद्द से खोला।

यहां तक कि आप ने सातवां दरवाज़ा खोला तो फिरऔन हमान और अपने दीगर साथियों के साथ आपके सामने खड़ा था। इसने जह यह हाल देखा कि मेरे दरिंदों ही मूसा के साथ हैं और वह ही मेरी तरफ खूंखार नज़रों से गूर रहे हैं तो वह डर के मारे भागने लगा। जनाबे मीसा ने फ़रमाया कि ब6गता क्यों है मेरी मरज़ी के बगैर तेरे यह दरिंदे तुझसे कोई ताअरुर्ज नहीं करेंगे। फिरऔन ने कहा मैं जीते जी अपने पोस्टमार्टम नहीं कराना चाहता लिहाज़ा तुम पहले इन दरिन्दों को यहां से दफ़ा करो फिर मेरे करीब आओ। मीसा ने अपने से से इन्हें इशारा किया और वह दरिंदे जब चले गये तो फिरऔन ने पूछा ऐ मैका अब तुम यहां क्यों आये

हो और तुम्हारा मकसद क्या है। आपने फरमाया खुदा ने मुझे नबूवत पर फाएज़ करके तुम लोगों की हिदायत पर मामूर किया है।

फिरऔन ने कहा तुम्हारे खुदा को तुम्हारे सिवा और की न मिला था। मूसा ने कहा अगर वह मेरे सिवाए किसी और को नबी बनाता तो तेरी तबाही और बरबादी का सबब कौन बनता। यह सुनकर फिरऔन को नुजूमियों की पेशिंगोई याद आ गयी और वह बदहवस हो गया। इसके आड़े तिरछे लहजे में नरमी पैदा हुई। इसने कहा-ऐ मूसा, तुम्हें पाला है तुम्हारी तरबियत की है क्या इसका सिला यही है कि तुम कुफ़राने नेअमत करो।

मूसा ने कहा मेरे कुदा का हुक्म है कि मैं तुम्हारे सर से फिरऔनियत के बूत को रफा करूं और तुम्हे राहे रास्त पर लाऊं। फिरऔन ने कहा अगर मेरे सिवा कोई दूसरा खुदा है तो इसकी निशावियां हमें बताओ और सुबूत दो। मूसा ने अपना असा ज़मीन पर डाल दिया जब यह एक हैबतनाक अजदहा बन गया। उसके मुंमह से झाग और शोले निकलने लगे। यह करिशमा देखकर फिरऔन का दम खुशक हो गया। और वह इस कद्र खौफ़ज़दा हुआ और कहने लगा कि ऐ मूसा तुम्हें इस दूध का वास्ता जो तुमने मेरे गर में पिया है इसको हटाओ। वरना मुझे निगल जायेगा। आपने असा उठा लिया और पिर अपने गरेबान में हाथ डाल कर बाहर निकाला यो यदैबैज़ा की तजल्ली से इसकी आंखें चकाचौंध हो गयीं। और इस कद्र मरऊब हुआ कि ईमान लाने के बारे में बड़ी संजीदगी से गौर करने लगा। और कुज़ जब ना था

कि वह ईमान ले आता। मगर पास ही हामान खड़ा था इसने कहा कि यह सब जादू है और तू इतना बड़ा नादान है कि अपनी खुदाई छोड़ कर एक बन्दे पर ईमान लाने को सोंच रहा है।

फिरऔन ने कहा कि अगर तेरे नजदीक यह जादू है तो अपने जादूगरों के जरिये से मूसा से मुकाबला कर। चुनान्चे हामान के सरबराही में मशहीर व मुमताज़ जादूगरों की एक जमाअत का इन्तेखाल अमल में आया। और मुकाबले की तारीख मुकर्र करके सारे शहर में इसका एलान कर दिया गया। मोअय्यन तारीख जब आयी तो सारा शहर उमंड पड़ा और फिरऔन का दरबरा तमाशाईयों से खचा खच भर गया। करतब दिकाने से पहले जादूगरों ने फिरऔन से कहा कि अगर हम मूसा गालिब आ गये तो हमें क्या इनाम मिलेगा।

फिरऔन ने कहा कि मैं हूकूमत में शरीक कर लूंगा। पर याद रखो कि अगर तुम हारे और मूसा तुम पर गालिब आये तो मैं ईमान कुबुल कर लूंगा और मेरे साथ तुम लोगों को भी ईमान लाना होगा। उन लोगों ने यह शर्त मान ली और फिरऔन की तरफ से हामान ने इन्हें मुकाबले की हरी झंडी दे दी। जादूगरों ने मूसा से पूछा कि इब्तेदा हम करेंगे या तुम करोगें। मूसी ने कहा कि मुझे जादू नहीं आता लिहाज़ा इब्तेदा तुम करो। मैं सिर्फ दफा करूंगा। गर्ज कि इब्तेदा यूं हुई कि जादूगरें ने कुछ रस्सियां और कुछ लाठियां मूसा की तरफ फेकी जो सांप बनकर इनकी तरफ बढ़ने लगीं। मूसा को खयाल पैदा हुआ कि अगर मैं अपना

असा छोड़ता हूं ते लोग मुझे भी इनकी तरह जादूगर न समझ बैठें और मेरी तरफ से गुमराह और बदजन न हो जायें। कि इतने में वही आयी कि ऐ मूसा घबराओ नहीं अपना असा ज़मीन पर डालो मैं तुम्हें इन पर ग़ालिब करूंगा।

चुनान्चे मूसा ने अपना असा ज़मीन पर डाला जिसने अजदहे की शकल इखतेयार करके जादूगरों की रस्सिया और लाठियों को निगल लिया। फिर क्या था जादूगरों में भगदड़ मच गयी और उसके साथ तमाशायी भी भागे नतीजा यह हुआ कि कितने लोग कुचल कर मर गयेछ। कितने लोगों ने खड़े खड़े पेशब कर दिया और कितनों के पाखान निकल गया। जिसकी वजह से उनके लिबास नजिस हो गये। तारीख बताती है कि इस मोजिज़नुमी और मारकाआराई के बाद तकरीबन 60 हजार अफ़राद मूसा पर ईमान लाये। एगर फिरऔन अपने क़ौल से मुकर गया। और जो लोग ईमान ला चुके थे। उनकी गिरफ्तारियां उसने शुरू कर दीं। उन्हें सख्त से सख्त सज़ायें देने लगा। यहां तक कि जब नका जीना दूभर हो गया तो उन लोगों ने फिरयाद व ज़ारी की और मूसा से इम्दाद के तालिब हुए मूसा का परवरदिगार फिरऔन के मज़ालिम से बेखबर नहीं था। लिहाज़ा इसकी तरफ से अज़ाब की इल्तेदा हुई। कि अचानक एक ऐसा सैलाब आया कि जिस की तुगयानी ने पूरे शहर को अपने लपेट में ले लिया।

फिरऔनियों (किबतियों) के मकानात ढेर हो गये। हज़ारों जाने चली गयीं। और जो लोग बाकी बचे वह शहर छोड़कर जंगलों और मैदानों की तरफ भाग खड़े हुए।

मगर यह कुदरते इलाही थी कि बनी इस्राइल के घरों में पानी का एक कतरा भी दाखिल न हुआ। मुखतसर यह कि चालीस दिन तक सैलान का पानी फिरऔन की फिरऔनियत को रिहा किया और न ही इनके जुल्म व तशद्दुद में की कमी वाक्रे हुई। तो खुदा ने इनकी कौम पर टिड्डियों को मुसल्लत किया जिसकगा नतीजा यह हुआ कि इनके तमाम ज़रातें तबाह हो गयीं।

दरख्तों और बागों का सफ़ाया हो गया। और जब कुछ न बचा तो टिड्डियों ने इसके मकानों के दरवाजों और खिडकियों पर धावा बोला। और इनकी लकड़ियों को खाना शुरू किया। जब इनका भी खात्मा हो गया तो खुदा की इस अजीब व गरीब मखलूक ने किबतियों के कपड़ों और लिबासों का सफ़ाया किया। यहां तक कि पूरी कौम को बरहेना कर दिया। फिर उनके जिस्मों से लिपट गयीं और उन्हें सर वगैरह के बालों से भी महरूम कर दिया। यह हाल देखकर फिरऔन ने मूसा से मन्नत और समाजित की और उसने कहा कि – ऐ मूसा तू अपने खुदा से कहकर इस बला से हमें निजात दिलादो तो हम तुम्हारी कौम (बनी इस्राइल) के तीस हज़ाल कदियों को रिहा कर देंगे। और खुद भी तकुम परइमान लायेंगे। मूसा ने रहम खाकर दूआ की और खुदा की कुदरते कामेला नै टिड्डियों का अज़ाब फिरऔनियों के सर से टाल दिया। लेकिन मतलबप निकल जाने के बाद। फिरऔन अपने दावे से फिर से मुकर गया। तीसरी मरतबा खुदा ने मूसा से फ़रमाया कि दवम अपना सा ज़मीन पर मारो असा का मारना था कि ज़मीन एक जगह से शक

हुई और इसके अंदर से जुओं का एक समुंदर उमंड पड़ा जो निहायत सुरअत व तेजी के बजाये हवा में उड़ती थीं। और जिस क़िबती पर हमलाआवर होती थीं उसका खून चूस लेती थीं जिस्म पर बड़े-2 आवले पड़ जाते थे। इसका सर गंजा हो जाता था। और भवें व पलकें साफ हो जाती थीं। इनकी कसरत का यह हाल था कि अगर वह की चीज़ खाने के कस्द करते तो इसमें भी बेशुमार जुऐ चलती फिरती नज़र आती और पानी पीते तो उनका प्याला जूओं से भर जाता था। इस अनोखे अज़ाब से तंग आकर पूरी क़ौम मौत के दहाने पर पहुंच गयी। तो फिरऔन ने फिर जनाबे मूसा का सहारा लिया और उन्हें यक़ीन दिया कि इस मरतबा हम लोग जरूर ईमान लायेंगे औरत कैदियों को भी आज़ाद कर देगे।

मगर शर्त यह है कि हमें इस अज़ाब से छुटकारा दे दो। चुनान्चे मूसा ने फिर दुआ फरमायी और जैसे ही फिरऔन को इस अज़ाब से छुटकारा मिला वह फिर अपने वायते से मुकर गया। बहर हाल फिरऔन की कुदाई का इक्रार करने वाली यह बदनसीब क़ौम तरंह तरंह के अज़ाब का शिकार होती रही। यहां तक कि उनकी खेतियां बरबाद हो गयीं, बागात तबाह हो गयी। उनकी दौलत संगरेज़ों में तब्दील हो गयी। इनकी औरतें और औलादें ताऊन वगैरा में मुब्लेला होकर मर गयीं। और वह राहे रास्त पर न आयीं। बहुत कम लोग से थे जो फिरऔन से मुनहरिफ होकर मूसा के हमनवां बन सके।



यही वह ज़माना था कि जनाबे हिज़क़ील मोमिने आले फिरऔन तक़य्ये को खैरबाद कहा और खुल कर जनाबे मूसा पर अपने ईमान का एलान किया जिसके नतीजे में फिरऔन ने उन्हें व उनके अहलो अयाल करो एक तन्दूर के अन्दर ज़िन्दा जलवा दिया। यही वह ज़माना था कि इसने अपनी ज़ौजा आसिया बिनते मज़हिमा को मूसा पर ईमान लाने के जुर्म में जलती ही ज़मीन पर बरहैना लिटा कर उनके हाथों और पैरों में लोहे की मेखें ठुक्वा दीं। जिसकी वजह से वह मोमिना दुनिया से चल बसी। यही वह ज़माना था जब बहुकमें खुदा बनी इस्राइल मिस्र

छोड़कर हज़रते मूसा की क़यादत में शाम की तरफ रवाना हुए।

## फिरऔन की गरक्राबी

बाज़ रवायतों से मालूम होता है कि मुसलसल अज़ाब की वजह से फिरऔन जब बहुत ज्यादा तंग व परोशान हा तो उसने बनीइस्राइल को कैद से रिहा कर दिया था। इसके बाद खुदा की तरफ़ से मूसा को यह हुक़म हा कि तुम रातों रात बनी इस्राइल को लेकर शाम की तरफ रवाना हो जाओ। चुनान्चे आप रवाना हे और सवेरा होते होते दिरयाये नील के किनारे पहुंचे।

दुसरी तरफ जब फिरऔन को यह ख़बर मालूम ही कि मूसा बनी इस्राइल को लेकर मिस्र से कहीं और जा रहे हैं तो इसने दस लाख और एक रवायत के

मुताबिक एक लाख साठ हजार का लखकर लेकर उनका पीछा किया ताकि रास्ते ही में वह तमाम लोगों को मौत के घाट उतार दे। गर्ज कि जब फिरौन और उसका लशकर करीब पहुंचा और बनी इस्राइल ने देखा तो वह बहुत ज्यादा खौफ़ज़दा और परेशान हे। चूंकि उनके सामने मौजें मारता हुआ वसी दरिया था जिसमें डूब जाने का खतरा था। पुश्त पर फिरौन का लशकर जिससै कत्ल हो जाने का अंदेशा था। यानि इनके आगे भी मौत थी और पीछे बी इस हालत में बहुत से लोग मूसा से बदज़न हुए और कहने लगे ऐ मूसा आज तुम्हारी वजह से हम लोग मारे गये। मूसा ने फरमाया कि घबराओ नहीं हमारा खुदा हमारी मदद जरूर करेगा। इतने में वही हुई कि ऐ मूसा तुम अपना असा दरिया पर मारो तो तुम्हारे वास्ते रास्ते खुल जायेंगे।

चुनान्चे असा के मारते ही दरियाये नील के बारह रास्ते इस तरह पैदा हुए कि इन रास्तों के दोनों तरफ पानी बुलंद होकर दीवार की तरह ठहर गया। और जनाबे मूसा की क्रयादत में बनीइस्राइल तेज़ी से इस पार से उस पार पहुंच गये। इतने में फिरौन बी मय लशकर के वहां पहुंच गया। और उसने दरिया में खड़ा होकर अपने लशकरियों को आवाज़ देने लगा खुदा का करिशमा देखिये कि जब बनी इस्राइल का आखिरी शख्स दरिया के उस पार गया और फिरौन की फ़ौज का आखिरी शख्स दरिया में दाखिल हो चुका तो पानी की सतह तेज़ी से बराबर और हमवार हो गयी। और फिरौन मय लशकर के गर्क हो गया।

कुरआन कहता है कि फिरऔन जब बने लगा तो उसने कहा कि जिस खुदा पर बनी इस्राइल ईमान लाये हैं उस पर मैं भी ईमान लाता हूँ बेशक उसके सिवा की माजूद नहीं हैं। और मैं (भी) उसके फरमा बरदार बन्दों में से (कुरआने मजीद सुरए यूनुस आयात 60-62)।

फिरऔन इससे कबल भी हज़रते मूसा से मान लाने के बारे में मुताअद्दि बार वादा खिलाफी कर चुका था और चूँकि वह तमाम उमर् नाफरमानियां और सरकशी करता रहा। इसलिए उसे आखिरी अज़ाब के मौक़े पर खुदा की तरफ़ से कोई छूट नहीं मिली और डूबते वक़्त जब वह आखिरी हिचकियां लेने लगा तो इरशादे बारी हुआ-

हम आज तेरी रूह के साथ कोई रियायत नहीं करेंगे। अलबत्ता तेरे जिस्म को दरिया में तह नशीन होने से बचायेंगे ताकि तू अपने बाद आने वालों के ले इबरत का नमूना बन सके।

मज़कूरा आयतों से यह भी वाज़ेह होता है कि अगर की शख्स तमाम उम्र खुदा और सके नबी की नाफरमानियों और ईज़ा रसानियों का मुरतकिब होता रहे। और फिर वह वक़्ते आखिर तौबा करे या मजबूरन अपने ईमान का मुज़ाहेरा करके फ़रमाबरदार बन्दों की फेहरिस्त में शामिल होना से कबल या उसके बाद बहालते मजबूरी या बरबिनाये मसलहत मुसलमान हुए और रसूले अकरम स० अ० पर ईमान लाये। मगर आले रसूल के साथ हमेशां दुश्मनी से पेश आये।

बहरहाल तारीख से पता चलता है कि फिरऔन का लशकर दरिया में इस तरह डूबा कि उनकी लाशें भी न उभर सकीं। मगर फिरऔन की लाख दरिया के मगरिबी किनारे पर जिसे जबले फिरऔन कहा जाता है। तैरती हुई बरामद की गयी। इस मक़ाम पर गर्म पानी का एक चस्मा भी है। जिसे वहां के मक़ामी लोग हम्मामे फिरऔन के नाम से जानते हैं। 1907 में माहेरीने आसारे क़दीमा को फिरऔन की मम्मी दस्तेयाब हुई थी। जो आज भी काहेरा के अजाएब खाने में रखी हुई है। कुरआन की हक़ानियत का एलान कर रही है।

## बनी इस्राइल और मन्नो व सलवा

दरियाये नीलं को उबूर करने के बाद बनीइस्राइल (जिनकी तादाद 6 हज़ार थी) हज़रते मूसा के साथ एक बे आब व गयाह मैदान में जब केयाम पज़ीर हुए तो खालिके कायनात ने इनके ले एक अब्र का टुकड़ा भेजा जो दिन की धूप में इन पर साया करता था और रात में इससे तुरन्जबीन बरसती थी। और जिसे दिन में यह लोग खाते थे फिर शाम के वक़्त बड़जाज़े इलाही भुने हुए तीतर और बटेरा हवा के ज़रिये आ जाते ते। जो रात के वक़्त ग़िज़ा का काम देते ते इसी को कुरआने मजीद में मन्नो व सलवा कहा गया है। पानी के लिये हज़रते मूसा ने एक पत्थर पर अपना असा मारा था जिससे आबे शीरी के बारह चश्में जारी हुए इसी को यह

लोग पीते थे। जब कुछ अरसा गुजर गया तो एक दिन इस्राइलियों ने मूसा से कहा कि एक तरह की गिजा खाते खाते हमारा दिल भर गया है।

लिहाजा तुम अपने खुदा से कहो कि वह हमारे लिये कुछ साग व सब्जी,सब्जी,सब्जी,सब्जी लहसुन प्याज करेले ककड़ी दाल रोटी का इन्तेजाम भी करे। मूसा ने फ़रमाया कि अगर तुम लोग कुदा की नेअमतों को ठुकरा कर अदना चीजों के ख्वाहिश मंद हो तो हमारे साथ फिलिश्तीन चल कर क़ौमे अमालेका से लडो जिसके ले परवरदिगार ने हुक्म दिया है कि वहां तुम्हारी मतलूबा चीजें तुम्हें मिल जायेंगी। यह सुन कर इन लोगों ने कहा कि क़ौमें अमालेका बड़ी जंगजूं,जंगजूं खूंखार ज़ालिम व जाबिर क़ौम है। इससे लड़ने के लिए हमारे पास हिम्मत व ताक़त नहीं है।

जनाबे मूसा ने इन्हें समझाया बुझाया और हमवार करने की बड़ी कोशिश कीं मगर इन्होंने कहा कि तुम खुद लडो हम यहीं रहेंगे और जब तुम इस क़ौम पर फतह और क़ाबू हासिल कर लगे तो हम भी आ जायेंगे। यूशा बिन नून और कालिब बिन यूहेन्ना भी जनाबे मूसा के हम राह थे। इन लोगों ने बहुत कुछ समझाया और हर तरह की तसल्लियां दीं मगर इन नमक हराम क़ौम ने यह कहकर साफ इन्कार कर दिया कि हम हरगिज़ हरगिज़ इस शहर में दाखिल नहीं होंगे जब तक बनी अमालेका के अफ़राद वहां मौजूद हैं। आखिरकार इनकी सरकशी

और हट धरमी से तंग कर जनाबे मूसा ने खूदा की बारगाह में यह दुआ की कि परवरदिगार हमें इन सरकशों से अलहदा कर दे।

इसके बाद हजरत, मूसा ने अपने भाई हारून यूश बिन नून कालिब बिन युहेन्ना और कुछ उन इस्राइलियों को जो आपके हमनवां थे साथ लिया। और फिलिस्तीन की तरफ जाने का इरादा कर लिया। इस्राइलियों ने जब यह देखा तो आपस में यह कहने लगे कि अगर मूसा हमारे दरमियान से चले तो हम पर खुदा का अज़ाब नाज़ल हो जायेगा। चुनान्चे सब एस जगह इकट्ठा हुए और हजरते मूसा के पास आये इन्होंने तौबा की और अपनी सरकशी की माफी मांगी मगर फिर भी इनके साथ जाने पर रज़ामंद न हे तो परवरदिगार ने जनाबे मूसा से फ़रमाया ऐ मूसा इन्हें इनके हाल पर छोड़ दो।

यह चालीस साल तक इसी बियाबान में सरगर्दा रहेंगे और किसी शहर में दाखिल न हो सकेंगे। गर्ज कि जनाबे मूसा ने वहां से जाने के बाद यह लोग रोज़आना शब को पना सामान बांधकर रवाना होते और सारी राद राह पैमायी के बाद सुबह के वक्त इसी मक़ाम पर फिर आ जाते जहां से चले थे। इसी तरंह चालीस बरस गुज़र गये। इनमें जो बच्चे ते वह जवान हो गये जो जवान थे वह बूढे हो गये जो बूढे थे वह मह गये।

## बाबे हत्ता की हक्रीकत

चालीस साल बाद हुक्में इलाही की बिना पर हज़रते मूसा ने अपने भाई और यूसा बिन नून को इन्हीं जंगल से शहर में लाने के लिए रवाना किया चूंकि जंगल में रहते रहते यह लोग बहुत ज़्यादा परेशान हो चुके थे। इसले फ़ौरन तैयार हो गये। और हारून व यूशा के हमराह शहर की तरफ चल पड़े रास्ते में इन्हें आरीहा नामी एक फ़सील बन्द आबादी से गुजरना था जिसकी मगरिबी दरवाज़ा बाबे हत्ता यानी बख़शिश का दरवाज़ा कहलाता है।

इसके बारे में जनाबे हारून ने बनी इस्राईल हो यह हिदायत कर दी थी कि जब वह वहां पहुंचे तो वह अदब वह एहतेराम से इस दरवाज़े को बोसा दें। इसके बाद अपनी ज़बान से हत्ता हत्ता कहते हे क़दम आगे बढ़ायें। इस अमल से परवरदिगार इनके गुनाहों को बख़श देगा। मगर यह लोग जब वहां पहुंचे तो उनका मज़ाख उड़ाया और हत्ता हत्ता कहने के बजायटे तमसखुराना मजाक में हन्ता हन्ता यानी गन्दूम गन्दुम की सदायें बलन्द करने लगे। मक़सद यह ता कि हम मन्नो व सलवा खाते खाते तंग आ चुके हैं लिहाज़ा अब हमें गेहूं की रोटियां चाहिए। इस इसतेहज़ा की सज़ा इन्हें यह मिली कि कुदा ने इनकी पूरी क़ौम पर ताउन को मुसल्लत कर दिया जिसने चौबीस हजार इस्राइलियों को मौत के घाट उतार दिया।

हज़रते

अमीरूल मोमेनीन अली इब्ने अबी तालीब अ० का कौल है कि उम्मतु मुसलमा में मेरी मिसाल सफीनए नूह बाबे हित्ता की सी है। यानी जिस तरह बाबे हत्ता बनी इस्राइल के गुनाहों की बखशिश का दरवाजा था। उसी तरह मेरे अहलेबैत मुसलमानों के लिए बखशिश और निजात का जरिया हैं।

## औज बिन औक्र

औज बिन औक्र को दुनिया का पहला अजूबा कहा जाये तो ग़लत न होगा। इस जीबुल खिलकत इन्सान का क़द तीन हज़ारह तीन सौ तीस गज़ था और एक रवायत के मुताबिक़ तीन लाख तीन हज़ारह सौ गज़ लम्बा था। इनके हाथ की उन्गलियां तीस-तीस गज़ की थीं। यह समन्दर की तह से मछलियांम पकड़ता था। बरसात के दिनों में बादलों से पानी चूस कर पीता था। कहा जाता है कि तूफाने नूह। का पानी जो पहाड़ों की बलंदियों से भी चार सौ गज़ उंचा था। सिर्फ़ इसकी पिंडली तक पानी पहुंचा था।

क़ौमे अमालेका से जंग के दौरान हज़रते मूसा ने बनी इस्राइल के बारह क़बीलों में से हर क़बीले के एक शख्स को उसका सरदार मुकरई करके यह ताकीद की थी कि हर क़बीला अपने सरदार के साथ क़ौमे अमालेका की तलाश में मुशतलिफ़ सिमतों की तरफ़ रवाना हो। और जहां इनसे मुठभेड़ हो जंग कर लें।



चुनांचे इसी तलाश व तजस्सुस के दरमियान एक कबीले से औज बिन औक का सामना हो गया इसने तमाम कबीले के लोगों को अपने दामन में रखकर कमर से बांध लिया और अपनी मां (औक) के पास लाकर डाल दिया और कहने लगा कि यह हमसे जंग करने आये थे। इनकी मां ने कहा कि इन्हें छोड़ दो ताकि यह लोग अबने शहर में जाकर हमारा हाल बयान करें। और यह सुनकर दूसरे लोग खौफ़ खायें। और जब यह लोग पलट कर हज़रते मूसा के पास आये तो उन्होंने सारा माजरा बयान किया जनाबे मूसा ने उन्हें जंग की तरगीब दी और खुद भी एक लखकर लेकर औज की तलाश में रवाना हुए।

औज ने जनाबे मूसा और उनके लशकर को दोखा तो पहाड़ का एक बहुत बड़ा तोदा था तो वह अपने सर पर उठा लिया ताकि वह एक साथ पूरे लशकर को तबाह करदें।मनगर कुदा की कुदरते कामेलला ने इस तोदा के दरमियानी हिस्से में एक छेद कर दिया जिसकी वजह से वह ज की गर्दन का तौक बन गया। और लाख कोशिश के बावजूद उसकी गर्दन से निकल न सका। यह कैफ़ियत देखकर जनाबे मूसा आगे बढ़े और तेजी से उछल कर इसके टखने पर एक ऐसा असा मारा कि वह गिर पड़ा इसका गिरना था कि बनी इस्राइल इस पर टूट पड़े और अपनी तलवारों से इसके टुकड़े कर दिये एक रवायत में है कि तीन हज़ार साल तक इसके पांव की हड्डी दरियाये नील पर पूल का काम देती रही (वअल्लाहो आलम)।

## तौरत का नुजूल

जब हज़रते मूसा की उम्र 80 साल की हुई तो परवरदिगार का हुक्म हुआ कि ऐ मूसा तुम अपनी क़ौम से अलग होकर एक माह के लै कोहे तूर पर खलवत इखतेयार करो तो हम तुम्हें ऐसी किताब देंगे जो तुम्हारे बाद बी तुम्हारी क़ौम की हिदायत करती रहे। चुनान्चे आपने अपने भाई हारून को अपना नायब बनाकर तूर पर तशरीफ ले गये।

मरज़िये इलाही से मोईना मुद्दत कुछ बढ़ गयी और एक माह के बजाये चालीस दिन हो गये तो वह बनी इस्राइल यह समझे कि मूसा हमें छोड़ कर कहीं भाग गये हैं। उन्होंने हारून की इताअत छोड़ दी और सामरी के बहकाने से एक बछड़े का मुजस्सेमा बनाकर उसकी परस्तिश करने लगे जनाबे हारून ने इन्हें लाथ समझाया और मना किया मगर इन लोगों ने एक न मानी जब हज़रते मूसा पलट कर आये तो अपनी क़ौम की यह हालत देखकर बेहद रंजीदा मलूल और नाराज़ हुए। बिल आखिर खुदा के हुक्म से आपने यह सज़ा तजवीज़ फरमायी कि वह सब मिलकर बाहम एक दूसरे को क़त्ल कर दें।

गर्ज़ बनी इस्राइल मजबूर हुए इन्होंने गुस्ल किये कफन पहने सहारा में गये और वहां दो जानू बैठकर अपनी खम कर दीं। बारह हज़ार आदमी जो साबित क़दम थे वह बरहैना तलवारें लिए इनके सरोकं पर आ धमके इसके बाद एक

सियाह घटा छा गयी ताकि तारीकी की वजह से अपनों और बेगानों का पता न चल सके। और रहम न आये गर्ज दोपहर से शाम तक कत्लेआम होता रहा। और हजार इस्राइली मौत के मुंह में चले गये। तब बाकी लोगों की खता माफ हुई इसके बाद जनाबे मूसा ने इनसे तौरैत पर अमल पैरा होने को कहा तो वह किताब की जखामत को देखकर घबराये और कहनै लगे कि हमसे इसका बोज तो उठ नहीं सकता है इतने अहकाम की तामील क्योकर मुमकिन है। खुदा ने इनकी 45 तम्बी के ले कोहेतूर का निस्फ हिस्सा इनके सरों पर मोअल्लक कर दिया कि मानते हो तो मानो वरना कुचल दिये जाओगे। तब जबरन व कहरन उन्होंने तौरैत को तस्लीम किया और इस पर अमल का वादा किया।

## गाये का क्रिस्सा

हजरते मूसा के जमाने में एक औरत बहुत ही खूबसूरत और हसीन थी इसके पास आफ़ील नामी एक शख्स ने जो बड़ा नेक व मालदार था। शादी का पैगाम भेदा आफ़ील के चचाज़ाद भाई ने बी पैगामाम दिया। इस औरत ने आफ़ील के पैगाम को मन्ज़ूर कर लिया और शादी हो गयी। रशद व हसद में फ़ील के भाई नै एक शब को सको कत्ल कर ला और इसकी लाश दूसरे मोहल्लै में एक मस्जिद के दरवाज़े पर डाल दी और फिर खुद भी सुबह इसके केसास का दावेदार हुआ। बनी

इस्राइल में इस वाक्ये को लेकर सख्त हंगामा बरपा हो गया। और हर कबीला दूसरे कबीले को कत्ल का जिम्मेदार और मुजरिम करार देने लगा।

खुदा का हुक्म है कि तुम एक गाये जबहा करके इसके गोस्त का टुकड़ा इसकी लाश पर मारो। मकतूल खुद ही जिन्दा होकर अपने कातिल का पता बतायेगा। पहले तो बनी इस्राइल ने गाये ही के बारे में कट हुज्जितिया कीं इसके बाद खरीदारी के मामले में भी अपनी हेमाकतो और शरारतों से बाज न आये आखिरकार एक मरदे मोमिन को जो आले मौहम्मद पर दुरुद भेजता रहता था और अपने वालदैन का फरमा बरदार था। खुदा ने इन अहमकों के हाथ से एक गाये की कीमत दिलवायी कि शहर भर के बनी इस्राइल मुफ़लिस व मोहताज हो गये इन्हें इतना सोना देना पड़ा कि जितना की इस गाये कि खाल में समा सका। गर्ज कि वह गाय जबहा की गयी और इसके गोस्त का एक टुकड़ा मकतूल की लाश पर मारा गया। गोश का मारना था कि वह मय्यत उठ बैठी और उसने अपने चचाज़ाद भाई को अपना कातिल बता दिया। और पिर इसको परवरदिगार की तरफ़ से काफी तूलै उम्र अता हुई। इस वक़्त से तमामि दुनिया में गाय का जबीहा राज हुआ।

## बैतुलमुकद्दस की बुनियाद

जनाबे मूसा फूतुहात की मंजिलों से गुजर कर जब अरजे मुकद्दस पर वारिद हुए तो वहां उन्होंने चहार दीवारी बुलन्द करके एक मस्जिद की बुनियाद डाली जो बैतुल मुकद्दस के नाम से मशहूर है। इसमें नमाजे जमात होती थी। तौरैतद रखी जाती थी। और ताबूतै सकीना व दीगर तबररूकात भी इस मस्जिद में रहते थे। हजरते मूसा ने सका इन्तेजाम अपने भाई के जिम्मे किया था। जो इनके बाद इनके दो बेटों शब्बर और शब्बीर के हवाले रहा। फिर इनकी औलादें इनकी मुतावल्ली हुईं। हजरते हारुन अपनी आखरी सांस तक जनाबे मूसा के बेहतरीन नाएब व जानशीन रहे। चुनान्चे इसी बिना पर पैगम्बरे इस्लाम ने फ़रमाया है कि ऐ अली तुम्हें मेरी तरफ़ से वही मंजीलत हासिल है जो हारुन को मूसा की तरफ़ से हासिल थी। बस फ़र्ख सिर्फ़ इतना है कि मेरे बाद कोई पैगम्बर न होगा।

## यहूदियों की मुशरेकाना व जाहिलाना सरिशत

यहूद के माने हरकत देने के हैं और चूँकि यहूद तौरैत पढने वक़्त हिला करते थे। इस वजह से यहूदी कहलाये। दूसरा सबब यह भी होता है कि यहूद बिन याकूब की औलाद होकने की बजह से यहूदी कहे जाते थे। कुरआनी सराहतों से यह अमर्र

आशकर है कि बनी इस्रीइल (यहूदियों) पर मिसलसल इनायतें होती रहीं। इनकी रहबरी और रहनुमायी के लिये पैगम्बरों का सिलसिला जारी रहा।

खुदा ने इन्हें अपनी नेअमतों से खूब खूब नवाजा बड़ी बड़ी हुकूमतें भी अता कीं। मगर यह बदबखत क्रौम न कभी मुतहिद रही और न इसने दिल से खुदाए वहदहु लाशरीक की वहदानियत का इकरार किया कभी इसे कारून ने गुमराह किया सामरी ने और कभी शैतान ने बहकाया।

इस क्रौम पर खुदा के एहसानात और इन एहसानात के बदले में इनका मुखरेकाना और जाहेलाना रवैया इस वक़्त वाज़ेह हो सकेगा जब हम इनके वाक़ेयात का मुताला करें जिससे कि कुरआने मजीद का बहुत बड़ा हिस्साभरा पड़ा है। यह एक हकीक़त है कि यह क्रौम अपनी मुशरेकाना सरगरमियों और बदआमालियों की वजह से बार बार खुदा के एतापब व अजड़ाब का सबब बनती रहीं। मगर इनकी सरिशत में कोई तब्दीली वाक़े न हुई। जिसका अन्जाम यह हुआ कि परवरदिगार ने इन्हें क़यामत तक के लिये ज़िल्लत और रूसवायी से हम किनार कर दिया। जैसा कि कुरआन में है कि -

हम क़यामत तक तुम पर ऐसे हाकिमों को मुकरर करते रहेंगे जो तुम्हें बड़ी बड़ी तकलीफें और जलील व रूसवा करेंगे। (कुरए एराफ़ आयात)। खुदा की तरफ से यह एलान किसी फ़रदे वाहिद के लिए नहीं बल्कि पूरी क्रौम यहूद के ले है। और तारीख भी गवाह कि कभी इन्हें बखते नस ने तबह व बरबाद मुल्क बदर किया

कबी ईसाईयों ने ताराज यह क्रौम ज़लील व सुसवा होती रहेगी। मौजूदा सदी में भी यह क्रौम जर्मनी के नाज़ियों के क्रहर व ग़ज़ब का शिकार हो चुकी है। जिन्होंने इनके क़त्लेआम के बाद इन्हें मुल्क बदर कर दिया था और यह अपनी जान बचाने की गरज़ सके दूसरे मुमालिक में मुन्तशिर हो गयी थी। मगर बरतानिया और अमरीका ने इनकी एक अलग रियासत बनाकर इस नाकिस क्रौम को फिर मुसलमानों पर मुसल्लत कर दिया। और यह क्रौम फिर एक बार ख़ुदायी क्रहरो ग़ज़ब का निशाना बनने के लिये मुसलमानों के ख़िलाफ़ फ़ितना परदाजियों और महाज़आराईयों के साथ शैतानियत के रास्तों पर गामज़न है।

इस क्रौम पर ख़ुदा के एहसानात और इन एहसानात के बदल में इनका मुशरेकाना और जाहेलाना रवैया इस वक़्त वाज़ेह हो सकेगा जब हम इनके वाक़येता का मुतालेआ करें जिससे किकुरआने मजीद का बहुत बड़ा हिस्सा भरा पड़ा है। यह एक हकीक़त है कि यह क्रौम अपनी मुशरेकाना सरगरमियों और बदआमालियों की वजह से बार बार ख़ुदा के एताब व अज़ाब का सबब बनतीरहीं। मगर इनकी सरिशत में कोई तब्दीली वाक़े न हुई। जिसका अन्जाम यह हुआ कि परवरदिगार ने इन्हें क़यामत तक के लिये जिल्लत और रूसवायी से हम किनार कर दिया। जैसा कि कुरआन में है कि-

हम क़यामत तक तुम पर ऐसे हाकिमों को मुकरर करते रहेंगे जो तुम्हें बड़ी बड़ी तकलीफें देंगे और ज़लील व रूसवा करेंगे। (क़ूरए एराफ़ आयात)। ख़ुदा की

तरफ से यह एलान किसी फ़रते वाहिद के लिये नहीं बल्कि पूरी क़ौम यहूद के लिये है। और तारीख़ भी गवाह है कि कभी इन्हें बख़ते नस्र ने तबह व बरबाद, मुल्क बदर किया कभी ईसाईयों ने ताराज किया और कभी मुसलमानों ने ज़लील व रुसवा किया और क़यामत तक यह क़ौम ज़लील व रुसवा होती रहेगी।

मौजूदा सदी में भीयह क़ौम जर्मनी के नाज़ियों के क़हर व ग़ज़ब का शिकार हो चुकी है। जिन्होंने इनके क़त्लेआम के बाद इन्हें मुल्क बदर कर दिया था और यह अपनी जान बचाने की ग़रज़ सेदूसरे मुमालिक में मुन्तशिर हो गयी थी। मगर बरतानिया और अमरीका ने इनकी एक अलग रियासत बनाकर इस नाक़िस क़ौम को पिर मुसलमानों पर मुसल्लत कर दिया। और यह क़ौम फिर एक बार ख़दायी क़हरो ग़ज़ब का निशाना बनने के लिए मुसलमानों के ख़िलाफ़ फ़तना परदाज़ियों और महाज़ आराईयों के साथ शैतानियत के रास्तों पर गामज़न है।

## जनाबे हारून की रेहलत

अल्लामा मजलिसी तहरीर फ़रमाते हैं कि जब जनाबे हारून की रेहलत का ज़माना करीब आया तो हज़रते मूसा एक दिन इन्हें कोहेतूर की तरफ लेकर रवाना हुए। रास्ते में इन्हें आलीशान क़सर् मिला जिसकै दरवाज़े घर एक खुशमुमां दरखत



था और इसमें एक पोशाक टंगी हुई थी जनाबे हारून से हज़रते मूसा ने फ़रमाया इसे पहन लीजिए।

चुनान्चे उन्होंने पहन लिया इसके बाद मूसा इन्हें लेकर इस क़स्र में दाखिल हे तो देखा कि वहां एक तख़्त है जिस पर बेशक़ीमत मसनद पड़ी हुई और पूरा मकान मुशको अम्बर की खूशबू से मोअत्तर है। आपने हारून से फ़रमाया कि इस तख़्त पर लेट जाइये। वह लेट गये और मलकुल मौत ने इनकी रूह क़ब्ज़ कर ली। और इसके बाद न वह दरख़त रहा न क़स्र रहा, न तख़्त रहा और न जनाबे हारून रहे। खुदा वन्दे आलम ने सबको आसमान पर उठा लिया।

## वफ़ाते मूसा अ०

अल्लामा मजलिसी फ़रमाते हैं कि मलकुल मौत जब मूसा के पास इनकी रूह क़ब्ज़ करने आये तो आपने इनसे पूछा ऐ मलकुल मौत क्यों आये हो कहा रूह क़ब्ज़ करने की गरज़ से हाज़िर हुआ हूं। फ़रमाया की किस जगह से रूह क़ब्ज़ करोगे। कहा मुहं की तरफ से। आपने फ़रमाया कि इस मूंह से तो मैं आपने खुदा के साथ सलाम करता हूं। फ़रमाया पैरों से चलकर खुदासे बातें करने के लिए जाता हूं। कहा कानों से। फ़रमाया कि कानों से खुदा की आवाज सुनता हूं। कहा अच्छा तो फिर आंखों से रूह क़ब्ज़ कर लूं। फ़रमाया मैं आंखों से खुदा की रहमतों का नज़ारा करता रहता हूं। इसके बाद मलकुल मौत को खुदा का हुक्म हा कि वापस

आ जाओ। और फरमाया कि मूसा जब अपनी मौत की ख्वाहिस करें तो इनके पास जाना।

चुनान्चे मलकुल मौत वापस गये और हजरते मूसा जिन्दा रहे। यहां तक कि आपने जनाबे हारून के बाद जनाबे यूशा बिन नून को अपना जानसीन मुकर्रर किया। फिर कुछ अरसे बाद एक दिन अपनी कौम से छिप कर एकएसे मकाम पर गये जहां एक शख्स कब्र खोद रहा था। आपने भी कब्र की तैयारी में उनकी मदद की और जब कब्र तैयार हो गयी तो इसमें लेट गये। आपका कब्र में लेटने था कि खुदावन्दे आलम नें आपनी नज़रों के सामने से तमाम हिजाबाद हटा दिये और इन तरजात को जाहिर कर दिया जो इनके लिए उसने बेहिशत में मुकर्रर फरमाये थे। मूसा ने फरमाया परवरदिगार मुझे अपने पास बुलाले।

चुनान्चे मलकुल मौत को हुक्म हुआ फिर आप की रूह कब्ज़ कर ली गयी। इस शख्स ने कब्र बन्द करदी और मूसा इसी कब्र में दपन हो गये। वह शख्स दरहकीकत एक फरिशता था। जो खुदा की तरफ से इस काम पर मामूर हुआ था। यही वजह है कि अहले किताब को मूसा की कब्र का निशान तक नहीं मालूम। वक़्ते वफ़ात आपकी उम्र 130 साल की थीं।



## हज़रते यूश बिन नून अ०

आप हज़रते मूसा के भांजे थे नीज़ आपका नसबी सिलसिला हज़रतै यूसूफ बिन याकूब अ० पर तमाम होता है। जनाबे हारून की वफ़ात के बाद आप हज़रते मूसाकगे वसी और जानशीनी मुकरर हुए और खुदा की तरफ से मुकामे अरीह में मन्सबे नबूवत पर फ़ाएज़ किये गये।

दौराने तब्लीग आपने अपने अहद में मुशरेकीन व मुनाफ़ेकीन से कई लड़ाईया लड़ी मगर तमाम लड़ाईयों में सबसे अहम लड़ाई हज़रते मूसा की बीबी सफ़रा से हुई जिससे तरफ़ैन के 70 हज़ार अफ़राद मारे गये। इस जंग की तफ़सीलऔर एललो असबाब लके बारे में तारीखी किताबें खामोश नज़र आती हैं। मगर इस अम्र की निशानदेही ज़रूर होती है कि सफ़रा और यूशा बिन नून के माबैन यह जंग जंगे जमल से बड़ी हद तक ममासेलत रखती है।

जिस तरह हज़रत रसूले खुदा स०अ० ने अपने को जिस तरह हज़रते मूसा से तशबीह दी इसी तरह हज़रत मूसा की जौजा सफ़रा और जौजे रसूल हज़रते आयशा में भी पूरी मुशाबेहत ज़ाहिर हुई। यूशा से जंग की और हज़रते आयशा ने रसूल खुदा के वसी और जानशीन हज़रत अली इब्ने अबी तालिब अ० से लड़ाई की सफ़रा भी ऊंट पर बैठ कर लड़ने आयी थी और आयशा भी ऊंट पर सवार होकर जमल में तशरीफ़ लिये गयीं थीं। सफ़रा के मुक़ाबले में यूशा बिन नून कामयाब हुए और आयशा के मुक़ाबले में अमीरलमोमेनीन को फ़तह हासिल हुई। बांझ थीं

और सफ़ूरा के यहां हज़रते मूसा की एक औलाद हो चुकी थी। इससे यह बाद भी वाज़ेह हो जाती है कि बाज़िम्बयाए मुरसलीन की बीवियं सिराते मुस्तक्रीम से खुद बी भटक गयीं और उन्होंने दूसरों को गूमराह किया।

हज़रते यूशा नै जनाबे मूसा के साल बंद और हज़रते ईसा से सालकब्ल बरस की उम्र में इन्तेक़ाल फ़रमाया। अपनी वफ़ात से कुछ पहले आपने वह तमाम तबररूकात और ताबूते सकीना जो आपको हज़रते मूसा से मिले थे हज़रते हारून के साहबज़ादों के हवाले कर दिया था (तबरी जिल्द पहला सफा 227)।

## हज़रते हिज़क़ील बिन बोरी अ०

हज़रते यूशा बिना नून के बाद बनी इस्राइल के सरदार व पेशवा जनाबे तालिब बिन यूफना हे इनके बाद हज़रते हिज़क़ीलव का दौर आया। आप के वालिद हज़रते मूसा के दीन की तब्लीग़ किया करते थे। एक मरतबा इनकी क़ौम ने काफ़िरों और मुशरिकों से लड़ने के लिए इनके हुकम पर सरकशी इख़तेयार की तो खुदा ने बसूरते अज़ाब इन पर ताउव्वन की बीमारी को मुसल्लत किया। जो मुसलसल व बार बार साल ब साल आ, रही। जिसके नतीजे में लोग शहर छोड़ कर भाग जाया करते। एक मरतबा इस बीमारी ने वह शिद्दत इख़तेयार की कि तमाम शहर के लोग एक जंगल की तरफ निकल गये औन इन्हें यह गुमान पैदा हो गया कि अब हम यक़ीनन मौत से बच जायेंगे. तो खुदा ने इन पर कबारगी मौत को तारी कर

दिया। और 70 हजार फ़राद फ़ना के गाट उतर गये। इनकी लाशें यूं ही पड़ी रहीं यहां तर गोश्त पोस्त सब घुल कर खत्म हो गया। और सिर्फ हड्डियों के ढांचे रह गये। जो एक अर्से तक इसी मक़ाम पर पड़े रहे। एक मुद्दत के बाद जनाबे हिज़क़ील का गुज़र इस मक़ाम से हुआ तो कसीर तादाद में इन्सानी ढांचों को देखकर आपने मामले की नवैयत मालूम की। लोगों ने बताय कि यह जाबे इलाही का शिकार हे हैं। चुनान्चे आपने बारगाहे एज़दी में इनकी जीन्दगियों की दुआ फरमायी हुक़म हा कि ऐ हिज़क़ील बक़दरे ज़रूरत पानी लेकर असमाये पन्जेतन को इस पर दम करो। और पिर इस पानी को चुल्लूमें लेकर इनके ढांचों पर छिड़क दो तो हम इन्हें दुबारा जिन्दा कर दें। ग़र्ज़ आप पानी छिड़कते जाते ते और लोग जिन्दा होते जाते थे। यहां तक सब के सब खाक झाड़ते हे उछ खड़े हुए।

यह वाक़या नौरोज़ के दिन का है। इसी वक्त से खुदा ने इस दिन एक का दूसरे पर पानी या गुलाब छिड़कना सुन्नत करार दिया। मगर अफ़सोस के हमारे भाईयों ने सुन्नत को होली में तब्दील कर दिया।

नौरोज़ उस दिन को कहते हैं जिस दिन आफ़ताब बुर्ज हमल में दाख़िल हुआ। इस दिन से ज़माने क़दीम से इस दिन को खास फ़ज़ीलत हासिल है। जनाबे नूह की कशती इसी दिन कोहे जूदी पर ठहरी हज़रते इब्रहीम ने इसी दिन बुतों को तोड़ा। पैग़म्बरे इस्लाम ने इसी दिन अपने आख़री हज से वापसी पर ग़दीर में हज़रते अली की वेलायत का एलान किया और इन्हें अपना खलीफ़ा और जानशीन

बनाया। अल्लामा मजलिसी अ०र० ने मोअल्ला बिन खनीस की ज़बानी रवायत नक़ल की है कि नौरोज़ के दिन के लिए हज़रते इमामे जाफ़रे सादिक अ० का इरशाद है कि नौरोज़ के दिन पाको साफ़ लिबास पहन्ना खुशबू लगाना, आपस में एक दूसरे को मुबारकबाद देना और दुरूद पढ़ते हुए एक दूसरे पर गुलाब या पानी छिड़कना सुन्नत हबै। इसीले कि इस दिन हज़रते रसूले खुदा ने भी ईद और खुशी मनायी थी।

गर्ज कि हिज़कील अपनी नाफरमान क़ौम को बराबर हिदायत करते रहे मगर इन पर आपकी बातों का की असर न हुआ। मगर इनकी रेशादवानियां जब लनाकबिले बर्दाश्त हो गयीं तो प परेशान होकर बाबुल की तरफ जले गये और वहीं इन्तेक़ाल फ़रमाया।

## हज़रते इल्य़ास अ०

हज़रते हिज़कील के बाद उनके साहबज़ादे हज़रते इस्माइल उनके वसी और जानशीन मुकर्रर हुए और उन्होंने भी कारे तब्लीग़ न्जाम दिया लेकिन तारीखों में इनका कोई क़ाबिले ज़िक्र कारनामा नहीं मिलता है।

इस्माइल के बाद खुदा ने हज़रते इल्य़ास बिन यासी न बिन मीशा बिन फ़खाख़ बिन अज़ा बिन हारून को पैग़म्बरी अता की प इलाक़ए बालाबक के इस्रिलियों पर

मबरूस हुए। जिनकी शरारतों और बदआमालियां हद्दे कमाल से तजवुज कर चुकीं थीं।

इस वक़्त का बादशाह अजीना नामि का एक शख्स था जो अपनी साबेका ज़िन्दगी में मोमिन और बाइमान था। मगर शादी के बादग अपनी बीवी असबील के कहने सुनने और बहकाने से काफिर हो गया था। आपने उसकी हर चन्द फ़हमाइश की मगर की असर न हुआ।

एक दिन अज़बील की नज़र एक आबिदों जाहिद की हरे भरे सब्जो शादाब बाग पर पड़ी। जिससे वह अपनी गुज़र बसर करता था। इसे देखकर अज़बील की नियत खराब हुई। चुनान्चे इस बाग के मीलिक को कत्ल करा दिया और खुद इस परकाबिज़ व मुतासरिफ़ हो गया। इसकी इस नारवा हरकत पर परवरदागर को जलाल या और इरशाद हा कि मैं इस खूनवे नाहक़ का बदला ज़रूर लूंगा। मगर अजीना और अज़बील इसी बाग में इस तरह मारे जायेंगे कि इनकी लाशों को दफ़न करने वाला कोई न होगा।

एहतेजाजन हज़रते इल्यास ने भी इन्हे समझाना चाहा और मगर अजीना अपनी बीवी के कहने पर इल्यास ही के लिये दरपैआज़ार हो गया। और इसने आपनी गिरफ़्तारी का परवाना जारी कर दिया। मगर खुदा की शान यह कि इसका बेटा कुछ ऐसा बीमार हुआ कि वह उसकी बीमारी की तरफ़ मुतावज्जे हो गया और हज़रते इल्यास मौका पासर वहां से निकल गये।



और एक पहाड़ पर जाकर खुदा की इबादत में मशगूल हो गये। बादशाह ने जब कुछ लोगों को साम के बुतों के पास अपने बेटे की दुआए सेहत के लिए रवाना किया तो उन लोगों ने इन लोगों से आप की मुलाकात हुई।

आपने फ़रमाया कि अगर तुम्हारा बादशाह बुतों की परशतिश से दस्तबरदार होकर खुदा पर ईमान ले आये तो उसका बेटा अच्छा हो जायेगा। इस बदबख्त को अपने आदमियोंसे आप का ठिकाना मालूम हुआ। तो कई बार उसने अपनी फ़ौज के सिपाहियों को आपकी गिरफ़्तारी के लिए भेजा। मगर वह सब के सब पानी बद्दुआ से हलाक हो गये।

आखिर में उसने अपने वज़ीर को जो ईमानदार था रवाना किया। तो वह हज़रते इल्यास ही के पास रह गया और पलट कर न आया। इधर इसका बेटा भी मर गया इसके बाद वहां के लोग कहत काशिकार हुए।

जब एक मुद्दत गुज़र गयी और बारिश न ही तो हज़रते इल्यास फिर पलट कर आये और उन्हें समझाया बुझाया कि तुम लोग अपने बुतों के सामने दुआ कर अगर बारिश हो जाये तो बुत परस्ती पर कायम रहना। इसका बरअक्स अगर मेरी दा से बारिश हो तो मेरे खुदा की इतात कुबूल कर लेना। सब राज़ी हो गये।

मगर इन्हें अपने बुतों से पानी का एक क़तरा न मिला। आखिरकार आपने दुआ फ़रमायी तो ख़ूब बारिश ही। मगर वह अपने इकरार से फिर गये। आखिरकार आपने हज़रते लयसी को अपना नायब मुक़रर किया और खुद लोगों की नज़रों से

गायब हो गये और कहा जाता है कि खुदा ने आपको जिन्दा आसमान पर उठा लिया।

एक मुसतनद रवायत मिलती है कि आप जनाबे खिज़्र की तरह इसी दुनिया में हैं मगर लोगों की नज़रों से पोशीदा हैं। और जो अहकामें इलाही इनके सिपुर्द होते हैं इसे अन्जाम देते हैं। हज़रते खिज़्र दरियाओं और समुंदरों पर मुकर्रर हैं। और हज़रते इल्यास सहाराओं और पहाड़ों पर मुतीईन हैं। इन दोनों की मुलाकात भी हज के मौक़े पर खानए काबा में होती है। गर्ज़ कि खुदा ने आप की गैबत के बाद वहां के लोगों पर एक दूसरे बादशाह को मुसल्लत कर दिया जिसने अज़बील और दबील को क़त्ल करे उसी बाग़ में डलवा दिया और दरिंदे इन दोनों को खा गये।

## तालूत व जालूत

हज़रते मूसा के बाद एक अरसे तक बनी इस्राइल जंग व जदल फतोहात की तरफ माएल रहे और जब केनान और उसके जैली इलाकों पर इन्हें इकतेदार हासिल हो गया तो चन्द रोज़ चैन से रहे। मगर जब उनके शर पसन्द मिजाज़ ने उन्हें फिर शरारतों पर मजबूर कर दिया और यह लोग फिर अपनी साबेका हालत पर पहुंच गये तो परवर दिगार ने इन पर एक इन्तेहायी ज़ालिम व जाबिर बादशाह को मुसल्लत किया जिसका नाम जालूत था। इसने इस्राइलियों पर वह ज़ालिमाना

व जाबिराना अक़दाम किये कि इनका जीना दूभर हो गया और इनकी हालतें ख़राब हो गयीं।

आखिरकार जालूत के ज़ब्रो इस्तेबदाद से परेशान होकर इन्होंने हज़रते शामूल की तरफ रुजू किया। जो हज़रते मूसा की शरीयत पर नबी थे और ग़ज़्जा और असक़लान के इलाकों पर मबउस थे।

बनी इस्राइल ने हज़रते शमूवील से जालूत के मज़ालिम की शिकायतें कीं और कहा कि आप खुदा से दुआ करें कि वह हमें इसके जुल्म से निजात दे। इसके अलावा अगर आप मुनासिब समझें तो हम पर कोई ऐसा हाकिम मुकर्रर फरमायें जिसकी मातेहती में हम लोग जालूत से जंग करें। हज़रते शमूवील ने बारंगाहे ऐजंदी में इनका मुद्दा बयान किया परवरदिगार ने रौगने ज़ैतून से भरा हुआ एक ज़र्फ़ का असा जिब्रअील के ज़रिये जनाबे शमूवील की खिदमत में इरसाल फ़रमाया और यह हुक्म दिया कि जिस शख्स के सामने यह रौगन जोश खाने लगे यह असा इसके क़द के बराबर हो जाये उसी शख्स को बादशाह बना दो।

एक फ़रमान रवा के इन्तेखाब का यह अजीबो ग़रीब मेयार था। जिसमें मसलेहते इलाही कार फ़रमा थी। बहरहाल यह सुनकर बड़े बड़े लोग इस रौगन और असे के सामने हुक्मरानी की तमन्नाओं के साथ आये। मगर इस रौगन में न कुछ जोश पैदा हुआ और न असे में कोई हरकत हुई।

चुनान्चे जब बन इस्राइल में हज़ारो लोग इसमें से गुज़र गये तो आखिर में सक्कायी का पेशा करने वाला एक शख्स आया जिसका नाम तालूत था। इसके आते ही रौगन भी जोश खाने लगा और असा भी उसके कद के बराबर हो गया। यह देख कर हज़रते शमूवील ने हुक्म में इलाही के मुताबिक इसी को बादशाह बना दिया। लेकिन बनी इस्राइल अपनी साबेका आदतो फितरत की बिना पर इस इन्तेखाब से मितमइन न हो सके। वह ऐतराज़ात और अंगुशत नुमाईयां करने लगे, उनका नजरिया यह था कि जिनके पास माल व दौलत खजाना और तुजको एहतेशाम हो उसी को बादशाह होना चाहिए।

इन एतेरेजाल के ज़ैल में हज़रते शमूवील का जवाब तमद्दुन के कायदे पर मबनी था कि सल्तनत का काम जाहिरी तुजको एहतेशाम से नहीं चल सकता। इसके लिए इल्म व हिकमत, फहम व फरासत के खजानो की जरूरत है। और इसी बात का लेहाज खुदा वन्दे आलम ने हर नबी व खलीफा की तकरसरी में रखा है। बैयत गल्बा और उम्मत का इज्मा और भेड़िया धसान कोई चीज नहीं है।

गर्ज कि बड़ी मुश्किलो और कट हुज्जतियो के बाद इन लोगो ने तालूत को अपना बादशाह तसलीम किया और इनकी मा तहती में जालूत से जंग करने के लिए निकले। इस वक्त इनकी तादाद 70 हजार थी। गर्मी का मौसम था धूप की शिद्धत में इन पर प्यास का गल्बा हुआ तो तालूत से कहने लगे कि पानी की किल्लत और प्यास हमें मारे डालती है। ऐसी सूरत में हम कैसे जिन्दा रहेगे और

क्यो कर सफर करेगे। तालूत ने फरमाया कि घबराओ नही कुछ दूर चल कर एक नहर मिलेगी। वह तुम्हारी प्यास बुझा देगी।

मगर शर्त यह है कि इस नहर से सिर्फ एक चुल्लू पानी पीना वरना मैं किसी का जिम्मेदार न होऊंगा। मगर यह लोग जब नहर पर पहुंचे तो तीन सौ तेरह आदमियों के सिवा मुंह के भल उस पर दुरे और खूब जी भर कर पानी पिया और नतीजा यह हुआ कि इनके पेट फूल गये, होंठ सियाह हो गये और यह लोग चलने फिरने को मजबूर हो गये। यह पानी पीते जाते थे मगर इनकी प्यास नही बुझती थी। मगर जिन लोगों ने तालूत के कहने के मुताबिक अमल किया था यानी सिर्फ एक चुल्लू पानी पिया था इन्हे सुकून भी मिला थकन भी दूर हुई और प्यास भी बुझ गयी।

हजरते शमूवील भी तालूत के हमराह थे इन पर खुदा के वही नाजिल हुई कि जो लोग पानी के बीमार है। उन्हे इसी मुकाम पर छोड़ दो और जो तीन सौ तेरह तन्दुरुस्त हैं इन्हे लेकर आगे बढ़ो। चुनान्चे वह आगे बढ़े और बाकी सफर तय करके महाज पर पहुंच गये। जब जालूत को यह खबर मिली तो वह भी एक लाख का लशकर लेकर आ धमका।

माराकाए कारजार गर्ब होने से पहले हजरते शमूवील ने तालूत से कहा कि जालूत को वही शख्स कत्ल करेगा जो आले याकूब में होगा। और जिस के बाप का नाम ईशा होगा। चुनान्चे लोगो की निगाहे हजरते दाउद पर ठहरी जो तीन सौ

तेरह आदमियो में शामिल थे। जिस्मानी एतेबार से खान पान होने के बावजूद सेफात व कमालात में हजरते शमूवील के मेयार पर पूरे उतर रहे थे।

लड़ाई छिड़ने से पहले तालूत ने यह भी ऐलान कर दिया कि जो शख्स जालूत को कत्ल करगा मैं उसे निस्फ सलतनत दे दूंगा। इसके साथ ही मैं अपनी बेटी भी इसे ब्याह दूंगा।

गर्ज की जंग शुरू हुई और जालूत ने अपना मददे मुकाबिल तलब किया किसी कि हिम्मत नहीं हुई तो हजरते दाउद मुकाबले के लिए चले उन्होंने न तलवार ली न नैजा बल्कि तीन पत्थर रास्ते से उठा लिये और इनमें से एक पत्थर गोफन (मिनजनीक) में रखा जालूत की तरफ फेंका जो उसकी पेशानी पर लगा और कासए सर को तोड़ता हुआ पुश्ते गर्दन से बाहर निकल गया। बस यही एक वार काफी था। जालूत इसी जगह ढेर हो गया। इसका मरना था कि फौज के कदम उखड़ गये और तालूत को नुमायां फतेह हासिल हुई।

इसके बाद उन्होंने अपने ऐलान के मताबिक जनाबे दाउद अ० को अपनी बेटी ब्याह दी और अपने बाद के लिए उन्हें अपना वारिस व जानशीन मुकरर कर दिया। इस तरह जनाबे दाउद अ० हजरते तालूत अ० के बाद हाकिम करार पाये। आपकी सलतनत का जिक्र जाबजां कुरआन में मौजूद है।

## हज़रते दाउद अ०

हज़रते दाउद अ० हज़रते याकूब की नस्ल से थे। सिलसिलए नसब दाउद बिन ईशा बिन ओबेद बिन बाकिर बिन सल्मुन बिन बखशुन बिन अमीनादिब बिन राम बिन हसनरुन बिन फारिज़ बिन याकूब बिन इस्हाक बिन इब्राहिम पर तमाम होता है।

आप हज़रते ईसा से 1085 साल पहले पैदा हुए आप पैगम्बर भी थे और बादशाह भी थे। इस तरह खुदा ने आपको दीनो दुनिया दोनों की सरदारी से सरफराज़ किया था। जैसा कि कुरआने मजीद में इरशाद हुआ – यकीनन हमने दाउद को अपनी बारगाह से बुजूर्गी अता की और पहाड़ों को हुक्म दिया की वह तसबीह में इनका साथ दें नीज़ परिंदों को हमने इनका ताबेह बनाया। (सुरए सबा आयत 10)

आप पर जो अल्लाह की तरफ से आसमानी किताबे नाज़िल हुई उसका नाम ज़बूर है। नबूवत और इल्मो हिक्मत के साथ साथ खुदा ने आपको खुशइलहानी से भी नवाज़ा था। जिसकी कैफियत यह थी कि जब आप सोज़ व गुदाज़ के साथ मसरुफे मुनाजात होते तो तमाम चरिन्द परिन्द आपके गिर्द जमा हो जाते और दरखतो और पहाड़ो से सदाये बलन्द होने लगती और जिस वक्त आप जुबूर की

तिलावत फरमाते तो उलमाए यहूद शजर व हजर कोह व सहरा, जिन्न व इन्स सब के सब बेखुदी में झुमने लगते थे और अकसर जानदारों पर बेहोशी का आलम तारी हो जाता। बरोजे कयामत यही एजाज व कशिश अमीरलमोमेनीन हजरत अली अ० की आवाज में होगी। जैसा कि रसुले खुदा स० अ० का इरशाद है कि खुदा वन्दे आलम कयामत के दिन अली को जिबरईल की कूवत आदम का नूर यूसुफ का जमाल, और दाउद की आवाज अता करेगा और अहले बेहिश्त का खतीब बनायेगा। और जब वह कलाम करेंगे तो बहुत से लोग उनकी आवाज सुनकर बेहोश हो जायेंगे। एक बादशाह और ताजदार की हेसियत से हजरते दाउद का तरीकए कार यह था कि जब वह अकसर रातों में भेष बदलकर रियाया का हाल मालूम करने निकलते थे तो लोगों से अपने बारे में भी दरियाफत करते थे। कि तुम्हारे बादशाह का तौर व तरीका कैसा है। एक शब एक फरिश्ते ने इन्सानी सूरत में आपसे मुलाकात की तो आपने उससे भी हस्बेदस्तूर अपने बारे में पूछा तो उसने बताया कि बादशाह का रवैया और बरताव रियाया के साथ बहुत ही अच्छा है। मगर एक ऐब यह है कि वह खुद अपना और अपने अहलोअयाल के एखराजात का बोझ बैतुलमाल पर डालते हैं जो गैरे मुनासिब है। क्योकि वह एक बादशाह होने के साथ साथ एक नबी भी है।



इस गुफ्तगू के बाद हज़रते दाउद ने यह तय कर लिया कि वह आइंदा अपना व अपने अहलो अयाल का बोझ बैतुलमाल पर नहीं डालेंगे। इस फैसले के बाद खुदा वन्दे आलम ने जिब्रइल के ज़रिये इन्हे ज़िरासाज़ी की तालीम दी और यह एज़ाज़ बखशा कि लोहा इनके हाथ में आने के बाद मोम की तरह नर्म होने लगा। गर्ज कि आपने ज़िरासाज़ी का काम शुरू किया और ऐसी ज़िरा बनाने लगे कि उस दौर में वह चार हज़ार दिरहम में फ़रोखत होने लगी और इसी से आप के जुमला एखराजात पूरे होने लगे। मौअरेखीन व मुस्सेरीन का कहना है कि ज़िरा आप ही की ईजाद है। पूरा मुल्के शाम और जज़ीरए आरमीना के तमाम इलाके आप की हुकूमत में शामिल थे। जो आप की ज़ाती फ़तुहात का नतीजा थे। इनका सबब यह था कि एक काफ़िर और ज़ालिम व जाबिर बादशाह से आपकी जंग हुई और वह मार गया। इसलिए उसकी हुकूमत पर भी आपका कब्ज़ा हो गया वरना कोई तारीख यह नहीं बताती कि आपने जबरन लोगों को खुदा परस्ती इखतेयार करने या एहकामें इलाही का पाबन्द बनाने के लिए जेहाद के नाम पर या मुल्क गीरी के लिए तलवार के ज़ोर से कोई इलाका फ़तेह किया हो जैसा कि पैगम्बर आखरुज़्जमा की वफात के बाद हज़रत उमर के दौर में हुआ।

आपने 40 साल तक बादशाहत और पैगम्बरी और 70 साल की उम्र में इन्तेकाल फरमाया। रेहलत के वक्त आपने अपने छोटे साहबज़ादे जनाबे सुलेमान

को अपना खलीफा मुकर्रर किया और कुरआनी सराहतों के मुताबिक वही आपके ममलेकत इल्म और नबूवत के वारिस करार पाए।

कुरआने मजीद ने इस विरासत के ज़ैल में हज़रत रसूले खुदा स० अ० की उस दरमियान चौदह सौ बरस से निज़ा का सबब है। शियों का कहना है कि रसूले खुदा की मीरास भी उसी तरह जारी होना चाहिए जिस तरह और लोगो की होती है। हज़रते अहले सुन्नत यह कहते हैं कि आन हज़रते का कोई वारिस नहीं हो सकता और इसकी दलील बह यह पेश करते हैं कि रसूले खुदा स० अ० ने खुद फरमाया है कि हम गिरोहे अम्बिया न किसी के वारिस होते हैं और न किसी को अपना वारिस बनाते हैं बल्कि जो कुछ छोड़ जाते हैं वह सदका होता है। लेकिन कुरआने मजीद साफ साफ बता रहा है कि जनाबे दाउद ने अपने फरज़न्द को अपना वारिस छोड़ा और हज़रते सुलेमान हज़रते दाउद के वारिस हुए। मुमकिन है कि पैगम्बरे इसलाम स० अ० ने इस तरह फरमाया हो कि हम गिरोहे अम्बिया में वारिस होते भी हैं और वारिस छोड़ते भी हैं और हज़रते अबू बकर उलटी बात समझे हों। हालाकि हुजूरे अकरम वारिस ने छोड़ते के बारे में अगर कुछ फरमाते तो सबसे पहले इसका ज़िक्र जनाबे फात्मा ज़हरा स० अ० से करते कि बेटी तुम याद रखना कि अम्बिया का कोई वारिस नहीं होता। इसके बाद हज़रते आयशा से फरमाते या किसी और बीवी से बयान करते। क्योंकि आन हज़रत की मीरास का दावायही लोग

कर सकती थी। लेकिन सरकारे दोआलम की ज़बान से यह बात न जनाबे सैयदा ने सुनी और न किसी ने इसकी तस्दीक की। सिर्फ अबू बकर इसके मुददई और रावी है जो किसी पहलू से दुरूसत नहीं मालूम होती है।

## हज़रते सुलेमान अ०

हज़रते ईसा से 1033 साल कब्ल हज़रते सुलेमान पैदा हुए। हज़रते दाउद के 19 बेटे थे और उनमें से एक अपने बाप की विरासत व हुकूमत का दावेदार था। जब हज़रते दाउद की रेहलत का वक़्त करीब आया और हुकूमत के लिए आपके बेटों में निज़ाई सूरत पैदा हुई तो आपको जिब्रइल के ज़रिए एक मोहरबंद आसमानी मकतूब उसूल हुआ। जिसमें चंद सवालात थे। और इनके साथ यह सराहत भी थी कि तुम्हारे बेटों में जो इन सवालात का जवाब देगा वही तुम्हारा वारिस व जानशीन होगा। चुनान्चे अपने तमाम अराकीने हुकूमत और अमायदीने शहर को जमा किया और सब बेटों के सामने बारी-बारी वह सवालात पेश किये मगर जनाबे सुलेमान के अलावा किसी ने कोई जवाब न दिया आखिरकार आप ही अपने वालिद दाउद के वारिस व जानशील करार पाये। आपको अपने बाप से जो हुकूमत विरासत में मिली थी इस पर काबिज़ व मुतासरिफ़ होने के बाद आपने इसकी वुसअत के लिए खुदा की बारगाह में यह दुआ की कि पालने वाले मुझे बख़श दे और मुझे वह हुकूमत अता कर कि मेरे बाद यह शरफ़ फिर किसी को न निले। बेशक तू बड़ा अता करने वाला है (कुरआने मजीद सूरए साद आयत 35)।

इस दुआ की बुनियाद पर खुदा वन्दे आलम ने तमाम जिन्नो इन्स, जमादात व नबातात व हैवानात पर वह इख़तेयार दे दिया कि जिसकी मिसाल सलतीने दुनिया की तारीख़ में नहीं मिलती।

इन्सानों के अलावा आप का लशकर जिन्नातों, देवजादो, दरिंदों परुदों, चरिंदों, पर भी मुश्तमिल थी। और दो सौ मुरब्बामील के तवील व अरीज़ रक़बे में फैला रहता था। जिसकी तरतीह इस तरह होती थी कि पचास मुरब्बे मील में इन्सानों की फ़ौज रहती थी। पचास मुरब्बा मील में जिन्नातों और देवजादों का लशकर रहता था। पचास मुरब्बे में दरिन्दों का मस्कन था। और पचास मुरब्बे मील के रक़बे मील के रक़बे में चरीनादों और परीन्दों का जगघटा लगा रहता था।

आपने तीन मील लम्बी डेढ़ मील चौड़ी एक अजीमुशान बिसात बनायी थी। जिसमें लकड़ियों पर शीशों के बने हुए एक हज़ार महल थे। सोने, चांदी, हीरे और जवारेरात से मरस्सा एक वसी और अरीज़ तख्त था। जिसके दरमिया में एक याकूत का मिम्बर था। और उसके चारों तरफ सोने व चांदी की तीन हज़ार कुर्सियाँ थीं। जिन पर आपके वुजरा, मखसूसीन और मुसाहेबीन जलवा अफ़रोज होते थे। इनके गिर्द जिन्नतों और देवजादो की क़तारें होती थीं। और पूरी बिसात पर परिंदे अपने परों का साया किये रहते थे। और हवा इस बिसात को आपकी ख्वाहिश के मुताबिक़ एक मक़ाम से दूसरे मक़ाम तक अपने दोश पर उठा कर ले जाती थी। इसी बिसात को बिसाते सुलेमानी कहा जाता है।

आपकी बीवियों का तादात 300 बतायी जाती है। और कहा जाता है कि उनते लिए भी आपने 72 मुरब्बा मील के रक़बे में एक आलीशान महल तामीर कराया था। जिसकी ईंटे सौने और चांदी की थीं। फर्श याकूत और जमरूरद का था।

## आराइश और जेहबाइश

कुरआने मजीद से पता चलता है कि तख्ते सुलेमानी की आराइश और जेबाइश के लिए जिन्नात तरह तरह के मूर्तें बनाते थे। तफसीर से यह भी वाजेह है कि वह नबियों और फरिशतों और मस्जिदों के मुरक्के बनाते थे। ताकि इन्हें देखकर लोग इबादत की तरफ रूजू हों। यह अम्र काबिले तवज्जो है कि हजरते सुलेमान के दौर में इनके हुक्म से फरिशतों और नबियों की तस्वीर इसलिए बनायी जाती थीं कि उस ज़माने के लोग इन्हें देखकर इबादत की तरफ रूजू हों। तो मौजूदा जमाने में हजरते इमामे हुसैन अ० के रौज़ए अक्रदस की तस्वीर ताजिये पर ऐतेराज़ और बिदअत के फ़तवे एक बेजां और मोहमल बात है। क्योंकि तस्वीर ताजिये की गर्ज भी यही होती है कि इसको देखकर लोग मज़लूमे करबला हजरत इमाम हुसैन अ० की शहादत को याद करें। और तज़केरा और ग़िरया करें। चूंकि पैगम्बर इस्लाम भी इमामे हुसैन अ० की शहादत की ख़बर क़ब्ल अज़ वक्त सुनकर बार बार रोये थे। और वाक़ये शहादत के बाद भी हजरत उम्मे इब्ने अब्बास वगैरह ने ख़्वाब में आन हजरत को रोते हुए देखा था। तो इस वजह से रसूले अकरम स० अ० की ताअस्सी की ताअस्सी में हजरते इमाम हुसैन अ० पर रोना भी इबादत है।

## मखलूकात की दावत

जनाबे सुलेमान को जब मगरिब से मशरिक तक तसल्लुत हासिल हो गया और हर शय इनके जेरे इकतेदार आ गई तो इनके दिल में यह ख्याल पैदा हुआ कि खुदा ने मुझे इतनी बड़ी हुकूमत अता की है क्यों न एक दिन सारी मखलूकात की दावत की जाये। इस पर वही नाज़िल हुई कि ऐ सुलेमान ये तुम्हारे बस कि बात नहीं यह मेरा ही काम है कि तमाम मखलूकात तक रिज़क पहुंचाता हूँ। जनाबे सुलेमान ने अर्ज की की पालने वालेतूने मुधे बहुत कुछ दिया है और मुझे उम्मीद है कि मैं तेरी मखलूकात को शिकम सेर कर सकूंगा। लिहाज़ा तेरी बारगाह में गुजारिश है कि तू इस अम्र की मुझे इजाज़त मरहमत फरमादे। चुनान्चे आपको इजाज़त मिली और आपने समुंदर के किनारे एक वसी और अरीज़ मैदान में दावत का एहतेमाम किया। लाखों इन्सानो और जिन्नातों ने मिनकर खाना जमा किया और जब आपको इत्मेनान हो गया कि ज़रूरत से ज़्यादा खुरदनी अशिया जमा हो गयी है तो आपने एक वक़्त मुकर्रर करके हवा के ज़रिये तमाम मखलूकात के कानों तक अपनी तरफ़ से दावत की आबाज़ पहुंचाई। अछभी एक मरकज़ पर मखलूकात के जमा होने का इन्तेज़ार हो रहा था। कि समुंद्र से एक मछली ने सर निकाला और उसने जनाबे सुलेमान से कहा कि सुना है आपने तमाम मखलूकात की दावत की है। लिहाज़ा मैं भी आयी हूँ मुझे सेर कीजिये। जनाबे सुलेमान ने फरमाया अभी कुछ देर इन्तिज़ार कर जब सब जमा हो जायेंगे तो खाना खिलाया

जायेगा। उसने कहाँ मैं तो बहुत भूखी हूँ मज़ीद इन्तेज़ार मेरी कूवते बरदाशत से बाहर है। यह सुनकर जनाबे सुलेमान ने फरमाया जो मौजूद है उसमें से खा ले। कहा जाता है कि जो खाना तमाम मखलूक़ात के लिए उस जगह जमा किया था मछली तन्हा उसे खा गई और मज़दी खाने की तालिब हुई यह देखकर जनाबे सुलेमान सजदए खालिक़ में गिर पड़े और रो- रो कर कहने लगे कि ऐ पालन वाले रिज़क़ पहुंचाना बेशक़ तेरा की काम है। मुझसे ग़लती हुई तू मुझे माफ़ कर दे। यह भी कहा जाता है कि उस दिन तमाम मखलूक़ात जिन्हें जनाबे सुलेमान ने मद्दू किया था सब भूखी रह गयी।

## चींटी से मुलाकात

हज़रते सुलेमान एक मरतबा अपने लशकर के साथ हवा के दोश पर परवाज़ कर रहे थे कि अचानक आपने एक वादी में उतरने का क़स्द किया जो चींटियों की अमाजगाह थी। हवा ने आहिस्ता आहिस्ता आपको इस बादी पर उतारने का क़स्द किया। तो एक चींटी ने (जो तमाम चींटियों की मलका थी) कहा की ऐ चींटियों तुम अपने अपने ठिकानों पर चली जाओ इसलिए कि हज़रते सुलेमान का लशकर हमारी ज़मीन पर उतर रहा है। ऐसा न हो की तुम रौंदी जाओ। जनाबे सुलेमान को इसकी खबर भी न हो यह आवाज़ जनाबे सुलेमान के कानों तक पहुंचाई। आपने चींटियों कि उस मलका को तलब किया और अपनी हथेली पर उठाया और



फरमाया कि क्या तेरे नज़दीक सुलेमान ज़ालिम है उसने कहा कि मैं आपको ज़ालिम नहीं समझती। मुझे अपनी रियाया की हिफाज़त करना फ़र्ज़ है मैंने इस फ़र्ज़ के तहत इन्हे आगाह किया था ताकि वह जानी नुकसान से महफुज़ रहे। जनाबे सुलेमान ने फरमाया कि क्या तुम अपनी रियाया पर इस शफक्कत को रवा रखती हो। मलका ने कहा क्योंकि खुदा ने मुझे इनकी सरदारी अता की है। इसलिए इन पर शफक्कत भी मेरे लिए वाजिब है। फिर जनाबे सुलेमान ने फरमाया कि क्या तुम्हारी हूकुमत बेहतर है या मेरी। उसने कहा इस वक्त तो मेरा मरतबा आपसे बलन्द है क्यों कि मैं आपके हाथ में हूँ। आप के अज़ीम बादशाह होने के साथ साथ अल्लाह के नबी भी है। यह सुनकर जनाबे सुलेमान के आँखों में आ गये आपने सर झुका लिया और खामोश हो गए।

### **मलक़ए बिलक़ीस बिन्ते शराजील का वाक़ेया**

हज़रते सुलेमान एक दिन आपने दरबार में तशरीफ़ फ़रमा थे और परिन्दे हस्बे दस्तूर आप पर साया किये थे। एक ख़ला से धूप की किरने आपके चहरे पर पड़ी नज़र उठा करे जायज़ा लिया तो देखा कि हूदहूद की जगह खाली है। आपने फरमाया कि हूदहूद कहां है पता लगाओं मैं उसको सख्त सज़ा दूँगा। अभी थोड़ी ही देर गज़री थी की हूदहूद होंपता कांपता खिदमत में हज़िर हुआ। आप ने फरमाया कि तु कहा था उसने कहां की हुज़ूर एक ऐसी ख़बर लाया हूँ कि ग़ालेबन आप को भी नहीं है फरमाया बयान कर उसने कहा मुल्के यमन मैं दो पहाड़ियों के

दरमियान सबा नामी एक शहर है, जो वहां की हसीन तरीन मलका बिल्कीस बिनते शराजील इब्ने मालिक का दारुस्सलतनल है। इस मलका की अपनी बादशाहत है और शाही का तमाम साजो समान इसके पास मुहैया था। सोने, चाँदी, हीरे, जवाहेरात से बना हुआ उसका तख्त तीस गज लम्बा, तीस गज चौड़ा, तीस गज ऊँचा है। इनमें सात खाने हैं और हर खाने में बड़े बड़े कीमती मोती और आवेजा है। इसके चारों पाये याकुतो जर्मरुदो पुखराजो मोती के हैं और वह इस तरह आरास्ता और पैरास्ता है. कि देखने वालो की निगाह नही ठहरती। मगर सबसे बड़ा ऐब यह है कि वह मलका और उसकी रियाया आपताब को सजदा करती है और शैतान ने उसे बहका रखा है।

हजरते सुलेमान चूंकि अल्लाह के नबी थे। बनी नोए इन्सान की हिदायत पर मअमुर थे। इसलिए हुद हुद की ज़बान में गैरउल्लाह की परशतिश का हाल सुनकर आपकी पेशानी पर नागवारी की शिकने नमुदार हुई। चुनान्चे आपने बिल्कीस के नाम एक खत लिखा और हुद हुद से कहां कि यह खत ले जा और इसे मलका तक यूँ पहुँचा दे कि उसे यह न मालूम हो की किस तरह आया है। हुदहुद यह खत ले कर रवाना हुआ और जब वह वहां पर पहुँचा तो उस वक्त बिल्किस अपने मखसुस कमरे में महवें इस्तेराहत थी। यह रौशन दान से कमरे में दाखिल हुआ और मलका के सीने पर खत रख कर चला आया और जब वह सो कर उठी तो उसने अपने सीने पर सुलेमान का खत देख कर सख्त मुताअज्जि और हैरान व

परेशान हुई। पहरेदारों से पुछा तो सभी ने लाइल्मी जाहिर की। गर्ज कि उसने खत खोला और पढा तो होश उड़ गये। इसमें लिखा था कि हमें मालुम हे कि तुम लोग खुदा की इबादत करने के बजाए गैरुल्लाह की परशतिश में मसरुफ हो। और आपताब को सजदा करते हो। मैं एक नबी की हैसियत से तुम लोगो को दीने हक इखतेयार करने की दावत देता हूँ और हिदायत देता हूँ की अगर तुम लोग न माने और कुफ़ो ज़लालत पर कायम रहे तो याद रखो कि मैं तुम पर हमला करके तुम्हारी सारी सलतनत को नेस्तोनाबूद कर दूँगा। खत पढने के बाद बिलकिस पर लज़्जा तारी हो गया। वह इस कद्र तशवीश व तरद्दुद में मुब्तेला हुई कि उसने फौरी तोर पर तमाम वज़ीराने ममलेकत अराकीने हुकूमत अपने तमाम फौज़ के सरदारो को तलब किया और पूरे वाक़ये कि तफसील बयान कर हज़रते सुलेमान का वह मकतुब रखा और उन लोगो से पुछा कि इस बारे में तुम्हारी क्या राय है। उन्होने कहां की हम लोगो के पास ताक़त व शुजाअत दोनो चीजे है आइन्दा आप को इखतेयार है। अन्जाम को सामने रखते हुए जो हुक्म सादिर फरमायें हम उसके लिए हर वक्त तैयार हैं..।

बिलकिस ने कहा की यह दुनिया का उसूल है कि जब कोई बादशाह किसी हुकूमत पर हमला करता है तो वह उसे तबाह व बरबाद करने व बाइज़्जत लोगो को ज़लीलो रुसवा करने की कोशिश करता है। लिहाज़ा इस टकराव से बचना चाहिए। मेरा यह ख्याल है कि मैं पहले सुलेमान के पास इम्तेहान्न कुछ कीमती

तोहफा भेजू अगर वह वाक्यी पैगम्बर है तो वापस कर देंगे वरना क़बूल कर लेंगे। चुनान्चे तोहफे में उसने ज़नाना लिबास में मलबूस 500 गुलाम और मर्दाना लिबास में मलबूस 500 कनीज़े उनके साथ जडाऊ जीन से आरास्ता 1000 अरबी घोड़े 1000 सोने चाँदी की ईंटे और एक जडाऊ ताज, कुछ मुश्को अम्बर नासिफ और नासुफता मोतियो का एक डिब्बा अपने वज़ीर मुन्ज़र बिन अमरो के हाथ रवाना किया मुन्ज़र ने यह हिदायत कर दी थी कि अगर सुलेमान यह शिनाख्त कर ले की गुलामों और कनीज़ो में कौन गुलाम और कौन कनीज़ है। तो समझ लेना की वह कोई ग़ैर मामुली इन्सान है। फिर उसने कहा कि वह इन मोतियों में किसी ऐसी मख्लुक से सुराख करा ले जो जिन्ना हो न इन्सान, अगर वह इस अम्र को पाए तकमील तक पहुंचा दे तो यकीन कर लेना की वह पैगम्बर है। हज़रते सुलेमान ने खबर गीरी के लिए हुद हुद को मामुर कर रखा था। चुनान्चे जब उसने इस तमाम बातों की इत्तेला आपको दी तो आपने भी अपने दरबार को आरास्ता करने का हुक्म दिया सात मील तक सोने और चाँदी की ईंटे बीझा कर उन पर याकूत का जडाऊ फर्श बनाया गया। दरमियान में शाही तख्त रखा गया उसके गिर्द चार हज़ार तिला व नुकरा की कुर्सिया बिछायी गयी। इन पर वज़रा व अमरा बिठाये गये। इसके बाद इन्सानो जिन्नातो और दरिंदो का लश्कर सफबस्ता खड़ा हुआ। फिर परिन्दो नें अपने परों का साया किया किया। गर्ज़ इस शान से मुन्ज़र इस्तेक़बाल किया गया कि वह अपने तहाएफ़ को हकीर ख्याल करके खुद ही

नादिम हो गया। इसके बाद जनाबे सुलेमान ने मुन्ज़र से गुफ्तगु की उसे खुदा की इबादत की तरगीब दी। गुलामों कनीज़ो को पहचाना और एक कीड़े को हुक्म दिया की वह बिलकीस के इरसाल कर्दा नासोफता मोतियों मे सुराख कर दे। जब यह तमाम मराहिल तय हो गये तो आप ने मन्ज़र से फरमाया कि मुझे तुम्हारे तोहफे की हाजत नही है इन्हे वापस ले जाओ और मेरे खुदा ने मुझे बहूत अता किया है। और तुम्हारे माल से बेहतर है।

### कस्रे सुलेमान मे बिलकीस का वरुद

बिलकीस काफिर सतादा मन्ज़र जब अपने वतन वापस गया हो वहां उसने हज़रते सुलेमान का जाहो हशम आपकी खुदाई ताक़त, अज़मतों जलालत का सारा हाल बयान किया। जिसे सुन कर मलका बेहद मुताअस्सिर हुई और उसने तय किया कि सुलेमान की इताअत कुबूल करने ही में आफियत है। चुनान्चे उसने दुबारा फिर अपना क़ासिद रवाना किया और उसके पीछे खुद भी बारह हज़ार अमीरों और लश्करीयों के हमराह रवाना हुई। क़ासिद चुंकि पहले ही पहुँच गया था और उसने हज़रते सुलेमान को बिलकीस की आमद व इरादे मुतेला कर दिया था।

लिहाज़ा आपने भी मलका की शायाने शान इस्तेकबाल की तैयारीयां कर ली थी। लेकिन आपकी ख्वाहिश यह थी की बिलकीस जब हमारे महल में दाखिल हो तो वह अपने ही तख्त पर फरोकश हो। चुनान्चे आपने दरबारियों से फरमाया कि तुम्में से कौन ऐसा है जो मलिकाए सबा के यहां पहुचने से पहले उस शाही तख्त

को ले आये। कौमे जिन्न में से एक ने कहा कि मैं दरबार बर्खास्त होने से पहले इस काम को अन्जाम दे सकता हूँ। इस पर आसिफ बिन बरकिया जो आपका वज़ीर था। जिसे खुदा ने कुरआन का इल्म दे रखा था। एक रवायत के मुताबिक वह इसमें आजम जरिये मंगवा सकता हूँ इसके बाद उसने कुछ पढ़ कर इसारा किया औप वह तख्त हज़रते सुलेमान के कदमों में आ गया। आप ने फरमाया कि तख्त में कुछ तबदीली पैदा कर दो।

मैं यह देखना चाहता हूँ कि मलिकए सबा अपनी मिलकियत को पहचानती है कि नहीं। गर्ज की बिलकिस जब हज़रते सुलेमान के महल में दाखिल हुई तो वहां अपना तख्त देख कर हैदरत ज़दा रह गयी। हज़रते सुलेमान ने फरमाया कि क्या तुम्हारा तख्त ऐसा ही है उसने जवाब दिया कि मैं अब आपकी इताअत कुबूल कर चुकी हूँ। खुदा की मारेफत का नूर हासिल कर चुंकि हूँ। लिहाजा कोई चीज मेरी नज़रो से पोशिदा नहीं रह सकती इसके जवाब पर हज़रते सुलेमान मुस्कुरा दिये। इसके बाद आपने हुक्म में इलाही के मुताबिक बिलकीस से अक़द फरमाया। उसे खुसुसी शरफ़ व मन्ज़ेलत से सरफ़राज़ किया।

## घोड़ों की कुरबानियां

कुरआन मजीद के पारा 23 सूरए साद की आयात 31-34 में यह वाक़या मज़कूर है। जिसकी तफ़सीर में मौलाना फरमान अली साहब किब्ला रक़म तराज़ हैं

कि हज़रते सुलेमान एक अजीमुशान बादशाह थे मगर फिर भी नबी थे दमिश्क व नसाबीन के कुफ़ार पर चढ़ाई और जेहाद का इरादा था। जिसकी तैयारी में उन्होंने उम्दा किस्म के घोड़े अपने सामने तलब किये जो किसी ने तोहफतन भेजे थे। आप इनको देखने में ऐसे मुनहमिक हुए कि आखिर वक्त जो दुआए या वजाएफ़ पढ़ा करते थे वह तर्क हो गया। और आफताब गुरुब हो गये। इसका आप को ऐसा सदमा हुआ कि इस मुस्तहबी वजाएफ़ के कफ़ारे में अपने खुदा की राह में इन्ही घोड़ों की कुरबानी कर दी और इनका गोशत फ़ोकरा व मसाकीन में तकसीम कर दिया। इस किस्से के मुतालिक मुफ़स्सरीन के और अक़वाले लगो और बातिल है। यह एक पैग़म्बर पर खां मखां का इलज़ाम है। जिसे किसी तरह अक़ले सलीम कुबूल नहीं करती।

## बैतुलमुक़द्स की तामीर

बैतुलमुक़द्स की इब्तेदा सबसे पहले हज़रते सुलेमान में की इसके बाद हज़रते दाउद ने इसका कुछ हिस्सा तामीर किया। फिर हज़रते सुलेमान को इसकी तामीर का हुक्म हुआ तो आपने इसमें कीमती पत्थरों को तरशवा कर सरेनवं इसकी तामीर करवाई। याकूत व ज़मूररुत और सोने और चांदी की तखतियों से दीवारे बनीं। ज़बर जद के सूतून बनाये गये। फीरोजे से मेहराबो दर बने और इसमें कीमती मोती आवेज़ा किये गये जवाहेरात की जडाउ छत बनी। जिसमें इस कद

चमक थी की रात में रौशनी की ज़रूरत न थी। याकूत व ज़मररुत फ़ीरोज़ा फर्श में इस्तेमाल किया गया। इसमें शक नहीं कि यह मस्जिद सुलेमानी सहकार थी। जिसे 454 के बाद बाबुल के बादशाह बख्ते नस्र ने तबाह व बर्बाद कर दिया और सारा साज़ो समान लूट कर अपने साथ ले गया। यह इमारत जो बाक़ी है बहुत बाद की बनाई हुई है।

## हज़रते सुलेमान की वफ़ात

हज़रते सुलेमान जब 16 साल के थे तब हज़रते दाउद के वारिस व जानशीन हुए। 40 साल आपने हुकूमत की इस तरह वक्ते वफ़ात आप की उम्र 56 साल की करार पाई। लेकिन इस मुद्दत के बारे में मुहक्केकीन के दरमियान इख्तेलाफ है। यह तक एक रवायत में है कि आप की उम्र 712 साल की मज़कूर है। लेकिन हालात और वाक़ेयात के पेशनज़र यह मुद्दत करीन क़यान हरगिस नहीं है। आपके इन्तेक़ाल की हिकायतें भी मुख्तलीफ हैं। मगर मेरे नज़दीक दुरुस्त यह है कि आपने समुंद्र के साहिल पर एक शीशे का कुब्बा बनवाया था। जो इस कद्र बूलन्द था कि इस पर खड़े हो कर अकसरों बेंशकर आप अपनी अफवाज़ का मुआयना किया करते थे।

चुनान्चे एक दिन आप असा के सहारे खड़े होकर फरमा रहे थे। कि एक खुबसूरत नौजवान इस कूब्बे में दाखिल हुआ इसे देख कर आपने पुछा तु कौन है और किसकी इजाज़त से यहा आया है। उसने कहा कि मैं मलकूल मौत हुं और मैं



खुदा की इजाजत से आया हूँ आप ने फरमाया कि क्या इतनी मोहलत है कि बैठ जाऊँ। इसने कहा कि अमे इलाही यही कि मैं इसी हालत में आपकी रुह कब्ज कर लूँ। चुनान्चे रुह कब्ज कर ली गयी। आप खड़े के खड़े रह गये। एक साल गुजरने के बाद फौज म बेचेनी हुई तो खुदा ने दीमक को हुक्म दिया और उसने आप के खा लिया और जब असा टुटा तो नबी ज़मीन पर गिरे तो लोगो को मालूम हुआ की नबी हमारे दरमियान से गुजर गये।

## मुख्तलिफ अम्बिया व औसिया

हज़रते सुलेमान की वफात के बाद तमाम दरिन्दे चरिन्दे परिन्दे देवज़ादे और जिन्नात वगैरा सब के सब आज़ाद हो गये थे। और सुलेमानी हुक्मत का दायरा इखतेयार सिमट कर सिर्फ इन्सानों पर हुक्म रानी तक महदुद रह गया था। ना वह दबदबए इखतेदार था और न वह जाहो हशम। बहरहाल जो कुछ भी था उसके वारिस जनाबे सुलेमान के साहब ज़ादे जनाबे रहीम करार पाये और उन्होंने 17 साल तक मस्नदे एखतेदार पर रहकर कारे तब्लीग अन्जाम दिया। उनके बाद इनके साहब ज़ादे आफिया बिन रहीम बरसरे इकतेदार आये और उन्होंने 63 साल तक हुक्मत की इसके बाद इनके फ़रज़न्द असा बिन आफिया तख्ते हुक्मत पर मुतामुक्किन हुए उन्होंने भी एक अरसए दराज़ तक तब्लीगी उमुर अन्जाम दिये।

इसी तरह बिला तरतीब यके बाद दीगरे सैकड़ो बरस तक हज़रते सुलेमान की नस्ल में हुकूमत चलती रही। फिर एक दो दौर ऐसे भी आये आबाओं अज़दाद के पुराने मसलक की तरफ पलटने लगे। तो इनके रोक थाम के लिए खुदा ने दो पैगम्बरो को बयक वक्त उन्की हिदायत के लिए मअमूर किया। जिन्हे तारिख हज़रते हीकूक और हज़रते शैया के नाम से जानती है।

मगर इनके हालात वाक्यात से बे बहरा है। हज़रते शेबा के बाद खुदा ने बनी इस्राइल पर हज़रते अरमिया को मामूर फरमाया जिन्का सिलसिलए नसब हज़रते हारुन बिन इमरान पर तमाम होता है। जनाबे आरमिया की इसलाही कोशिशों और तब्लीगी उमूर मे जैसे जैसे शिद्दत पैदा होती गयी वैसे वैसे उन्की क्रौम की सरकशी और जिद में इज़ाफा होता गया। यहां तक कि यह लोग एलानिया तौर पर बुत परस्ती पर आमादा हो गये। और किसी सुरत से राहे रास्त पर आने को तैयार न हुए तो परवरदिगार ने हज़रते आरमिया के ज़रिये इन्हे सख्त वारनिंग दी और फरमाया कि अगर तुम लोग राहे रास्त पर न आओगे तो हम ऐसे ज़ालिम व जाबिर को तुम पर मुसल्लत कर देंगे जो ज़नाज़ादा होगा। जिसकी परवरिश गलीज़ और बदतरीन ग़िज़ा की मरहुने मिन्नत होगी। और जो तुम्हारे मर्दों को क़त्ल तुम्हारी औरतों को असीर करेगा।

इसके बाद खल्लाके आलम ने हज़रते अरमिया की ख्वाहिश पर उन्हे उस बादशाह की खुसुसी अलामतें और निशानियां बता दी। नीज़ यह भी ज़ाहिर कर

दिया था कि इसका नाम बखते नस्र होगा। वह तुम्हारे ही ज़माने में तुम्हारी ही क़ौम (बनी इस्राईल) पर ख़रुज करेगा।

## बखते नस्र के वाक़ेयात

मुताज़क्केरा बाला खबर के बाद हज़रते आरमिया को यह फ़िक्र लाहक़ हुई कि खुदा की बतायी हुई आलामतों और निशानियों की रोशनी में बखते नस्र को तलाश करना चाहिए। चुनान्चे आप उसकी जुस्तजु में निकल खड़े हुए और मुख्तलिफ़ मुक़ामात का सफ़र तय करते हुए बाबुल पहुंचे। वहां एक गाँव से गुज़र रहे थे तो आपने देखा कि चार पांच बरस का एक बच्चा मुख्तलिफ़ बीमारियों में मुब्तला है इन्तेहाई हकीर हालत से एक मज़बिले (घूरे) पर पड़ा है और उसके ही करीब एक औरत बैठी हुई है जो कुतिया का दुध निकाल रही है। यह मन्ज़र देख कर आप ठहर गये। जब वह कुतिया का दुध निकाल चुकी तो इस औरत ने इस दुध में रोटीयों के चन्द टुकड़े भिगोये और उस लड़के को खिलाकर वहां से चली गयी। जब वह तन्हा रह गया तो हज़रते आरमिया उसके करिब गये ताकि उसका कुछ हाल मालूम करें चुनान्चे सबसे पहले आपने उसका नाम पुछा इसने कहा मेरा नाम बखते नस्र है लेकिन बद बख्ती का शिकार हूँ आप ने फरमाया इस हाल में क्यों पड़ा है। उसने कहा ज़िना ज़ादा हूँ लिहाज़ा इस जुर्म की सज़ा में यहा के लोगों ने

मुधे इस मजबले पर डाल रखा है। सिर्फ कुतिया का दुध मेरी परवरिश का जरिया है।

इतना सुन लेने के बाद जनाबे अरमिया को मजीद कुछ पुछने की हाजत न रह गयी। आप समझ गये कि यह वही लडका है जिसकी अलामतें व निशानियां खुदा ने जाहिर की थी। यह एक दिन बनी इस्राईल पर ग़लबा हासिल करेगा। इन पर अज़ाब बनकर मुसल्लत होगा। चुनान्चे उसकी तरफ से आपने आपनी पुरी तवज्जो मबजूल कर दी। उसी गांव में आप ठहर गये उसका इलाज कराया और उसकी खुर्दोश पर ध्यान दिया। यहां तक वह अच्छा भला न्दुरुस्थ हो गया। आप पांच बरस तक वहां मुक्रीम रहे और उसकी तालीम व तरबियत पर तवज्जो देते रहे।

जब वह तकरीबन ग्यारह बारह साल का हो गया तो आपने उससे अपना तअरूफ कराया और कहा मैं बनी इस्राईल का पैगम्बर अरमिया हूँ। खुदा ने तुम्हारे मुताअल्लिक खबर दी है कि वह अन्करीब तुम्हे मिरी क्रौम पर मुसल्लत करे और तुम बादशाह होगे। मगर जब तुम्हें ग़लबा हासिल हो जाये तो मुझे भूल न जाना। इसने कहा कि भला यह क्यों कर मुमकिन है कि मैं अपने मोहसिन को भुल जाऊँ। आपने फ़रमाया कि अब मैं अपने वतन जाना चाहता हूँ। लिहाज़ा मेरी ख्वाहिश है कि तुम मुझे एक अमान नामा लिख दो ताकि वक़्त पर काम आये। गर्ज़ कि इसने एक आमान नामा लिख दिया जिसे लेकर आप वहां से वापस चले गये।

बखते नस्र जब जवान हुआ और उसने बनी इस्राईल के मज़ालिम की दास्ताने सुनी तो इसकी की तरफ से इसके दिल में नफ़रतें पैदा हो गयी इसने इनके खिलाफ लोगों को उभारना शुरू किया। मशीयते इलाही भी यही थी। लिहाज़ा लोगों ने उसका साथ दिया यहां तक कि एक कसीर जमीयत इसके साथ हो गयी। जिसे मुनज़ज़ करके उसने पहले अपने ही शहर बाबुल पर चढाई कर दी। और जब बाबिल पर मुक्कमल तसल्लुत हासिल हो गया और उसकी बादशाहत मुस्तहकम हो गयी तो उसने अपनी कूवत व ताक़त में खातिरे ख्वाह इज़ाफा करके बनी इस्राइल के दारुस सलतनत बेतुल मुक़द्दस पर हमला कर दिया। हज़रते अरमिया अ० भी उस वक़्त मौजूद थे जब आप को बकते नस्र के हमले का हाल मालूम हुआ तो उसके तहरीरकर्दा आमान नामा को लेकर उसके पास गये आपको देखते ही उसने फौरन पहचान लिया और बड़ी तकरीमों ताज़ीम के साथ पेश आया। इसने आपके तहफ़फ़ुज़ का माकूल इन्तेज़ाम किया।

बनी इस्राइल ने पहले ही रेले मे सिपर डाल दी थी। इसलिए बखते नस्र ने इन पर काबू पाते ही उनके क़त्ले आप का हुक्म दे दिया। जिसके नतीजे में बैतुल मुक़द्दस की सर ज़मीन इन्सानों के खून से सुर्ख हो गयी। अल्लामा मजलिसी अ० र० ने साआलबी के हवाले से तहरीर फ़रमाया है कि बेशुमार क़त्लेआम के बाद जब लोग गिरफ़्तार हुए तो उनमें से बच्चों की तादाद 70 हज़ार थी। तबरी का कहना है कि कैदियों में हज़रते अज़ीज़ और हज़रते दानियाल भी शामिल थे जो

उस वक़्त बैतुल मुक़द्दस में तबलीगी उमुर अंजाम दे रहे थे, दीगर तारीखी शबाहिद से पता चलता है कि दो तिहाई आबादी शहर की ख़त्म हो चुकी थी और बैतुल मुक़द्दस का सारा कीमती असास लूट कर उसे बिल्कुल तबाह और बरबाद कर दिया गया था। हज़रते अरमिया अर्जे मुक़द्स की तबाही और बरबादी को देखकर और दिल ही दिल में सोचा करते थे कि शायद अब यह सरज़मीन पहले की तरह आबाद न हो सके।

आपकी इस कैफ़ियत को देक कर परवरदिगार आलम ने फरमाया कि ऐ अरमिया तुम रन्जीदा और मलूल न हो हम इस शहर को उसी तरह दुबारा फिर आबाद करेंगे। और तुम देखोगे कि तुम्हारे खुदा ने अपना वादा किस तरह पूरा किया।

हज़रते अरमिया अ० एक रात जब सोये तो परवरदिगारे आलम ने इन पर सौ बरस की नींद तारी कर के इन्हें जिब्रील के ज़रिये दुनिया की निगाहों से पोशीदा कर दिया। और शाह फ़ारस को इस अम्र पर मामूर कर दिया कि वह अस्सरे नौ बैतुल मुक़द्दस की ज़मीन को आबाद करे। गर्ज कि उसने अपनी तमाम कोशिशें सर्फ करके 72 साल में अर्जे मुक़द्दस को पहले की तरह फिर आबाद कर दिया। और नजब सौ बरस का वक्फा रूरा हो गया तो मशीयते ख़ुदी वन्दी ने हजडरते अरमाया को फिर बेदार किया आपने शहहर को जब उसी तरह आबाद व बा रौनक देखा तो बेहद ख़ुश हुए और सजदए शुक्र किया इसके बाद हज़रते अरमिया अ०

काफी अरसे तक हयात रहे। बाज़ मुफस्सेरीन ने इस वाक्ये को हज़रते अज़ीज़ अ० की तरफ मन्सूब किया है। जो मेरी तहकीक के लिहाज़ से ग़लत है।

## हज़रते दानियाल अ०

हज़रते दानियाल हज़रते याकूब अ० की नस्ल से हज़रते अरमिया के हमअस्र थे। इमामे जाफ़रे सादिक अ० का क़ौल हे कि बचपने में ही आप के वालदैन का साया सर से उठ गया था। आप यतीम हो गये थे। बनी इस्राइल की एक बूढी औरत ने आपकी परवरिश की थी। हज़रते मूसा अ० की शरीयत पर अमल पैरा थे और बनी इस्राइल को खुदा परस्ती का दर्स दिया करते थे। खुदा ने आपको अक़लो खेरद फहमो इदराक के साथ पैगम्बरी से सरफराज़ किया था। बख्ते नस्र बादशाह आपको बैतुल मुकददस में कैद करके अपने वतन (बाबूल) ले गया और उसने आपको वहां ऐसे अन्धे कुएं में डाल दिया था जो पहले से ही उसकी पली हुई एक खुंखार शेरनी का मसकन था। यह मसलहते इलाही थी कि शेरनी ने आप को कोई गज़न्द नहीं पहुचाया बल्कि खिलाफे फितरत उसने आपको दूध पिला पिला कर इस वक्त तक आपको ज़िन्दा रखा जब तक की खुदा ने आप को निकालने का कोई सबील पैदा न की। हज़रते दानियाल को इस कुएं से निजात क्योकर मिली। इस ज़िम्न में कहा जाता है कि बख्ते नस्र ने एक दिन ख्वाब में देखा कि आसमान से फरिशतों

की जमाअत इस कुएं पर आती है। वहां नमाज़ पढती है और फिर वापस चली जाती है। ख्वाब से जब ये बेज़ार हुए तो उसके दिल में हज़रते दानियाल का हाल मालूम करने कि जूसत जू पैदा हुई चुनान्चे रात गूज़री और जब सुबह को उसे यह मालूम हुआ कि आप ज़िन्दा है। शेरनी ने आप को कोई ज़र नही पहुचाया तो उसके दिल में आपकी तरफ से हैबत पैदा हो गई और उसने इज़्जत व एहतेराम के साथ उस कुएं से निकलवाया लेकिन फिर भी उन्हे आज़ाद नही किया बल्कि अपने खुसुसी हिरासत में रखा ताकि आवाम से हज़रते दानियाल का कोई राब्ता कायम न हो सके।

कुएं के बाद जो आपको कैदखाना मिला था। एक कुशादा मकान की शकल में था। इसके चारो तरफ फौज का पहरा रहता था। ताकि वहां पर किसी शख्स का गूज़र न हो। गर्ज़ कि आप सात बरस तक इसी कैद खाने में मसरुफे इबादत रहे।

एक दिन बख्ते नस्र ने फिर ऐसा ही ख्वाब देखा जिससे वह परेशान व खौफज़दा हुआ। लेकिन जब सुबह हुई तो वह उस ख्वाब को भूल गया और इन्तेहाई गौरव खोज करने पर भी याद न आया तो उसने तमाम मुनज्जिमों और काहीनों को जमा किया और उनसे कहा कि मैंने बहुत ही खौफनाक ख्वाब देखा है मगर भूल गया हूं। तुम लोग अपने इल्म के ज़रिये बताओ कि मैंने क्या देखा। ख्वाब की ताबीर क्या है। उन लोगो ने कहा ख्वाब पता हो तो हम लोग ताबीर बता सकते



है। लेकिन ख्वाब का बताना हमारे लिए मुमकिन नहीं है। बखते नस्र ने कहा कि मैं तीन दिन का मौका तुम लोगो को देता हूँ इस दरमियान तुम खूब गौर कर लो और न बता पाये तो सोच लो मैं तुम लोगो को क़त्ल कर दूंगा। गर्ज़ जब यह खबर मशहूर हुई जहां हज़रते दानियाल कैद थे वहां के किसी पहेरे दार ने यह वाकया आपको सूनाया तो आपने फरमाया कि तू बादशाह से जा कर यह कह दे कि यह ख्वाब बता देना काहिनो और नज़ूमियो के बस में नही है। अलबत्ता वह मुझसे रुजू करें तो मैं इसका ख्वाब और इसकी ताबीर दोनों बता सकता हूँ।

बखते नस्र को जब यह मालूम हुआ तो उसने फौरन हज़रते दानियाल को कैद खाने से तलब किया और उनसे कहा बताइये कि मैंने ख्वाब में क्या देखा है और इसकी ताबीर क्या है। आपने फरमाया कि तुने ख्वाब में यह देखा है कि तुने ख्वाब में एक ऐसे बूत को देखा है जिसका पैर ज़मीन पर है और सर आसमान पर है। इसका सर सोने का है दरमियानी हिस्सा चांदी का है। जानू ताबें के हैं। पिंडलिया लोहे की है और क़दम मिट्टी के हैं जब तू इसे गौर से देख रहा था तो नागहा आसमान से किसी ने उसके सर पर एक पत्थर मारा जिससे उसका क़द इतना छोटा हो गया कि उसके सारे अज़ाए जिसमानी एक दुसर में पैवस्त हो गये। फिर तुने यह देखा कि जो पत्थर उसके सर पर मारा गया था वह बड़ा होने लगा और रफ़ता रफ़ता तमाम कायनात पर मुहीत हो गया।

बखते नस्र ने कहा बेशक मैंने यही ख्वाब देखा था। अब आप यह बताइये कि इसकी ताबीर क्या है? आपने फरमाया कि ऐ बादशाह उस बूत से मुराद उम्मत है जो तेरे बाद दरमियान व आखिर में होंगी तलायी हिस्सा जिस्म से मुराद मौजूदा उम्मत और, तेरी बादशाही का ज़माना है नुकरयी हिस्सा जिस्म से मुराद तेरे बेटे की हुकूमत का ज़माना होगा ताम्बे से मुराद अहले रुम है। लोहे से मुराद फारस और अज़म के लोग है। जिस पत्थर ने इस बुत के क़द को छोटा किया था उससे मुराद वह दीन है जो आखिरी दौरै पैग़म्बरी में उस वक्त की उम्मत पर नाज़िल होगा और दुसरे दीनों को खत्म कर देगा। अरब की सरज़मीन पर खुदा उस पैग़म्बर को मबउस करेगा। जो तमाम नबियों में आखरी नबी होगा। जिसका दीन तमाम दुनिया मं फैलेगा। जिस तरह वह पत्थर पूरी कायनात पर मुहित हो गया। उसी तरह आखरी नबी का दीन भी पूरी कायनात पर छा जायेगा। बखते नस्र यह सुनकर बहूत मुताअस्सिर हुआ और कहने लगा कि ऐ दानियाल मैं आपसे बहुत शर्मिन्दा हूँ मैंने आप पर जुल्म के सिलसिले को रवा रखा। आज से आप आज़ाद है जहां चाहें जा सकते है। आपने फरमाया तुनें मैरा वतन उजाड़ दिया है। अब कहां जाऊ यही रहना चाहता हूँ। जैसे भी तुम रखो। बिला आखिर बखते नस्र ने आपको अपना मुशीर खास मुकररर किया और तमाम अराकीने हुकूमत को यह हिदायत जारी कर दी कि वह हज़रते दानियाल से मशवेरा किए बगैर कोई काम न करें।

हज़रते दानियाल इस मन्सबे शाही पर तीस साल तक फ़ायज़ रहे। यहां तक कि बख्ते नस्र को उसीके एक गुलाम ने क़त्ल कर दिया। उसके बाद बख्ते नस्र का बेटा महरूया या फलशताश तख्त नशीं हुआ। उसने सत्तरह साल बीस दिन तक हुकूमत की। उसी ज़माने में हज़रते दानियाल ने बाबूल के एक मकाम सुस में इन्तेकाल फ़रमाया और वहीं दफन हुए। इमामे सालवी का कहना है कि हज़रते उमर के दौर में जब सुस फतेह हुआ और अबू मुसा अशरी यहां के हाकिम हुए तो दारुल अमारा के एक मुक़प्फल कमरे में इन्हे तवीलुल कामत एक मय्यत रखी हुई मिली जिसका मुंह खुला था और लाश ख़राब होने से महफूज़ थी। उसने मय्यत का हाल मालूम करने में बहुत कोशिश की मगर जब कुछ पता न चला तो उसने इस वकये की तफसील से हज़रते उमर को आगाह किया और दरियाफत किया कि इस मय्यत के मताअल्लिक हम क्या करें। जब दरबारे ख़िलाफत में भी यह मसला हल न हुआ तो अमीरल मोअमेनीन हज़रते अली इब्ने अबूतालिब अO की तरफ रुजू किया गया। आपने फ़रमाया कि वह लाश हज़रते हज़रते दानियाल की है जो बख्ते नस्र के ज़माने में थे। फिर आपने हज़रते दानियाल की है जो बख्ते नस्र के ज़माने में थे। फिर आपने हज़रते दानियाल के हालात बयान किये और उमर को यह मशविरा दिया कि अबू मुसा को लिख दिया जाये कि वह इस मय्यत पर नमाज़ पढ कर ऐसी जगह दफन कर दे जहाँ अहले सूस की रसाई न हो। चुनान्चे

अबू मूसा अशरी ने नहर के पानी को रोक कर उसके दरमियानी हिस्से में मय्यत को दफन करके नहर का पानी फिर बदस्तूर जारी कर दिया। इसी वजह से बाज़ मोहरेखीन ने लिखा है कि हज़रते दानियाल नहरे सूस में दफन है।

## हज़रते अज़ीज़ अ०

हज़रते अज़ीज़ अ० जनाबे हारून की नस्ल से थे और अपने भाई उरज़ा के साथ जुड़वां पैदा हुए थे। आपके वालिद का नाम शरहिया था साहेबे रोज़तुस्तुस्सफा का कहना है कि आप अपने बचपन से जवानी के ज़माने तक बखते नस्र की कैद में रहे और जब रिहाई मिली तो अपने वतन तशरीफ ले गये।

कैद से छुटने के बाद आप दीन की तब्लीग में मसरुफ रहे। यहां तक की जब आपकी उम्र 50 बरस की हुई तो आपको एक सफर में जाने का इत्तेफाक हुआ। चुनान्चे आप गदहे पर सवार होकर रवाना हुए। रास्ते में एक ऐसी उजड़ी हुई बस्ती मिली जिसकी पुरी आबादी ताउन की बीमारी मे मुब्लेला होकर खत्म हो चुकी थी और लातादाद इन्सानी ढाचे जां बजां बिखरे हुए पड़े थे। नीज़ इस सानेहे को इतनी मुद्दत गुजर चुकी थी की उनके मकानों की छत और दीवारें मुनहदिम होकर खन्डरात में तबदील हो गयी। एक अरसए तवील गुजर जाने के बाद यह देखकर

आप पर हैरत व इतेजाब का एक आलम तारी हुआ और दिल पर एक ऐसा सदमा गुजरा कि आपके जिस्म से रुह परवाज़ कर गयी।

सौ बरस तक आप वहां मुर्दा पड़े रहे। आखिरकार मशीयते एज़दी ने आपको फिर ज़िन्दा किया और आपके साथ वह तमाम लोग भी ज़िन्दा हो गये। जो आपसे क़बल मर चुके थे। अल्लामा मजलिसी का कहना है कि उनकी तादाद एक लाख थी। इस वाक्ये के बाद आप मजीद पचास साल तक ज़िन्दा रहे। आपका तज़केरा कुरआने मजीद में मौजूद है। यहूदी आपको खुदा का बेटा कहते हैं।

## हज़रते यूसुफ बिन मता अ०

आप हज़रते मूसा की शरीयत के पाबन्द थे और बनी इस्राइल पर तबलीग के लिए मअमूर हुए थे यह वाकया बहुत मशहूर है कि आप एक मरतबा कशती पर सवार दरियाये दज़ला में महवे सफर थे कि अचानक वह कशती उलट गयी और दरिया में गिर गये गिरते ही आपको एक बहुत बड़ी मछली ने निगल लिया। तीन या सात रात या चालीस रोज तक आप उस मछली के पेट में मसरुफे इबादत रहे। यहां तक कि खुदा के हुक्म से उस मछली न आपको फिर उगल कर अपने शिकम से बाहर निकाला। इसी वजह से आपको जुननून और साहेबे हौत भी कहा जाता है। आपने 147 साल की उम्र में वफात पायी।

## हज़रते ज़करिया अ०

आप हज़रते सुलेमान की नस्ल में युहन्नाबिन उन के बेटे थे। आप की तारीखे विलादत के बारे में किलाबे खामोश है।

आप की ज़ौजा इमरान बिन मतान की बेटी और मरयम मादरे ईसा की हकीकी बड़ी बहन थी। लेकिन इनके नाम में इखतेलाफ है। बाज़ मोअर्रेखीन ने इसाअ बाज़ ने हनाना और बाज़ ने उम्मे कुल्सुम तहरीर किया है लेकिन मेरे नज़दीक आखिउज़जिक्र ज्यादा मुस्तनद है।

आप चुंकि हज़रते सुलेमान की नस्ल से थे इसलिए बैतुल मुकददस के मुन्तज़िम व मुतावल्ली भी थे। जब आपकी उम्र 98 साल की हो गयी और आप नेअमते औलाद से महरूम रहे। तो आपको यह तशवीश पैदा हुई कि मेरे बाद मेरा वारिस और खुदा के घर का मुतवल्ली कौन होगा। चुनान्चे आपने बारगाहे इलाही में दुआ की जो कुबूल हुई और खुदा वन्दे आलम ने आपको यहिया जैसा बेटा अता किया जिसका तज़केरा कुरआने मजीद में इन अलफ़ाज़ के साथ मौजूद है।

जब जनाबे ज़करिया ने अपने परवरदिगार को धीमी आवाज़ से पुकारा और अर्ज़ कि ऐ मेरे पालने वाले में तेरी बारगाह में दुआ करके आज तक महरूम नहीं रहा हूँ

बुढापे की वजह से मेरी हडडियां कमजोर हो चुकी है. और सर के बाल सफेद हो चुके हैं। अपने मरने के बाद मैं अपने वारिसों की तरफ से फिक्रमंद हूँ वह दीन को बरबाद न कर दे। मेरी बीवी बांझ है। बस तू अपनी कुदरते कामेला से एक ऐसा फइजब्त अता फरमा जो मेरी और याकूब की मीरास का वारिस हो।

खुदा ने फरमाया हम तुमको एक फरजन्द की वेलदत की खुशखबरी देते हैं। इनको एक नेक और सालेह बेटा अता फरमाया जिसका नाम यहिया होगा। और हमने इससे पहले किसी को सका हमनाम नही पैदा किया जकरिया ने कहा परवरदिगार लडका क्योकर होगा मेरी बीवी बांझ है और मैं हद से ज्यादा बूढा हूँ। इरशाद हुआ ऐसा ही होगा यह बात मेरे लिए बहुत आसान है। हजरते यहिया की विलादत से कबल आपने हजरते मरयम मादरे ईसा को भी अपनी औलाद की तरह पाला था। चुनान्चे जब वह सिने बुलूग तक पहुँची तो मसलहते इलाही ने उनके बदन मे बगैर किसी मर्द का साया पडे हजरते ईसा का हमल कर दिया। जब वह वाजह हुआ तो जाहिलों ने आप (जकरिया) पर मरयम से नाजायज तअल्लुकात का इल्जाम आयद किया और आपको घेरकर आपको कत्ल करना चाहा।

चुनान्चे आप इस खौफ से भागे इसी असना में एक दरखत बहुकमे खुदा दरमियान से शिगाफता हुआ और आप इसी मे दाखिल हुए तो वह फिर अपनी

असली हालत में आ गया। क़ज़ाये कार कि आपके दामन का एक कोना बाहर ही निकला रह गया। जिसकी वजह से मुखालेफीन समझ गये कि आप इसी दरखत में पौशीदा है। गर्ज कि उन लोगो ने दरखत को मय आपके आरे से चीर दिया जिसके नतीजे मे आप शहीद हो गये। इस वक्त आपकी उम्र सौ साल की थी और हज़रते ईसा पैदा हो चुके थे।

## हज़रते यहिया बिन ज़करिया अ०

हज़रते यहिया अ० हज़रते ईसा इब्ने मरियम से छह माह कल्ब पैदा हुए चार साल की उम्र मे आपने तौरैत हिफ़ज़ की, दस साल की उम्र में तमाम अहकाम से वाक़िफ होकर मन्सबे नबूवत पर फ़ाएज़ हुए। और बनी इस्राइल के दरमियान बाक्रायदा तबलीग़ की तरफ मुतावज्जा हो गये।

ज़ोहद तक़वा और परहेज़गारी आपका तुर्रए इमतेयाज़ था लेकिन इसके साथ खौफे खुदा भी आपके दिल मे इस क़द्र था कि तमाम उम्र आपको किसी ने हंसते नही देखा खुशक रोटी खाते टाट के कपड़े पहनते और तौरैत में जब आज़ाबे इलाही का तज़केरा पढते या अपने बाप ज़करिया की ज़बानी सुनते तो इस क़द्र रोते थे कि आपके रुख़सारों का गोशत गल गया था। और दांत नुमाया हो गये थे। हज़रते ज़करिया ने एक बार अपने वाज़ में जहन्नुम का तज़केरा किया तो रोते पीटते आप सहरा की तरफ निकल गये।



आपके वालदेन जब तलास में निकले तो तीन दिन के बाद सजदे की हालत में आपको बेहोश पाया आपने इस कद्र गिरया किया कि उस जगह की मिट्टी आंसुओ से तर होकर कीचड़ हो गयी थी। चुनान्चे आपकी वालिदा ने जब आपके गर्द आलूदा चेहरे को साफ करना चाहा तो आपने यह समझा कि इजराइल है। फरमाया कि बस इतना ठहर जा कि मैं अपने वालदैन से एक बार मिल लूँ मां ने कहा बेटा मैं तेरी मां हूँ। यह यह सुनकर आप ने आँखे खोली और सहारा की तरफ फिर भागने का क़स्द किया। मगर उन्की मां ने उन्हे मजबूर करके उन्हे अपने घर ले आयी। इस वाक्ये से आपकी खुदा परस्ती रहम दिली पाकीज़गी और परहेज़गारी नुमाया है. जैसा कि परवरदिगारे आलम कूरआने मजीद में इरशाद फरमाता है। कि-

हमने इन्हे बचपने ही मे अपनी बारगाह से नबूअत, रहमदिली पाकीज़गी अता फरमायी और वह खुद भी परहेज़गार और अपने वालदैन के हक़ में सआदत मंद थे। हमारी तरफ से इल पर बराबर सलाम है।

आपकी शहादत का वाकेया यह बयान किया जाता है कि आपके दौर मे हरदुस नामी एक इस्राइली बादशाह था।

जिसने अपने भाई कैसुस की खुबसुरत हसीन व जमील बेवा हैरदोआबा से अक़द कर लिया था। कैसुस से एक लड़की भी थी जो हरदुस की सगी भतीजी थी। चुनान्चे जब वह लड़की जवान हुई तो हरदूस ने उनकी मां की मरज़ी से इसे अपने

तसर्रुफ में लेना चाहा तो लोगों ने कहा कि शरीयत के लिहाज़ से यह तुझ पर हराम है। इससे अक़द जायज़ नहीं है। मगर चुंकि इसकी तबीयत अपनी भतीजी की तरफ रूजू हो चुकी थी नीज़ इसकी मां ने भी कहा कि यह लड़की आपके नुत्फे से होती तो हराम करार पाती। लेकिन जब आपके नुत्फे से नहीं हैं तो फिर क्योकर हो सकती है। बेहतर यह है कि आप इस मसले को यहिया से मालूम करे। चुनान्चे उसने हज़रते यहिया को तलब किया और उससे दरियाफत किया कि मैं इस लड़की से शादी कर सकता हूँ या नहीं। आपने फरमाया कि शरीयत के तहत यह आप कर क़तई जायज़ नहीं है।

उस लड़की की मां ने भी अपने शौहर की इस शैतानी ख्वाहिश की हिमायत में हज़रते यहिया से भी ख़ुब तक़ार की यह लड़की जब बादशाह के नुत्फे से नहीं है तो फिर किस तरह इनके लिए हराम हो सकती है। हज़रते यहिया ने फरमाया कि हुक्मे खुदा यही है जो मैं बयान कर रहा हूँ और इस अम्र मे मुदाखेलत का हक़ किसी को नहीं है।

हज़रते यहिया तो यह कह कर चले गये मगर बादशाह और उसकी बीवी को यह फैसला इन्तेहाई शाक़ गुज़रा। उसकी बीवी ने कहा कि जब भाई की बीवी के साथ अक़द हो सकता है तो भाई की लड़की क्यो कर हराम हो सकती है। यह तो यहिया की सरासर ज़्यादती मालूम होती है। अगर यहिया की तरफ से आपको कुछ अन्देशा है तो उन्हे क़त्ल कराके अक़द कर सकते है।

बादशाह पर नफ़सानी ख्वाहिश की तकमील के लिए इस लड़की की तरफ से इश्क का भूत बूरी तरह सवार था। लिहाज़ा वह अपनी बीवी के इस जाहिलाना मशविरे पर तैयार हो गया और उसने यहिया के क़त्ल का फ़रमान जारी कर दिया और आखिरकार वह इबादत की हालत में क़त्ल कर दिये गये। और इनका सर काट कर एक तश्त में रखकर बादशाह के सामने दरबार में पेश कर दिया गया। तारिखी शवाहिद से पता चलता है कि जिस वक्त हज़रते यहिया का सर उसके सामने रखा गया वह शराब पी रहा था और नशे की हालत में था चुनान्चे उसने आपके सर के साथ जब तौहीन आमेज़ गैर शाइस्ता रवैया इख्तेयार किया तो सर से आवाज़ आयी कि ऐ बादशाह मेरे क़त्ल के बाद भी वह लड़की तुझ पर जायज़ नहीं हो सकती मगर उस बदबख्त पर इस आवाज़ का कोई असर न हुआ और वह दुसरे ही दिन अपनी सगी भतीजी पर मुतासरिफ़ हो गया।

हज़रते यहिया अ० के खूने नाहक का असर यह हुआ कि पत्थरों से खून जारी हुआ और चालीस दिन तक आफ़ताब को गहन लगा रहा नीज़ परवरदिगार ने इस खून का बदला इस तरह लिया कि शाहे रुम तैतुस के ज़रिये हरदुस और इस कौम के 70 आदमियों को क़त्ल करा दिया।

इमामे हाकिम वगैरा ने इब्ने अब्बास से रवायत की है कि खुदा ने हज़रते रसूले खुदा से वही के ज़रिये फ़रमाया है कि मैंने यहिया बिन ज़करिया के खून के एवज़ 70 हज़ार आदमियों को क़त्ल कराया है और तुम्हारे फ़रज़न्द हुसैन के खून के

एवज़ एक लाख चालीस हज़ार आदमियों को क़त्ल कराउँगा। तबरी का कहना है कि हज़रते यहिया के खून का क़ेसास परवरदिगार ने यूँ लिया कि तैतुस कैसरे रुम ने मुल्क शाम पर चढायी की और बैतुलमुक़ददस को तबाह व बरबाद कर दिया। क़त्लेआम के नतीजे में बैशुमार लोग मारे गये।

## वाकेयात में हमआंहगी और यकसानियत

हज़रते यहिया अ० और हज़रते इमामे हुसैन अ० के हालात और वाकेयात में मुन्दरजा जैल हमआंहगी और यकसानियत पायी जाती है।

1. हज़रते यहिया अ० और हज़रते इमाम हुसैन अ० दोनों ही छह माह की मुददत हमल मे मुतावल्लिद हुए।
2. हज़रते यहिया जिस तरह से दीन और शरीयत के मामले में क़त्ल किये गये उसी तरह हज़रते इमाम हुसैन अ० भी दीन व शरीयत के लिये शहीद हुए।
3. हज़रते यहिया अ० का सर जिस तरह तन से जुदा होने के बाद तशत मे हरदूस के सामने पेश किया गया उसी तरह हज़रते इमामे हुसैन अ० का सर भी तन से जुदा करके तशत मे यज़ीद मलउन के सामने दरबार में पैश किया गया।
4. हज़रते यहिया अ० का क़ातिल हरदूस शराबी और बदकार था उसी तरह यज़ीद भी शराबी और बदकार था।

5. हज़रते यहिया अ० के सर से जिस तरह हरदूस ने बेअदबी और गुस्ताखी की उसी तरह यज़ीद भी हज़रते इमाम हुसैन अ० के सरे अक़दस से बेअदबी और गुस्ताखी का मुरतकिब हुआ।

6. हज़रते यहिया अ० के सर ने जिस तरह तन से जुदा होने के बाद भी कलाम किया इसी तरह हज़रते इमाम हुसेन अ० के सरे अक़दस ने कलामें पाक की तलावत की।

7. हज़रते यहिया अ० की शहादत के बाद जिस तरह पत्थरों से खुन जारी हुआ इसी तरह मज़लूमें करबला की शहादत के बाद पत्थरों से खुन जारी हुआ और आसमान व ज़मीन ने गिरया किया।

8. हज़रते यहिया अ० की शहादत के बाद जिस तरह गहन आपताब को लगा उसी तरह हज़रते इमामें हुसैन अ० की शहादत के बाद आफताब व महताब को गहन लगा और सारी दुनिया अंधेरे में डूब गयी।

ग़ालेबन यही वजह थी कि हज़रते इमामें हुसैन अ० अपने सफर करबला के दौरान हज़रते यहिया को बार बार याद करते थे।

## हज़रते ईसा इब्ने मरियम

हज़रते मरियम खुदा की कुदरते कामेला से शौहर के बगैर जिस वक्त हामेला हुई इस वक्त आप की उम्र 11या 13 या 15 और 20 साल की बतायी जाती हैं। इस

तरह हमल की मुदत में भी इखतेलाफ है। मोहक्केकीन व मुफस्सेरीन में से किसी ने 6 माह किसी ने 8 माह और किसी ने 9 माह और किसी ने सिर्फ 9 घण्टें तहरीर किये है।

बत्ने मरियम में स तकरारे हमल और विलादते ईसा के बारे में खुदा की तरफ से जो रुदाद कुरआने मजीद में मजकूर हुई है उसका खुलासा यह है कि हजरते मरियम एक दिन अपने हुजरे ए इबादत से निकल कर मकान के मशरिकी हिस्से में तशरीफ ले गयी और वहां उन्होंने खलवत इखतेयार की तो परवरदिगार ने जिबरईल को इन्सानी शकल में उनके पास भेजा जब वह वारिद हुए जनाबे मरियम उन्हें देखकर घबरायीं और कहने लगीं कि अगर तू परवरदिगार है तो मैं तुझसे खुदा की पनाह मांगती हूँ। जिबरईल ने कहा घबराओ नहीं मैं तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से भेजा हुआ एक फरिशता हूँ और तुम्हारे बत्न से एक पाको पाकीजा लडके की विलादत की बशारत देने आया हूँ। यह सुनकर जनाबे मरियम ने फरमाया न मैं बदकार हूँ और न ही किसी मर्द का साया मुझ पर पड़ा है तो मेरे बत्न से लडका पैदा होने का क्या सवाल है। जिबरईल ने कहा तुम ठीक कहती हो लेकिन तुम्हारा परवरदिगार कहता है कि बिन बाप के लडका पैदा करना मेरे लिए बहुत आसान है। मैं चाहता हूँ कि इसे अपने कूदरत की निशानी करार दूं और अपनी रहमते खास का ज़रिया बनाऊं और यह अम्र यकीनी और तय शुदा है।

इसके बाद हजरते मरियम मशीयत के इशारे से खुद ब खुद हामेला हो गयीं मगर हमल उस वक्त जाहिर न हुआ जब तक कि हजरते ईसा की विलायत का वक्त बिलकुल करीब नही आया।

चुनान्चे जब आपको तकलीफ महसूस हुई और दर्दे जेह मे मुबतेला हुई तो घर से निकल कर बैतुलमुकददस में तशरीफ लार्यीं। मगर वहां एक गैबी आवाज़ ने आपको मुतानब्बे किया कि ऐ मरियम यह विलादत की जगह नही है। बल्कि इबादत का मुकाम है लिहाजा आप फौरन इसके हुदूस से निकल जाइये। यह बात सुनकर आप पर खौफ तारी हुआ और मायूसी की हालत में आप वहां से निकलकर उलटे पाँव वापस आर्यीं। इसके बाद दर्द की शिदत ने आप को दुसरा ठिकाना ढूढने पर मजबूर किया। तो आप किसी महफूज जगह की तलाश में एक ना माकूल मुकाम की तरफ रवाना हुई रास्ते में कुछ लोगों से मुलाकात हुई जो क्रौम के जुलाहे थे। उन लोगों ने आपका मजाक उड़ाया आपने उन्हें बद्दुआ दी और आगे बढी तो फिर कुछ ताजिरों से मुलाकात हुई तो उन्होंने एक खजूर के दरख्त का पत्ता बताया आप इन्हें दुआएँ देती हुई जब इस दरख्त के करीब पहुंची तो वह बिलकुल खुशक था। जैसे ही आप इसकी जड़ से लग कर बैठी वह हरा भरा हो गया। इसकी शाखें फूटी और आप को चारों तरफ से घेर कर परदे में ले लिया फिर खोशे निकले और फल तैयार हुए। जो आपकी गिजा करार पायी। खुदा ने आबे शीरीं का एक चश्मा जारी कर दिया जो पिने के काम आया गर्ज कि हूरों की मदद

से हज़रते ईसा इसी मुकाम पर पैदा हुए। बाज़ मुफ़्सेरीन ने तहरीर किया है कि इस मुकाम का नाम नासेरा था। इसी वजह से वहां के लोगों ने खुद को अन्सार उल्लाह कहा जो बाद में नसारा हुआ।

विलादत के बाद हज़रते मरियम की नज़र जब अपने फ़रज़न्द पर पड़ी तो उनके दिल में यह खयाल पैदा हुआ कि खुदा ने इस बच्चे को बगैर बाप के पैद तो कर दिया है मगर जब मेरी कौम इसे देखेगी तो मेरे बारे में क्या सोचेगी। काश मैं पहले ही मर गयी होती यह दिन देखना मुझे नसीब न होता। नागहा एक आवाज़ आयी ऐ मरियम तुम फ़िक्र मंद क्यों हो खुदा तुम्हारी इज़्जतो अज़मत का निगेहबान व मुहाफ़िज़ है। तुम इस नेअमत के एवज़ तशक्कुर का रोज़ा रखो। और अगर तुमसे कोई कुछ पुछे तो कतई जवाब न दो।

तीसरे दिन मरियम अपने फ़रज़न्द ईस को गले से लगाये हुए जब अपने घर में दाखिल हुए तो बनी इस्राइल के मर्दों और औरतों ने इन्हे चारो तरफ से घेर लिया लानतो मलामत करने लगे और कहने लगे कि ऐ मरियम तूने बहुत ही बुरा का किया है। ऐ हारुन की बहन न तो तेरी मां बदकार थी न तेरा बाप ही बुरा आदमी था। मगर तुने बनी इस्राइल की नाक कटवा दी। आखिर तुने यह क्या किया।

चुंकि उस वक़्त आप रोज़े की हालत में थी इसलिए कोई जवाब देने के बजाये आपने बच्चे की तरफ इशारा किया जिसका मकसद यह था कि जो तुम्हें पूछना है



इस बच्चे से पूछ लो। इस पर लोगों ने कहा कि यह नौजाएदा और शीर ख्वार बच्चा क्योंकर बात कर सकता है। मालूम नहीं मरियम को क्या हो गया है।

बस यह वह मौक़ा था कि जब हुक्ममें इलाही से हज़रते ईसा अ० ने ज़बान खोली और बोल उठे ऐ बनी इस्राइल के सरकश लोग होश में आओं में खुदा का बन्दा हूँ उसने मुझे बा बरकत करार दिया है। नबी बनाया है और किताब अता की है। उसने मुझे हुक्म दिया है कि मैं ता ज़िन्दगी नमाज़ व ज़िकात अदा करूँ और अपनी मां के साथ नेकियों का बरताव करूँ। मुझे मेरे खुदा ने बद बख्त ज़ालिम और जाबिर नहीं बनाया है। मुझ पर सलामती है कि जब मैं पैदा हुआ जिस दिन मरुंगा और जिस दिन फिर ज़िन्दा किया जाऊंगा। लोगों ने जब ईसा अ० की गुफ्तगू सुनी तो कहने लगे कि मरियम बेगुनाह है। और यह सब खुदा का मौजज़ा है।

बतने मरियम में हज़रते ईसा अ० का हमल बरोज़े चुमा मुस्तक़िर हुआ और पच्चीस ज़ीकाद बरोज़े मंगल आप की विलादत अमल में आयी। आप बनी इस्राइल के आखरी उलुल अज़म पैग़म्बर थे। आपके और हज़रत मूसा अ० के दरमियान खुदा की तरफ से छह सौ पैग़म्बर और भी तशरीफ लाये जिन्की तादाद का तज़केरा तो मिलता है लेकिन चन्द के आलावा बाक़ी पैग़म्बरों के नाम और हालात की सराहत किताबों में नहीं है।

## हज़रते मरियम की हिजरत

हज़रते ईसा की विलादत और उनके ज़ैल में रुनुमा होने बले वाकेयात की खबरें जब वहा के बादशाह बहरूस की कानों तक पहुंची तो उसने इरादा किया कि इन्हें क़त्ल कर दे। खुदा ने बीबी मरियम को हुक्म दिया कि वह ईसा अ० को लेकर शाम से मिस्र की तरफ हिजरत कर जायें चुनान्चे वह अपने रिश्ते के एक भाई यूसुफ निजार के महाराह मिस्र की तरफ चली गयी। और वहां बारह साल तक रही। यहां तक की जब बहरूस मर गया तो अपने वतन वापस आयीं एक शरीफ इन्सान ने अपने मकान में आपको ठहरने की जगह दे दी थी। क़सबे माश के लिए आपने सम्भल की फराहमी और कपड़े की बिनाई का काम शुरू कर दिया था। जिससे गुजर बसर होती थी।

### हज़रते ईसा और इब्तेदाई तालीम

मिस्र में आपने क़याम के दौरान बीबी मरियम ने हुसूले तालीम के लिए हज़रते ईसा को एक बाईमाल मोअल्लिम के सिपुर्द कर दिया था। चुनान्चे पहले दिन जब उस मोअल्लिम ने हज़रते ईसा को पढ़ाना शुरू किया तो उसने कहा कि कहो बिस्मिल्ला हिर रहमानिर रहीम आपने कहा बिस्मिल्ला हिर रहमानिर रहीम फिर उसने कहा कहो अब जद आपने फ़रमाया अब जद और इसके साथ ही यह सवाल कर बैठे कि अब जद में जो अलाहदा अलाहदा हुरूफ है इनके माइने क्या है। यह

सुनकर मोअल्लिम ने कहा मैं जो पढ़ा रहा हूँ वो पढ़ो। बिना वजह कठ हुज्जती मत करो। आप ने फरमाया अच्छा तो फिर यह बताइये कि बिस्मिल्लाह हिर रहमानिर रहीम में ब सीन और मीम के क्या मानी है। आप की यह बातें सुनकर मोअल्लिम को सख्त गुस्सा आया उसने कहा तुम पढ़ने आये हो या मेरा इम्तेहान लेने। आपने फरमाया कि अगर आप को नहीं पता तो मैं बताऊँ। वह और बरहम हुआ और हज़रते ईसा को लेये हुए बीबी मरियम के पास आया और कहने लगा तुम्हारा फ़रज़न्द वह जानता है जो तुम्हें नहीं मालूम लेहाज़ा मैं इसे नहीं पढ़ा सकता

## हज़रते ईसा के मोअज़िजे

हज़रते ईसा को जो मोअज़िजे खुदा की तरफ से अता हुए थे। इनमें से मुर्दों को जिन्दा करना और बीमारों को शिफा देना और पत्थरों को जवाहेरात में तबदील करना, पानी पर चलना, ग़ैब का हाल बताना, मिट्टी के परिन्दे बना कर इन्में जान पैदा करना वगैरह शामिल है इन मोअज़िजात के अलावा भी हस्बे ज़रूरत मामूली मामूली आपके मोअज़िजे आप की ज़ात से ज़हुर पज़ीर हुआ करते थे। मसलन यह वाक़या बहुत मशहूर है कि जब आप कमसिन थे उस वक़त आप की मादरे गिरामी ने आपको कपड़ा रंगने वाले एक शख्स के यहा मज़दूरी पर रख दिया था। एक दिन इस रंग रैज़ ने आपको कुछ कपड़े दिये और कहा कि हर कपड़े

के साथ एक रंगीन धागा बन्धा हुआ है। इसी धागे के मुताबीक इन कपड़ो पर रंग चढाओ। यह कह कर वह कहीं चला गया आपने सारे कपड़े उठाये और एक ही रंग के मठके में इन्हे डाल दिया और जब वह वापस आया तो उसने पुछा कि क्या कपड़े रंग गये तो आपने फरमाया कि हां रंग गये। उसने पुछा कि कहा हैं आपने मठके कि तरफ इशारा कर के बताया कि उस मठके में पड़े है। यह सुनकर उसने मुंह पीट लिया और कहने लगा तुम्ने तो सब चौपट कर दिया। मैंने अलग अलग रंगो में रंगने को कहा था और तुम्ने एक ही रंग के मटके में झोक दिया अब मैं ग्राहकों को क्या जवाब दुंगा आप ने मुस्कराते हुए फरमाया कि ए भाई इस कद्र खफ़ा क्यों होते हो इन्हे मटके से बाहर निकाल कर तो देखो गर्ज कि जब उसने यह कपड़े मटके से निकाले तो हैरत अंगैज माजरे को देख कर शशदर रह गया। सब का रंग अलग अलग और इनमें बन्धे धागों के मुताबिक थे। चुनान्चे वे उसी वक़्त हज़रते ईसा पर ईमान ले आया।

## सदक़े की अहमियत

एक शादी के मौक़े पर हज़रते ईसा ने फरमाया कि ये दुल्हा कल मर जाएगा। आप की इस बात से तमाम अफ़राद के दरमियान रंज व ग़म की एक लहर दौड़ गयी। दुसरे दिन जब वे ज़िन्दा सलामत व बख़ैरियत रहा तो लोगों ने आप को बुरा भला कहना शुरू किया यह सुनकर आप ने इस तकज़ीब करने वालो को अपने

हमराह लिया और इस दुल्हे के घर तशरीफ ले गये। दुल्हन को बुलाया और उससे फरमाया कि रात में जो कुछ तुमने कारे खैर अंजाम दिया हो उसे बयान करो। उसने कहा कि मैंने खुदा के नाम पर एक फकीर को खाना खिलाया था। इसके अलावा कुछ नहीं हुआ। फिर आपने बढ़कर उस दूल्हा का बिस्तर हटाया तो लोगो ने देखा कि उसके पास एक खतरनाक किस्म का साँप मौजूद है। आप ने फरमाय कि इसी साँप के जरिये दुल्हा की मौत थी मगर इसकी बीबी के सदके में इसकी जान बच गयी। चूँकि खिदा की राह में दिया हुआ सदका तमाम बलाओं को दुर करता है।

## नुजूले माएदा

हजरते ईसा की दुआओं के बदौलत उसकी उम्मत पर नुजूले माएदा का जिक्र कुरआने मजीद में इजमालन मौजूद है। जिसकी तफसील में मुफस्सेरीन का कहना है कि एक दिन हजरते ईसा ने अपने कुछ हवारीन की ख्वाहिश पर खुदा की बारगाह में नुजूले माएदा की इसते दुआ की चुनान्चे एक ख्वान आसमान से उतरा जिसमें एक भुनी हुई मछली, कुछ मुख्तलीफ किस्म की सब्जिया, पांच अदद रौंगनी रोटियां, नमक, लहसुन और सिरका रखा हुआ था। चुनान्चे जब खाने का वक्त आया तो आपके हवारीन ने कहा कि ऐ खुदा के रसूल हमारी ख्वाहिश है कि हम इस ख्वान की मछली को जिन्दा देखे। यह सुनकर आपने बिस्मिल्लाह कह

कर इस पर अपना हाथ फ़ैरा और बा हूकमें खुदा का वह ख्वान पर चलने फिरने लगी। दुबारा फिर अपने हाथ फ़ैरा तो वह जैसी थी वह वसी ही हो गयी। आपके इस मोजिजे को देख कर सब के सब हैरत ज़दा रह गये।

इसके बाद जिसने यह खाना खाया फ़ायदे में रहा इसमें अगर कोई बीमार था तो इसे शिफा मिल गयी परेशान हाल था तो खुश हाल हो गया, नादार था तो मालदार हो गया। और बावजूद कि कसीर तादाद ने इस खाने को खाया और शिकम सेर हुए। मगर इसमें कोई कर्मी वाके न हुई .। रवायतों से पता चलता है कि इस मायदे का नुजूल बराबर 40 दिन तक होता रहा। और तमाम शहर के लोग इससे शिकम सेर हुए। मुस्तफीज़ होने वालों में चुंकी दौलत मंद तब्का भी शामिल होने लगा इस लिए ईसा ने खुदा की हूकमत से इसे सिर्फ़ गुरबा व मसाकिन के लिए मखसूस कर दिया जिसका नतीजा यह हुआ कि लोग नारारज़ हो कर दीन से फिर गये और बगावत कर आमादा हो कर हज़रते ईसा की तकज़ीब करने लगे। और यहूदियों की तरह साहिर व जादूगर कहने लगे। नीज़ इस ख्वाने नेअमत का मज़ाक उड़ाने लगे। इस्राइलियों की यह बात खुदा वन्दे आलम को इस कद्र नागवार गुज़री की उसने यह सिलसिला बन्द कर दिया और बगावत और सरकशीरी करने वालों को इस अज़ाब में मुब्तला कर दिया कि वह रात में अच्छें भले इन्सान की तरह सोये लेकिन जब सुबह उठे तो लोग बन्दर,सुअर,रीछ और ना जाने क्या क्या बन चुके थे।

तफसीर हज़रते इमामे अस्करी अ० हज़रते रसूले खुदा ने मन्कूल है कि नुजूले माएदा की नाकदरी और हज़रते ईसा को बूरा भला कहने की वज़ह से खुदा ने इन्हे चार सौ किस्म के हैवानों की सुरत में मस्ख कर दिया था। और वह लोग तीन दिन तक इसी हालात में रहने के बाद हलाक हो गये।

## तब्लीगी सरगरमियां

हज़रते ईसा यूं तो बचपन चही चसे कारे तब्लाग की अन्जाम दे ही में मसरुफ रहे लेकिन जब आप की उम्र तीस साल की हुई तो आपने एतेराफ और जवानिब में अपने नायेबीन भेजने शुरू किये और ब हुक्में खुदा इन्हे अपने मोअज़िज़ात के इस्तेअमाल की इजाज़त भी दे दी ताकि तब्लीगी उमूर में इन्हें कोई दुशवारी न हो।

आपने दीगर शहरों के साथ शहरे अन्ताकिया में भी सादिक और सिददीक नामी अपने दो नाएबीन भेजे जहां का फरमान रवां खुदा भी बुत परस्त था और अपनी रियाया को भी बुतपरस्ती के लिए मजबूर करता था। जब यह दोनों अन्ताकिया शहर के नज़दीक पहुंचे तो उनकी मुलाकात सबसे पहले एक बूढे शख्त से हुई जो अपनी बकरियां चरा रहा था। इन लोगों ने इसे सलाम किया इसने जवाबे समाल दिया। और पुछा कि तुम कौन हो और कहां से आ रहे हो। इन लोगों ने कहा कि हम हज़रते ईसा के नायब हैं और तब्लगी की गरज़ से यहां आये हैं। इसने कहा कि तुम्हारे पास क्या इसका क्या सबूत है। तो उन्होंने कहा कि इब्ने मरियम ने

हमें मोअज़िज़े देकर भेजा है। हम बीमारों को शिफा और अंधों को आंखे दे सकते हैं। बूढ़े शख्स ने कहा कि मेरा बेटा मुददत से बीमार है। क्या तुम लोग इसे शिफा दे सकते हो ? इन लोगों ने कहा हमें अपने घर ले चलो।

चुन्नाचे वह इन्हे अपने घर ले आया सादिक और सिददीक ने खुदा की बारगाह में दुआ कि और लडके के सर पर हाथ फेरा कूदरते इलाही से उसी वक्त अच्छा भला हो गया और उसकी सारी बीमारी दूर हो गयी। यह देख कर पूरे घर ने इस दिन से मसीही दिन इख्तेयार कर लिया। इस बूढ़े शख्स का नाम हबीब निज़ार था। जिन्हे मोमिने आले यासीन के नाम से दुनिया याद करती है। लडके का शिफा याब होना था कि उसकी शोहरत तमाम शहर में हुई लोग सादिक और सिददीकी के गिर्दे जमा होने लगे और बीमारों को शिफा और अन्धों को आँखे मिलने लगी। यहां तक की हज़ारों लोगों ने हज़रते ईसा का दीन इख्तेयार कर लिया और बुत परस्ती से मुन्हरिफ हो गये। रफ़ता रफ़ता यह खबर वहा के बादशाह जिसका नाम शलाखिन था को मालूम हुई तो इन दोनो मुबल्लेगीन को गिरफ्तार करा करा कर शाही बुत खाने में कैद कर दिया। हज़रते ईसा को जब यह इत्तेला फ़राहम हुई कि सादिक और सिददीकी को अन्ताकिया के बादशाह ने कैद कर लिया है तो आपने सुलूम नामी एक तीसरे शख्स को अपना नायब बना कर वहां रवाना किया। और यह हिदायत कर दी कि वह अपना दीन न ज़ाहिर करे बल्कि तक्रय्ये



की हालत में रह कर खुफिया तौर पर कारे तब्लीग अन्जाम दे और उन दोनों नायबीन को बादशाह की कैद से छुड़ाने की कोशिश भी करे।

सलूम जब अन्ताकिया पहुंचे तो उन्होंने भी मरीजों को शिफा देने और अंधों को अच्छा करने का काम शुरू कर दिया। जिन्की वजह से इन्की बहुत जल्द शौहरत हो गयी मगर उन्हें अपने मसीही मस्लक का इजहार नहीं किया बल्कि जाहिर यही किया कि हमारा मज़हब वही है। जो यहां के बादशाह का।

जब बादशाह से लोगो ने बताया कि एक नया शख्स शहर में दाखिल हुआ है। और वह भी मरिजों को शिफा और अंधों को आँखे देता है। लेकिन वह ईसाई नहीं है। बल्कि उसका भी मज़हब वही है। जो हमारा है। तो वह बहुत खुश हुआ। और सलूम को अपने पास तलब कर के उसने बचशम खुद बीमारो को अच्छा करते हुए देखा तो अपना मुकरिबे खास बना लिया।

सुलूम ने वहां रहकर जब खुफिया तरीके से पता लगाया कि सादिक व सिद्दीक शाही बुतखाने में कैद हैं तो एक दिन उन्होंने बादशाह से कहा कि मैं शाही बूतखाने में इबादत करना चाहता हूँ। बादशाह की तरफ से इजाज़त मिल गयी। इसलिए वह वहां आने जाने लगे। चुनान्चे मौका पाकर उन्होंने इन दोनों मुबल्लेगीन से गुफ्तुगू की इनके हालात मालूम किये और उनके साथ ही यह ताकीद भी कर दी कि कभी यह जाहिर न होने पाये कि हम एक दूसरे को जानते हैं। या एक ही मज़हब से हमारा तअल्लुक है।

मुखतसर यह कि सुलूम ने वहां रहकर बादशाह पर जब अपना काफी असर जमा लिया तो मौका महल देखकर एक दिन उसने उससे दरियाफ़त किया कि वह दो आदमी कौन है जो बुतखाने में कैद हैं। बादशाह ने कहा कि वह लोग भी आपकी तरह मरीजों और अंधो को अच्छा करते हैं। लेकिन वह हमारे खुदाओं को बुरा भला कहते हैं। और अपने खुदा की परस्तिश कराना चाहते हैं। यहां के लोगों ने उनकी करामात देख देख कर हमारे खुदाओं को छोड़ कर उनका मज़हब कुबूल करना शुरू कर दिया। तो हमने इन्हें कैद कर लिया ताकि यहां के आवाम से इनका कोई राबेता न रह जाये। यह सुनकर सुलूब ने कहा अगर आप मुनासिब समझें तो इन्हें किसी दिन अपने दरबार में बुलायें और हम मुबाहेसा करें ताकि हक और बातिल का पता चले। नीज़ उनकी अच्छाईयों और बुराईयों के बारे में कोई नज़रिया कायम हो सके।

बादशाह ने सुलूक की तजवीज़ मान ली और दूसरे ही दिन सादिक और सिद्दीक दरबार में तलब किये गये। बादशाह और दरबारियों की मौजूदगी में सुलूम ने इनसे पूछा कि तुम लोग कौन हो और यहां तुम्हारे आने का मकसद क्या है। उन्होंने कहा कि हम लोग खुदा के रसूल हज़रते ईसा अ० के फ़रिस्तादा हैं और यहां तब्लीग की रहे हो। उन्होंने कहा कि हम लोग बुतपरस्तों को खुदा परस्ती की दावत देते हैं। और इसकी दलील में मोजिज़े से काम लेते हैं।

सुलूम ने कहा कि तुम लोग किस किस्म के मोज़िजे ज़ाहिर करते हो। उन्होंने कहा हम बीमारों को अच्छा करते हैं और अंधों को आंखें देते हैं और अपाहिजों और कोढ़ियों को शिफा अता करते हैं सुलूम ने कहा यह सब कुछ तो हमें भी आता है कोई नई बात बताओ जो इन्सान से मुमकिन न हो। उन लोगों ने कहा हमारे बादशाह का एक बेटा मर चुका है। और वह फुलां मुकाम पर दफन है अगर तुम उसे जिन्दा कर दो तो हम वादा करते हैं कि हम लोग भी तुम्हारा दीन कुबूल कर लेंगे वरना तुम्हारी गर्दन उड़ा दी जायेगी।

गर्ज कि बहामी मुहायदा और कौलो इकरार के बाद सादिक और सिद्दीक ने दो रक्त नामज अदा की और सजदे में बादशाह के उस लड़के के जिन्दा किये जाने की दूआ की जिसे मरे हुए काफी अरसा हो चुका था। इसके बाद उन्होंने कहा कि बादशाह का लड़का जिन्दा होकर कब्र से बाहर आ चुका है। कुछ लोगों को वहां भेजिये कि वह उसे यहां ले आयें। सुनकर बादशाह खुद अपने लड़के कि कब्र की तरफ भागा उसके पीछे और लोग दौड़े वहां पहुंच कर उन लोगो ने देखा कि वह लड़का अपनी कब्र के पास खड़ा हुआ अपने चेहरे और सर से गर्दों गुबार झाड़ रहा है। बादशाह ने दौड़ कर इसे गले से लगा लिया और पूछा कि बेटा तुम क्योंकि जिन्दा हुए उसने कहा कि मैंने मुर्दा हालत में यह देखा कि दो आदमी सजदे में मेरे जिन्दा किये जाने की दुआ मांग रहे हैं।

बस उनकी दुआ कुबूल हुई और हमें ज़िन्दा कर दिया गया। फिर दो आदमियों ने हमारी कब्र खोद कर हमें बाहर निकाल कर खड़ा कर दिया। और गायब हो गये। यह वाक्या सुनकर बादशाह के रोंगटे खड़े हो गये। उसने पूछा कि क्या तुम उन्हें पहचानते हो। लड़के ने कहा हां यकीनन मैं उन्हें पहचान लूंगा। दूसरे दिन बादशाह ने दोनो मुबल्लेगीन कैदियों सादिक और सिददीक के हमराह अपने रियाया को भी एक बड़े मैदान में जमा किया और अपने लड़के को ले कर एक मकाम पर खड़ा हो गया। एक शख्स जब उस लड़के के सामने से गुजरता रहा। वह कहता रहा कि यह नहीं है और जब वह दोनों कैदी सादिक और सिददीक इसके सामने से गुजरने लगे तो उसने कहा कि यह यही है।

बादशाह ने उनके साथ जो नारवा सुलूक किये थे उन पर वह नादिम हुआ और उसी वक्त उस ने मसीही दीन इख्तेयार करने का एलान कर दिया। इसके साथ उसकी रियाया में भी हज़ारो लोग ईमान ले आये। लेकिन यहूदियों ने ईसा की तक़जीब की जिस पर हबीबे नज्जार बिगड़ गये और उन्होंने कहा कि ऐ यहूदियों इन पैगम्बरो का इत्तेबा करो। क्योकि यह हिदायत याफ़ता है और तुमसे कोई अज़्र नहीं मांगते। यह सुनकर एक यहूदी आगे बढ़ा और इसने हबीब को वहीं क़त्ल कर दिया। इस ख़ुन के बदले में खुदा ने इन पर अज़ाब नाज़िल किया और वह सब के सब हलाक हो गये। इसके बाद तीनो मुबल्लेगीन सुलूम, सादिक और सिददीक अन्ताकिया से वापस आये और हज़रते ईसा से सारे वाक़ेयात बयान किये।

## हज़रते ईसा के हव्वारीन

इस अम्र मे कोई इख्तेलाफ नही है कि आपके खुसूसी हव्वारीन की तादाद बारह ती अलबत्ता इनके नामों में मोअर्रेखीन ने इख्तेलाफ किया है बहर हाल जिन नामों पर मोअर्रेखीन की अकसरियत मुत्तफिक्र है वह दर्ज जैल है।

- 1 याकूब जबदी
- 2 शमउन केनाली
- 3 अनोराउस
- 4 शमुन बिन हमून
- 5 याकूब बिन हलफी
- 6 पुलूस
- 7 हरतोलूमाउस
- 8 युहन्ना
- 9 यहूदा
- 10 मता
- 11 मारकूस
- 12 लुका

सालबी का कहना है कि यह ऐसे असहाब थे जिन पर हज़रते ईसा को बड़ा ऐतमादो भरोसा था। और यहीं बारह आदमी आप पर सबसे पहले ईमान लाये।

मौलाना फरमान अली साहब कुरआने मजीद में सुरह आले इमरान के हाशिये पर एक जगह रकम तराज़ है कि वह बारह आदमी जो सबसे पहले आप पर ईमान लाये हवारी कहलायेय। इब्रानी ज़बान में हूर के माने खालिस सफेदी के है। पस इन्हे हवारी इन्हे इस वजह से कहते है कि पहले यह लोग धोबी का पेशा करते थे। औप कपड़ो को निखार कर सफेद करने की वजह से यह नाम हुआ हो।

इस वजह से कि हज़रते ईसा ने इन्हे गुस्ले इस्तेबाग दिया था। जो अब तक नस्नानियों में जारी है। यह इस वजह से कि हज़रते मरियम ने हज़रते ईसा को काम सिखाने की गरज़ से एक रंग रेज़ के पास रख दिया था। या फिर इस लिए कि वह नुफूस को गुनाहों की आमोजिश से पाक व साफ रखते थे और दुसरो को भी पाक करते रहते थे। इस वजह से इन्हे हवारी कहते है। यह लोग ज़बर्दस्त वायज़ थे खुसुसन लूका। जिनकी तरफ इन्जील का एक हिस्सा मन्सुब है। यह भी याद रखने की बात है। कि जिस तरह बनी इस्राइल के बारह नक़ीब थे। हज़रते ईसा के बारह हवारी थे। इसी तरह उम्मते मुस्लेमा के भी बारह आईम्मा है। मौलाना ने हवारीन के बारे में जो मुख्तलिफ बयानात बयान फरमाये है। इससे पता चलता है कि मुअर्रेखीन इस अम्र में सही नतीजा नही अक़ज़ कर सके है कि हवारीन कहलाने का असल सबब क्या है। और शायद यह वजह है कि गलत फहमी के बिना पर हज़रते ईसा के हवारीन को किसी ने धोबी और किसी ने अंग्रेज़ तसव्वर किया है। मेरी तहक़ीक के मुताबिक हवारीन के लुगवी मानी मददगार के है।

लिहाजा ज्यादा करीने कयास बात यही है कि हज़रते ईसा के जो सच्चे मोईन व मदद गार थे वही हवारीन कहलाये। जैसा कि इमामे रज़ा अ० के इस क़ौल से साबित है कि हज़रते ईसा को अस्हाबे खास को हवारीन इस लिए कहा जाता है। कि वह मवाएज़ और नसीहतों के ज़रीये गुनाहो से दुर रखते और हज़रते ईसा के मोईन व मदद गार थे। हवारीन के माने चुँकि साफ करने वाले के भी है। इसलिए लोगों ने धोखा खाया। इसलिए किसी ने धोबी किसी ने रंगरेज़ लिख दिया।

हज़रते ईसा अ० का आसमान पर उठाया जाना

हज़रते ईसा जब शामून बिन हामुन को अपना खलीफा और जानशीन मुकर्रर कर चुके तो आप ने हवारीन को हुक्म दिया कि तुम लोग अतराफे आलम में तब्लीग व हिदायत के लिए फैल जाओ चुनान्चे जब वह लोग ग़ैर मुल्को में चले गये तो आपको तनहा देखकर इस्राइली यहूदी ने जिनकी फ़ितरत और सरिशत में शरारत और शैतनत भरी हुई थी। एक मन्सूबा तैयार किया कि किसी तरह क़त्ल कर दिया जाये। चुनान्चे मुखतलिफ़ हीलों बहानों से एक शब इन लोगों ने आपको गिरफ्तार करके एक घर में मुकय्यद कर दिया। खुदा का करिशमा देखिये कि जिब्रील आये और एक रौशन दान से निकल कर आपको आसमान पर ले गये।

जब सुबह तड़के यहूदी हज़रते ईसा को फांसी देने के इरादे से वहां पहुंचे तो उनका एक सरदार जिसका नाम यहूदा था आपको बाहर लाने के लिए घर के अन्दर दाखिल हुआ। खुदा ने अपनी कुदरत से यहूदा को हज़रते ईसा की शकल में

तब्दील कर दिया। हज़रते ईसा को न पाकर जब वह अपने साथियों से माजरा बयान करने बाहर निकला तो इसे देखते ही ईसा समझ कर इसके ऊपर टूट पड़े दबोच लिया और वह लाख चीखता चिल्लाता रहा कि मैं ईसा नहीं हूँ बल्कि तुम्हारा साथी यहूदा हूँ।

आखिर इसे सुली पर चढ़ा ही दिया जब उसका काम तमाम हो गया तो इन बदबख्तों ने इसकी लाश पर तबर भी बरसाये। जब यह सब कुछ हो चुका तो खुदा ने फिर यहूदा को उसकी अपनी असली शक्लों सूरत में कर दिया। यह देख कर उन लोगों ने अपना मुंह पीट लिया और हाथ मल कर रह गये। यह वाक्या 21 रमज़ानुल मुबारक का बताया जाता है।

हज़रते ईसा के बारे में यहूद नसरा दोनों ही शुबहे में पड़े हुए थे। यहूदी आपके बारे में बेहूदा ख्यालात रखते थे जबकि नसारा आपको खुदा का बेटा कहते थे। परवर दिगार ने हरते आदम की मिसाल देकर दोनों की तशफ़ी कर दी यहूदियों को यह करहर मुतमइन कर दिया कि जब आदम की खिलकत मिट्टी से हो सकती हो तो ईसा का बग़ैर बाप के पैदा होना तअज्जुब खेज़ क्यों। और नसारा को यह कह कर समझा दिया कि ईसा का बग़ैर बाप का पैदा होना खुदा या खुदा का बेटा होने की दलील हो तो हज़रते आदम के मां और बाप दोनों ही नहीं थे। लिहाज़ा सबसे पहले इन्हे खुदा या खुदा का बेटा होना चाहिए था।



हज़रते ईसा के आसमान पर उठा लिये जाने क् बाद शमून अपनी पूरी जिम्मेदारियों के साथ बहैसियते वसी अपने फ़राज़ और तब्लीग़ उमूर अन्जाम देते रहे। और उनकी वसीयत के सिलसिलें इनके बाद भी हज़रते सरकारे कायनात रसूले खुदा स0 अ0 की बेसत तक बराबर जारी व सारी रहा। और शमून इब्ने हमून के बाद यहिया बिन ज़करिया मंज़र बिन शमउन सलेमा बिन मन्ज़र बरज़ा बिन सलमा, अबी बिन बरज़ा, दुस बिन अबी, असीद बिन दोस, होफ बिन असीद यहिया बिन होफ। बजीरा राहिब और बाज़ रवायात की बिना पर जनाबे सलमान फ़ारसी बित्तरतीब एके बा दीगरे एक दुसरे के वसी मकररर होते रहे। और यह तमाम हज़रात तालीमातो शरीयत ईसा की तब्लीग़ के सिलसिले के साथ पैगम्बरे आख़्रुजमा की बशरत भी किया करते थे। जनाबे सलमाने फ़ारसी वही बुजुर्ग हैं जो बाद में मुशर्रफ ब इस्लाम हुए और ईमान के दस दरजे पर फ़ायज़ थे। और इन्ही के बारे में हज़रते रसूले खुदा स0 अ0 ने फरमाया था कि सलमान मेरे अहलेबैत में से हैं।

यह बात भी तय शुदा है कि करीब क़यामत जब आख़री इमाम हज़रते मेंहदी आख़िरउज़्जमा जूहुर फरमायेगें तो हज़रते ईसा भी आसमानें चहारूम से ज़मीन पर तशरीफ लायेंगे। उनकी इमामत की तस्दीक करेंगे और उन्ही की इमामत में नमाज़ पढ़ेंगे।

इमामे फ़ख़रुद्दीन राज़ी अपनी तफ़सील में लिखते हैं कि जिस वक्त इमामें मेंहदी का जुहर होगा हज़रते ईसा अर्शे चहररुम से ज़मीन पर तशरीफ़ लायेंगे। तो उस वक्त उनकी हैसियत एक उम्मती से ज़्यादा न होगी।

मौलाना फरमान अली साहब कुरआने मजीद में सुरह आले इमरान के हाशिये पर एक जगह रक़म तराज़ है कि वह बारह आदमी जो सबसे पहले आप पर ईमान लाये हवारी कहलायेय। इब्रानी ज़बान में हूर के माने खालिस सफेदी के है। पस इन्हे हवारी इन्हे इस वजह से कहते है कि पहले यह लोग धोबी का पेशा करते थे। औप कपड़ो को निखार कर सफ़ेद करने की वजह से यह नाम हुआ हो।

इस वजह से कि हज़रते ईसा ने इन्हे गुस्ले इस्तेबाग़ दिया था। जो अब तक नस्नानियों में जारी है। यह इस वजह से कि हज़रते मरियम ने हज़रते ईसा को काम सिखाने की गरज़ से एक रंग रेज़ के पास रख दिया था। या फिर इस लिए कि वह नुफ़स को गुनाहों की आमोजिश से पाक व साफ़ रखते थे और दुसरो को भी पाक करते रहते थे। इस वजह से इन्हे हवारी कहते है। यह लोग ज़बर्दस्त वायज़ थे खुसुसन लूका। जिनकी तरफ़ इन्जील का एक हिस्सा मन्सुब है। यह भी याद रखने की बात है। कि जिस तरह बनी इस्राइल के बारह नक़ीब थे। हज़रते ईसा के बारह हवारी थे। इसी तरह उम्मते मुस्लेमा के भी बारह आईम्मा है। मौलाना ने हवारीन के बारे में जो मुख्तलिफ़ बयानात बयान फरमाये है। इससे पता चलता है

कि मुअर्रेखीन इस अम्र में सही नतीजा नहीं अक़ज़ कर सके हैं कि हवारीन कहलाने का असल सबब क्या है। और शायद यह वजह है कि गलत फहमी के बिना पर हज़रते ईसा के हवारीन को किसी ने धोबी और किसी ने अंग्रेज़ तसव्वर किया है। मेरी तहक़ीक के मुताबिक़ हवारीन के लुगवी मानी मददगार के हैं।

लिहाज़ा ज्यादा करीने क़यास बात यही है कि हज़रते ईसा के जो सच्चे मोईन व मदद गार थे वही हवारीन कहलाये। जैसा कि इमामे रज़ा अ० के इस क़ौल से साबित है कि हज़रते ईसा को अस्हाबे खास को हवारीन इस लिए कहा जाता है। कि वह मवाएज़ और नसीहतों के ज़रीये गुनाहो से दुर रखते और हज़रते ईसा के मोईन व मदद गार थे। हवारीन के माने चुँकि साफ करने वाले के भी हैं। इसलिए लोगों ने धोखा खाया। इसलिए किसी ने धोबी किसी ने रंगरेज़ लिख दिया।

### **हज़रते ईसा अ० का आसमान पर उठाया जाना**

हज़रते ईसा जब शामून बिन हामुन को अपना खलीफा और जानशीन मुकरर कर चुके तो आप ने हवारीन को हुक्म दिया कि तुम लोग अतराफे आलम में तब्लीग व हिदायत के लिए फैल जाओ चुनान्चे जब वह लोग ग़ैर मुल्को में चले गये तो आपको तनहा देखकर इस्राइली यहूदी ने जिनकी फ़ितरत और सरिशत में शरारत और शैतनत भरी हुई थी। एक मन्सूबा तैयार किया कि किसी तरह क़त्ल कर दिया जाये। चुनान्चे मुखतलिफ़ हीलों बहानों से एक शब इन लोगों ने आपको

गिरफ्तार करके एक घर में मुकय्यद कर दिया। खुदा का करिश्मा देखिये कि जिब्रील आये और एक रौशन दान से निकल कर आपको आसमान पर ले गये।

जब सुबह तड़के यहूदी हज़रते ईसा को फांसी देने के इरादे से वहां पहुंचे तो उनका एक सरदार जिसका नाम यहूदा था आपको बाहर लाने के लिए घर के अन्दर दाखिल हुआ। खुदा ने अपनी कुदरत से यहूदा को हज़रते ईसा की शकल में तब्दील कर दिया। हज़रते ईसा को न पाकर जब वह अपने साथियों से माजरा बयान करने बाहर निकला तो इसे देखते ही ईसा समझ कर इसके उपर टूट पड़े दबोच लिया और वह लाख चीखता चिल्लाता रहा कि मैं ईसा नहीं हूँ बल्कि तुम्हारा साथी यहूदा हूँ।

आखिर इसे सुली पर चढ़ा ही दिया जब उसका काम तमाम हो गया तो इन बदबख्तों ने इसकी लाश पर तबर भी बरसाये। जब यह सब कुछ हो चुका तो खुदा ने फिर यहूदा को उसकी अपनी असली शकलों सूरत में कर दिया। यह देख कर उन लोगों ने अपना मुंह पीट लिया और हाथ मल कर रह गये। यह वाक्या 21 रमज़ानुल मुबारक का बताया जाता है।

हज़रते ईसा के बारे में यहूद नसरा दोनों ही शुबहे में पड़े हुए थे। यहूदी आपके बारे में बेहूदा ख्यालात रखते थे जबकि नसारा आपको खुदा का बेटा कहते थे। परवर दिगार ने हरते आदम की मिसाल देकर दोनों की तशफ़ी कर दी यहूदियों को यह करहर मुतमइन कर दिया कि जब आदम की खिलकत मिट्टी से हो

सकती हो तो ईसा का बगैर बाप के पैदा होना तअज्जुब खेज क्योँ। और नसारा को यह कह कर समझा दिया कि ईसा का बगैर बाप का पैदा होना खुदा या खुदा का बेटा होने की दलील हो तो हज़रते आदम के मां और बाप दोनों ही नहीं थे। लिहाज़ा सबसे पहले इन्हे खुदा या खुदा का बेटा होना चाहिए था।

हज़रते ईसा के आसमान पर उठा लिये जाने क् बाद शमून अपनी पूरी जिम्मेदारियों के साथ बहैसियते वसी अपने फ़राज़ और तब्लीग़ उमूर अन्जाम देते रहे। और उनकी वसीयत के सिलसिलें इनके बाद भी हज़रते सरकारे कायनात रसूले खुदा स0 अ0 की बेसत तक बराबर जारी व सारी रहा। और शमून इब्ने हमून के बाद यहिया बिन ज़करिया मंज़र बिन शमउन सलेमा बिन मन्ज़र बरज़ा बिन सलमा, अबी बिन बरज़ा, दुस बिन अबी, असीद बिन दोस, होफ बिन असीद यहिया बिन होफ। बजीरा राहिब और बाज़ रवायात की बिना पर जनाबे सलमान फ़ारसी बित्तरतीब एके बा दीगरे एक दुसरे के वसी मकररर होते रहे। और यह तमाम हज़रात तालीमातो शरीयत ईसा की तब्लीग़ के सिलसिले के साथ पैगम्बरे आख़ुजमा की बशरत भी किया करते थे। जनाबे सलमाने फ़ारसी वही बुजुर्ग हैं जो बाद में मुशर्रफ ब इस्लाम हुए और ईमान के दस दरजे पर फ़ायज़ थे। और इन्ही के बारे में हज़रते रसूले खुदा स0 अ0 ने फरमाया था कि सलमान मेरे अहलेबैत में से हैं।

यह बात भी तय शुदा है कि करीब कयामत जब आखरी इमाम हजरते मेंहदी आखिरउज्जमा जूहर फरमायेगें तो हजरते ईसा भी आसमानें चहारूम से जमीन पर तशरीफ लायेंगे। उनकी इमामत की तस्दीक करेंगे और उन्ही की इमामत में नमाज़ पढ़ेंगे।

इमामे फ़खरुद्दीन राज़ी अपनी तफसील में लिखते हैं कि जिस वक्त इमामें मेंहदी का जुहर होगा हजरते ईसा अर्श चहररूम से जमीन पर तशरीफ लायेंगे। तो उस वक्त उनकी हैसियत एक उम्मती से ज़्यादा न होगी।

## हिन्दुस्तान से पैगम्बरों का ताअलुक़

रिश्ते आजल से कायम है यह सिर्फ जिस्मानी नहीं है। बल्कि रुहानी भी होते हैं। इनका ज़हर चाहे जब बई हो यह उसूल सिर्फ इन्फेरादी रिश्तों का नहीं बल्कि कौम और गिरोहों का भी है। सिर्फ इन्सानी रिश्तों के लिए नहीं बल्कि हैवानी, नबाताती और जमादाती रिश्तें काभई यही उसूल है कि वह भी अज़ली है। यह एक अलग तफसीली मौजू है जिसके साइंटिफिक सबूत हैं हमें फिलहाल यह देखना है कि जमाने क़दीम में रसूले अकरम स० अ० की जाए विलादत अरब और हिन्दुस्तान के दरमियान के दरमियान क्या रिश्ते थे।

1000 क़ब्ल मसीह यमन की एक कौम सब ने हिन्दुस्तान से तिजारीती तअल्लुकात इस्तेवार किये। बम्बई के करीब सुपारा नामी एक गांव से अहदे

सुलेमानी में (जिनका ज़माना 650 काफ़0 मीम है) फिलिस्तीन से तिजारत शुरू हुई। इसी तरह हिन्दुस्तानी मलमल छींट और रुमाल वगैरह अरब में मकबूल थे। जिनका ज़िक्र अरबी अशार में मिलता है। खानदाने मोरिया के आन्धा प्रदेश में तमाम कुतुबाते आरामी अरबी तर्ज में लिखे हुए मिले हैं। और अशोक के कुतुबात भी फराहम हुए हैं।

आब सबल यह पैदा होता है कि आज से पांच हज़ार साल कब्ल हिन्दुस्तान में अरबी ज़बान युधिश्ठिर के दरबार में क्यों कर राएज हुई। इसका जवाब यह हो सकता है कि आज से पांच हज़ार साल पेशतर इस मुल्क में दीने इस्लाम का दौरा था।

हिन्दुस्तान की एक और जमाअत भी कदीम ज़माने से अरब में पायी जाती थी। इसको अरबी बाशिन्दे मेद कहते थे। इसतखरी ने लिखा है कि हुदूदे सिन्ध के तमाम शहरों में कुफ़ार का मज़हब बौद्ध था। और इनके साथ ही एक क्रौम है जिसे मेद कहा जाता है। जाठ और मेद के बाद हिन्दुस्तान की एक और क्रौम अरब में पायी जाती है वह सबाबजामासबाबचा है। बलाज़री ने फ़ुतुहुल बलादान में और इब्ने खुलदून ने अपनी तारीख़ में बार बार सबाबचा का ज़िक्र किया है। अरब में हिन्दुस्तान की एक और जमाअत ज़माने कदीम से आबाद थी। जिसे अरब हुमरा, हमर, अहमिर और अहामेरा के लक़ब से याद करते थे। इसी तरह मज़हबी

रवाबित और खुसुसन अम्बिया अ० की आमद या बेअसत के सिलसिले में हमें मुताअदिद रवायत मिलती है।

अहदे हाज़िर के मुसलमानों में एक आम तसव्वुर यह भी है कि जिन अम्बिया का जिक्र कुरआन में है उनका ताल्लुक सिर्फ जज़ीरा नुमाए अरब से था। यह दावा करने वाले यह नहीं बताते कि हज़रते आदम हज़रते नूह, अरब, मिस्र, ईराक, शाम के किन हिस्सों में दावत के लिए मबउस हुए थे। इस सिलसिले में मोहक्कीन हज़रात को जो कुछ मिला है हम मुखतसर पेश कर रहे हैं।

## हज़रते आदम अ० और हिन्दुस्तान

यह एक दिलचस्प बात है कि श्रीलंका में कोहेसरान दीप पर एक बड़े पांव का निशान मौजूद है। जिसे बहुत से मज़ाहिब के पैरों मुक़दस मानते हैं। मुसलमान और ईसाइ इसे हज़रते आदम के पांव का निशान मानते हैं। बौद्ध मज़हब के पैरब गौतम बुध के पांव का निशान कहते हैं। और हिन्दू इसे शिव जी के पैर का निशान मानते हैं। यह अजीबो गरीब रवायत बिल्कुल बेबुनियाद भी नहीं है। इसकी कड़ीयां हमें अरबों की तारीख में मिलती है।

अहले अरब का यह दावा है कि हिन्दुस्तान से इसका ताल्लुक सिर्फ चन्द हज़ार बरसों का नहीं है। बल्कि अज़ली तौर पर यह मुल्क इनका पिदरी वतन है। हदीसों और तफ़्सीरों में जहाँ हज़रते आदम के वाक़ेयात हैं। मुताअदिद रवायतों से



भी जाहिर होता है कि हज़रते आदम जब आसमान की जन्नत से निकाले गये तो हिन्दुस्तान की आरज़ी जन्नत पर उतारे गये। श्रीलंका में उन्होंने पहला क़दम रखा जिसका निशान इसके एक पहाड़ पर मौजूद है। इब्ने जज़ीर इब्ने अबी हातम ने लिखा है कि हिन्दुस्तान की सरज़मीन का नाम जिसमें आदम उतरे वजना है। क्या यह कहा जा सकता है कि यह वजना दखिना या दखिना या दकखिन है जो जुनूबी हिन्दुस्तान के हिस्से का मशहूर नाम है।

अब एक सबूत तफ़सीर की किताबों से मुलाहेज़ा फ़रमायें। इब्ने अब्बास ने फ़रमाया है कि आदम का तनूर हिन्द में था। यह वाज़ेह रहे कि कुरआन, इंजील और तौरैत से मुफ़स्सेरीन को यह रौशनी अभी तक नहीं मिल सकी कि आदम दुनिया के किस खित्ते में उतारे गये।

मुन्दरजा बाला रवायात से श्रीलंका में पांच के निशान से यह इशारात मिले है कि हज़रते आदम अ० की बेअसत इस सरज़मीन में हो सकती है। हालांकि यह रवायात ज़ईफ़ क़रार दी जाती है। लेकिन यह बात ज़रूर क़बिले गौर है कि दुनिया के किसी और खित्ते के बारे में ऐसा दावा होने की रवायात भी हमें नहीं मिलती।

## हज़रते नूह अ० और हिन्दुस्तान

कुरआन से यह हमें मालूम होता है कि तूफ़ाने नूह अ० के बाद हज़रते नू की कश्ती कोहे जूदी पर ठहरी जो ईराक़ के इलाके करदिस्तान में है। और बाइबिल से पता चलता है कि कोहे अरारत पर इनकी कश्ती रुकी थी जूदी कोहे अरारत की

एक चोटी है। लेकिन आज तक मोफ़स्सेरीन ने यह नहीं बताया कि कश्ती के रुकने के बाद हज़रते नूह के तब्लीगी मराकिज़ दुनिया के कौन कौन से इलाके रहे और यह भी नहीं पता चल सका कि तूफ़ाने नूह से पहले हज़रते नूह छः सौ साल तक कहां रहें। तौरैत से तो सिर्फ़ तना मालूम होता है कि हज़रते नूह और उनके साथी बाबुल में इकट्ठा हुए और वहां से पूरी दुनियां में फैले।

इसलिए इसका नाम बाबुल है क्योंकि खुदा वन्दे आलम ने वहां पर तमाम अहले ज़मी की ज़बानों को ग़लत खिल्लत मिल्लत कर दिया था। और वहां से इन (हज़रते नूह और इनके साथियों) के खुदा ने तमाम रुए ज़मीन पर फैलाया तौरैत किताबे पैदाइश 11,9।

कुरआन यह कहता है कि तनूर से पानी उबलना शुरू हुआ था और यहां से तूफ़ान की इब्तेदा हुई थी। (तरज़ूमा)

यहां तक कि जब हमारा हुक्म आ पहुंचा और तन्दुर से पानी उबलना शुरू हुआ तो हमने कहा कि इस (कश्ती) में हर किस्म के जोड़ों में से दो दो को चढा तो (सुरए हूद 40)। लफ़जे तन्दूर अरबी ज़बान का लफ़ज़ नहीं है। फ़ारसी में इसका माना रोटी पकायी जाने वाले तनूर के है। बैश्तर मुफ़स्सेरीन ने इस लफ़ज़ को इन्ही मानों मे इस्तेमाल किया है। और कुछने तनूर से मूराद सतह ज़मीन भी लिया है। यानी ज़मीन की सतह से पानी उबलना शुरू हुआ लफ़जे तनूर से पहले कुआन में अलिफ और लाभ इस्तेमाल हुआ है। जिसका मतलब है कि कोई मखसुस तनूर इस

सिलसिले में उलमाए कराम की तशरीह लिखी देखी और अगर यह कहा जाये कि अलिफ और लाम तन्दूर में हैं तो इसका जवाब यह है कि यह बड़द नहीं कि नूह को वह तन्दूर मालूम हो। हसन बसरी का यह बयान है कि वह तन्दूर पत्थर का था। हज़रते हव्वा इस पर रोंटिया पकाती थी। फिर वह हज़रते नूह के पास आ गया था। और उनसे कह दिया गया था कि देखो तन्दूर से जब पानी उबल रहा हो तो अपने साथियों को लेकर कश्ती पर सवार हो जाना। लफ़्ज़ें तन्दूर पर बहुत से अक़वाल इकठ्ठा करते हुए अल्लामा शोक़कानी ने लिखा है कि आठवां कौल हो कि वह एक मुक़ाम है। जो हिन्द में है (तफ़सीरे फतहुल ग़दीर जिल्द 2 सफ़ा 474)। यह बात दिल चस्पी से खाली नहीं कि रेलवे टाईम टेबल में तनूर नाम का एक मक़ाम केरला में है और नक्शे में केरला के मुल्लापुरम ज़िले में समुन्दर के साहिल पर तनूर नाम का एक मक़ाम वाक़ये है। यह हिन्दुस्तान के मग़रीबी साहिल पर है। जो बहराए अरब के ज़रिए अरब से जुदा होता है। रवायत की रोशनी में क्या यह क्यास किया जा सकता है कि यह वही मक़ाम है जहां से सैलाब नूह के शुरू होने का ज़िक्र कुरआन ने किया है. इससे दुसरे तमाम अक़वाल की ततबीक भी हो जाती है। यानी साहिले समन्दर पर तनूर नामी जो मक़ाम है वहां सतहे ज़मीन से पानी उबलना शुरू हुआ था। और यहीं मक़ाम हज़रते आदम का तनूर कहलाया। इससे यह साबित होता है कि हज़रते नूह तूफ़ान से क़ल्ब हिन्दुस्तान में थे। बरसों की तहक़ीक के बाद गुजरात के एक माहिर क़ानूनदा एम ज़मा खोखरा ने यह

इनकेशाफ किया है कि आदम सानी खाके मुजरात में महवे इस्तेराहत हैं। इनके दावे की बुनियाद 240 फिट लम्बा एक मजार है जो गुजरात के इस तारीखी शहर से 25 मील दूर मौजा बड़ीला शरीफ के नवाह में सदियों से मरजए खलाएक है। गांव से तकरीबन एक फरलांग जुनूब में घनी झाड़ियों और छायादार तरख्तों से घिरी स कब्र के बारे में आम तासीर यह है कि हजरते नूह के बेटे या पोते कबीत का मदफन है। लेकिन एम जमा खोखरे ने इल्में कश फुल कुबूर के उलमा की रवायतों से यह साबित किया है कि यह कबीत नहीं बल्कि खुद हजरते नूह हैं। बहुत से उलमाए कश फुल कुबूर और बुजुर्गान के हवाले ताइद में बयान करने के बाद लिखते हैं।

बड़ीला शरीफ एक सरहदी गांव है और गुजरात से पांच मील दूर जानिबे शिमाल और मशरिक कस्बए टाएंडा के नजदीक वाके है। यहां से झम्ब का इलाका शुरू हो जाता है और दरियाए चुनाब व तबई इसके करीब ही बहते है। तकसीम से कल्ब हिन्दू इस मजार को मनो मेहरिस्त के नाम से पुकारते थे, मनुमेह रिस्त संस्कृत का लफ़्ज़ है जिसके माना कश्ती वाला है। इबरानी लफ़्जे नूह से भी यह माना अखज़ किया जाते है। संस्कृत की कदीम किताबों में दर्ज है। कि आदम का एक बेटा पंख पखेरु मे समेट कर एक कश्ती में बुलाता है। तूफाने नूह का जिक्र आर्याओं की मज़हबी किलाबों में भी आया है और इस हवाले से यह भी साबित होता है कि अवाएल ही में नूह की औलाद बरसगीर हिन्द तक फैली हुई थी।

आइए गुजरात में दर्ज है गुजरात के बाशिन्दे हज़रते नूह के बेटे हाम की औलाद हैं और हामियों ने कश्मीर के नवाह में बड़ी बड़ी इमारतें तामीर करायीं। इमतेदादे ज़माने से हाम की कब्र के आसार मिट चुके हैं। लेकिन शहरो और मज़रात की सूरत में इनकी आमद के निशानात यहां के वसीव अरीज़ इलाको में फैले हुए हैं। बढेला शरीफ के नवाह में मिट्टी के बड़े बड़े तौंदे और टीले इस अम्र के गवाह हैं कि कभी यहां औलादे आदम की आलीशान बस्तियां होंगी।

याकूते हमूवी ने लिखा है कि बुकीर बिन यखतिन बिन हाम बिन नूह की औलाद में हिन्द और सिंध नामी दो भाई थे जिनके नाम से यह दोनो मुल्क मशहूर हैं। इन तूफाने नूह से क़ल्ब और बाद में भी हज़रते नूह का तअल्लुक हिन्दुस्तान से था।

## हज़रते मूसा और दीगर अम्बिया

ऐ ऐन किगहम की आसारे क़दीमा रिपोर्ट के ज़ैल में यह पता चलता है कि अयोध्या में दो पर्वतों के दरमियान मुसलमानों का क मज़हबी मकाम है जो मशरिफ़ से मगरिब तक चौसठ फिट है और इसकी चौड़ाई 47 फिट है इनमें दै मज़ार हैं जिन्हे हज़रते शीश और हज़रते अय्यूब से मनसूब किया जाता है।

एम0 ज़मा खोखरा जिनका ज़िक्र हम कौमी जंग रामपुर के हवाले से करर चुके हैं के बारे में अखबार मज़ीद लिखता है कि (मुस्लिम इंडिया ऊर्दु अप्रैल सन 1988 सफा 15)एम0 ज़मा खोखरा ने मज़ारे नूह या फ़रज़न्दे नूह के मरक़द के

अलावा वसी अरीज़ कबीरों की निशानदेही की है इनके बकौल मोज़ा चौगानी मे तानूग किनआनी थे। और वह हज़रते युसुफ के बेटे थे आइनये गुजरात में दर्ज है कि काज़ी सुल्तान महमूद ने इल्मे कशफुल कुबूर के ज़रिये गुजरात के आस पास मुताअदिद मज़ारात की निशानदेही की है इनका दावा है कि यह तमाम क़बरे इन तमाम अम्बियाए बनी इस्राइल की है जो औलादे मूसा व इमरान में से थे। क़दीम तारीखी हवालों से यह अन्दाज़ा होता है कि गुजरात इल्म व फ़ज़ल के एतेबार से ख़ित्तए यूनान ही नहीं बल्कि रुहानियत की निस्बत से पैगम्बरों का मदफ़न भी है। रवाल शरीफ के मक़ाम पर एक मज़ार है जिसकी लम्बाई आम क़ब्रो से कई फिट ज्यादा है।

इसके बारे में यह कहा जाता है कि यहां आदम के बेटे शीश की औलाद में से एक बुजुर्ग दफन है. पसीर नगर में हमसेयालान की एक तुरबत है. बखते नस्र के हमले के दौरान अपने बेटे समेत कैद हुए थे। और बाबूल में असीरी के सत्रह बरस गुजरने के बाद हिन्दुस्तान चले आये थे। इनके जददे अमजद हज़रते हारून हैं। क़स्बा टाण्डा में एक इस्राइली सरदार नक़ीब खुशी की क़ब्र है। दिरियाये तवई के किनारे सुल्तान कैनूस और फ़नानूस की क़ब्रें है।

यह दोनो हज़रते इब्राहीम के बेटे अफ़रासीम की औलादों में बयान किए जाते है। सुल्तान शनयाउस के बारे में यह मसहूर है कि वह हज़रते दाउद के फ़रज़न्द है। एक नौ गज़ी क़ब्र मौज़ए रंगड़ा में भी है इन सदियों और करनो में क़बरों ने गर

अपने तक्रददुस व एहतेराम को बरकरार रखा है तो सके बारे में यब कहा जा सकता है कि यह पैगम्बरों के मोअजेजात हैं (रोज़ नामा क्रौमी जंग रामपुर 13 मार्च 1988) हज़रते मूसा के बारे में हिन्दुस्तान की जैन क्रौम के रवायात में यह मिलता है कि वह हिन्दुस्तान आये थे। (वच्चाबो आवमो बिस्सवाब)

## हज़रते ईसा और हिन्दुस्तान

हज़रते ईसा के हिन्दुस्तान की आमद के बारे में कश्मीर और लद्दाख में बहुत सी रवायतें मशहूर हैं। रुसी और अंग्रेज़ी मोहक्केकीन ने भी इसका ज़िक्र किया है। फिलहाल हम हिन्दी ज़बान के मशहूर रिसाले कादिम्बनी मार्च 1976 में छपे आचार्य रजनीश के एक मौजू ईसा की नामालूम जिन्दगी से कुछ एखतेबासात नक़ल कर रहे हैं जो हिन्दी के बजाये मेरी अपनी ज़बान में है। हिन्दुस्तान में यह यक़ीन करने के कई सुबूत हैं। कि हज़रते ईसा कश्मीर मे एक बुद्ध मठ में ठहरे रहे। कश्मीर में कहानियां मशहूर हैं कि ईसा वहां थे। मुराक़ेबे में गर्क थे। फिर वह यरुशलम में जाहिर हुए। इस वक्त वह 30 साल के थे।

एक फ्रांसीसी मुसन्निफ अपनी किताब जन्नत का सांप में कहता है कि कोई जानता कि तीस साल में उन्होने क्या किया और कहां कहां रहे। एक रवायत के मुताबिक वह काएशर में रहे। रुसी सैयाह नकोलस, फीरोविच जो 1888 के आस पास हिन्दुस्तान आया था लद्दाख गया वहां वह बिमार पड़ गया और मशहूर

हन्मैस गुफा में रहा अपने गुफा में कयाम के दौरान इसने मुताअदिद बुद्ध ग्रंथों को पढ़ा।

इसने ग्रंथों में ईसा उनकी तालीमात और उनके लद्दाख के सफर वगैरह के बारे में काफी बयान पाया बाद में उसने एक किताब शायों की उसमें उसने ईसा के लद्दाख और मशरिफ के दूसरे मुमालिक के सफर से मुताअल्लिक बयानों का जिक्र किया है। इनमें बयान यह किया गया है कि लद्दाख में हजरते ईसा ऊँचे पहाड़ों के दरों से बर्फीले रास्तों को पार करते हुए पहले गाम कश्मीर पहुंचे वह वहां काफी अरसे तक अपनी भेड़ बकरियों की देखभाल करते रहे।

इसी हिन्दी रिसाले कादमब्नी के सतम्बर 1978 के शुमार में शान्ति कुंज हरिद्वार का एक मजमून तिब्बती लामा की कुबत में ईसा के उनवान से छापा है। इसके एकतेबासात भी मुलाहेजा फरमाये।

यह तीस साल हजरते ईसा ने कहां और किस तरह गुजारे। यह जानने के लिए आलिमों ने काफी रिसर्च की है। रिसर्च स्कालरों में सबसे आगे रूसी आलिम नूर विच है जिन्होंने मुसलसल चालीस साल तक सफर करके रिसर्च की और अपने नताएज 1898 में ईसा की नामालूम ज़िन्दगी नामी किताब की शकल में शायों कराया नकोलिस नूरविच अपनी तहक्रीकाती सफर के दौरान तिब्बत भी गये और उन्होंने तिब्बत के हमूस बौद्ध विहार में ताड़ के पत्तों पर लिखा हुआ एक कदीमी ग्रंथ देखा नूरविच ने इस बौद्ध विहार में गुजारे अरसे का बयान इस तरह लिखा है



कि मैं जब एक गुफा में गया तो वहाँ के लामा ने एक ऐसे पैगम्बर के बारे में बताया जिसे वह बुद्ध का ही एक रूप मानता था।

लामा ने उस पैगम्बर का नाम ईसा बताया है। और कहा हम लोग इस नाम को बड़ी इज्जत के साथ ज़बान पर लाते हैं। इनके बारे में हमें ज़्यादा मालूम नहीं लेकिन बड़े लामा के पास एक क़दीमी ग्रंथ बहुत कुछ लिखा है। किसी तरह नूरविच ने वह क़दीमी ग्रंथ देखने और उसकी तस्वीर उतारने में कामयाबी हासिल कर ली। इस ग्रंथ में चौदह बाब हैं और दो सौ चवालिस श्लोक हैं।

इसमें ईसा के बारे में यह है कि हज़रते ईसा ज्ञान हासिल करने की गर्ज के हिन्दुस्तान आये। इन दिनों यरुशलम के काफिले तिजारात के लिए यहाँ आया करते थे। चुनान्चे वह भी एक काफिले के साथ सिन्ध होते हुए हिन्दुस्तान में वारिद हुए। ईसा सभी इन्सानो से मोहब्बत किया करते थे और उन्हें भी वैश्य और शूद्र सभी प्यार करते थे। उन दिनों वह जंगनाथपुरी में ठहरे हुए थे।

वहाँ से पुजारियों को जब पता चला कि ईसा शूद्रों से भी मिलते हैं तो वह उनसे नाराज़ रहने लग। ईसा को पुजारियों की नाराज़गी का पता चला तो वह राज गृह चले गये। छह साल वहाँ रहे और इसके बाद नेपाल होते हुए तिब्बत पहुंचे। और सोलह साल तक इसी तरह सफर करते हुए ईरान के रास्ते से अपने वतन लौट गये।

भविष्य पर उन्क प्रसंग 3 अध्याय 22 के 21 ता 23 श्लोक तक हिमालय पर ईसा से शकादीश की मुलाकात का बयान इस तरह मिलता है कि एक बार शिकादीश हिमालय से आगे होन्टर गये। वहां उन्होने एक सफेद पोश गोरे रंग के सन्त को पहाड़ो पर घुमते देखा। शिकादीश ने इनसे तअरूफ चाहा तो सुन्नत ने कहा कि ईसा मेरा नाम है। मैंने कुआरी मां के पेट से जन्म लिया है और मैं गैरे मुल्क से आया हूँ। मुझे मसीह कहा जाता है।

मजकूरा तमाम वाक़ेयात रवायतों के एतेबार से जईफ़ से जईफ़ हो या कुछ हों मगर इनसे यह बात पाये सबूत को पहुंचती है कि हिन्दुस्तान से पैगम्बरों का गहरा और मुसलसल तअल्लुक रहा है।

हज़रते आदम से ईसा तक मशहूरों मारुफ अम्बियाए किराम के जो ज़रूरी हालात मैंने तहरीर किये हैं। उनके बारे में यह विज़ाहत कर देना चाहता हूँ कि वह ज़्यादा तर तारीख अबुलफिदा, हयातुल कुलूब, तारीखे तिबरी और तारीखे कामि वगैरा मे माखुज है।

ज़ाहिर है कि उन अम्बिया के दौर की इत्मिनान बख़श तहक़ीक़ इस दौर के किसी महिक्क के लिए एक बड़ा ही दुश्वार गुज़ार मरहला है क्योकि उनके दौर की लिखी हुई कोई तारीख कहीं मौजूद नहीं अलबत्ता हिन्दूओं की क़दीम तरीन किताबों

मे वेदों के श्लोकों के बारे में भी कुछ रौशनी मिलती है मगर वह ऐसी नहीं है कि उसकी बुनियाद पर हालात ओ वाकिआत की कोई इमारत खड़ी हो सके।

तारीख के तदवीनी सिलसिले के अक्वलीन दौर में मुहक्कीन ओ मुवरखीन ने मुखतलीफ ज़राए ओ करारएन से अम्बिया के दौर की तजदीद में अपनी कोशिशें सर्फ की लेकिन उनमें उन्हें कहां तक कामयाबी मिली है। अल्लाह बहतर जानता है।

अम्बियाए किराम से मुताअल्लिक़ जो हदीसें या रिवायतें पैगम्बरे इस्लाम या आइम्मा अतहार की ज़बानी मज़कूर हुई है कि उनमें उलमा मुहक्केकीन और मुफस्सेरीन के माबैन एकतेलाफ नज़र आता है, उनके रावियों पर भी एतबार व एतमाद नहीं किया जा सकता है। इसलिए जो हालात व वाकेयात मैंने कलम बद किये हैं उनमें अगर किसी जगह कोई शुबहा, एतराज़ या तनाकुस हो तो नज़र अंदाज़ करना चाहिए क्योंकि जब कुद रसूले अकरम स० की विलादत की तारीख आज तक मुसलमानों के दरमियान तय नहीं हो सकी तो हज़रते आदम अ० हज़रत इब्राहीम, हज़रते नूह, हज़रते मूसा अ० या हज़रते ईसा अ० की सही तारीखों का तअय्युन क्योकर हो सकता है।

कुरान मजीद में उन अम्बियाए किराम के इजमाली तज़किरे मौजूद है मगर उनकी विलादत वफात मदफन या उनके ज़माने के बारे में किसी किस्म का कोई ताअय्युन नहीं किया गया चुनान्चे जिस अन्दाज़ से इस आसमानी किताब में

उनके मकारिम इखलाक सिफाते हसना हयाते जकिया खिदमाते जलीला और इगराजे खिलकत ओ बेसत के हालात ओ वाकिआत मजकूर है उसी तरह मैंने भी उनका लिहाज रखा और उसी उसूल के तहत उनके हालात ओ वाकिआत ज़ेरे कलम आये है।

यह बात काबिले तवज्जो है कि अम्बियाए किराम के हालात ओ वाकिआत बई उन्ही रावियो और मुवरिखों के ज़रिए हम तक पहुंचे हैं जो ज़माने के मुतअल्लिक भी अजीब ओ गरीब और मज़हका खेज़ ऐसी रिवायतें बयान करते रहे हैं। जिनकी वजह से इस्लाम का विकार गैर मुस्लिमों के हाथों पहले भी मज़रूह हुआ है और अब भी हो रहा है। मसलन तिबरी की यह रिवायत है कि:-

बाज़ लोगों का कहना है कि दुनिया कुल सात हज़ार बरस की है और इब्ने अब्बास से मरवी है कि दुनिया, आखिरत के हफ़्तों में से एक हफ़ता है जिसकी मेयाद सिर्फ सात हज़ार बरस की है नीज़ इस मेयाद में छः हज़ार कुछ सौ बरस गुज़र चुके हैं और कई सौ बरस गुज़र चुके हैं और कई सौ बरस बाक़ी है। और बाज़ लोगों ने कहा है कि ज़माने का मजमूआ सिर्फ छः हज़ार बरस पर मुशतमिल है इसमें छः हज़ार कई सौ बरस गुज़र चुके हैं।

इसके बाद अल्लामा तिबरी अपनी तहकीक़ लिखते हैं कि:- इन दोनों में सही कौल अज़रूए हदीस ए पैग़म्बर, इब्ने अब्बास का है जो उन्होंने कहा कि दुनिया ओ आखिरत के हफ़्तों में से एक हफ़ता है जिसकी मीआद सात बरस की है। बस

मालूम हुआ कि नबी के इस इशारा के वक़्त तक छः हज़ार की है। बस मालूम हुआ कि नबी के इस इशारा के वक़्त तक छः हज़ार पाँच सौ बरस गुज़र चुके हैं और तक़रीबन पाँच सौ बरस गुज़र चुके हैं औ तक़रीबन पाँच सौ बरस बाक़ी हैं। (तिबरी जिल्द अक्वल सफ़ा 5 ता 6)

इन दोनों रिवायतों और तिबरी की तहकीक़ का ग़लत होना आफ़ताब की तरह रौशन ओ मुनक्वर है इस वक़्त दुनिया के फ़ना होने की मुददत सिर्फ़ पाँच सौ बरस मान ली गयी और मुस्लिमानों ने उसे तसलीम भी कर लिया क्योकि इन रिवायतों के रावी अकाबिरीन सहाबा थे। जाहिर है कि इस वाकिए को चौदह सौ बरस गुज़र चुके हैं। मगर दुनिया फ़ना नहीं हुई बल्कि अपनी जगह बरकरार है।

इन्ही रावियों ने रसूल उल्लाह स० अ० से खुदा के रहने की जगह भी तज़वीज़ करा दी। चुनान्चे यह तिबरी फरमाते हैं कि एक शख्स ने यह सवाल किया आंहज़रत से कि या रसूल उल्लाह स० अ० यह तो बताईये कि दुनिया को खल्क करने से पहले खुदा कंहा रहता था। फरमाया एक सियाह अब्र में जिस के नीचे भी हवा थी और ऊपर भी हवा थी फिर खुदा ने अर्श पानी पर पैदा किया (तिबरी जिल्द सफ़ा 16)

यही तिबरी रकमतराज़ है कि आसमान, ज़मीन और तमाम दरिया एक हैकल में है, हैकल कुर्सी में है। और खुदा के दोनों पांव उस कुर्सी पर हैं। और वह कुर्सी को

उठाये हुए है। जिसकी वजह से कुर्सी कि हालत ऐसी हो गयी है कि वह खुदा के पांव में फटी हुई जूती की तरह मालूम होती है। (तिबरी जिल्द 1 सफा 16)

इसी तरह बहुत से मोअर्रेखीन व मोहक्कीन ने अपनी अपनी किताबों में बेसरो पैर की अजीब अजीब मजहका खेज हदीसों और रिवायतें बयान की है। जिनमें बुखारी सरे फेहरिस्त है। इन मजमूम रिवायतों और हदीसों से यकीनन इस्लाम क पाको पाकीजा तसव्वर पर गैर मुस्लिमों की तरफ से तहकीरों इस्तेहाजा की जरबें पड़ती हैं और मुस्लिम मुआशेरा उसे खामोशी से बर्दाश्त भी करता है।

मौजूदा तरक्की पजीर दौर में तक्कीबन हर तालीम याफता इन्सान के नजरियात साइंस की जदीद तहकीक से वाबस्ता और हम आहंग है। इसलिए वह इन खुराफाती रिवायतों पर यकीन और भरोसा नही करता क्योकि तहकीकात ओ इन्केशापात से इस किस्म की रिवायते बिल्कुल गलत और मोहमल साबित होती है। मस्लन तिबरी ने अपनी तारीख मं दुनियां की मुददत सिर्फ सात हजार साल बतायी है जबकि इल्मेतब्कातुल अर्ज के माहेरीन की तहकीकात से पता चलता है कि 20 करोड़ साल पहले भी दुनिया थी और जमीन के तमाम खुशकी वाले हिस्से एक दुसरे से पैवस्त और जुडे हुए थे। जिन्के चारो तरफ समुन्द्र था। चुनान्चे एक मशरूरो मुमताज साइंस दां रोनाल्ड शेलर अपने एक तहकीकी मकाले (ब उनवान जमीन के बरें आजम बह रहे है।) में लिखता है कि दुनियां की चार अरब साठ करोड़ साला दुनिया की तारीख में समुन्द्र एक रिकार्ड बाजे कि तरह फैलते और

सिकुड़ते रहे हैं। और बर्रे आजम तूफानी समन्दर में एक पुराने जहाज़ की तरह मुताहरिक रहे हैं।

यक्रीनन इस मोअम्मे के कुछ हिस्से अभी गायब हैं। और तमाम तफसीलात पर सांइसदां अभी मुतफिक्र नही हो पाये लेकिन एक उमुमी खाके पर सांइस दोनो की अकसरियत इस हैसियत से इत्तेफाक़ कर चुकी है कि अब सिर्फ एक नज़रिया नही रहा। बल्कि उसे सांइटिफिक सच्चाई तस्लीम कर लिया गया है। (मज़मुआ रीडर्स डाइजेस्ट शुमार माह जुलाई सन 1971 ई0)

उसके बाद रोनाल्ड शेलर फिर लिखता है।

यह तमाम बर्रे आजम एक ज़बरदस्त ताक़त के ज़रिये जिसका मर्कज़ नामालूम है। मुखतलिफ सिम्तो में बह रहे हैं और उन्की रफतार एक सेमी0 से 15 सेमी0 सलाना है। जो कि इल्में तबकातुल अर्ज़ की रु से एक ज़बरदस्त रफतार है।

मसलन साईस दानों को यह मालूम हुआ कि बहरे उकयानूस की चौड़ाई बढ़ रही है। योरप और शिमाली अमरीका एक दूसरे से ढाई सेमी0 के हिसाब से साल ब साल दूर होते जा रहे हैं। समुन्दर के फ़र्श की हरकत का हिसाब लगाने के बाद सांइस दां यह मालूम कर सके हैं कि ख़ुशकी के तमाम बर्रेआज़म पहले किसी शक़ल में एक दूसरे से जुडे थे। सबसे पहले एक ज़बरदस्त मशरिको मगरिब, दरार पैदा हुई जिसकी वजह से अफ्रीका और जुनूबी अमरीका जुदा हुए, अंटार्टिका और आस्ट्रेलिया

अलाहिदा हुए और हिन्दुस्तान ढाई सेमी० सलाना के हिसाब से खिसकना शुरू हुआ। और बीस करोड़ साल से ज़मीन ने मौजूदा शक्ल इखतेयार कर ली।

तिबरी के रावियों ने खुदा के बारे में जो जिस्मानी तसव्वुर पेश किया है या दुनिया के बारे में जो मुददत मुअय्यन की है इन दोनों को रोनाल्ड शेलर की सांइसी तहक़ीक़ ग़लत करार देती है।

खुदा के लिए उस अज़ीम सांइसदानों का कहना है कि वह एक जबर्दस्त ताक़त है जिसका मर्कज़ नामालूम है और दुनिया के बारे में उनका खयाल है कि बीस करोड़ साल से इसी तरह कायम है। और इसके साथ ही अमीरल मोअमेनीन हज़रत अली अ० के इस क़ौल की भी सिदाक़त समझ में आ जाती है कि खुदा ने मेरे भाई मुहम्मद के नूर को क़ लाख चौबीस हज़ार साल क़ल्ब अपने नूर से खल्क़ किया।

एक तहक़ीक़ी ज़ेहन रखने वाला इन्सान इस ग़ौरो फ़िक़र के बाद यह नतीजा अख़ज़ करने पर मज़बूर है कि अक्वलीन दौर के मोअर्रेख़ीन के यहां भी बहुत सी ऐसी रिवायत पायी जाती हैं जिनकी सिरे से कोई हक़ीक़त नहीं है।

तारीख़ और ज़मानें के अलावा जो हालात और वाक़ियात मैंने इस किताब के गुज़िशता सफ़हात में मरकूम किये हैं वह तक़रीबन सही है। क्योंकि उनका ज़िक़र कुरआने मजीद में मौजूद है। और मोअतबर रिवायात से भी उनकी तहक़ीक़ हर जाविये से हो चुकी है। मसलन हज़रते आदम के दो फ़रज़न्दों में से एक का दुसरे



को कत्ल कर देना, हज़रते नूह के ज़माने में तुफान का आना, हज़रते इब्राहिम का आग में डाला जाना, खुदा की राह में हज़रते इस्माइल का ज़बह होने पर आमादा होना और हज़रते यूसुफ़ का किस्सा वगैरह।

इन तमाम अम्बिया व मुरसलीन के हालात से यह भी वाज़ेह है कि हर नबी ने अपने बाद के लिये अपना खलीफा और जानशीन अपनी ज़िन्दगी में खुद मुक़रर किया है। इस मसले को उम्मत पर नहीं छोडा। फिर भला हज़रते रसूले खुदा स० अ० अपने बाद इस अहम मसले को उम्मत के रहमो करम पर क्यों कर छोड़ते।

यह भी वाज़ेह है कि तमाम अम्बियाये कराम इस दुनिया में सिर्फ़ बनी नौ इन्सान की हिदायत के लिए आये थे, मुल्क गीरी, बादशाहत, लशकर कशी, खुरेज़ी, तलवार, के ज़ोर पर अपना कलमा पढ़वाने या ज़बर्दस्ती लोगों को अपने दीन का पाबन्द बनाने के लिए नहीं आये थे। वह खुदा के इत्ताअत गुज़ार बंदे थे।

अहले आलम को अमनो आशती का पैगाम देना, तमददुनों मोआशेरत का दर्स देना और लोगों को आखेरत का तलबगार बनाना उनका काम था और उनके खोलफा और औसिया भी उन्ही की पैरवी करते रहे। इसी तरह पैगम्बरे इस्लाम के बाद जो लोग उनके किरदार व सीरत का मुकम्मल नमूना बने वही सच्चे जानशीन और खलीफा हैं न कि वह हज़रात जो ज़बर्दस्ती मस्नदे खिलाफत पर काबिज़ हुए।

14.12.2017

## फेहरिस्त

अर्जे नाशिर.....	2
इस्लाम और तौहीद.....	17
इस्लाम .....	19
पहला दरजा.....	19
दूसरा दरजा.....	20
तीसरा दरजा.....	21
चौथा दरजा .....	22
पांचवा दरजा .....	23
इब्तेदाए आफ़रीनश और अहदे मिसाक.....	32
अबुल बशर हज़रत आदम अ०.....	43
हज़रत शीश अ०.....	54
हज़रत इदरीस अ०.....	56
हज़रत नूह अ० .....	58
कशती की तैयारी .....	62
तूफ़ान.....	66
हज़रत नूह अ० से शैतान की गुफ़्तगू.....	74
हज़रत नूह अ० की रहलत.....	75
तहकीकात व इन्कशाफ़ात.....	78
हज़रत हूद अ०.....	81

इरमें जातुल - एमाद की हकीकत .....	89
हालाते हजरते सालेह अ०.....	93
नाकेय सालेह का अन्जाम और अजाब.....	98
असहाबे रस का वाक़ेया .....	101
हजरते सालेह का मदफ़न .....	103
सात चीज़ें.....	105
हालाते हजरते इब्राहीम अ० .....	107
आजर की हकीकत.....	110
तारीख़े इस्लाम का आगाज़ .....	112
हजरते इब्राहीम के तबलीगी कारनामे .....	115
नमरूद का इबरत नाक अंजाम .....	122
जिलावतनी और हिजरत .....	124
हजरते इस्माइल कि विलादत और हिजरत.....	126
हजरते इसहाक़ की विलादत .....	130
हजरते इस्माइल की कुरबानी .....	131
हजरते इब्राहीम की रेहलत.....	135
हजरते इस्माइल और इस्हाक़ का मुख़तसर तअरूफ़.....	136
हजरते इस्माइल .....	136
हजरते इस्हाक़ .....	138

हजरते लूत अ०.....	140
कौमे लूत में लवाता (एगलाम) की इत्तेदा कब और कैसे हुई.....	140
जुलकरनैन का वाक़ेया .....	147
याजूज और माजूज .....	151
दीवार की तामीर.....	152
समन्दर की सैर .....	154
नमाज़ी से मुलाकात .....	155
जुलकरनैन से चन्द सवालात .....	156
मुर्दों की खोपड़ियां.....	157
आबे हयात की तलाश.....	158
हजरते याक़ूब व यूसूफ़ अ०.....	165
हजरते यूसुफ़ का ख़्वाब.....	166
बरादराने यूसुफ़ के रश्क और हसद का सबब .....	167
फ़रेब कारियां .....	168
हजरते यूसुफ़ का कुएं से बाहर निकलना और फ़रोख़्त होना .....	170
हजरते यूसुफ़ अज़ीजे मिस्र और जुलैखा .....	172
नीबू और छुरी .....	176
हजरते यूसुफ़ और कैदखाना .....	177
हुकुमते मिस्र में हजरते यूसुफ़ का मन्सब.....	181
भाईयों से मुलाकात.....	183

बीनायी की वापसी और हिजरत .....	190
जुलैखा से हजरते यूसुफ का निकाह .....	191
वफात और मदफन .....	193
हजरते अय्यूब अ० .....	195
हजरते जुलकफल अ० .....	199
हजरते शुऐब अ० .....	199
हजरते मूसा बिन इमरान अ० .....	201
दाईयों की तलाश .....	206
फिरऔन की दाढी .....	209
तब्लीग की इब्तेदा .....	211
किब्ती की मौत .....	213
मूसा का मदीन में दाखिला और शादी .....	215
असाए मूसा .....	217
हजरते मूसा की मराजेअत .....	218
कलीमउल्लाह .....	222
हामान और कारून .....	223
कारून .....	224
दरबारी मारके आराई .....	225
फिरऔन की गरकाबी .....	233
बनी इस्राइल और मन्नो व सलवा .....	236
बाबे हत्ता की हकीकत .....	239

औज बिन औक.....	240
तौरैत का नुजूल .....	242
गाये का क्रिस्सा.....	243
बैतुलमुकद्दस की बुनियाद.....	245
यहूदियों की मुशरेकाना व जाहिलाना सरिश्त.....	245
जनाबे हारून की रेहलत .....	248
वफ़ाते मूसा अ०.....	249
हज़रते यूश बिन नून अ० .....	252
हज़रते हिज़क्रील बिन बोरी अ० .....	253
हज़रते इल्यास अ० .....	255
तालूत व जालूत .....	258
हज़रते दाउद अ०.....	263
हज़रते सुलेमान अ० .....	268
आराइश और जेहबाइश.....	270
मखलूकात की दावत.....	271
चींटी से मुलाकात.....	272
मलकए बिलकीस बिन्ते शराजील का वाक़ेया.....	273
कस्रे सुलेमान मे बिलकीस का वरुद .....	277
घोड़ो की कुरबानियां .....	278

बैतुलमुकद्दस की तामीर.....	279
हज़रते सुलेमान की वफात.....	280
मुख्तलिफ अम्बिया व औसिया.....	281
बखते नस्र के वाक़ेयात.....	283
हज़रते दानियाल अ०.....	287
हज़रते अज़ीज़ अ०.....	292
हज़रते यूसुफ बिन मता अ०.....	293
हज़रते ज़करिया अ०.....	294
हज़रते यहिया बिन ज़करिया अ०.....	296
वाक़ेयात में हमआंहगी और यकसानियत .....	300
हज़रते ईसा इब्ने मरियम .....	301
हज़रते मरियम की हिजरत .....	306
हज़रते ईसा के मोअज़िज़े.....	307
सदक़े की अहमियत .....	308
नुजूले माएदा.....	309
तब्लीगी सरगरमियां .....	311
हज़रते ईसा के हव्वारीन .....	317

हज़रते ईसा अ० का आसमान पर उठाया जाना.....	323
हिन्दुस्तान से पैगम्बरों का ताअलुक.....	326
हज़रते आदम अ० और हिन्दुस्तान.....	328
हज़रते नूह अ० और हिन्दुस्तान.....	329
हज़रते मूसा और दीगर अम्बिया.....	333
हज़रते ईसा और हिन्दुस्तान.....	335